श्रीगुसांईजी के निजसेवक

२५२ वैष्णव की वार्ता

पुष्टिमार्गीय श्रीवल्लभसंप्रदायी
वैष्णव रामदासजी संपादित

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

श्रीः ।

श्रीगुसांईजीके निजसेवक-

२५२ वैष्णवकी वार्ता ॥

पुष्टिमार्गीय श्रीवल्लभसंप्रदायी वैष्णव
रामदासजी संपादित.

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

संस्करण : मार्च २०१८, संवत् २०७४

मूल्य : ४०० रुपये मात्र ।

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M/s. Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press Bombay-400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune-422013.

दोसौबावन वैष्णवकी अनुक्रमणिका.

इति अनुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

दोसौबावन वैष्णवकी वार्ता।

(श्रीगुसांईजीके निजसेवक दोसौबावनवैष्णव, तिनकी वार्ता)



श्रीबालकृष्णाय नमः ॥

श्रीअस्मत् गुरुचरणकमलेभ्यो नमोनमः ॥

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोविंदस्वामी सनाढय ब्राह्मण महावनमें रहते तिनकी वार्ता ॥ १ ॥

प्रथम गोविंददास आंतरी गाममें रहते, तहां गोविंदस्वामी कहावते और आप सेवा करते गोविंददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीतीसों रहते. जो श्रीभगवत् चरणारविंदकी प्राप्ति कैसें होय ? याही बातकी तलासी करते रहते एकसमय गोविंददास आंतरी गांमते ब्रजकों आये और महावनमें आयके रहे. काहेतें ? जो यह ब्रज धामहै इहां भगवत् चरणारबिंदकी प्राप्ति होयगी और गोविन्ददास कवि हते सो आप पद कर्ते सो जो कोऊ इनके पद सीखकें श्रीगुसांईजीके आगे आयकें गावें तिनके ऊपर श्रीगुसांईजी प्रसन्न होते सो गावनहारे गोविन्दस्वामीके आगे आयकें कहते जो तुमारे पद सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न होंतहैं.

ये बातां सुनि गोविंदस्वामीनें ऐंसो विचार कियो जो श्रीगुसांईजीकूं मिलें तो ठीक तब एक समय श्रीगुसांईजीको सेवक महाबन गयो हतो सो भगवदिच्छाते श्रीगुसांईजीके सेवकको और गोविन्दस्वामीको मिलाप भयो. वा वैष्णवकी गोविन्दस्वामीकी आपसमें बात चीत भई. जब गोविन्दस्वामीनें कहीकें श्रीठाकुरजीको अनुभव कैंसे होय? जो मोकुं बहुत दिनसों या बातकी आतुरता है तातें कहो, तब वा वैष्णवनें गोविन्दस्वामीकी आतुरता देखिके कह्यो जो आजकाल श्रीठाकुरजीकुं श्रीविठ्ठलनाथ श्रीगुसांईजीनें बसकरराखें हैं तातें श्रीठाकुरजी और ठौर कहुं जाय सकत नहीं श्रीठाकुरजीतो श्रीगुसांईजीके हाथहैं सो यह सुनके गोविन्दस्वामीकुं अति आतुरता भई तब गोविन्दस्वामीनें उन वैष्णवसों कही जो मोकुं श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके पास लेचलो तब उहांसे उठे सो श्रीगोकुलमें आये तब श्रीगुसांईजी ठकुरानीघाट ऊपर संध्यातर्पण करत हते वा वैष्णवनें गोविन्दस्वामीकुं श्रीगुसांईजीको दर्शन करायो. गोविन्दस्वामी दर्शन करिके मनमें समझें ये कर्ममार्गीय दीखतहैं सो कहा कारण होयगो तब गोविन्दस्वा-

मीकुं देखके श्रीगुसांईंजी बोले जो आवो गोविन्द-स्वामी बहुत दिनसूं देखे तब गोविन्दस्वामीनें कही माहाप्रभु अबहीं आयोहूं तब गोविन्दस्वामीनें अपने मनमें विचार कियो कि आपने मोकुं कोई दिन देख्यो नहीं है सो कैसे जान गये ? यामें कछु कारण दीसतहै जब श्रीगुसांईंजी मंदिरमें पधारे तब गोविन्दस्वामीनें बीनति करी हे महाप्रभु ! मोकूं कृपाकरिके शरण लेओ तब श्रीगुसांईंजीनें कही न्हाय आवो. तब वे न्हाय आये तब श्रीनवनीतप्रियाजीके संनिधिमें नाम निवेदन करायो तब गोविंदस्वामीकुं साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम कोटिकंदर्पलावण्यके दर्शन भये और सब लीलानको अनुभव भयो श्रीगुसांईंजी श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवा करके बाहिर पधारे तब गोविन्दस्वामीनें बीनती करी, जो आपतो कपटरूप दिखावत हो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमरूप होयके वेदोक्त कर्म करत हो सो हम जैसेनकूं मोह होयहै जब श्रीगुसांईंजीनें आज्ञा करी जो भक्तिमार्गहै सो फूलको वृक्ष है और कर्ममार्ग है सो कांटनकी बारहै ॥ तासूं कर्ममार्गकी बार-विना भक्तिमार्ग जो फूलको वृक्ष वाकी रक्षा न होय ये सुनके गोविन्दस्वामी बहुत प्रसन्न भये। गोविन्द-

दास ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये प्रसंग ॥ १ ॥

सो गोविंददास महावनके टेकरापर रहते हते और नये कीर्तन करके गावते हते और उहां श्रीठाकुरजी सुनवेकुं पधारते हते, जब उहां मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखवेकुं आवते हते सो एकदिन श्रीठाकुरजीकुं गोविन्दस्वामीने कही इहां ताँई आप नित्य श्रम करोहो सो आपको गान सुनवेकी बहुत इच्छा दीखेहे, आपकुं गानको अभ्यास है यातें आपकुं कछु गायो चाहिये तब आपने कछुगान कियो तब गान सुनके श्रीस्वामिनीजी पधारी जब ताल स्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविन्दस्वामी धन्य धन्य कहन लगे और आपने भाग्यकी सराहना करन लगे जब मदनगोपालदास कायथ बोले जो इहां कोई आदमी तो दिसे नहीं है तुम कौनसूं बात करतहो.तब गोविन्दस्वामी कछु बोले नहीं, बात गुप्त राखी पाछे एकदिन श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो श्रीठाकुरजी कैसे गावेहैं तब गोविंदस्वामीनें कही श्रीठाकुरजी बहोत आछे गावे है परंतु तालस्वर श्रीस्वामिनीजी बहोत आछो देतहैं ये सुनके श्रीगुसांईजी मुसकायके चुपहोय रहे ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

सो गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुलमें रहते हुते सो उहां आंतरिगाममें पहले गोविंदस्वामीके सेवक हते सो श्रीगोकुल आये सो पूछत पूछत विनके पास गये,जायके पूंछी जो गोविंदस्वामी कहां है? तब विनने कही गोविंदस्वामी मरगये तब तिनमेंसूं एक पहचानतो हतो जब वान कही आप क्यों हमारी हाँसी करोहो. जब गोविंदस्वामीने कही हमने स्वामीपनो छोडदियो जासूं तुम ऐसे समझो जो मरगये हैं जब विनने बीनती करी जो अब हम सेवक कानक होंय ? जब गोविन्दस्वामीनें विनकुं लेजायके श्रीगुसांईजीके सेवक कराये सो गोविंद-स्वामीके संग सो विनकुं भगवत्प्राप्ती भई जिनके संगते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा नहोवै सब होवै विनकी बात कहा कहिये॥प्रसंग।३।

वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुलमें रहते परंतु श्रीय-मुनाजीमें पांव नहि देते श्रीयमुनाजीकुं साक्षात् श्रीस्वामिनीजी अष्टसिद्धीके दाता जानते जैसो स्वरूप श्रीमहाप्रभूजीने यमुनाष्टकमें वर्णन कियो है वैसे श्रीगुसांईजीकी कृपासे गोविंदस्वामी जानते हते जासुं श्रीयमुनाजीमें पांव नहीं धरते हुते और श्रीयमुनाजीके दर्शन करते और दंडवत करते

और पान करते सो एकदिन श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी गोविंदस्वामीकुं पकडके श्रीयमुनाजीमें नहायवे लगे जब गोविंदस्वामीने बीनती करी जो ये मलमूत्रको भऱ्यो देह श्रीयमुनाजीको छूने लायक नहीं है श्रीयमुनाजी साक्षात् स्वामिनी हैं जासूं ये अधम देहस्पर्शकरवे योग्य नहीं है और श्रीयमुनाजीकुं तो उत्तम सामग्री समर्पी चहीये ये सुनके श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी चुप कररहे सो वे गोविंदस्वामी ऐसो स्वरूप श्रीयमुनाजीको जानतहते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

श्लोक—गोगोपकैरनुवनं नयतोरुदारवेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सुसख्यः ॥ अस्पन्दनं गतिमतांपुलकस्तरूणां निर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रम् ॥

या श्लोकको व्याख्यान श्रीगुसांईजी गोविंदस्वामीके आगे कहने लगे जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसांईजी पौढे, गोविंदस्वामी घरकूं चले, तब श्रीबालकृष्णजी तथा श्रीगोकुलनाथजी तथा श्रीरघुनाथजी तीनों भाई वैष्णवनके मंडलमें विराजत हते जब गोविंदस्वामीनें जायके दंडवत करी तब श्रीगोकुलनाथजीनें पूछे जो श्रीगुसांईजीके इहां कहा प्रसंग चलतो हतो. जब गोविन्दस्वामीनें ये श्लोककी सुबोधिनीजीको

प्रसंग कह्यो. फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें यामें कहा कहनो जाके स्वरूपको वेद हूं नहीं जानसकें वाको व्याख्यान वे आपही करें तब होय जब ऐंसे कह्यो तब श्रीगोकुलनाथजीनें दोनों भाइ नसों कही जो गोविदस्वामीनें श्रीगुसांईजीको स्वरूप कैंसो जान्योहै और इनके ऊपर आपने कैंसी कृपा करी है सो इनके भाग्यको कहा वर्णन कारिये ये कहिके श्रीगोकुलनाथजी चुपहोय रहे ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

सो गोविन्दस्वामी श्रीनाथजीके संग खेलते हते सो एक दिन अपछरा कुंडसों गोवर्धनपर्वतऊपर होंयकें श्रीगोवर्धननाथजीके संग गोविन्ददास आवते हते सो उहांसे राजभोगकी आरती भई ऐसी अवाज सुनी जब गोविन्दस्वामीनें कहि श्रीनाथजी तो अबी आवतहैं राजभोग कौननें अरोगे हैं गोविदस्वामीनें जायके श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जब श्रीगुसांईजीनें दूसरो राजभोग सिद्ध करायके धरायो और गोपालदासभीतरियानें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो एकदिन पूंछरीकी औरतें गोविन्ददास श्रीनाथजीके संग आवते मेनें देखे हते जब श्रीगुसाईजीनें कही जो कुंभन-

दास तथा गोविंदस्वामी तथा गोपिनाथदास ग्वाल ये तीनों श्रीनाथजीके एकांतके सखाहै सो इनकुं अधिकार श्रीमहा प्रभूजीनें दियोहै ये बात सुनके गोपालदासजी बहुत प्रसन्न भये और अपने मनमें कहेवे लगे जो हम भितरियाभये तो कहा भयो सो वे गोविन्दस्वामी ऐसे भगवदीय कृपापात्र हते प्रसंग ॥ ६ ॥

सो एकदिन गोविन्द स्वामी उत्थापनके समय श्रीनाथजीके दर्शनकुं गये जब देखें तो श्रीनाथजीके पागके पेच खुल रहे हते तब गोविदस्वामीनें कहीके पागके पेच क्यों खोलडारेहें जब श्रीनाथजीनें कही तूं पागके पेंच संवारिदे तब गोविन्दस्वामीनें भीतर जाइके पागके पेंच संवारदिये तब भीतरियानें श्री गुसाईजीसों कही जो गोविन्ददासनें अपरस छिवाय दीन्हीहै पाछें श्रीगुसांईजीनें आज्ञा कारि जो गोविन्ददाससें श्रीनाथजी नहीं छुआयजाय येतो श्रीनाथजीके संग सदैव खेलें हैं सो गोविन्दस्वामी ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

एकदिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीको शृंगार करत हते तब गोविंदस्वामी जगमोहनमें कीर्तन करत हते तब श्रीनाथजीनें गोविन्ददासकुं आठ

कांकरी मारी जब गोविन्दस्वामीनें एक कांकरी मारी तब श्रीनाथजी चमक उठे जब श्रीगुसांई-जीनें कही गोविन्ददास यह कहा कियो ? तब गो-विन्दस्वामीनें कही हे महाराज ! आपकोतो पूत औरको मूलीकर जो आठ वखत मोकुं कांकरी मारी जब आप कछू नहीं बोले ये सुनके श्रीगुसांईजी चुपकरि रहे सो गोविन्ददासजीकुं ऐसो सखा भाव सिद्ध भयो हतो ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥

एकदिन गोविन्ददासकी बेटी देसमेंसो आई परंतु गोविन्दस्वामी कोई दिन वा बेटीसुं बोले नहीं जब कान्हबाईनें कही जो बेटीसुं एकदिन तो बोलो तब विननें कही जो मनतो एकहै इतको लगाऊं के उतके लगाऊं ? फेर कछूदिन रहिके बेटी देसकुं जाने लगी जब वहु बेटिननें साडीचोली पठाई तब गोविन्दस्वामीके मनमें दया आई जो गुरुके घरको अनप्रसादी लेवेगी तो याको बिगार होयगो वे गोविन्दस्वामी कोईदिन बेटीसें बोलते न हते तो परंतु दयाकेलियें बोले जो तूं ये लेवेगी तो तेरो बुरो होयगो जब बेटीनें कही मोकुं समज नहीं हती तो मोकुं तुमनें बडी कृपा कारिके रस्ता बतायो तब वे सब कपडा पाछें पठाय दिये बेटी अपनें

घरकों गई सो वे गोविंदस्वामी गुरुकी अंशसो ऐंसे डरपत हते ॥ प्रसंग ॥ ९ ॥

और फागनके दिन हते सो सेनभोग सरायकें श्रीगुसांईजी बीडी अरु गावत हते तब गोविन्द-स्वामी धमार गावत हते सो धमार श्रीगोवरधन-रायलाला ये धमार पूरी करे बिना गोविंदस्वामी चुप कर रहै जब श्रीगुसाईजीनें आज्ञा करी गोविंददास धमार पूरी करौ तब गोविंदस्वामीनें कही महाराज धमारतो भाज गईहै वेतो घरमें जाय घुसे खेलतो बंद भयो अब कहा गावूं ये सुनके श्रीगुसांईजी चुप कर रहे पाछे बैठकमें पधारे जब एक तुक आपनें बनायके गोविंद स्वामीके नामकी वा धमारमें धरी वादिनसू गोविंदस्वामीकी धमार लोकमें साढे बारह कही जायहै सो गोविंदस्वामी ऐंसे कृपापात्र हते जो लीलाके दर्शन करिकें गान करते हते॥प्रसंग॥ १०॥

सो वे गोविंदस्वामी महाबनके टेकरापर नित्य गान करते हते । श्रीनाथजी नित्य सुनिवेकुं पधा-रते हते और श्रीनाथजीसङ्ग गानहू करते हते और वे गोविंदस्वामी भगवल्लीलामें अष्ट सखानमें हते सो कोइ समें श्रीनाथजी चूकते सो गोविंदस्वामी भूल काढते और गोविंदस्वामी चूकते जब श्रीना-

थजी भूल काढते श्रीनाथजी तथा गोविंदस्वामीके गान सुनिवेके लिये श्रीगोकुलनाथजी नित्य पधारते और एक मनुष्य बैठाय राखते जो श्रीगुसांईजी भोजन करवेकुं पधारें तब मोकुं बुलायलीजो एकदिन वा मनुष्यके मनमें ऐसी आई जो श्रीगोकुलनाथजी नित्य श्रीगुसांईजीसों छाने पधारते हैं एकदिन जो मैं नबोलाओं तो गुसांईजी सब जान जाएंगे जब श्रीगोकुलनाथजीतो नित्य जाते बंद होय जाएंगे य समझके वे मनुष्य एकदिन बुलायवे न गयो जब श्रीगुसांईजी भोजनको पधारवे लगे तब सब लालजी आए श्रीगोकुलनाथजी न आए तब श्रीगुसांईजीनें दूसरे मनुष्यकुं आज्ञा करी जो गोविंदस्वामीके पास बल्लभजी बैठेहैं विनको बुलाय लाव. जब दूसरो मनुष्य बुलाय लायो तब वे मनुष्य जो जानके बोलावे नहीं गयो हतो सो पश्चात्ताप करवे लग्यो जो श्रीगुसांईजी तो सब जानते हैं मैंने काहेको श्रीगोकुलनाथजीसों कुटिलता करि ऐसो पश्चात्ताप भयो; सो वे गोविंदस्वामी ऐसे कृपापात्र हते जो तिनके सङ्ग श्रीनाथजी क्षणक्षण आयके बिराजते हते ॥ प्रसंग ॥ ११ ॥

वे गोविंदस्वामी पाग आछी बांधते हते सो

टूक टूक पाग होती तब कोईकुं खबर न हती जब एकदिन एक ब्रजवासीनें गोविंदस्वामीकी पाग आछी जानके उतारलीनी तब गोविंदस्वामीनें कही सारे ये टूक संभारके धरराखियो काल तेरे घरकुं आयके लेजाऊंगो वे ब्रजवासीनें पांव परके पाग पाछी दीनी वे गोविंददासकुं पाग बांधवेकी ऐंसी चतुराई हती ॥ प्रसंग ॥ १२ ॥

सो गोविंददास नित्य जसोदाघाटपर जाय बैठते सो उहां एकदिन एक बैरागी गायवे लग्यो सो राग तालस्वर हीन हतो जब गोविंदस्वामीनें कही जो तुं मत गावै या गायिवेसों कहा होत है तब वा बैरागीनें कही मैंतो मेरे रामकों रिझावतहौं जब गोविंदस्वामीनें कही राम तौ चतुरशिरोमणी है सो कैंसे रीझेंग जो तेरो साचो भाव होय तौ मनमें नाम लिये सो रीझेंगे सो वे गोविंदस्वामी ऐंसे निःशंक हते ॥ प्रसंग ॥ १३ ॥

सो एकदिन श्रीनाथजी सामढाकके ऊपर चढिके विराजते हते और मुरली बजावत हते और गोविंददास दूरसों टेकराके ऊपर बैठ देखते हते और वाही समय श्रीगुसांईजी न्हायकें उत्थापन करवेके लिये श्रीगिरिराज ऊपर पधारे सो श्रीना-

थजीनें सामढाकपैंसुं देखे और उतावलसों कूदे और वागाको दांवन फट गयो और लीर झाडपैं रहि गई तब श्रीगुसांईजीनें कैंवार खोलिके उत्थापन करे देखेंतो वागाको दांवन फट्यौ है जब मनुष्यनसों पूछी जो इहां कोई आयो तौ नहीं हतो तब सबनें नाहीं कही जब आप विचार करवें लगे तब गोविंददासने कही जो आप या बातको विचार कहाकरें हें लरिकाको सुभाव जानें नहीं हें जो बहुत चंचल है स्यामढाकपैंसूं कूदिके वागाको दांमन फाड्यो है सो आप चलोतो दिखाऊं ऐंसे लीर लटक रहीहे जब श्रीगुसांईजी पधारके वा लीर उतारि लाये तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीसों पूछी जो आपनें उतावल काहेकों करी तब श्रीनाथजीनें कही जो उत्थापनको समय भयोहतो और आप न्हायके पधारे हते जासूं उतावल भई वा दिनतें ऐंसो बंदोबस्त कर्यौ जो तीन वेर घंटानाद तथा तीन वेर शंखनाद करिके और वीस पल रहिके मंदिरके किंवार खोलके उत्थापन करनें सो वे गोविंददास ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ प्रसंग १४॥

एकदिन आगरेमें अकबर पातशाहनें सुन्यो जो गोविंदस्वामी बहुत आछे गावतहैं और निर-

पेक्षहैं और निःशंकहैं जब इनके मुखको राग कैसे सुन्यो जाय ये विचार करिके पातसाही वेष पलटकें श्रीगोकुलमें इकेले आए जब गोविंददास जसोदाघाटपर भैरव राग अलापत हते तब वा पातशाहनें वाहवा वाहवा करी जब गोविंददासनें कही ये राग छीगयो जब वानें कही जो मैं पातशाहहूं जब विनने कही जो तुम पातशाहहो तो पातशाही करौ परंतु ये रागतो तुमारे सुनवेसूं छिवाय गयो जब पातशाहने विचार कऱ्यो एक देसको मैं राजा हूं और इनकोंतो त्रिलोकीको वैभव फीको लगेहैं जासूं ये काहेकूं अपने हुकुममें रहेंगे ये विचारि पातशाह चले गये और गोविंदस्वामीने वादिनसूं भैरव राग गायो नहीं वे गोविंदस्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते ॥ प्रसंग ॥ १५ ॥

और वे गोविंदस्वामीके संग श्रीनाथजी नित्य वनमें खेलते और कोईदिन गोविंददासको घोडा करते और कोईदिन हाथी करते ऐंसे नित्य क्रीडा करते सो एकदिन श्रीनाथजीने गोविंदस्वामीकुं घोडो कऱ्यो हतो और ऊपर आप असवार भये हते सो गोविंदस्वामीने घोडाकीसीन्याईं लघुशंका करी ये बातें एक वैष्णवनें देखी सो श्रीगुसईंजीसों

जायके कही जब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी जब गोविंदस्वामी हाथी घोडा होतेहैं सो हाथी घोडाको स्वांग पूरो न करें तो कैसे होवे और इन बातनमें तुम मत पडो ये बात सुनके वे वैष्णव चुप कारिगयो सोवे गोविन्दस्वामी ऐंसे कृपापात्र हते॥ प्रसंग॥ १६

एक दिन गोविन्दास श्रीगुसांईजीके संग मथुराजीमें केशवरायजीके दर्शनकुं गये तब उष्णकाल हतो और सब जरीको वागा जरीकी ओढनी देखके गोविन्ददासनें केशवरायजीसों पूछो जो नीकेतोहो? सो सुनकें केशवरायजी मुसकाये जब श्रीगुसांईजीनें कही जो गोविन्ददास ऐंसे न बोलिये तब गोविन्ददासनें कही महाराज मांदी मनुष्यको पोसाक पहेऱ्यो है जब कैसे न पूंछो जाय ये सुनिके श्रीगुसांईजी चुपकररहे ॥ प्रसंग ॥ १७ ॥

और एकदिन श्रीनाथजीके राजभोग आवते हते तब भीतरियासों गोविन्दस्वामी कही जो राजभोग धरे पहिले मोकूं प्रसाद लेवाव जब भीतरियाननें थार पटिकदियो और श्रीगुसांईजीकूं पुकार करि. जब श्रीगुसांईजीनें गोविन्ददाससों पूछी यह कहा जब गोविन्दस्वामीनें कही जो आप संगमें मोकुं खेलवेकूं लेजाएहै और जो पाछे प्रसादले वेकूं रहि

जाऊं तो वनमें पाछे मोकुं श्रीनाथजी मिले नहीं है जब कैसें करूं ये सुनके श्रीगुसांजीनें ऐसी बंदोबस्त करी जो राजभोग आवेके समय गोविन्ददासकुं प्रसाद लेवावनो ऐसी भंडारीसों आज्ञा करि सो वे गोविन्दस्वामी ऐसे कृपापात्र हते जिन बिना श्रीनाथजी रहि नहीं सकते ॥ प्रसंग ॥ १८ ॥

एक दिन श्रीनाथजी गोविन्दस्वामी संग खेलते हते तब श्रीनाथजीके ऊपर दाव आयो तब उत्थापनको समय भयो तब श्रीनाथजी भागके मंदिरमें घुसगये तब मंदिरमें भीतर जायकें श्रीनाथजीकुं गीली मारि तब सेवक टहेलबाननें गोविन्ददासकुं धक्का मारके बाहेर काढदिये और उत्थापन भोग धर्‍यो तब गोविन्दस्वामी जायके रस्तामें बैठे और कहे जो अबिगायनके संग श्रीनाथजी ये रस्तापर आवेंगे और याको मार देउंगो पीछे श्रीगुसांईजी न्हायके मंदिरमें पधारे देखें तो श्रीनाथजी अनमनें होय रहेहै और उत्थापनकी सामग्री अरोगें नाहीहै तब श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीसों पूछे जो कैसेहो तब श्रीनाथजीने कहि जो जहांसुधि गोविन्ददासकुं नहिंमनावोगे तहांसुधि मोकुंकछू भावेगो नहीं काहेतें मोकुं रस्ता चलेविना और वाके संग

खेले बिना सरेगो नाहिं अबि रस्तामें जाउंतो अन गिनतीनाकि मारदेवेगो याचिंताकेलिये मोकुं कछू भावै नाहिं है गोविन्ददास आवेगो जब कछु भावेगो ये बात सुनके और श्रीनाथजीकी भक्तवत्सलता देखके श्रीगुसांईजीको हृदय भर आयो तब गोवि-न्ददासकु बुलायके और मनायके श्रीनाथजीसुं बीनति करि जो ये हाजिरहै अब आयगयेहै तब श्रीनाथजीअरोगे सो वे गोविन्ददास ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १९ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥

गोविन्ददासकी भैन कान्हबाई हति. तिनकी वार्ता ॥

सो कान्हबाई श्रीनवनीतप्रियाजीकुं माथे पध-रायके सेवा करत हती और श्रीठाकुरजी विनकुं अनुभव जतावतहते हंसते और बोलते जो चाहिये सोमांगलेते और वे कान्हबाई जादिनश्रीगुसांईजीके घर सेवामें जाती जब रसोई न करती हती तब पातर लायके भोग धरती हती और वे कान्हबाई कछुक सामग्री घरमें कर राखती हती जब श्रीठाकु-रजी लरकानकीन्याई मांगते तब वे देति॥ प्रसंग॥ १

एकदिन कान्हबाई श्रीठाकुरजीकुं देवका बेटी-जीके पास पधरायके महाबनगई रातकुं आयसकी

नहीं तब देवका बेटीजीनें अपने श्रीठाकुरजी पोढाये तब कान्हबाईके ठाकुरजीकुं पोढावते भूलगई हती जब कान्हबाईकुं श्रीठाकुरजीनें महाबनमें जतायो जो देवका बेटीजी मोकुं पोढावतें भूल गई है सिंघासनपै एकलो बैठो डरपत हूं जब कान्हबाई रातकों उहांसे चली सो श्रीगोकुल आयके देवका बेटीजीकुं जगायके अपने श्रीठाकुरजीकुं पधरायके घर लेजायके पोढाये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

एकदिन कान्हबाईसों श्रीगोकुलचंद्रमाजीनें कही कि मेरी शय्यामें कछु चुभतहै तब कान्हबाईनें जायके नारायणदास ब्राह्मचारीसों कही जो श्रीठाकुरजीकुं तो शय्या चुभेहै जब नारायणदासने शय्याकी गादी खुलाई तब रूईमेंसो बनौरा निकसे जादिनतें नारायणदास ब्रह्मचारी शय्याकी गादी अथवा रजाई नई भरावते जब अपणे हाथनसूं रूईके पेल देखके धरते सो वे कान्हबाई ऐसे कृपापात्र भगवदीय हती ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

एकदिन कान्हबाई श्रीगुसांईजीके घर श्रीनवनीतप्रियाजीके पालनेके दरशन करवेकुं गई जब जायके देखें तो श्रीनवनीतप्रियाजीतो अकेले झूलेहैं तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कही जो कान्ह-

बाई तूं मोकुं झुलाय तब कान्हबाई झुलावे बैठी जब श्रीगिरिधरजी पधारे तब कान्हबाईनें खीजकर कही जो तुमने श्रीठाकुरजीकुं इकेले क्यों छोडे तब श्रीगिरिधरजीनें कही जो अब कोई दिन नहीं छोडूं-गो सो वे कान्हबाई ऐंसी कृपापात्र हती॥ प्रसंग॥ ४॥

एकदिन श्रीगोकुलनाथजीनें श्रीगिरिधरजीकुं यज्ञकरवेकुं पूंछो जो हमारी यज्ञ करवेकी इच्छा है तब कान्हबाई बोली जो यज्ञरूप श्रीगोवर्धनध-रजी तुमारे माथे बिराजेहैं इनके सेवेसों सब यज्ञ-होय जाएंगे ये सुनके श्रीगोकुलनाथजीने यज्ञ करि-वेको विचार बंद राख्यो सो वा कान्हबाईकी सब बालक ऐंसी कान राखते हतें॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक छीतस्वामी चौबे तिनकी वार्ता ।

वे छीतस्वामी मथुरामें रहतेहते और मथु-राजीमें पांच चौबे बडा गुंडा हते और ठगाई करते और छीत चौबे विन पांचनमें मुख्य हतो सो विननें विचार कर्‍यो जो कोई गोकुलमें जाय है सो श्रीवि-ठ्ठलनाथजीके वस होय जाय है॥ जासूं ऐसो दीसेहै जो श्रीविठ्ठलनाथजी जादू टोना बहोत जानेहैं परंतु हमारे ऊपर टोना चले तब साँची मानें ये विचार पांचौ चौबेननें कर्‍यो तब एक खोटो नारियल और

खोटो रुपैया लेके पांचों चौबे श्रीगोकुल आये तब चार चौबेतो बाहेर बैठ रहे और मुख्य जो छीत चौबे हतो विनकुं भीतर पठायो सो वे छीत चौबानें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैया जायके भेट धऱ्यो तब श्रीगुसांईजीनें खवाससूं आज्ञा करी जो या रुपैयाके पैसा लेआव जब रुपैयाके पैसा आये और नारियल फोड्यो तब सुफेद गरी निकसी तब छीत-स्वामी देखिके मनमें विचारी जो येतो साक्षात् ईश्वर हैं जब छीतस्वामीनें कही जो महाराज मोकुं शरण लेओ जब श्रीगुसांईजीनें छीतस्वामीकुं नाम सुनायो पाछे श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करवेकुं गये भीतर देखें तो श्रीगुसांईजी बिराजे हैं और बाहेर आयके देखे तो बिराजें हैं जब छीतस्वामीने विचारी जो श्रीगुसांईजीकी ईश्वरता जीवसों जानी नहीं जाय है जब वे चार चोबे बाहर बैठे हते विननें छीतस्वामीकुं बुलाये तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम्हारे सङ्गी बाहेर तुमकुं बुलावत हैं सो तुम जाओ तब छीतस्वामीनें बाहर आयके चारौं चौबानसे कही मोकुं टोना लगगयोहै तुम भाग जावो नहिं तो तुमको लगजायगो ये सुनके चारौं चौबे भाग गये। छीतस्वामीनें एक पद करिके गायो

राग नट—भई अब गिरिधरसों पहेचान ॥
कपटरूप धरि छलवेआयो पुरुषोत्तम नहि जान ॥ १ ॥
छोटो बडो कछू नहि जान्यो छायरह्योअज्ञान ॥
छीतस्वामि देखत अपनायौ श्रीविठ्ठलकृपानिधान ॥ २ ॥

ये पद सुनके श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये और छीतस्वामी रातकुं उहां सोय रहे फेर दूसरे दिन छीतस्वामीकुं श्रीगुसांईजीनें निवेदन करवाये तब छीतस्वामीकुं साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये और भगवल्लीलाको अनुभव भयो और श्रीगुसांईजी तथा श्रीठाकुरजीके स्वरूपमें अभेदनिश्चय भयो दोनों स्वरूप एकहै ऐसे जानन लगे तब छीतस्वामी गोपालपुर श्रीनाथजीके दर्शनकु गये उहां श्रीनाथजीके पास श्रीगुसांईजीकुं देखे जब बाहेर निकसके पूंछी जो श्रीगुसांईजी कब पधाऱ्ये हैं तब उहांके लोगनमें कही श्रीगुसांईजी तो गोकुलबिराजेहै जब छीतस्वामी उहांते श्रीगोकुलमें आयके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये जब छीतस्वामीनें ये निश्चय कियो जो श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजी एकही स्वरूप है जबसूं छीतस्वामीजीनें "गिरिधरन श्रीविठ्ठल" ऐसी छापके बहुत पद गाये सो वे छीतस्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ प्रसंग॥१॥

सो वे छीतस्वामी बीरबलके पुरोहित हते सो वे बीरबलके पास वसौंधी लेवेकुं गये तब सवारके समें छीतस्वामीनें यह पद गाये "जे वसुदेव किये पूरण तप सोई फल फलित श्रीवल्लभदेह" ये पद सुनके बीरबल बोले जो मैंतो वैष्णव हूं परंतु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तौ तुम कहा जबाब देओगे वे तौं म्लेच्छ है तब छीतस्वामी बोले जो देशाधिपति पूछेंगे तौ में नीके जबाब देउंगो और मेरे मनसूं तो तूही म्लेच्छ है आज पछि तेरो मुख न देखूंगो ऐसे कहके छीतस्वामी चले गए ॥ जब ये बात देशाधिपतीनें सुनी तब बीरबलसूं पूंछो जो तुमारे पुरोहित क्यों रिसाय गये तब बीरबलनें सब बात देशाधिपति आगे कही ब्राह्मणलोग वृथा रिस बहुत करे है तब देशाधिपतीने कही जो तुम और हम नावपे बैठे हते जब दीक्षितजीनें मोकुं आशीर्वाद दियो हतो तब मैनें मणी भेट करी हती वे मणी कैसी हती जो पांच तोला सोना नित्य देती हती सो वे मणी दीक्षितजीने श्रीयमुनाजीमें पटक दीनी जब मेरे मनमें बडो गुस्सा लग्यो तब मैंने मणी पाछी मांगी तब दीक्षितजीने श्रीयमुनाजीमेंसुं खोच भरिके मणी काढी तब हमकुं कही

तुमारी होयसो पहिचान लेओ जब हमकूं ये नि-
श्चय भयो ये साक्षात् ईश्वरहैं ईश्वरविना ऐसो
कारज नहीं होयगो ये बात विचारकरतें तुमारे
पुरोहितकी सब बात साचीहै सो तुमनें क्यों
विचार न कऱ्यो ये बात सुनके बीरबल बहोत
खिसानो भयो और कछू बोल्यो नहा और ये
बात श्रीगुसांईजीनें सुनी तब लाहोरके वैष्णव आये
हते विनसों आज्ञा करी जो छीतस्वामीकी खबर
राखते रहियो जब छीतस्वामी बोले जो मैंनें वैष्ण
वधर्म विक्रय करवेकुं लियो नहीं है मेरेतो विश्रांत
घाट है सो आपकी कृपासों सब चलेगो ये बात
सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये ॥ प्रसंग॥२॥

एकदिन बीरबल देशाधिपतीसों रजालेके श्रीगो-
कुलमें जन्माष्टमीके दर्शनकुं आयो पाछे वेषपलटा-
यके देशाधिपती हूं छानेछाने आयो तब जन्माष्ट-
मीके पालनाके दर्शन करे मनुष्यकी भीडमें तब
देशाधिपतीकुं श्रीगुसांईजी विना और कोईनें पहि-
चान्यो नहीं तब छीतस्वामी कीर्तन करते हते और
श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियाजीकुं पालना झुलावते
हते तब छीतस्वामीनें ये पद गायो-

प्रियनवनीत पालनें झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावेहो ॥
कबहुंक आप संगमिल झूले कबहुंक उतर झुलावैहो ॥१॥

कबहुंक सुरंग खिलोना लैलै नानाभांति खिलावे हो ॥
चकई फिर कनीलेबिंगी टु झुणझुणहात बजावें हो ॥ २ ॥
भोजन करत थाल एकझारी दोउ मिल खायखवावें हो ॥
गुप्त महारस प्रकटजनावे प्रीति नई उपजावें हो ॥ ३ ॥
धन्यन्यभाग्यदासनिजजनकेजिनयहदर्शनपाएहो ॥
छीतस्वामीगिरिधरन श्रीविट्ठल निगम एककरगाएहो॥४॥

ऐसे दर्शन छीतस्वामीकुं भए और देशाधिपतीकुं हूं ऐसे दर्शन भए और मनुष्यनकुं साधारण दर्शन भए तब देशाधिपता चले तब श्रीगुसांईजीनें गुप्तरीतिसु देशाधिपतीकुं महाप्रसाद दिवाये तब देशाधिपती आगरे आये फेर दूसरे दिन बीरबलहूं आए तब देशाधिपतीनें बीरबलसूं पूछी जो कहा दर्शन किये तब बीरबलनें कही श्रीनवनीतप्रियाजी पालना झूलते हते और श्रीगुसांईजी झुलावते हते तब देशाधिपतीनें कही ये बात झूठी है श्रीगुसांईजी पालना झूलते हते और श्रीनवनीतप्रियाजी झुलावते हते मोकुं ऐसे दर्शन भएहैं और छीतस्वामी तुमारे पुरोहित ऐंसे कीर्तनगावते हते और मैं तेरे पास ठाडो हतो तब बीरबलनें कही मोकुं ऐसे दर्शन क्यूं नहीं भये तब देशाधिपतीनें कही तुमकुं गुरूके स्वरूपको ज्ञान नहींहै और तुमारे पुरोहित छीतस्वामी जिनकुं इन बातको अनुभव

है ऐसेनसों तुमारी प्रीती नहींहै जब तुमकं ऐसे दर्शन काहेकुं होवें सो वे छीतस्वामी ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवकचतुर्भुजदास कुंमनदासके बेटा ति० वा०॥

सो वे कुंमनदासजी श्रीनाथजीके संग खेलते हते सो एकदिन कुंमनदासकुं श्रीगोवर्धननाथजीनें चारभुजा धरिके दर्शन दिये वाहीदिन बेटाको जन्म भयो जासूं वा बेटाको नाम चतुर्भुजदास धर्‍यो ये बात कुंमनदासजीकी वार्तामें लिखीहै सो वे चतुर्भुजदासजी ११ दिनके भये ताही समय कुंमनदासजीनें श्रीगुसांईजीके पास लेजायके नाम सुनवाये और चतुर्भुजदास जब ४१ दिनके भये तब कुंमनदासजीनें श्रीगुसांईजीके पास लेजाय निवेदन करवाये वादिनतें चतुर्भुजदासमें श्रीनाथजीनें इतनी सामर्थ्य धरी जब इच्छा आवे तब मुग्धबालक होय जाय और इच्छा आवेतो बोलवें चालवे सब अलौकिक बातें करवे लगजाय जब कंमनदासजी एकांतमें बैठे तब चतुर्भुजदास कुंमनदाससों भगवद्वार्ता करें और पूछें और पद गावें और जब लौकिक मनुष्य आयजाय तब चतुर्भुजदास मुग्धबालक बनजाय ऐसी सामथ्य श्रीनाथजीनें चतुर्भुजदासमें

धरदीनी सो जब श्रीनाथजी इच्छा करते तब चतुर्भुजदासकुं साथ खेलवेकुं लेजाते और जैसी लीलाके दर्शनकरते तैसे पद गावते सो वे चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

सो एकदिन श्रीनाथजी एक व्रजबासीके घर माखनचोरीकरवेकुं पधारे और चतुर्भुजदासजीकुं संग ले पधारे और उहां एक व्रजबासीकी बेटीके चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथजीतो नजर नाहीं पडे और चतुर्भुजदास पकडाय गये सो विनने मार खाई पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथजीके पास गए जब चतुर्भुजदासजीने कही जो महाराज मोकुंतो आछी मारखवाई. श्रीनाथजीने कही जो तेरेमें सामर्थ्य ओछी नहींहती जब तू क्यों न भाग आयो सो वे चतुर्भुजदास श्रीनाथजीके अन्तरङ्ग लीलामध्यपाती हते तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और जादिन चतुर्भुजदासजीकुं प्रथम लीलाको अनुभव भयो वादिनते सर्व व्यापी वैकुण्ठ सम्बन्धीलीला सर्वत्र दर्शवे लगी सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्धननाथजीने कृपाकरिके धरी जब कुम्भनदासजीकूं पोढवेके दर्शन होते हते तब कुंभनदासजी कीर्तन गायवे लगे सो पद–

" वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढे ऊंची चित्रसारी"
सो इतनी तुक जब कुंभ०ने गाई तब चतुर्भुंदासजी–
" गायउठेसुंदरबदनानिहारनकारनबहुतयतनराखेकरप्यारी ।"

ये सुनिके कुंमनदासजीने निश्चय कन्यो जो इनकुं श्रीगुसांईजीकी कृपासों सम्पूर्ण अनुभव भयो सा बडी कृपा मानके बहोत प्रसन्न भये जादिनते चतुर्भुजदास कहुंजाते अथवा नहीं जाते अथवा अवार सवार आवते सो कुंमनदासजी कछू कहते नहीं ऐसो जानते जो श्रीनाथजीके सङ्ग खेलत होयेंगे सो चतुर्भुजदास ऐसे भगवत्कृपापात्रभगवदीय हुते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एकदिन श्रीगोवर्धननाथजीके शृङ्गारके दर्शन चतुर्भुजदासजीने कीने और श्रीगुसांईजी आरसी दिखावतेहते तासमें चतुर्भुजदासजीने ये पद गायो–

' सुभगशृङ्गारनिरखमोहनकोलेदर्पणकरापियहि दिखावें।आपु न नेकनिहारियेबलिजाऊंआजकीछबिकछूकहत न आवें ॥ १ ॥

ता पीछे गोविन्दकुण्डऊपर श्रीगुसांईजी पधारे तब एकवैष्णवनें पूछयो जो महाराज चतुर्भुंजदासजीने आजकी छबि कछु बरनिन जावे ऐसे गायो और आपतो नित्य शृङ्गार करे है और आरसी दिखावें है सो आजके पदको अभिप्राय कछु सम-

झमे नहीं आयो जब श्रीगुसांईजीने कही सो चतुर्भुजदाससों पूंछियो तब वा वैष्णवने चतुर्भुजदाससों पूछो जब चतुर्भुजदास जीने औरभी पद गायो " सो पद–

" माई री आज और काल और छिनछिन प्रति और और "

ये पद सुनिके वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसो पूंछ्यो जो भगवल्लीला तो नित्य है और सर्वत्र है जब चतुर्भुजदासजीनें और और क्यों कही तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी भगवल्लीलामें विलक्षणपणो येईहै जो नित्य है क्षणक्षणमें नूतन लागतहै और लीलास्थ जीवनकूं और लीलाके दर्शनकरवेवारेनकूं क्षणक्षण-नूतन लगतहै और नूतन रुचि उपजे है सो गोपाल-दासजीनें गायोहै । चौथे आख्यानमें पांचमी तुक--

एक रसना किम कहूं गुण प्रकट विविध विहार ।
नित्यलीला नित्य नूतन श्रुति न पामे पार ॥

ऐसी भगवल्लीला है ये सुनके वो वैष्णव बहोत प्रसन्न भयो और वे चतुर्भुजदास ऐंसे कृपापात्र हुते जिनको नित्यलालाको अनुभव सर्वत्र होय गयो ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

एकदिन श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल बिराजते और श्रीगिरिधरजीसों लेके सब बालक श्रीजीद्वार बिराजते हते तब उहां रासधारि आये तब श्रीगोकुल-

नाथजीनें श्रीगिरिधरजीसों पूंछकें परासोलीमें रास करायो और रासमें खूब गान भयो जब चतुर्भुजदासजीसुं श्रीगोकुलनाथजीनें आज्ञा करी जो तुम कछु गावो तब चतुर्भुजदासजीनें कही जो मेरे सुनवेवारे श्रीनाथजी नहीं पधारे हैं जासूं मैं कैसे गाऊं जब श्रीगोकुलनाथजीने कही जो श्रीनाथजी अबी पधारेंगे ये बात श्रीगोकुलनाथजीकी सत्य करवेकेलियें श्रीनाथजी जागके और श्रीगिरिधरजीकुं जगायके श्रीनाथजी परासोली पधारे और श्रीगिरिधरजी पधारे और चतुर्भुजदासकूं और श्रीगोकुलनाथजीकूं दर्शन भये और कोईकुं दर्शनभये नहीं तबश्रीनाथजीके दर्शनकरकें चतुर्भुजदासजी गावे लगे जब अधिक सुख भयो रातहुं बढ गई और चतुर्भुजदासजीनें गायो सो पद-"अद्भुतनटभेखधरे यमुनातटश्यामसुंदरगुणानिधान गिरिवरधरनरासरंगराचें॥पद दूसरो-" प्यारीग्रीवाभुजमेलनृत्यत प्रियासुजान" ॥ ऐंसे ऐंसे चतुर्भुजदासजीनें बहुत पदगाये जब रास भयो तब परम आनंदभयो फेर श्रीगिरिधरजीनें श्रीनाथजीकुं रातके जगेजानके सवारे जगाए नहीं इतनेमें श्रीगुसांईजी गोकुलतें पधारे और पूंछी जो कहा समय है जब श्रीगिरि-

धरजीनें कही जो श्रीनाथजी जागे नहीहै रातकुं रासमें जगे हते जब श्रीगुसांईजीनें कही जो श्रीनाथजीतो सदैव रास करेंहैं और सदैव जगेंहै जासूं शंखनाद करावो जब शंखनाद करायके श्रीनाथजीकुं जगाए फेर श्रीगोकुलनाथकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो ऐसो आग्रह कारिके श्रीनाथजीकुं पधरावनेनहीं एतो सदैवअपनी इच्छातें रास करतहै जासूं बीनतीकारिके पधरावने नहीं. वे। चतुर्भुजदासजी ऐंसे कृपापात्र हते के श्रीनाथजीके विना दूसरे ठिकाने गान नहीं करत हते ॥प्रसंग ॥ ६ ॥

एकदिन श्रीगुसांईजीने चतुर्भुजदाससों आज्ञा करी जो अपछराकुंडऊपर जायके रामदासभीतरीयाकुं बुलायलावो और तुम फूल लेआवो तब चतुर्भुजदास जायके रामदासजीकुं बुलायके आप फूल वीनके आवते हते जब श्रीगोवर्धनपर्वतकी कंदरासूं बाहेर श्रीनाथजी श्रीस्वामिनीजी सहित पधारे और श्रीस्वामिनीजीनें मनमें ये विचार कऱ्यो जे यह लीला कोई जानेनहीहै इतनेमें चतुर्भुजदासजीनें दर्शन करिके ये पद गायो–

"गोवर्धन गिरि सघनकन्दरा रैन निवास कियो पियप्यारी ॥"

और दूसरो पद गायो–"रजनीराजकियोनिकुंजनगरकी रानी"

ये पद सुनके श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न भई फेर चतुर्भुजदासजी फूललेके श्रीगुसांईजीके पास गए सो वे चतुर्भुजदासजी ऐंसे कृपापात्र हते जो श्रीनाथजीके तथा श्रीस्वामिनीजीके मनकी जानवेवारे भये ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

सो चतुर्भुजदासजीकी बहू एकदिन श्रीनाथजीके चरणारविन्दमें पहुँचगई जब चतुर्भुजदासजीकुं सूतक आयो सूतकमें चतुर्भुजदासजी बनमें बैठके नित्य कीर्तन करते तब श्रीगोवर्धननाथजी विनके चारो ओर दूर दूर खेलै करते जब श्रीगोवर्धननाथजीने आज्ञा करी जो चतुर्भुजदास तुम दूसरो विवाह करौ जब चतुर्भुजदासने कही जो जातमें कन्या नहीं मिलेहै जब श्रीनाथजीने कही जो तुम धरेजा करौ जब चतुर्भुजदासजीने धरेजा कन्यो तब श्रीगोवर्धननाथजी नित्य चतुर्भुजदाससों हांसी मस्करी करते सो चतुर्भुजदासजी ऐंसे अन्तरङ्ग भगवदीय हते ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

एक समय श्रीगुसांईजी परदेस पधारे हते तब श्रीगिरिधरजीकी ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथजीकुं मथुरामें अपने घर पधरावें तौ ठीक जब श्रीनाथजीकी आज्ञा लैके फागनवदी षष्टीके दिन सैनपीछे

श्रीनाथजीकुं मथुरा पधराए और फागनवदी ७ के दिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु घरमें हतो सो सर्वस्व अर्पण कऱ्यो और बेटीजीने एक वींटी धर राखीहती बेटीजी बालक हते जासूं समझते नहीं हते सो वींटीहू श्रीनाथजीनें मांगलीनी कारण जो श्रीगिरिधरजीनें सर्वस्व अर्पण करवेकी प्रतिज्ञा करीहती सो प्रतिज्ञा सत्यकरिवेकेलियें श्रीनाथाजीनें वींटी मांगलीनी और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराजजी ऊपर बैठके विरहके पद और हिलगके पद गायोकरते आर श्रीनाथजी नित्य विनकुं संध्यासमें गायनके संग पधारते दर्शन देते सो वैशाख सुदि त्रयोदशीके दिन चतुर्भुजदासजीनें ये पद संध्यासमें गायो "श्रीगोवर्धनवासी सांवरेलाल तुमबिनरह्योनजायहो" या पदकी छेलीतुक श्रीनाथजीनें पधारतेंही सुनि तब करुणाव्याकुल भये और मनमें ये विचार कऱ्योजोसर्वथा काल इहांपधारूंगा जासूं भक्तको दुःसहदुःख देखके श्रीनाथजीसे रह्योनगयो । जब रात्र एक प्रहररही तब श्रीनाथजीनें वैशाखसुदि चौदसकेदिन श्रीगिरिधरजीकुं आज्ञा करी जो आज गोवर्धनपर्वतऊपर राजभोग अरोगूगो जब श्रीगिरिधरजीनें मङ्गलाकरायके श्रीना-

थजीकुं पधराए और पहेले मनुष्य पठायकें मन्दिर खासा करायो और श्रीनाथजीकुं पधारते अवार होयगई जासूं राजभोग तथा शयनभोग एकसमयमें अरोगे वा दिनसूं आजदिन पर्यंत नृसिंघचतुर्दशीके दिन श्रीनाथजी दोय समें राजभोग अरोगेंहें ॥ एकतो नित्यके समें और एक शयन भोगके संग वे चतुर्भुजदास श्रीनाथजीके ऐंसे कृपापात्र हते जो तिनविना श्रीनाथजीसों रह्यो न गयो ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥

एकसमय चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीकेसंग श्रीगोकुल गए और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करे और बाललीलाके तथा पालनेके कीर्तन करे और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जब कुंमनदासनें पूंछ्यो जो कहां गयो हतो तब विननें कही श्रीगोकुलगयो हतो जब कुंमनदासजीनें कही प्रमाणमें क्यों जाय पड्यो हतो तब चतुर्भुजदासनें श्रीगुसांईजीकों पूछी जो प्रमाण प्रकरणकी लीला और प्रमेयप्रकरणकी लीलामें कितनो भेद है जब श्रीगुसांईजीनें कही जो भगवल्लीला सब एक समानहे कुंमनदासजीकुं किशोरलीलामें बहोत आसक्ती है जासुं ऐंसे बोले भगवल्लीलामें

भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुरजी विरुद्धधर्म आश्रयहैं एककालावच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र सब लीला करतेहैं ये सुनके चतुर्भुजदासजी बहोत प्रसन्न भए. वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनसूं श्रीगुसांईजी कछु गुप्त नहीं राखते हते ॥ प्रसंग ॥ ९ ॥

और चतुर्भुजदासजीके पाछें चतुर्भुजदासजीके बेटा राघोदास हते सो विनकूं भगवल्लीलाको अनुभव भयो जब राघोदासजीनें धमार गाई सो धमार "एचलजांएंजहांहरिक्रीडतगोपिनसंगा" ये धमारकी जब दस तुक भई तब राघोदासकी देह छूटी सो भगवल्लीलामें प्रवेश भयो तब राघोदासजीकी बेटीनें डेढतुक धरके धमार पूरी करी वे चतुर्भुजदास तथा विनके बेटा विनकी बेटी वे सब ऐसे कृपापात्र हते तातें इनकी वार्ता कहांताईं लिखिये प्रसंग ॥ १० ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक नंददासजी तिनकी वार्ता ॥

नंददासजी तुलसीदासके छोटे भाई हते सो विनकूं नाच तमासा देखवेको तथा गान सुनवेको शोंक बहुत हतो सो वा देशमेंसूं एक संग द्वारका जातहतो सो नंददासजी ऐसे विचारे कें में श्रारण-

छोडजीके दर्शनकूं जाऊं तो अच्छौहै जब विनने तुलसीदासजीसूं पूंछी तब तुलसीदासजी श्रीरामचंद्रजीके अनन्यभक्त हते जासूं विननें द्वारका जायवेकी नाहीं कही. जब नंददासजी नहीं माने सो वा संगमें चले गये । सो मथुरा सूधे गये मथुरामें वा संगकूं बहुत दिन लगे सो नंददासजी संगकूं छोडकर चलदीने सो नंददासजी द्वारकाको रस्ता भूलगये सो कुरुक्षेत्रकी आडीसी नंदगाममें जाय पहुंचे सो वहां एक साहुकार क्षत्री रहतो हतो तब नंददासजी वाके घर भिक्षा लेवे गये वाकी स्त्रीको रूप सुंदर हतो सो नंददासजी देखकर मोहित होयगये जब आखोदिन जायके वाके दरवाजेपें बैठे रहते जब वा क्षत्रानीको मुखदेखलेते तब डेरापे आवते हते ऐंसे करते बहुत दिन वीते जब वा क्षत्रानीकी जातमें बहुत चर्चाफेली तब वा क्षत्रानीको सुसरो-तथा पती विननें विचार कीनो गाममें रहनो नहीं तब उहांते घरके सगरे मनुष्य श्रीगोकुलजीकूं चले कारणकें सब वैष्णव हते तब नंददासजीकूं खबर भई तब नंददासजीहूं विनके पाछें गये रस्तामें विनसे दूरदूर चलेजाय और विनसें दूर डेरा करें ऐंसे कितने दिन पीछे ब्रजमें पहुंचे सो यमुनाजी

उतरवेके समय वा क्षत्रीनें कछू मलाहनकुं दीनो और ये कही कें या ब्राह्मणकूं मती उतारो ये हमकूं दुःखदेतहैं जब सब उतरके श्रीगोकुल गये श्रीगुसांईजीके दर्शन करे जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मणकूं यमुनाजीके पार क्यौं बैठाय आयेहो तब वा क्षत्रीके मनमें ऐसी आई कोइनें विनकी बात कहीहै अथवा जानगयेहैं सो क्षत्री मनमें बहुत पछतायवे लग्यो जब श्रीगुसांईजीने एकमनुष्य पठायकें वा ब्राह्मणकूं पारसों बुलाय लीनो जब वा नंददासजीनें आयकें श्रीगुसांईजीके दर्शन करे साक्षात् कोटिकंदर्पलावण्य पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब नंददासजीनें साष्टांग दंडवत करी और हाथ जोरकें ठाडे रहे और जा स्वरूपके दर्शन वा क्षत्रानीके नेत्रनमें नंददासजीकूं होत हते वही स्वरूपके दर्शन श्रीगुसांईजीके भये तब नंददासजीको मन वहांते छूटकें साक्षात् श्रीगुसांईजीके चरणारविंदमें लग्यो तब नंददासजी हाथ जोरके ठाढे रहे जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी नंददासजी स्नान कर आओ तब स्नान कर आये तब श्रीगुसांईजीनें श्रीनवनीतप्रियाजूके सन्निधान नाम निवेदन करवाये पाछे नंददासजीनें श्रीनवनीतप्रिया-

जीके दर्शन सब आशय पूर्वक करे पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करके सब वैष्णवनकुं पातर धराई तब नंददासजी महाप्रसाद लेवे बैठे तब महाप्रसाद लेतही नंददासजीकुं देहानुसंधान रह्यो नहीं जब पातरपर बैठेई रहे भगवल्लीलामें मन मग्न होयगयो अनेक लीलानको अनुभव होवे लग्यो भरे घरके चोरकीसीनाई मोहित भये ऐसें करते सवारो होयगयो कछु सुद्धि रहीनहीं तब श्रीगुसांईजी पधारकें नंददासजीके कानमें कही कें नंददासजी उठो दर्शनकरो जब नंददासजी उठके ठाढे भये तब नंददासजीनें उठके श्रीगुसांईजीके दर्शन करके ये पद गायो 'प्रात समय श्रीवल्लभसुतको उठतहिं रसनां लीजिये नाम' इत्यादिक पद गायके श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करे दर्शन करत मात्रही भगवल्लीलाकी स्फूर्ति भई जब पालनेको पद गायो--

"बालगोपाल ललनकों मोद भरी यशुमति झुलरावत"

इत्यादि भगवल्लीलासंबंधी बहुत पद नये करकें गाये सो नंददासजीके ऊपर श्रीगुसांईजीनें ऐसी कृपा करी तब सबठिकानेनसों विनको मन खींचकें श्रीप्रभुनमें लगाय दीनो सो वे क्षत्रीकी बहू जिनसों नंददासजीको मन लाग्यो हतो सो वे क्षत्रीकी बहू

नंददासजीकुं रस्तामें पांच सात वार नित्य दीखती हती परंतु नंददासजी वाकी आडी देखतेही न हते ऐसें श्रीगुसांईजीकी कृपातें ऐसो मनको निरोध होयगयो हतो जासूं इनके भाग्यकी बडाई कहा कहिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

तापाछें श्रीगुसांईजी श्रीजी द्वार पधारे सो नंददासजीकुं आज्ञा करकें संग लेगये तब नंददासजीनें जायकर श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करे सो साक्षात् कोटिकंदर्पलावण्यपूर्णपुरुषोत्तमके दरशन भये सो दर्शन करकें नंददासजी बहुत प्रसन्न भये और नंददासजीकूं किशोरलीलाकी स्फूर्ती भई तब उत्थापनको समय हतो सो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा पायकें यह पद गायो--' सोहत सुरंग दुरंगी पाग कुरंग ललनाकेसे लोयन लोने' ॥ यह पद गायकें अपनें मनमें नंददासजीने बडे भाग्य माने फिर संध्या आरतीसमय दर्शन करे तब ये पद गाये--

बनते सखनसंग गायनके पाछे पाछे आवत मोहनलाल कन्हाई ॥ १ ॥ बनते आवत गावत गौरी ॥ २ ॥ देख सखी हरिको वदनसरोज ॥३॥ घर नंदमहरके मिसही-मिस आवत गोकुलकी नारी ॥ ४ ॥

इत्यादि पद अनेक याभांतसूं नंददासजीनें गाये सो नंददासजी कोइंदिन श्रीगिरिराजजी रहते कोई दिन श्रीगोकुल आवते जिनकूं संसार ऐंसो फीको लागतो जैंसे मनुष्यकूं उलटी देखके बुरो लगे जासूं वे और ठिकाने जाते नहीं हुते आर श्रीमहाप्रभुजी और श्रीगुसांईजी और श्रीगिरिराजजी और श्रीयमुनाजी और श्रीव्रजभूमी इनको स्वरूप विचार्यो करते प्रभुनके दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिकाने विनको मन नहीं लागतो हुतो जासूं विनने श्रीस्वामिनीजीके स्वरूपवर्णमें कह्यो है 'चलीये कुंवरकान सखी भेषकीजे' या पदमें कह्यो है--

"शिव मोहे जिन वे मोहनी जे कोई ।
प्यारीके पायन आज आनपर सोई"
ऐंसी दृष्टी जिनकी ऊंची हुती ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

सो वे नन्ददासजी व्रज छोडके कहूं जाते नहीं हुते सो नन्ददासजीके बडे भाई तुलसी दासजी काशीमें रहते हुते सो विननें सुन्यो नन्ददासजी श्रीगुसांईजीके सेवक भयेहें जब तुलसीदासजीके मनमें ये आई कें नंददासजीनें पतिव्रताधर्म छोडदियो है आपनेतो श्रीरामचंद्रजी पती हुते सो तुलसीदासजीनें ये विचारकें नंददासजीकुं पत्र लिख्यो जो तुम

पतिव्रताधर्म छोडकें क्यों तुमनें कृष्ण उपासना करी। ये पत्र जब नंददासजीकुं पहुंचो तब नंददासजीने वांचके ये उत्तर लिख्यो जो श्रीरामचंद्रजीतो एकपत्नी व्रतहैं सो दूसरी पत्नीनकुं कैसे संभार सकेंगे एकपत्नीहुं बरोबर संभार न सके सो रावण हरलेगयो और श्रीकृष्णतो अनंतअबलानके स्वामी हें और जिनकी पत्नी भये पीछे कोइं प्रकारको भय रहे नहीं है एककालावच्छिन्न अनंतपत्नीनकुं सुख देतहैं जासूं मैंने श्रीकृष्णपती कीनेहैं सोजानोगे। ये पत्र जब नन्ददासजीको लिख्यो तब तुलसीदासकुं मिल्यो तब तुलसीदासजीने बाचके बिचार कियो कें नन्ददासजीको मन वहां लगगयो है सो वे अब आवेंगे नहीं सो इनकी टेक हमसूं अधिकी है हमतो अयुध्या छोडके काशीमें रहेहें और नन्ददासजीतो व्रजछोडके कहीं जाय नहीं हें इनकी टेक हमारी टेकसूं बडी है सो वे नन्ददासजी ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हुते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

सो एकदिन नन्ददासजीके मनमें ऐंसी आइं जो जैसे तुलसीदासजीने रामायण भाषा करी है सो हमहूं श्रीमद्भागवतभाषाकरें ये बात ब्राह्मण लोगननें सुनी तब सब ब्राह्मण मिलके श्रीगुसां-

ईजीके पास गये सो ब्राह्मणनें बीनती करी जो श्रीमद्भागवतभाषा होयगो तो हमारी आजीविका जाती रहेगी तब श्रीगुसांईजीने नन्ददासजीसुं आज्ञा करी जो तुम श्रीमद्भागवत भाषा मतकरो और ब्राह्मणनके क्लेशमें मत परो, ब्रह्मक्लेश आछो नहीं है और कीर्तन करकें व्रजलीला गाओ जब नन्ददासजीने श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानी श्रीमद्भागवतभाषा न कर्यो ऐसों श्रीगुसांईजीकी आज्ञाको विश्वास हतो ऐंसे परमकृपापात्र भगवदीय हुते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

सो नंददासजीके बडे भाई तुलसीदासजी हते काशीजीतें नंददासजीकूं मिलवेकेलियें व्रजमें आये सो मथुरामें आयके श्रीयमुनाजीके दर्शन करे पाछे नंददासजीकी खबर काढकें श्रीगिरिराजजी गये उहां तुलसीदासजी नंददासजीकुं मिले जब तुलसीदासजीनें नंददासजीसुं कही के तुम हमारे संग चलो गाम रुचे तो अयोध्यामें रहो पुरी रुचे तो काशीमें रहो पर्वत रुचे तो चित्रकूटमें रहो वन रुचे तो दंडकारण्यमें रहो ऐसे बडेबडे धाम श्रीरामचंद्रजीनें पवित्र करेंहें तब नंददासजीनें उत्तर देवेकुं ये पद गायो। सो पद–

जो गिरि रुचे तो वसो श्रीगोवर्धन गाम रुचे तो वसो नंदगाम॥
नगररुचे तो वसो श्रीमधुपुरी शोभासागर अतिअभिराम ॥१॥
सरितारुचे तो वसो श्रीयमुनातट सकलमनोरथ पूरणकाम ॥
नन्ददास कानन रुचे तो वसो भूमि वृंदावनधाम ॥ २ ॥

यह पद सुनके तुलसीदासजी बोले जो ऐसो कोनसो पाप है जो श्रीरामचंद्रजीके नामसूं न जाय जासूं तुम श्रीरामचंद्रजीकूं भजो। तब नंददासजीने एक कीर्तनमें उत्तर दियो। सो पद--

कृष्णनाम जबतें में श्रवण सुन्यो री आली भूली री भवन होंतो बावरी भई री॥भरभर आवें नयन चितहुं न परे चैन मुखहुं न आवे वैन तनकी दशा कछु और रहीरी ॥ १ ॥ जेतेक नेम धर्म व्रतकीने री मैं बहुविध अंगों अंग भई मैं तो श्रवण मई री॥नंददासप्रभु जाके श्रवण सुने यह गति माधुरी मूरत केधों कैसी दई री ॥२॥

ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे जब नंददासजी श्रीनाथजीकूं दर्शन करवेकूं गये तब तुलसीदासहुं उनके पीछे पीछे गये जब श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करे तब तुलसीदासजीने माथो नमायो नहीं तब नंददासजी जानगये जो ये श्रीरामचंद्रजीबिना और दूसरेकूं नहीं नमेहे जब नंददासजीने मनमें विचार कीनो यहां और श्रीगोकुलमें इनकुं श्रीरामचंद्रजीके दर्शन कराऊं तब

ये श्रीकृष्णको प्रभाव जानेंगे जब नंददासजीने श्रीगोवर्धननाथजीसों बीनती करी। सो दोहा--

आजकी सोभा कहा कहुं, भले विराजे नाथ।
तुलसी मस्तक तब नमे, धनुषबाण लेओ हाथ॥

ये बात सुनकें श्रीनाथजीकों श्रीगुसांईजीकी कानतें विचार भयो सो श्रीगुसांईजीके सेवक कहें सो हमकुं मान्यो चाहिये जब श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीरामचंद्रजीको रूप धरके तुलसीदासजीकुं दर्शन दिये तब तुलसीदासजीनें श्रीगोवर्धननाथजीकुं साष्टांग दंडवत करी जब तुलसीदासजी दर्शन करकें बाहिर आये तब नंददासजी श्रीगोकुल चले जब तुलसीदासजीहूं संग संग आये तब आयके नंददासजीनें श्रीगुसांईजीके दर्शन करे साष्टांगदंडवत करी और तुलसीदासजीने दण्डवत करी और नन्ददासजीकुं तुलसीदासजीने कही कें जैसे दर्शन तुमनें वहां कराये वैसेही यहां कराओ जब नन्ददासजीनें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी ये मेरे भाई तुलसीदास हैं श्रीरामचन्द्रजी विना औरकुं नहीं नमें है तब श्रीगुसांईजीने कही कें तुलसीदासजी बैठो जब श्रीगुसांईजीके पांचमें पुत्र श्रीरघुनाथजी वहां ठाढे हुते

और विन दिननमें श्रीरघुनाथजीको विवाह भयो हतो जब श्रीगुसांईजीने कही रघुनाथजी तुम्हारे सेवक आये हैं इनकुं दर्शन देवो तब श्रीरघुनाथलालजीनें तथा श्रीजानकी बहूजीने श्रीरामचन्द्रजीको तथा श्रीजानकीजीको स्वरूप धरकें दर्शन दिये साक्षात् दर्शन भये तब तुलसीदासजीनें साष्टांगदण्डवत करी याहीतें श्रीद्वारकेशजीनें मूलपुरुषमें गायो है "हेतु निज अभिधानप्रकटे तात आज्ञा मानके" और तुलसीदासजी दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और पद गायो "वरणों आवधिगोकुलगाम" ये पद गायके तुलसीदासजी बिदा होयके अपनें देशकुं गये सो वे नन्ददासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते जिनके कहेतें श्रीगोवर्धननाथजीकुं तथा श्रीरघुनाथजीकुं श्रीरामचन्द्रजीको स्वरूप धरके दर्शन देनेपडे.जासूं इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये।वार्ता सम्पूर्ण वैष्णव४

श्रीगुसांईजीके सेवक नागजीभाई सोठादरा-
नागर तिनकी वार्ता ॥

नागजीभाई श्रीमहाप्रभुजीके पास सेवक होवेको गए जब श्रीमहाप्रभुजी विचारे जो नागजीद्वारा सृष्टी बहोत अंगीकार होयगी और नागजीभाईके

संगते दैवीजीव प्रभुनके सन्मुख होएंगे और पुष्टि-मार्गके सिद्धांतके पात्र नागजीभाई है और इनको वंश बहुतवर्षपर्यंत चलेगो जासूं ये लालजीकी शरण जांएतो बहुत आछो जासूं श्रीमहाप्रभुजीने आज्ञा करी जो तुम लरकाके सेवक होवो तब नागजीभाई श्रीगुसांईजीके सेवक भए सो वे नागजी ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और वे नागजी गोधरागामके देसाई हते और कछु कारणसुं सरकारमें आजीविका बन्द भई हती सो वे नागजीभाई बडे संकोचमें आयगये इतनेमें नागजीभाईकी बेटीको विवाह आयो सो वे बात खंभातके वैष्णवननें सुनी सहजपालडोशी तथा माधवदासदलाल तथा जीवापारिख नागजीभाईके स्नेही हते सो विनमें नागजीकी बेटीके विवाहकी खबर सुनी जब विननें दसहजार रुपैया गोधरामें नागजीकुं पठाये सो वे रुपैया नागजीभाईकुं पहुंचे तब नागजीभाईने विचार कऱ्यो जो ये द्रव्यतो वैष्णवनको है और वैष्णवननें तो मोकुं वैष्णव-सम्बन्धसों पठायो है जासूं ये द्रव्य लौकिकमें नहीं खरचाय तो आछो, आपदा कालतो चार दिनमें मिटजायगो तब वे द्रव्यकी सोना मोहर लेके एक

लाकडीमें भरके अडेलको चले जब रस्तामें एक वैष्णवडोकरी रहती हती वा डोकरीकुं श्रीठाकुरजीने स्वप्नमें आज्ञा करि जो काल नागजी कासिदको वेषधरि आवेंगे तिनके तुम प्रसाद लेवाईयो जब दूसरे दिन परदेशिनके उतारमें वा डोकरीने नागजी-भाईकुं ढूंढपाए तब वा डोकरीनें कही जो मैं तुमारी ज्ञातीकी हूं और श्रीगुसांईजीकी सेवक हूं जासूं मेरे घर प्रसाद लेबेकुं चलो तब नागजीभाईनें नाहीं कही तब नागजीभाई उहांसे चले जब दो मजिल गये तब श्रीठाकुरजीने स्वप्नमें आज्ञा करी जो तुमनें वा डोकरीके घर प्रसाद क्यों न लियो वा डोकरीकुं मैनें आज्ञा करी हती तब नागजी फिरके वा डोक-रीके घर प्रसादलेवेके लिएं पाछे आयके उहां तीन दिन रहे और वा डोकरीकुं कही जो तुमकुं श्रीठा-कुरजीनें आज्ञा करी हती सो मोकुं क्यों न कही तब वा डोकरीनें कही जो तुमतो श्रीठाकुरजीके अंगहो मैं इन बातनमें कहासमझूंहूं तब नागजी ये सुनके और डोकरीकी नम्रता देखके बहुत प्रसन्न भये फेर उहांतें नागजी अडेलगाममें आये और श्रीगुसांईजीके दर्शन करे और वे लाठी भंडारीकुं दीनी और कही जो ये लाठी बैष्णवननें दीनीहैं सो श्रीगुसांईजीकुं दीजिये ये कहके नागजीभाई ब्रजमें

गये और पाछे भंडारी लाठी श्रीगुसांईजीके आगे खोली तब द्रव्य निकस्यो और नागजीभाईतो तीन महिना श्रीनाथजी द्वारमें रहे और पाछेते गोधरामें सब पंचननें हाकमसो कहेके नागजीभाईकी आजी-विका खुली कराई और चड्यो द्रव्य लेके नाग-जीभाईकी बेटीको विवाहकरादियो जब नागजी-भाई गोधरामें आए तब दसहजाररुपैयाखंभातमें पठादिये तब खंभातके वैष्णवननें विचार कर्‍यो जो ये द्रव्यतो नागजीभाईकुं हमनें वैसेंहीं दियोहतो सो अब कैसें लियो जाय जब वे द्रव्य खंभातके वैष्णवननें श्रीगुसांईजीके पास भेजदिये सो वे नाग-जीभाई ऐसे भगवदीय और अनुभवी हते श्रीगु-सांईजीके स्वरूपमें ऐसे आसक्त हते जो वर्षमें गोधरासूं दोवार जरूर दर्शनकुं आवते॥प्रसंग॥२॥

एकदिन वे नागजीभाईकुं गोधराके हाकमनें राजनगर पठायो पातशाहके पास जागीर बढा-इवेके लियें और दोहजार रूपैया खरचवेकुं दिये तब वे नागजीभाई राजनगर आये सो उहां एक चीर दक्षणको अति सूक्ष्म देख्यो सो हजाररूपै-यामें लेके श्रीगोकुल गए और जायकें श्रीगुसांई-जीकुं चीर भेट कर्‍यो और फेर राजनगर आए देशाधिपतीकुं मिलकरकें पांचगुणी जागीरको

पट्टा बढवायलिये फेर गोधरा जायके हाकिमकुं खबर दीनी हाकिम ये बात सुनके बहुत प्रसन्न भयो और एक महालके पांच महाल भए तादिनतें आजसूधी गोधरा पंचमहाल कह्यो जायहै सो नागजीभाईको स्नेह प्रभुनमें निष्काम हतो और लौलिककुं तुच्छमानते हते और विनके लौकिककार्य प्रभु आपसोंआप सिद्ध करते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एकसमय श्रीगुसांईजी द्वारिका पधारे हते नागजीभाई राजनगरसों आंब लेके द्वारिका पहुंचे और श्रीगुसांईजीके दर्शन करिके आंबनकी वीनती करी जब श्रीगुसांईजीनें कही श्रीरणछोडजीके मंदिरमें पहुंचायदेवो जब नागजीने आंब पहुंचायके दूसरे आंब मनुष्यकुं पठाय राजनगरसों फेर मंगवाये तब श्रीगुसांईजीकुं वीनति करी जो ये आंब आपके डेरामे रणछोडजीकुं पधरायके अंगीकार करावें जब श्रीगुसांईजीकुं डेरो राम लक्ष्मणजीके मन्दिरके पास हतो जब उहां श्रीगुसांईजीनें श्रीरणछोडजीकुं पधरायके आंब भोगधरे और नागजीभाईकुं साक्षात् श्रीरणछोडजीके दर्शन भये जबतें श्रीगुसांईजीकी बैठक वा ठिकाणे भये और उहां श्रीगुसांईजीके मनमें ऐसी आई जो ऐसें आंब श्रीनाथजीअरोगें तो ठीक है । जब नागजीभाईनें

श्रीगुसांईजीके मनकी जानी तब उहांसूं नागजीभाई चले सो राजनगरकूं आंब लेके श्रीनाथजी तथा श्रीनवनीतप्रियाजीके इहां आंब पहुंचायके फेर राजनगरसों दूसरे आंब लेके सो घाघाघुरघट गाममें श्रीगुसांईजीकुं मिले और श्रीगुसांईजीकुं उहांके सब समाचार कहे और पत्र आगे धरे जब श्रीगुसांईजी मनमें विचारि जो नागजी विना मेरे मनकी कोन जाने तब नागजीभाईसों कही जो तुमारो कहा मनोरथ है जब नागजीभाईनें वीनती करी जो महाराज श्रीनाथजीकुं इहां पधरायके आंब भोग धरें जब मोकुं दर्शन होवें तब मेरो चित्त प्रसन्न होय तब श्रीगुसांईजीनें वैसेही दर्शन नागजीभाईकुं कराये सो वे नागजीभाई ऐसे कृपापात्र हते और श्रीगुसांईजीने विनमें ऐसी सामर्थ्य धरी हती जो चाहें जितनो बोझ उठाय लेते और चाहें जितनो रस्ता चलें जाते दसदिनको रस्ता होय तहां एक दिनमें पहुंचजाते वे नागजीभाई ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

एकसमें नागजीभाई अडेलकूं चले सो रस्तामें श्रीजीद्वार आये तब रामदासने कही जो नागजीभाई थोडे दिन इहां रहिके सेवा करौ तब नाग-

जीभाई उहां सेवामें न्हाए जब श्रीगुसांईजीकुं एक श्लोक लिखपठाये। सो श्लोक--

सरसि कुशेशयमध्यास्वादितुमागच्छतोऽलिनो मार्गे ॥
यदि कनककमळपाने नासीत्तोषः किमन्येन ॥ १ ॥

जब अडेलमें वे पत्र श्रीगुसांईजीकुं पोहोंच्यो तब श्रीगुसांईजीने दोय श्लोक लिखपठाए--

श्लोक—नात्रकुशेशयमानसमर्थयसे यत्प्रियो मधुपः ॥
तस्मिंस्तुष्टे तोषो दुस्थे दौस्थ्यं हि निरुपमस्नेहात् ॥ १ ॥
यद्यलिरापे निरुपधिभावः स्वभावतः समागच्छेत् ॥
निरवधितोषोऽस्यापि प्रभवेदेवेति किं वाच्यम् ॥ २ ॥

ये श्लोक वाचिकें नागजी बहोत प्रसन्न भये और अडेलजाय फिर श्रीगुसांईजीके दर्शन किये।प्रसंग५

और एकसमें नागजीने गोधरातें श्रीगुसांईजीकुं पत्र लिखे वामें लिखो--जो श्रीसुबोधिनीजी तथा निबन्ध तथा अणुभाष्य और श्रीमहाप्रभूजीके करे भये ग्रन्थनको आशय थोडेमें समझ पडे सो लिख पठावेंगे। तब श्रीगुसांईने दोय श्लोक लिख पठाए--

श्लोक—श्रीवल्लभाचार्यपथि प्रगाढं प्रेमैव चास्त्यव्यभिचारहेतुः ॥ तत्रोपयुक्ता नवधोक्तभक्तिस्तत्रोपयोगोऽखिलसाधनानाम् ॥ १ ॥
यः कुर्यात्सुन्दराक्षीणां भवने लास्यनर्तने ॥
तासां भावनया नित्यं सहि सर्वफलानुभाक् ॥ २ ॥

तब ये श्लोक बांचके नागजीभाईकुं सगरो

सिद्धांत स्फुरित भयो सो वे नागजीभाई ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता सम्पूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कृष्णभट्ट हते तिनकी वार्ता ॥

श्रीमहाप्रभूजीके सेवक पद्मारावल साचारो ब्राह्मण तिनके बेटा कृष्णभट्टजी हते सो श्रीगुसांईजीके सेवक भए जब श्रीगुसांईजीनें श्रीमद्भागवत सुबोधिनीटीकासहित कृष्णभट्टजीकुं पढाए तब पुष्टिमार्गीय सिद्धांत सब विनके हृदयमें आयो और जैसे पद्मारावलकूं श्रीमहाप्रभूजीकी कृपाते पुष्टिमार्गीय सिद्धांत स्फुरित भयो हतो तैंसे विनके बेटा कृष्णभट्टजीकुं भयो और नित्य प्रति सुबोधिनीजीकी कथा कहते सो एकदिन कृष्णभट्टजी ब्रजमें गये विनके संग कुनबी वैष्णव गयो और श्रीगुसांईजीके तथा श्रीनाथजीके दर्शन करे जब कुनबी वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो कृष्णभट्ट कथामें ऐंसे कहेते हते जो श्रीगिरिराजजी धातुमय रत्नखचित हैं और गोविंदकुंड दूधसों भऱ्योहै सो ऐंसे दर्शन क्यों नहीं होवेहैं? ये बात सुनके श्रीगुसांईजीनें विचार कऱ्यो जो मेरे सेवक कृष्णभट्टकी वाणी मिथ्या न होवे सत्यभईचहिये जासूं श्रीगुसांईजीनें वा कुनबीको दिव्यनेत्र दिये और जैसे दर्शन कृष्णभट्टने कहे हते तैंसेही श्रीगि-

रिराज तथा गोविंदकुंडके कराए सो वे कृष्णभट्टजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

एक समय कृष्णभट्टजी श्रीनाथजीके भीतरियामें न्हाए और सब सेवा करन लागे और चरणस्पर्श न करे तब एकदिन श्रीनाथजीने आज्ञा करी जो कृष्णभट्ट चरणस्पर्श करो तब कृष्णभट्टनें वीनती करी जो लीलाके दर्शन होवें तो चरणस्पर्श करूं। तब श्रीनाथजीनें आज्ञा करी जो लीलाके दर्शन देहांतरमें होवेंगे ये सुनके कृष्णभट्टजी उदास होय गए। जब श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो कृष्णभट्ट उदास कैसें भएहो तब कृष्णभट्टनें कही जो श्रीनाथजीनें चरणस्पर्शकी आज्ञा करी है और लीलाके दर्शनकी नाहीं कहीहै। जब श्रीगुसांईजीजीनें कही श्रीनाथजी तो बालकहैं तुम क्यों उदास भए इतनो कहके श्रीगुसांईजीने कृष्णभट्टको हाथ पकडके चरणस्पर्श कराए और श्रीनाथजीकी लीलाके दर्शन कराए तब कृष्णभट्टजी बहुत प्रसन्न भए और ये निश्चय किये श्रीनाथजी तो श्रीगुसांईजीके वशमें हैं ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और एकदिन कृष्णभट्टजीनें उज्जैनमें वसंतपंचमीको उत्सव कर्‍यो सो वा दिन वसंत पंचमी हती नहीं जब श्रीनाथजी खेलके गिरिराजऊपर पधारे

तब गुलालभरे दर्शन रामदासभीतरीयाकूं भये। जब रामदासनें श्रीगुसांईजीसों पूंछी जो श्रीनाथजीकुं कौननें खिलाएहैं तब श्रीगुसांईजीनें कही जो कृष्णभट्टनें वसंतपंचमी जानके खेलाएहैं तब रामदासनें वीनती करी जो कृष्णभट्टजी तो भूलि गये परंतु श्रीनाथजी क्यौं खेले ? तब श्रीगुसांईजीनें कही जो श्रीनाथजी तो भक्तनके वशहैं जो भक्त जैंसो मनोरथ करे वाको वैंसो अंगिकार करें है सो वे कृष्णभट्टजी ऐंसे कृपा पात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

और एकसमें कृष्णभट्टजी श्रीगोकुल आये हते जब एकांतमें चाचा हरिवंशजीसों भगवद्वार्ता करवे लगे तब उहां सोंधेकी सुगंध आई जब कृष्णभट्टजीनें कहि ये सुगंध कहांसों आईहै? तब चाचाजीनें कही जो वे छैल आए होंएगें जिनकुं तुमबिना रह्यो नाहिं जायहै सो वे कृष्णभट्टजी ऐंसे कृपापात्र हते जिनके पीछे श्रीनाथजी फिरत डोलत हते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

एकसमें श्रीगुसांईजी उज्जैन पधारे सो कृष्णभट्टजीके घर डेरा किये और उहांके ब्राह्मण सब मिलकें श्रीगुसांईजीके पास आयके प्रश्न कऱ्यो जो तुमारे सेवक कृष्णभट्टजी वेदोक्तकर्म नहीं

करेंहें और अष्टप्रहर सेवा करेंहै जब विनकूं श्रीगु-सांईजीनें उत्तर दियो । सो श्लोक--

मत्कर्म कुर्वतां पुंसां कर्मलोपो भवेद्यदि ॥
तत्कर्म ते प्रकुर्वंति त्रिंशत्कोट्यो महर्षयः ॥

"और कहे भोरभए जानिये" तब ये सुनके ब्राह्मण बोले जो भोरभए कैसे जान्यो जायगो तब श्रीगुसांईजीने कहि जहां रात्र होवेहै तहां दिनके पदार्थ सूझें नहींहें जब तुमारे अंतःकरणमें उजारो होयगो और मायारूपी रात्र मिटेगी तब देखोगे सो गीतामें कह्योहै--

श्लोक--या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ॥
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥

ऐंसें जब सुन्यो तब विन ब्राह्मणनको संदेह मिट गयो सो वे कृष्णभट्ट ऐंसे कृपापात्रहते ॥ प्रसंग॥५॥

सो वे कृष्णभट्टजी सदैव उज्जैनमें रहते हते और गुजरातके तथा दक्षिणके वैष्णव उज्जैन हो-यके श्रीगोकुल जाते हते और विनमूं मिलके सब वैष्णव प्रसन्न होत हते और कृष्णभट्टजी वैष्णवन-पर कैसी प्रीती राखत हते जो वैष्णव विनके ईहा गांठडी धरते वा वैष्णवकी गांठडीमें छाने छाने दूध घरको प्रसाद बांध राखते तब ये मनमें समझते जो वैष्णवनको रस्तामें भूख लगेगी तब

ये लेवेंगे इनकूं श्रम नहीं होयगो ऐंसी वात्सल्यता वैष्णवनके ऊपर राखते हते ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

एकसमें श्रीगुसांईजीनें श्रीगोकुलसुं कासिद पठायके कृष्णभट्टकुं बुलवायो जब कृष्णभट्टजी उज्जैनसों चले तब नित्य स्वप्नमें कृष्णभट्टके सेव्य श्रीठाकुरजी आयके कहते "जोतुमविना मोकुं रह्यो नहीं जायहै" जब कृष्णभट्टजी रस्तामेंसो एक मनुष्यकुं पत्र देके नित्य आपनें घर पठायते और पत्रमें येही लिखते जो श्रीठाकुरजी प्रसन्नहोवें सोई करियो परंतु श्रीगुसांईजीके मिले विना कृष्ण भट्टजी पाछे न गए जब कृष्णभट्ट श्रीगोकुल पहुंचे तब श्रीगुसांईजीके दर्शन करे जब श्रीगुसांईजीनें कही जो तुमनें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा क्यों न मानी तब कृष्णभट्टनें वीनती करी जो महाराज श्रीठाकुरजीतो आपके वश्य हैं और आपनें हमकुं श्रीठाकुरजी दिखाएहैं जासुं राजकी आज्ञा कैसे लोप करीजाय? ये बात सुनके श्रीगुसांईजी चुपकरीरहै वा कृष्णभट्टकुं श्रीगुसांईजीके आज्ञापर ऐंसो विश्वास हतो ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

एकदिन उज्जैनके वैष्णव सब भेले होयके कृष्ण भट्टसों पूछे जो श्रीठाकुरजी कैसे प्रसन्नहोवें हें तब कृष्णभट्टनें कही जो श्रीठाकुरजी तो स्वामिनीजीकी

कृपातें प्रसन्न होवेहैं याहीतें श्रीस्वामिनी स्तोत्रमें श्रीठाकुरजीकी प्रसन्नताकेलियें श्रीगुसांईजीनें द्वादशप्रकारकी प्रार्थना करी है और द्वादशप्रकारके दास्यभाव वर्णन करेहै।ये सुनके वैष्णव बहोत प्रसन्नभये । गीतगोविंदमें श्रीठाकुरजीनें कहीहै ।

अधरसुधारसमुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम् ॥
त्वयि विनिहितमनिशं विरहानलदग्धवपुषमविलासम्॥

और नंददासजीनें कहीहै--

श्रीवृषभानुसुता पद अंबुज जिनके सदासहाय॥यह रसमग्न रहत जे निशदिन तिनपर नंददास बलिजाय ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥

एक दिन नागजीभाई गोधरातें उज्जैनमें आए तब कृष्णभट्टसुं मिले और महाप्रसाद लेके भगवद्वार्ता करवे लगे सो एकांतमें भगवद्वार्ता करत करत देहानुसंधान भूलगए सो सातदिवस पीछे देहकी सुध आई ऐंसे करत करत नागजीभाई बहुत दिन उहां रहे सो कोई समें तीन दिन कबहुं सात दिन देहानुसंधान छूट जाय सो वे कृष्णभट्ट तथा नागजीभाई ऐंसे भगवद्रसमें मग्न हते ॥ प्रसंग ॥ ९ ॥

कृष्णभट्ट एकसमय श्रीगोकुल गये सो रस्तामें विनकी देह छूटी विनके बेटा गोकुलभट्ट. उनकुं चिंता भई जो श्रीगोकुल न पहुंचे और घरमें भी न रहे. फेर उनको अग्निसंस्कार करिके उज्जैनमें पाछे

आये और जादिन कृष्णभट्टकी देह छूटी वाहि समय श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके शृंगारकरके चौकमें पधारे हते तब कृष्णभट्टजीकुं देखे जब कृष्णभट्टनें साष्टांगदंडवत करी तब श्रीगुसांईजीनें पूंछ्यो जो तुम कब आये जब कृष्णभट्टनें विनति करी जो राजकीकृपातें अबी आयोहुं जब श्रीगुसांईजी गोपीवल्लभ भोग धरिके बाहेर पधारे फेर पूछवे लगे जो कृष्णभट्ट कहांहै तब रामदासभीतरीयानें कही जो कृष्णभट्टतो मंदिरमें जाते देखे परंतु बाहेर निकसते काहूनें देखें नहीं जब श्रीगुसांईजीनें एक पत्र लिखायके उज्जैनमें मनुष्य पठाये सो मनुष्यनें गोकुलभट्टकुं पत्र दिये सो बांचके बहुत प्रसन्न भये जब गोकुलभट्टनें श्रीगुसांईजीकुं वीनती पत्र लिखे जो अमुक समय अमुक दिवस कृष्णभट्टकी देह छूटीहै ये पत्र श्रीगुसांईजी वांचके कहे जो कृष्णभट्टजी ऐसेही हते जिनके संग श्रीनाथजी खेलतहते सो वे या रीतीसूं भगवल्लीलामें प्राप्त होवें यामें कहा आश्चर्य है सो वे कृष्णभट्टजी ऐसे कृपापात्र हते तातें इनकी वार्ता कहांताई लिखी जाय ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वार्तासंपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक चाचाहरिवंशजी ति० वार्ता ॥

सो चाचाहरिवंशजी क्षत्री हते विनकुं श्रीगुसां-

ईजीनें आज्ञा करी जो श्रीनाथजीको अभिप्राय पुष्टिमार्ग बढायवेको है जासूं तुम परदेसनमें जाय हमारी आज्ञासूं सबको नाम सुनावो और वैष्णव जो भेट काढे सो लेआवो तब चाचा हरिवंशजी गुजरात आए सो राजनगरके पास असारवा गाम है तहां भाईला कोठारीके घरमें रहे सो उहांते भेंट उगायके खंभातमें माल लेवेकेलियें गए सो उहां गाममें पूंछी जो भले आदमी कौनहैं तब माधवदास दलालनें कही जो सहजपालदोसी भले आदमी हैं जब माधवदासदलालके साथ सहजपालदोसीके इहां जाय सब माल लियो सो उत्तम ते उत्तम वस्तु लीनी और जीवापारिखके ऊपरकी हुंडी लाएहते सो माधवदास दलालकुं दीनी और कही जो इनके मोलको दाम सब चुकायके बचेसो नारायणसरपें हमारो डेरा है तहां पहुंचाय दीजियो जब माधवदासजी वो द्रव्य लेके विनके डेरापर पहुंचावन गए तब माधवदासनें विनको आचारक्रिया देखके विस्मय भये तब माधवदासजीनें विचार कऱ्यो जो ये कोई महापुरुषहैं तब माधवदासनें कही जो तुमारो धर्म हमकूं सिखावो। तब चाचाजीनें विनकुं नाम सुनाये जब माधवदास सब रीतभांति सीखिके सहेजपालदोसी तथा जीवापरिखसूं

कही जो येतो बडे महत्पुरुषहैं ये बात सुनके वे दोनों जने चाचाजीके पास नाम पाए जब खंभातसूं वे तीनों जने चाचाजीके साथ श्रीगोकुल आए तब आयके श्रीगुसांईजीके पास निवेदन करवाए तब श्रीनाथजीके दर्शन करिके बहुत प्रसन्न भये सो वे चाचाजी ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

फेर चाचाजी एकदिन गुजरातके परदेसकुं गए सो रस्ता भूलिगये सो भीलनके गाममें गए उहां कूंवापर एक स्त्री जलभरत हती वा स्त्रीनें विनके आचारविचार देखिके अपनें घरकुं लेगई और विनके पास नाम पायो और सब रीतभांतसूं भोग धरिवे लगी, चाचाजीनें विनसूं पूंछो जो तुमारे घरको पुरुष कहां गएहैं? तब विननें कही जो चोरी-करवेकुं गएहै हमारो येही धंधो है। तब चाचाजीनें कही जो ये धंधो आछो नहीं है जब वा स्त्रीनें विनती करी जो आप इहां रहिके विनकूं वैष्णवकरिकै फेर तुम जाओ। तब चाचाजी उहां रहगए तब वा बाईको बेटा गामको मुखी हतो वानें चाचाजीके दर्शन करतमात्रही वाको चित्त लौकिकमेंसूं निकसके प्रभुनके चरणारविंदमें लग्यो सो सूरदास-जीनें गायो है ॥ सो पद--

"जादिन सन्त पाहुने आवें ।
तीरथ कोटी स्नान करन फलदर्शनही तें पावें" ॥

जासूं या भीलको मन झट फिरगयो।तब आखो गाम वैष्णव भयो।जब चाचाजी विनकुं सब सेवाकी रीति सिखायके उहांसे बिदा भए तब वे भील चोरीको धंधो छोडिके खेती करवे लगे जब रस्तामें चाचाजीकुं स्वप्नमें श्रीनाथजीनें आज्ञा करी वे भील आचार क्रिया आछी पालेहैं परंतु भोगचाखके धरेंहैं सो मोकूं नित्य भीलनकी जूठन लेनीपरे है जासूं विनको तुम शिक्षा आछीतरहसूं दीजियो जब चाचाजी फिरके वा गाममें आय दो महीना रहके सेवाकी रीति और आचरधर्म सब पक्को करायो और सब रीति सिखायके श्रीगुसांईजीकी भेट लेके गये। सो वे चाचाजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

एकसमें चाचा हरिवंशजी श्रीगोकुलतें उज्जैनकुं चले सो रस्तामें क्षत्रीवैष्णवके घर आए वा क्षत्रीवैष्णवनें चाचाजीके मुखसे भगवद्वार्ता सुनके संसारमेंसूं आसक्ति काढडारी तब चाचाहरिवंशजीकुं वा वैष्णवनें कहि जो ये सर्वस्व श्रीगुसांईजीके पास लेजावो । चाचाजीनें कही जो मैं उज्जैनकुं जायके आउंगो जब पाछे आयके लेजाऊंगो। तब चाचाजी

उज्जैनकुं आए कृष्णभट्टसूं बात करी तब कृष्णभट्टने कही वे क्षत्रीतो अनाचारीहै तब चाचाजीनें कही जिनकी संसारमें आसक्ति नहींहै विनको आचारविचारको कहा कामहै? फेर चाचाजी वा क्षत्रीवैष्णवके घर आए तब वा वैष्णवनें सब द्रव्य श्रीगुसांईजीकी भेट कऱ्यो जब चाचाजी वा तीनहजार रुपैया लेगए और दोसो रुपैया वा वैष्णवकुं जोरसूं दगए व्यवहार चलाइबेकुं वे चाचाजी ऐंसे कृपापात्र हते जिनके संगसूं हजारों वैष्णवनकी संसारासक्ति छूटगई हती ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

एकसमें श्रीगुसांईजी परदेश पधारे हते रस्तामें एकगाम आयो वा गाममें वैष्णव कोई न हतो तब श्रीगुसांईजीनें कही चाचाजी ये रस्ता नाहिं निकसे होयंगे सो चाचाजी ऐंसे कृपापात्र हते जो रस्ता निकसते और जिन लोगनसूं प्रसंग पडतो विनको मन श्रीप्रभुनमें लगाय देते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एकसमें चाचाहरिवंशजी श्रीनाथजीके लियें श्रीगोकुलमेंसुं सामग्री लेनेको गये सो सामग्री एक वैष्णवके माथे पधरायके श्रीगोकुलतें चले। जब यमनाजीके घाटपर आए तब नाव नहीं हती सांझ होयगई हती जब चाचाजीनें विचार कऱ्यो जो सवारे छेघडी रात रहेंगी तब ये सामग्री चहियेगी

और रातकुं सिद्ध भई चाहिये और गोपालपुरतो दसकोस दूर है सो कैसे पोहोंचेंगे?ये विचारके वैष्णवसों कही जो मैं यमुनाजीके ऊपर चलूंहूं जहां मैं पांव धरिके उठाऊं जा ठिकाणे तुम पांव धरत आईयो तब चाचाहरिवंशजी श्रीयमुनाजीके ऊपर चलवे लगे और भगवन्नाम लेवे लगे जब वे वैष्णव पिछाडी भगवन्नाम लेत चल्यो तब वा वैष्णवने मनमें विचार कऱ्यो जो चाचाजी भगवन्नाम लेते हैं और मैं भगवन्नाम लेतहुं इनके पग ऊपर पग काहेको धरूं जब दूसरे ठिकाने पग धरवे लग्यो तब यमुनाजीमें डूबने लाग्यो तब चाचाजीने आयके वाको हाथ पकरके पार लेगए जब चाचाजीने कही मैं जाठिकाणेसूं पांव उठाए तुमने वही ठिकाणे क्यों नहींधरे वानें कही मैं भगवन्नाम लेतहूं तुमहु भगवन्नाम लेतहो जब चाचाजीनें कही मेरी सुनिहै तेरी अब सुनेंगे सो वे चाचाजी ऐसे कृपापात्र हते विनकी प्रभूने सुनी हती ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

एकदिन श्रीगुसांईजी लघुशंका करके पधारे सो चाचाजीसों भगवद्वार्ता करने लगे सो ऐसें रसावेश भये जो आखीरात चलीगई हाथमेंसे नीचे झारी धरिवेकी शुध न रही और चाचाजीकुं तो

तीनदिन सूधि रसावेश रह्यो वे ऐंसे भगवद्रसके पात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

एकदिन चाचाजी गिरिराज ऊपर गए और शंखनादकी तैयारी हती । चाचाहरिवंशजीकुं ऐंसो अनुभव भयो की श्रीनाथजी निर्भर निद्रामें हैं तब शंखनाद होने न दियो सब भीतरिया ठाढे रहे दो घडी पीछे श्रीगुसाईंजी पधारे जब शंखनाद कराए तोहूं श्रीनाथजी जागे नहीं तब सूरदासजीनें कीर्तन गायो सो पद--

"कौन परी नंदलालें बान । प्रातसमय जागनकी बिरियां सोवत है पीतांबरतान " ॥

ये पद सुनके श्रीनाथजी जागे सो चाचाजी ऐसे कृपापात्र हते जिनकी कान श्रीगुसांईजी राखते और जिनकूं श्रीठाकुरजीकी कृतीकी सब शुध रहती ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

एकदिन श्रीगुसांईजी शय्यामंदिरमें पधारते हते जब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीकी आडि देखवे लगे तब चाचाजीनें श्रीगुसांजीसों बीनती करीजो श्रीनाथजी तो आपकी ओर चितवें है और आप भीतर कैंसे पधारतेहो ? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीनाथजी तो बालकहैं परंतु सेवातो करी चहिये जबश्रीगुसांईजी सेवा करवेको पधारे सो वे चाचाजी

ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं श्रीनाथजीकी घडी घडीकी खबर पडती हती ॥ प्रसंग ॥ ८ ॥

और एकदिन चाचाजीकुं ठोकर लगी हती जब दुःखी होय बैठरहे हते तब रुक्मिणी बहूजीके आगे वात निकसी हती श्रीगुसांईजीनें कही जो सब वैष्णव हमारे अंगहैं तब रुक्मिणी बहूजीने कही चाचाजी कौनसो अंगहैं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो हमारे नेत्र हैं जो देखो चाचाजी दुःखी है तो हमारे नेत्र दूखेंहैं सो वे ऐंसे कृपापात्र हते॥ प्रसंग॥९॥

एकसमें चाचा हरिवंशजीकुं आज्ञा करी जो तुम परदेसकुं जाओ तब चाचाजीनें कही हमकुं तो आपके दर्शन विना रह्यो नहिं जाय। जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जहां तुम जावोगे तहां हम तुमकुं नित्य दर्शन देवेंगे वाको कारण ये हतो जो श्रीगुसांईजीकुं आसुर व्यामोहलीला करनी हती तासूं चाचाजी तासमें ईहां होएँगे तो इनको देह न रहेगो जब श्रीगोकुलनाथजी तथा श्रीरघुनाथजी तथा यदुनाथजी तथा घनश्यामजी इनकुं स्वमार्गीय ग्रंथनकी परिपाटी कौन बतावेगो श्रीगिरिधरजीकुं तो सेवामेंसों अवकाश नहींहै ये विचार करके श्रीगुसांईजीनें चाचाहरिवंशजीकुं परदेस विदा कियो तब चाचा हरिवंशजी गुजरात गए ता पाछे

श्रीगुसांईजीनें आसुर व्यामोहलीला दिखाई ? जब चाचाजीनें गुजरातमें ये बात सुनी तब तत्क्षण मूर्छित होय गये जब श्री नाथजीनें आयके चाचाजीसों कही जो हाल तुमरो पृथ्वी ऊपर रहेनो है मेरी ऐसी आज्ञाहै जब चाचाजी अपनो देह राख्यो तब चाचाजी व्रजमें आयके सब बालकनके पासतें सुबोधिनीजी सुनवेके मिष करके पढावते कारण वे चाचाजी ज्ञातीके क्षत्री हते सो ब्राह्मण-कुलकुं कैसे पढावे जासूं सुनवेके मिषतें सब बाल-कनकुं पढाए सो वे ऐंसे कृपापात्र हते । जिनकुं श्रीगुसांईजी मार्गकी परिपाटी बतानेके लीये पृथ्वी पर छोडगये जैंसे श्रीमहाप्रभुजी दामोदरदास हर-सानीकुं परिपाटी बतानेकें लीयें छोडगये हते याहीतें श्रीगुसांईजीनें शृंगाररसमंडनग्रंथमें कह्यो है--

श्लोक-यस्मात्सहायभूतौ दामोदरदासहरिवंशौ ।
विठ्ठलरचितमिदं शृङ्गाररसमण्डनं पूर्णम् ॥

या श्लोकमेंतें ऐंसो निश्चय होवेहै जो दामोदर दासजी तथा चाचाहरिवंशजीको अधिकार एक सरिखो है वे चाचाजी पृथ्वी ऊपर एकसो पचीस वर्षके आसरे रहे हते जिनकुं काल कछू बाधा करसक्यो नहीं ॥प्रसंग॥ १०॥वार्ता संपूर्ण वैष्णव ७

श्रीगुसांईंजीके सेवक मुरारीदास हते तिनकी वार्ता ॥

सो मुरारीदास गौडदेशमें नारायणदासके पास नोकरी करवेकुं गए जब नारायणदासनें मुरारी दासकुं काम बतायो सो मुरारीदासको बहोत आच्छो काम देखके दस रुपैया महिना करे तब मुरारीदासनें कही जो मैं आठ रुपैया महिना लेऊंगो सवा पहेर दिन चढे आऊंगो और छे घडी दिन-रहते जाऊंगो तब नारायणदासनें ये बात कबूल राखी जब मुरारीदास चाकरी करनेलगे और मुरा रीदासके माथे श्रीबालकृष्णजी विराजते हते और सानुभाव जनावत हते और जो चाहे सो मांगते और बालककी न्याईं सब मांगते सो एक दिन नारायणदासनें ऐंसो विचार कर्‍यो जो अबारे आवें हें और वेग जाएहें सो कहा कारण होयगो तब नारायणदास विनके पाछे छाने जायके विनके घरमें छिप रहे और विनकुं सब सेवा करते देखी और श्रीठाकुरजीसों बातें करते देखे फिर नारा-यणदासजी दूसरे दिन एकांतमें मुरारीदाससों कही जो हम तुम्हारे घर काल सब रीती देखीहै जासूं तुम हमकों सेवक करो जब विनकी बहुत नम्रता देखके मुरारीदासने कही जो हमतो श्रीगु-सांईंजीके सेवकहें तुमहुं श्रीगुसांईंजीके सेवक होवो

तब नारायणदासनें मुरारीदासके पास वीनती पत्र श्रीगुसांईजीको लिखायके आदमी पठाय श्रीगुसांईजीकुं पधराए जब नारायणदास तथा विनकी स्त्री श्रीगुसांईजीके सेवक भये और भगवत्सेवा करवे लगे और जैसे मुरारीदाससों श्रीठाकुरजी बातें करते हते तैंसे नारायणदाससूं करनलगे सो मुरारीदास ऐंसे कृपापात्र हते जिनके संगतें नारायणदासहूं वैष्णव भए सो संग करियें तो ऐसेनको करिये जिनके संगसों आपनमें भगवद्धर्म आवे ॥ वार्तासंपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गौडदेशके निवासी नारायणदास पादशाहके दिवान हते तिनकी वार्ता ॥

एकसमें श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शनकुं पधारे और वस्तु जो संगमें हती सो सब खटला भेंटकर दिये ये बात नारायणदासनें घर बैठे वाही क्षण जानी सो श्रीजगन्नाथरायजीनें जताई जब नारायणदासनें दूसरो खटला तथा अस्वारी वैसीही तैयार करके पठाई और मनुष्यनसुं कही पुरुषोत्तमक्षेत्रके बाहर डेरा करो जब श्रीगुसांईजी पधारें तब खबर दीजीयो तब मनुष्य खटला लेके पुरुषोत्तमक्षेत्रसुं बाहिर जायके डेरा कीये जब श्रीगुसांईजी पधारे तब वा खटलामें सामान

घरके और सब बालक तथा बहू बेटी सहित नारायणदासके घर पधारे जब नारायणदासनें श्रीगुसाईंजीकूं सर्व समर्पण मनसुं कऱ्यो मुखसूं बोले नहीं मनमें ऐंसे जानी जो बोलूंगो तो श्रीगुसाईंजी नाहीं करेंगे ता पाछें जब श्रीगुसाईंजी श्रीगोकुल पधारे तब नारायणदासनें मनुष्यके संग सब द्रव्य पठाय दीये सो वे नारायणदास ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

एक समय नारायणदासनें श्रीगुसांईजीकुं वीनती पत्र लिखके पठाए जब श्रीगुसांईजी गौडदेशमें पधारे जब गांम बाहिर नारायणदासजी श्रीगुसांईजीकुं पधरायवे आये तब नारायणदासजी श्रीगुसांईजीके चरणारविंदके दर्शन करतही मूर्च्छा खायगये और भगवल्लीलाके दर्शन भये हते तासूं भगवल्लीलामें प्रवेश करने लगे जब श्रीगुसांईजीनें विचारे जो हालतो इनकू इहां कारज बोहोत करनेहें और हाल लीलामें प्रवेश करिवेकूं ढीलहे ये विचारिकें श्रीगुसांईजीनें नारायणदासके कानमें कह्यो जो उठो अबी ढीलहें तब नारायणदासजी सुनकें उठिबैठे और श्रीगुसांईजीकूं घरमें पधरायके ले गये जब श्रीगुसांईजी सेवालेकें पाछे अडेल पधारे सो वे नारायणदासजीको ऐंसो श्रीगु-

सांईजीकी आज्ञापर विश्वास हतो जो भगवल्लीलामें प्रवेश करनेमें ढील करी ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

एक समय नारायणदासनें श्रीगुसांईजीकुं पत्र लिख्यो जो मोकुं सत्संग नही हें ये। पत्र श्रीगुसांईजी वाचिकें चाचाहरिवंशजीकुं आज्ञा करी जो तुम नारायणदासके पास जावो तब चाचाजीनें वीनती करी जो आपके दर्शन विना कैसे रह्यो जायगो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुमकुं सर्व ठिकानें सदैव दर्शन देउंगो जब चाचाजी नारायणदासके पास आये जब नारायणदासजीकुं मारगकी रीति बताई और वैष्णवनके उतरिवेकेलीयें न्यारो घर करायो और श्रीठाकुरजीके सेवाके लीयें न्यारे मंदिर कराये और नारायणदासजी तथा विनकी स्त्री चाचाजीके संगतें भगवत्सेवा करनेलगे और चाचाजी तथा नारायणदासजी भगवद्वार्ता करवे बैठते तब दोय दिन तीन दिन सूधी देहानुसंधान भूलि जाते ऐंसे करत करत बोहोत दिन बीते जब चाचाजीनें श्रीठाकुरजीसों वीनती करी जो नारायणदास लीलाके दर्शन करिकें मूर्च्छित होय जांयहें और हाल कारजतो बोहोत करनेहैं जब श्रीठाकुरजी नारायणदासजीकों याही देहसों लीलाको अनुभव करावन लगे फेर जब

लीलाके दर्शन करते तब मूर्च्छा नहीं आवती सो वे चाचाजीकी वीनतीसु और श्रीगुसांईजीकी कानते श्रीठाकुरजीनें अती कृपा करी ता पीछें चाचाजी उहांसु श्रीगोकुल आये ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

सो वे नारायणदासजीकी स्त्री भगवत्सेवा करती हती जब वैष्णव आवते तब सबकी टहल करती कोई दिन चार ठगननें वैष्णवको वेश धरकें नारायणदासके घरमें आय रहे जब नारायणदास राजद्वार गये हते तब उन ठगननें वीरांकुं भगवद्वार्ता सुनाई तब वीरांकुं भगवद्रसको आवेश आयो सो मूर्छा आयगई जब उन ठगननें वीरांके गलामें फांसी डारके गहना उतार लीनें सो लेगये रस्तामें नारायणदासजी मिले तब नारायणदासजीनें कही जो हमसों बिदा भये विना तुम कैसें जाओ हो ऐसें कहिके नारायणदास उनको पाछे फिराय लेगये जब नारायणदास अपने घरमें गये सो स्त्रीको मृतक भई सुनी जब नारायणदासजी देखेतो वह स्त्री भगवद्रसके आवेशमें हती जब नारायणदासनें विनके गलामेंसू फांसी काढ डारी और लोगनकूं कही जो यह मरी नहीं है झूठी बातहै नारायणदासनें मनमें जानी जो मरीकहूंगो तो कोई वैष्णवनको संग नहीं करेगो तब नारायणदासनें स्त्रीकुं चरणा-

मृत देके जीवति करी तब वे ठग नारायणदासके पांवन परे और कहि हमकुं वैष्णव करो तब नारायणदासनें कहि तुम श्रीगुसांईजीके पास श्रीगोकुलमें जायके वैष्णव होवो तब नारायणदासने महाप्रसाद लेवायके श्रीगुसांईजीके ऊपर पत्र लिखदियो सावे नारायणदासजीनें वैष्णवनको दोष न देख्यो जगतमें वैष्णववेषकी निंदा न होवे तैसे कर्‍यो सो वे नारायणदास ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ४ ॥

और एक समय श्रीगुसांईजी गौडदेशमें पधारे हते जब नारायणदासके घर विराजे हते सो नारायणदास श्रीगुसांईजीकी सेवामें हते तब राजद्वारमें जायवे आयवेको बनतो नहीं हतो तब पातसाहनें ऐंसो हुकुम दियो जो नारायणदास जहांसूधी तुम्हारे गुरु इहां रहें तहां सूधी तुम सेवा करो सो श्रीगुसांईजीकी कृपातें वा म्लेच्छको मन ऐंसो फिर गयो और एकदिन पातशाहनें कही जो नारायणदास हमहूं तुम्हारे गुरूके दर्शन करेंगे तुम हमारी आडीसों वीनती करो जब नारायणदासजी आपकूं वीनती करिकें और पातसाहकूं घर लेगये और श्रीगुसांईजीके दर्शन कराये और वर्षके वर्ष पात्साह नारायणदासके घर जाते और नजराना लेते हते सो वाही दिन नारायणदासनें पातसाहके आगें

लाखरुपैया धरे जब पातशाहनें कही मैं नजराना लेवें नहीं आयोहूं दर्शन करवेकुं आयोहूं और ये द्रव्य अब तुम श्रीगुसांईजीकुं भेंट करो और कोई दिन तुमारे पास अब नजराना नहीं लेऊंगो और ये साक्षात् कन्हैयालाल हैं इनकी प्रसादीवस्तु कछु हमकूं चहिये जब श्रीगुसांईजीनें प्रसादी उपरणा दियो तब वह उपरणा पातसाह सदैव माथे ऊपर बांधे रहते और जब श्रीगुसांईजी पधारवेको विचार करते तब नारायणदासजीकूं मूर्च्छा आयजाती जब श्रीगुसांईजीनें चाचा हरिवंशजीकूं कही जो तुम इनकूं संयोग शृंगाररसको उपदेश करो और संयोगकी वार्ता सुनाओ और हम इनकूं नित्य दर्शन देवेंगे और विप्रयोगकी वार्ता इनकुं मत सुनावो संयोगरसके अनुभवविना भगवत्सेवा नहिं होवेहै जब चाचाजीके संगतें विनकुं संयोगरसको अनुभव भयो और भगवत्सेवा करनेलगे और राजकारभारकुंहूं भगवत्सेवा मानवे लगे सो जितनी कृती संसारव्यवहारकी हती सो वाकुं भगवत्सेवा मानकें करते सब ठिकाने उनकुं भगवदनुसंधानस्फूर्त भयो वे नारायणदासजी ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ५ ॥

एकदिन नारायणदासके घर श्रीगोपीनाथजीके बेटीजी सत्यभामाजी श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शन

करके पाछें आवते पधारे हते सो नारायणदासको आग्रह देखके उहां कछूक दिन बिराजे सो नारायणदासके घरके पास जेलखानो हतो जेलखानामें जो लोग पातशाहको कर नहीं भरसकते हते सो बंदीखानामें पडे हते और बहोत दुःखी हते और बडी पुकारें करते हते विनकी पुकार सुनकें सत्यभामा बेटीजीनें ऐंसो विचार कऱ्यो ये लोग दुःखीहें सो इनको दुःख भागेबिना मैं भोजन न करूंगी तब बेटीजी भोजन करे बिना पधारवेकी तैयारी करी जब नारायणदासजीनें नाहीं कही जब सत्यभामा बेटीजीनें आखोदिन भोजन न कऱ्यो तब गाममें जितने वैष्णव हते तिनने प्रसाद लियो नहीं सब वैष्णव भूखे रहे यह बातकी खबर पातशाहकूं पडी जब पातशाहकुं पडी जब पातशाहनें नारायणदासजीसूं पूंछ्यो तब नारायणदासजीनें सब समाचार कहे जब पातशाहनें कही जो बेटीजीको पचीस हज्जार रुपैया भेंट धरके भोजन करवेकी विनती करौ तब बेटीजीनें ये बात सुनके कहि जो पातशाहकुं कहो जो पचीसहज्जार रुपैया मोकूं नहीं चहीये इन कैदिनको माफ करके छोडो तब ये बात पातशाहके आगें नारायणदासनें कही जब पातशाहनें कही जो ऐंसे त्यागी बेटीजी महाराजकी

आज्ञा मैं माथेपर नहीं चढावूंगो तो हमारो बुरो होयगो जासूं सब कैदिनकूं पातशाहनें छोडदिये तब बेटीजीनें भोजन करे सो नारायणदास ऐंसे वैष्णव हते जिनके संगसूं पातशाहकी बुद्धी ऐंसी निर्मल रहेती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कायस्थ विट्ठलदासकी वार्ता ॥

सो वा विठ्ठलदासने गौडदेशमें जायके परगनौ इजारे लियो सो परगनेमें टोटो गयो तब गौडदेशके पातशाहके दिवान नारायणदासनें विट्ठलदासकूं बंदीखाने दिये तब विट्ठलदासकूं नित्य मार दिवावते सो विठ्ठलदास कैंसे हते नित्य मार खाते परंतु वैष्णवता प्रकट न करी फेर विठ्ठलदासजी हिसाब चुकायके बंदीखानेतें छुटे तब श्रीगुसांईजी गौडदेशमें पधारे तब नारायणदास दर्शनकूं गए विठ्ठलदासहूं दर्शनकुं गए जब श्रीगुसांईजीनें पूछी जो विठ्ठलदास इतने दिन कहां हते तब विठ्ठलदासनें कही जो याहीदेशमें रहूंहूं पाछे श्रीगुसांईजी भोजनकरके विठ्ठलदासकुं प्रसादलेवेकी आज्ञा करी जब विठ्ठलदासजीनें कपडा उतारे जब विनके शरीरपर मार बहोत पडी हति जासुं विनकी देह बहुत बिगडरही हती जब विठ्ठलदासकुं श्रीगुसांई-

जीनें पूंछी जो तुमकुं कहाभयो है जब विठ्ठलदासनें
वीनती करी जो महाराज देहको दंड देहही भुक्तेहैं
तब नारायणदासनें वीनती करी महाराज इनकुं
मैंनें मार देवाईहै मैनें इनकुं वैष्णव जान्यो न हतो
सो अपराध आप क्षमा करेंगे तब श्रीगुसांईजीनें
कही जो वैष्णव नहीं जान्यो परंतु जीवतो हतो
वैष्णवकुं जीवमात्र ऊपर दया राखी चहिये और
जिनके मनमें दया और विवेक और धैर्य और भग-
वदाश्रय नहीं है विनके चित्तमें भगवदावेश नहीं
होवेहै देखो विठ्ठलदास कैंसे धीरजवान है जो
इतनो कष्ट पायके दुःख सहनकिये परंतु वैष्णवता
गुप्त राखी ऐंसेनके वश्य श्रीठाकुरजी रहते हैं ये
कहिकें श्रीगुसांईजी चुप कर रहे जब नारायणदास
विठ्ठलदासके पास एकांतमें जायके अपराध क्षमा
कराए और अब इहां रहोतो बहुत आछो है तब
विठ्ठलदासनें कही जो तुम मेरी वैष्णवता जान
गये हो अब या देसमें नहीं रहुंगो सो विठ्ठलदास
ऐंसे कृपापात्र भगवदीयहते जिननें इतनो दुःख
पायकें वैष्णवपनो गुप्त राख्यो जासुं इनकी वार्ता
कहांतांई लिखिये वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवकभैयारूपमुरारी क्षत्रीकी वार्ता ॥

एकदिन श्रीगुसांईजी गोविंदकुंड ऊपर संध्या

करते हते सो भैयारूपमुरारी उहां सिकार करते करते आए सो विनके एक हाथमें बाज हतो सो विनने श्रीगुसांईजीकुं दूरसो देखे सो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तमके दर्शन भए तब शिकार छोड दियो और श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो मेरी तो ये दशा है जब श्रीगुसांईजीने कही जबसुं जागे तबही सवार ये सुनके भैयारूपमुरारी हाथ जोडके ठाढे भए तब श्रीगुसांईजीनें कही स्नानकर आवो तब न्हायके सन्मुख ठाढे भए तब श्रीगुसांईजीनें विनकुं नाम सुनायो और श्रीनाथजीके संनिधान समर्पण करायो और भोजन करके महाप्रसादकी पातर धराई तब रूपमुरारीनें महाप्रसाद लियो फेर एक-दिन रूपमुरारीनेंश्रीगुसांईजीकुं पूंछी जो मैं आपके चरणस्पर्श करूं परंतु मेरे करेकर्म मोकुं याद आ-वेंहें जासूं मेरो मन शंके हैं तब श्रीगुसांईजीनें कही अब तुम वैष्णव भए तुमरो नयो जन्मभयो जासूं तुम नित्य अपरसमें न्हायके चरणस्पर्श भलेही करौ सो वे रूपमुरारी ऐसे कृपापात्र हते जिनको मन दर्शनमात्रहीतें प्रभुके चरणारविंदमें लग्यो । वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कायथ पितापुत्र, तिनकी वार्ता ॥

सो विननें एक परगना इजारे लियो हतो तब

विनकुं वीसहजार रूपैया टूटे जब पातशाहनें विनको बंदीखानेमें राख्यो विननें पुरोहितकुं देसमें पठायो सो पुरोहित विनके घरके दागीना बेचके दो हजार रुपैया लिये और तीनहजार एक ब्राह्मणसों करज लेके पांच हजार रुपैय्या विनकु लायादिये तब विनने विचार कर्‍यो जो इन रुपैयानसूं छूटेंगे तो नहीं जासूं ये दो हजार तो श्रीगुसांईजीकुं भेट पठाय देवें और ब्राह्मणको करज आपने ऊपर रहेगो तो ब्राह्मण ऋण बाधा करेगो जब विनने तीन हजार रुपैया पाछें ब्राह्मणको पठाय दिये और दो हजार श्रीगुसांईजीकुं भेट पठाये सो पुरोहित लेके श्रीगुसांजीके पास गयो जब श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो वे पितापुत्र कहांहैं तब विन पुरोहितनें कही वेतो बंदीखानेमें हैं जब श्रीगुसांईजीनें चाचा हरिवंशजीकुं वीरबलके पास पत्र देके दिल्ली पठाए तब चाचा हरिवंशजी आयके बीरबलके इहां उतरे और पितापुत्रके पास मनुष्य पठायो वा मनुष्यनें श्रीगुसांईजीको आशिर्वाद कह्यो और पत्र दियो वा पत्रके संग वीरबलको पत्र हतो सो वे बापबेटाननें वीरबलको पत्र बाँचके छिपाय राख्यो वा पत्रको अभिप्राय ये हतो श्रीगुसांईजी वीसहजार रुपैयाके जामिन पडेंगें तो आपनौ धर्म न रहेगो और बंदीखानेमें जो रहेंगे तो धर्म रहेगो ये विचा-

रके बीरबलको पत्र छिपाय राख्यो और वा मनुष्यसों कहि जो पत्र खोवाय गयोहै तब वा ब्रजवासीनें चाचाजीसों कहि जो बीरबलको पत्र खोवाय गयो है तब चाचाजीनें मनमें विचार कियो जो पत्र खोयगयो तो कहाभयो श्रीगुसांईजीके प्रतापतें सब कार्य सिद्ध होयंगे तब ये विचारके चाचाजी बीरबलसों कहि जो श्रीगुसांईजी बीस हजार रुपैयाके जामिन पडेंगे इन बापबेटानकुं छुडाय देवो तब बीरबलनें कहि मैं श्रीगुसांईजीको दास हूं मेरे पास द्रव्य है सो श्रीगुसांईजीको है मैं जामिन पडुंगो तब बीरबलनें पातशाहकों कहकें छुडाय दीये और परगनोंमें पठाये फेर बापबेटानें कमायके द्रव्य भर दीयो सो वे बापबेटा श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिननें बंदीखानो कबूल राख्यो और धर्म न छोड्यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कृष्णदास तिनकी वार्ता ॥

सो वे कृष्णदास एक म्लेच्छके पास परगनेमें हते सो जो वैष्णवआवतो विनको रुपैयादेके खत लिखाय लेते और वेपार करावते तब रुपैया तीस हजार टूटे जब कृष्णदासकुं म्लेच्छनें बंदीखानेमें राखे तब कृष्णदासको पुरोहित सब खत म्लेच्छकुं देवे लाग्यो जब कृष्णदासनें विचार कियो ये तो मेरोसबधर्म जायगो

और सब वैष्णवनकुं कष्ट होयगो और एकलो मैंही कष्ट भुक्तुंगो तो चिंता नहीं ये विचारके कृष्णदासनें सब खत जराय दिये जब दूसरे दिन म्लेच्छनें कृष्णदासकूं बुलायके कही जो तुमारे पास कछू होयतो देओ विननें कही हमारे पास कछू नहीं है जब म्लेच्छनें कृष्णदासकूं सिरपाव देके और परगनमें पठायो और धीरेधीरे सब रुपैया भरदिये सो वे कृष्णदासजी ऐंसे कृपापात्रह ते जिननें बंदी खानो भुक्त्यो पण वैष्णवनको कष्ट न परवे दियो तासूं श्रीप्रभुननें म्लेच्छकी बुद्धी फेर डारी। वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास सेगलक्षत्री, तिनकी वार्ता।

सो वे गोपालदास श्रीनंदगाममें रहते सो श्रीनंदमें श्रीगुसांईजी पधारे जब गोपालदासनें श्रीगुसांईजीकुं अपने घरमें उतारे और सर्वस्व जो घरमें हतो सो सब अर्पण करादियो और फेर एक म्लेच्छकी चाकरी करवे लगे और वा म्लेच्छको द्रव्य गोपालदास वैष्णवनमें खरच करते रहते जब वा म्लेच्छकुं लोगननें कही याकुं चाकरीसूं काढदेवो ये नित्य कथा कीर्तनमें द्रव्य खरच डारे है। तब म्लेच्छनें कही जो याके भाग्यसों मेरो द्रव्य दिन दिन बढतो जायहै और ये कछू संसारव्यवहारमें खरचे नाहीं

है जासूं इनको कैसे काढ्योजाय सो वे गोपालदास ऐंसे कृपापात्र हते जिनके संगतें म्लेच्छकी बुद्धी निर्मल रहती हती॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ १४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवकहरिदासबनिया तिनकी वार्ता ॥

सो वे हरिदासबनिया मेरता गाममें रहते वा गाममें एकही वैष्णव हते और वा गामको राजा जैमल हतो सो स्मार्त धर्ममें हतो और एकादशी पहेली करते हते और जैमलराजाकी बेनको घर हरिदासबनियाके सामें हतो सो जब श्रीगुसांईजी हरिदासके घर पधारेहते तब जैमलकी बेनकुं बारी-मेसूं श्रीगुसांईजीके साक्षात्पूर्ण पुरुषोत्तमके दर्शन भए जब जैमलकी बेननें पत्रद्वारा श्रीगुसांईजीकों वीनती लिखके पत्रद्वारा सेवक भई काहेतें वे पड-दामेंसे बहार नहीं निकसते जासूं पत्रद्वारा सेवक भये फिर एकदिन जैमलजीनें ऐंसो हुकुम कऱ्यो जो गाममें जो दूसरी एकादशी करेगो वाकुं दंड करूंगो जब जैमलकुं हलकारानें खबर करी जो हरिदासनें दूसरी एकादशी करीहै जब हरिदासजीकुं बुलायो और कही जो हरिया तैंने दूसरी एकादशी क्यों करी तब हरिदासनें कही अरे जैमल्ला हमारी खुसी जब जैमलकुं बडो क्रोध भयो और क्रोधावे-शतें सुध भूल गयो और तरवार खेंचके हरिदास-

जीकुं मारवे दौऱ्यो और जैमलराजाकी कचेरीमें ऐंसो हुकम हतो जो मेरे हुकम विना जो कछू करेगो वाकुं शिक्षा करूंगो ऐंसी वाकी रीत हती जासूं हरिदासजीकुं कोई पकडवे न उठ्यो जब जैमलकुं तलवार खेंची देखके हरिदास बाहेर भागे जब वे जैमल पाछे दोड्यो जब हरिदास जैमलकी बेनके घरमें घुस गए तब वेभी पाछें तलवार लेके गए तब जैमलकी बेननें जैमलकुं देखके कहेवे लगी जो तूं वैष्णवकुं मारेगो तो अपराध पडेगो और ये तो मेरो बडो भाई है और तूं छोटो भाइ है जासूं याके पांवनपर नहीं तो तोकुं अपराध पडेगो और आपने बाप दादा सब नरकमें जाएंगे फेर वैष्णव माहात्म्यके श्लोक वा बाईनें जैमलकुं सुनाए–

भगवद्वचनम्–मत्तो मद्भक्तभक्तेषु प्रीतिरभ्याधिका भवेत्॥ तस्मान्मद्भक्तभक्तश्च पूजनीयो विशेषतः ॥ १ ॥ अध्वश्रांतमविज्ञातमतिथिं क्षुत्पिपासितम् ॥ यो न पूजयते भक्त्या तमाहुर्ब्रह्मघातकम् ॥ २ ॥ मद्वंदनाच्छतगुणं मद्भक्तस्य तु वंदनम् ॥ मद्भोजनाच्छतगुणं मद्भक्तस्य तु भोजनम् ॥ ३ ॥ बृहन्नारदीये--यो विष्णुभक्तान् निष्कामान् भोजयेच्छ्रद्धयान्वितः ॥ त्रिःसप्त कुलमुद्धृत्य स याति हरिमंदिरम् ॥ ४ ॥ विष्णोःप्रसादमाकांक्षन् वैष्णवान् परितोषयेत्॥अन्यथा वातकामोसौ नैव केनापि तुष्याति ॥ ५ ॥ पूजनाद्विष्णुभक्तानां पुरु-

षार्थोऽस्ति नेतरः ॥ तेषु च द्वेषतः किंचिन्नास्ति नाशनमात्मनः ॥ ६ ॥ वस्त्रालंकारभूषाद्यैर्योभागवतमर्चयेत् ॥ भूष्यते तस्य वंशोपि श्रीवृद्धिः पुत्रपौत्रकैः ॥ ७ ॥ अंगसंवाहनाद्यैश्च तांबूलै र्व्यंजनैस्तथा ॥ तोषयेद्भगवद्भक्तं तुष्यते च जनार्दनः ॥ ८ ॥ श्रीमद्भागवते—बाध्यमानोपि मद्भक्तो विषयैराजितेंद्रियः ॥ प्रायः प्रगल्भया भक्त्या विषयैर्नाभिभूयते ॥ ९ ॥ श्रीमद्भगवद्गीतायाम्--अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामनन्य भाक् ॥ साधुरेव समंतव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥१०॥ स्कंदपुराणे—ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा यदि वेतरः॥विष्णुभक्तिसमायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः ॥११॥ दुराचारोपि सर्वाशी कृतघ्नो नास्तिकः पुरा ॥ समाश्रयेदादिदेवं श्रद्धया शरणं हि यः ॥ १२ ॥ हारीतस्मृतौ—भगवद्भक्तिदीप्ताग्निदग्धदुर्जातिकल्मषः । श्वपचोऽपि बुधैः श्लाघ्यो न वेदाढ्योऽपि नास्तिकः ॥ १३ ॥ पाराशरस्मृतौ—तदीयाराधनं पुण्यं वक्ष्यामि मुनिसत्तमाः ॥ यदन्वेषणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ नातःपरतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥१४ ॥ सर्वकामप्रदं पुंसामत्यंतातिशयं हरेः ॥ तस्मात्परतरं श्रेयो नास्ति सत्यं ब्रवीम्यहम् ॥ १५ ॥ सकृत्तेषं पूजनं तेषां मुक्तिदं पापिनामपि॥सहस्रवार्षिकी पूजा विष्णोर्भगवतो हरेः॥ सकृद्भागवताचार्याः कलां नार्हंति षोडशीम् ॥१६॥ सकृत्संपूजिते पुण्ये महाभागवते गृहे ॥ आकल्पकोटि पितरः परितृप्ता न संशयः ॥ १७ ॥ यथा तुष्यति देवेशो महाभागवतार्चनात् ॥ तथा न तुष्यति हरिर्विधिवत्स्वार्चनादपि ॥१८॥ षष्टिवर्षसहस्राणि विष्णोराराधने फलम् ॥ सकृद्वैष्णवपूजायां

लभते नात्र संशयः ॥१९॥ वैष्णवो यद्गृहे भुंक्ते तस्य भुंक्ते हरिः स्वयम्॥ हरिर्यस्य गृहे भुंक्ते तस्य भुंक्ते जगत्रयम्॥ २०॥

अंबरीषाख्याने दुर्वासा प्रतिभगवद्वाक्यम्—अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र इव द्विज ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥ १ ॥ नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैः साधुभिर्विना ॥ श्रियं चात्यंतिकीं ब्रह्मन्येषां गतिरहं परा ॥ २ ॥ ये दारागारपुत्राप्तान् प्राणान्वित्तमिमं परम् ॥ हित्वा मां शरणं याताः कथं तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥३॥ मयि निर्बद्धहृदयाःसाधवःसमदर्शनाः ॥ वशी कुर्वंति मां भक्त्या सत्स्त्रियः सत्पतिं यथा ॥४॥ मत्सेवया प्रतीतं च सालोक्यादिचतुष्टयम्॥ नेच्छंति सेवया पूर्णाः कुतोऽन्यत्कालविप्लुतम् ॥ ५ ॥ साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् ॥ मदन्यत्ते न जानंति नाहं तेभ्यो मनागपि ॥ ६ ॥ एवं धर्मैर्मनुष्याणामुद्धवाऽऽत्मनिवेदिनाम् ॥ मयि संजायते भक्तिः कोऽन्योऽर्थोऽस्यावशिष्यते ॥ ७ ॥

दशमस्कंधे उत्तरार्धे भगवद्वाक्यम्—न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः ॥ ते पुनंत्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः ॥८॥नाग्निर्न सूर्यो न च चंद्रतारका न भूर्जलं खं श्वसनोथ वाङ्मनः । उपासिता भेदकृतो हरंत्यघं विपश्चितो घ्नंति मुहूर्तसेवया ॥ ९॥ यस्याऽऽत्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः ॥ यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेन कर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः॥ १० ॥

ये सुनके जब जैमलजी शास्त्रके ज्ञाता हते जब कहन लगे जो या शास्त्रको अभ्यास कहांसों कियो है तब वा बाईनें कही मेरे बडे भाई हरिदाससों सी-

खीहौ तब जैमलनें कही ये तेरो बडो भाई कैसे ? जब वा बाईनें कही ये श्रीगुसांईजीके सेवक पाहिले भए और मैं पाछे सेवक भई जासूं ये मेरे बडे भाई है और मेरे प्राणसूं प्रिय है जब जैमलनें कही जो ये तेरे घर नित्य आवेहै कहा तब वा बाईनें कही जो ये नित्य भगवत्सेवा करवे आवेहै सो तूं चल दर्शन कर तलवार नीचे धरदे श्रीठाकुरजीके सन्मुख तलवार नहीं आवेहै तब वा बाईनें जैमलजीकुं ऐसे कहिकें और हाथ पकडके तलवार नीचे धरा यके श्रीठाकुरजीके सन्मुख लेगई और दर्शन करत मात्र क्रोध उतर गयो और बुद्धि निर्मल होयगई जैसे सूर्य उदय भयेतें कमल प्रफुल्लित होयहै तैसे जैमलजीको हृदयकमल प्रफुल्लित होयगयो और कहेवे लग्यो जो हरिदासजीसूं मेरे अपराध क्षमा करावो और मोकूं वैष्णव करो जब वा बाईनें जैमलजीको न्हवायके हरिदासके पास अपराध क्षमा करायके जैमलजीकूं बैठायो और कही जो आज इहां महाप्रसाद लेओ तब जैमलजीनें महाप्रसाद लियो इतनेमें श्रीगुसांईजी द्वारकासों मेरते पधारे और हरिदासजीके घर खबर पठाई जब ये बात सुनके हरिदासजी जैमलजीकुं संग लेके श्रीगुसांईजीके दर्शन करिबेकुं गए और जैमलजी उहां वैष्णव भए और

सब कुटुंब सहित गाम सहित जैमलजी वैष्णव भए तब सब लोकनकुं बडो आश्चर्य भयो जो जैमलतो हरिदासकुं मारवे गएहते सो वैष्णव होयकें घर आए वे हरिदास ऐंसे टेकके वैष्णव हते जैमलजीसों न डरे जैमलके सन्मुख उत्तर दिये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

वे हरिदासकी एक बेटी हती सो हरिदासनें पुरोहितसों कही याकी सगाई करि आवो तब वह पुरोहित जैनधर्मीकुं धनाढ्य जानके धनके लोभसों सगाई करि आयो जब हरिदास सुनके कछू बोले नहीं और पुरोहितसों कही द्रव्य और बेटी लेजायके तुम विवाह करिदेवो तब वा पुरोहितनें हरिदाससों द्रव्य लेके विवाह करदियो और बेटीकुं भरभारे बिदा करदीयो सो वे हरिदास ऐंसे टेकके भगवदीय हते जिननें लौकिकनिंदा सहन करि परंतु जैनधर्मीको मुख न देख्यो वे ऐंसे भगवदीय हते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक हरिदासकी बेटी तिनकी वार्ता ॥

जब वे पुरोहित हरिदासकी बेटीकुं परनायके सासरामें धरिगयो वाको नाम कृष्णाबाई हती सो वा कृष्णाबाईनें सासराके घरको अनाचार देखके ये विचार कियो जो अन्नजल न लेनो और देहत्याग करनो जासूं वानें तीनदिन सूधी अन्न जल लियो नहीं

जब वाकी सासको स्वभाव दयायुक्त बहुत हतो जासूं वाकुं दया आई जब वाकी सासूनें कही बहू तूं क्यो खावें नहींहै जब वा कृष्णानें कही मैं मेरे हाथसूं करके लेऊं दूसरेके हाथको जल हूं न लेऊं जब वाकी सासूनें वासों कही तूं तेरे हाथसे जल भर लायके रसोंई कर और बासन बहूनें कहे सो सब सासूनें मँगाये दीने जब वा बहूनें रसोंई करकें भोग धरचो और भोग सरायके एक पातर अपनी करलीनी और सब महाप्रसाद विनकु हठाय दीनौ सो महाप्रसाद लेतमात्रही विनकी बुद्धी निर्मल भई जब वे घरमें वा कृष्णाकी सराहना करवे लगे और वे कृष्णा गाम बाहेर कुवा हतो जहां नित्य जल भरनेकूं जाती हती वा कुवापर एक वैष्णव विनकुं मिल्यो जब वासूं हरिदासजीकी पहँचान काढी तब वैष्णव नित्य कुवापर वा बाईको भगवत्स्मरण करते वे कृष्णा विनसों भगवत्स्मरण करे विना प्रसाद न लेती और जादिन वे कुवापर न मिलते जब विनके घर जायके भगवत्स्मरण कर आवती काहेतें जो श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करी है.

नवरत्नग्रंथमें-"निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः"

यातें नित्य भगवत्स्मरण करेविना प्रसाद लेती न हती एकदिन वे वैष्णव कोई गाम गये हते सो तीन

दिनमें आए जब वा कृष्णानें तीन दिन सूधी प्रसाद न लियो हतो जब वा कृष्णाकुं सासूनें कही तूं प्रसादकी पातर नित्य क्यों गायकुं देवेहै और लेत क्यों नहीं हें तब वा कृष्णानें कही एक मेरो गुरुभाई नित्य कुवापर मोकुं मिलेहैं और जब न मिले तब वाके घर जायके भगवत्स्मरण करआउं हूं सो अब तीन दिन भये मिले नहिं जासूं महाप्रसाद न लियो सो वे सासू वाको साच देखके बहोत प्रसन्न भई और कहेवे लगी मैं तेरे संग चलुं मोकुं वा वैष्णवको घर दिखावेगी तब वा सासूको वा वैष्णवके घरलेगई जब वे वैष्णव तीन दिनमें फेर घर आयो हुतो जब वा कृष्णानें वा वैष्णवसों भगवत्स्मरण कर्यो जब वाकी सासू वैष्णवकुं हाथ जोरिके कहेवे लगी जो ये तीन दिनसूं भूखी है और तुम कृपाकरिके हमारे घर नित्य आयके याकुं भगवत्स्मरण करजावो तो मैं तुम्हारो बडो उपकार मानुंगी और कछु तुमारे संगसों मेरी आछो होयगो जब वा वैष्णवनें नित्य आयवेकी हां कही जबतें नित्य वाके घर जायके भगवत्स्मरण करते जबतें वा कृष्णाकी सासू और सासरा और धणी और सब घरके वा वैष्णवकुं पहचानेने लगे और वा वैष्णवकुं कहेवेलगे जो तुम्हारो धर्म हमकुं सम-

झावो और हम सब तुमारे शिष्य होंएंगे जब वानें कही हमारे धर्ममें तो सब श्रीगुसांईजीके सेवक होवेहें जब वाकी सासूनें कही जो वे श्रीगुसांईजी कहां रहेंहें इहां कैंसे पधारे सो तुम उपाय करो द्रव्यतो हमारे ईहां बहोत है तुम कहो सो मैं खर चूंगी जब वा वैष्णवनें पत्र लिखायके कासिद पठा- यो तब श्रीगुसांईजी उहां पधारे और वे सब सेवक भए और विनके संगसों सब गामके बनियांहूं वैष्णव भए सो वे हरिदासकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपापात्र हती जिनके संगसूं सब गाममें वैष्णव भये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

श्रीगुसांईजी उहांते द्वारका पधारे और एकदिन वा कृष्णाकी सासूनें रसोई करी जब वा कृष्णाकुं बडो ताप भयो जा अब मोसों भगवत्सेवा छूटी और रसोई करवेक समें श्रीठाकुरजी आयके मोकुं सिखावते और इच्छा आवती सो सामग्री करावते और सब बालभाव जनावते सो वे सुख मोकुंतो न मिलेगो ये विचारके बहुत विप्रयोग करवे लगी विनको ताप श्रीठाकुरजी सही न सके जब वाकी सासूकुं श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें जताए जो मोकुं कृष्णाके हाथकी रसोई बहुत आछी लगे है तासूं तुम दूसरी सेवा करो फेर दूसरे दिन वाकृष्णाकूं

सासूनें कही जो रसोई तुम करो मैं दूसरी सेवा करूंगी और श्रीगुसांईजीकुं हूं श्रीठाकुरजीनें जताइ जो आप कृष्णाकुं भलामण करो जो रसोईकी सेवा न छोडे तब श्रीगुसांईजी द्वारकासुं पाछे वा गाममें पधारे जब वे कृष्णा श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आवती जासूं रसोईकी बहुत अवार जानके वाकी सासू रसोई करती जब श्रीगुसांईजीनें वा कृष्णासों आज्ञा करी जो तेरे हाथकी रसोई श्रीठाकुरजीकुं भावे है जासूं तुम श्रीठाकुरजीसों पहुंचके हमारे दर्शनकुं आईयो श्रीप्रभुनकुं श्रम होय ऐंसो करणो नहीं ये दासको मुख्य धर्म है जादिनतें कृष्णाबाई रसोईकी सेवा विशेष करके आपही करती सो वे कृष्णाबाई ऐंसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ १६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक अलीखानपठाण तिनकी वार्ता ॥

सो वे अलीखान पठाण पृथ्वीपतीके पाससों तवीसाकी हकूमत लेके महावनमें आयरहे और श्रीगुसांईजीके पास नित्य कथा सुनवेकुं आवते विन नें कथामें ये सुन्यो--

श्लोक-" वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रेपत्रे चतुर्भुजः ॥
यत्र वृंदावनं तत्र लक्षालक्षकथा कुतः ॥

ये श्लोक सुनके ऐंसी डोंड़ी फिराई जो व्रजके वृक्षको पत्ता कोई तोरेगो वाकुं मैं शिक्षा करूंगो

वा देशमें एक तेली तेल लादक जातो हतो वानें एक वृक्षकी डार तोडी जब अलीखाननें वाको सगरो तेल वा वृक्षमें ढलवाय दियो तबसूं ऐंसो डर बैठगयो जो काइ ब्रजके वृक्षको पत्ता न तोरे ॥ प्रसंग ॥ १॥

फेर एक दिन एक चोरकुं अलीखानके पास पकड लाए वे चोर सोगंध खायवे लग्यो और कही जो मैं ताते तेलमें हाथ डारूंगो जब तातो तेल ठंढो होयगो तब मेरी बात आप साची मानोगे तब अलीखाननें तेल मगायके कही जो परमेश्वर ताते तेलकुं ठंढोकरसकेहैं वो ठंढेको तातो कर सकेंगे जासूं तूं ठंढो तेलमें हाथ डार जब वा चोरनें ठंढे तेलमें हाथ डारे तब वाके हाथ जर गएसो वे अली खानको परमेश्वर ऊपर ऐंसो दृढविश्वास हतो॥प्रसंग २॥

वा अलीखानकेपास एक घाडा बहुत सुंदर हतो और एक घडीमें छःकोस चलतो हतो वा घोडाकुं देखके श्रीगुसांईजीनें बहुत सराहना करी जब वा घोडा अलीखाननें श्रीगुसांईजीके पास पठाय दियो तब श्रीगुसांजीनें राख्यो नहीं जब अलीखान मनमें समझे जो मैं इनको सेवक होऊं तो राखेंगे तब अलीखान सेवक भए जब अलीखान सेवा करवे लगे तब अलीखानकी बेटीहुं सेवा करवे लगी तब अलीखानकी बेटीकुं श्रीठाकुरजीनें अनुभव

करायो और संगमिलके नृत्य करते जब अलीखा नकुं खबर पडी जो भीतर कहा नृत्यको शब्द होयहै जब अलीखाननें छिपके देख्यो तो श्रीठाकुरजी पधारेहें और नृत्य करेंहें सो देखिके बेटीकी बहुत सराहना करन लागे ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और नित्य श्रीगुसांईंजी श्रीगोकुलमें कथा कहते और सब वैष्णव सुनते और अलीखानहूं नित्य कथा सुनिवेकुं आवते जब अलीखान आवते तब श्रीगुसांईंजी कथा कहते वैष्णवनके मनमें आई जो म्लेच्छ आवेहें जब कथा वाचेहें तब श्रीगुसांईंजी सब वैष्णवनके मनकी जानके एकदिन वैष्णवनसूं पूंछी जो काल कहा प्रसंग हतो जब कोई वैष्णव- कहि सक्यो नहीं तब अलीखाननें हाथ जोडके वीनती करी जो आपकी आज्ञा होय तो कालकी कहूं अथवा आज्ञा होय तो जादिनसुं कथा सुनूंहुं सब दिनकी कहूं जादिनसुं कथाको आरंभ भयो है ये सुनके श्रीगुसांईंजी बहोत प्रसन्न भये सो वे अलीखान ऐंसे कृपापात्र हते जो कछु भगवत् कथा सुनते सो एक अक्षर न भूलते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १७ ॥

श्रीगुसांईंजीके सेवक निहालचंदझलोटा क्षत्री तिनकी वार्ता.

वे निहालचंद उज्जैनमें रहते हते पुष्टिमार्गीय ग्रंथ

सुन वेमें बहोत आसक्ति उनकी हती और श्रीठाकु-
रजी उनकु अनुभव जतावत हते सो एक समें ये
निहालचंद श्रीगोकुल चले रस्तामें सोलह मनुष्य
व्यापारिनको संग भयो सो रस्तामेंसों चोर वेपारि-
नकों तथा निहालचंदकुं पकरिके लेगए सो द्रव्य सब
लेके कैद करे और सबको मार डारने ऐसो विचार
कऱ्यो परंतु वे चोरनको जो मुख्य पटेल हतो वाकी
मा वैष्णव हती चाचा हरिवंशजीनें जिन भीलनको
गाम वैष्णव कऱ्यौ हतो वा पटेलकी मा वा गामकी
बेटी हती और वे निहालचंदभाई रात्रिकों कीर्तन
करते हते सो वा पटेलकी माने सुन्ये सो वे उठके
निहालचंदजीके पास गई और विनकुं पूंछ्यो जो
तुमारो नाम कहाहे विनने नाम बताये सो बे निहा-
लचंदको नाम वानें वैष्णवनसों सुन्यो हतो सो बे
नाम सुनतही पांवन पडी और बेटाकों लायके
पावन पराये अपराध क्षमा कराए और सब
गामकों वैष्णव कराए और सब गामसूं मिलके
श्रीगुसांईजीकी भेट दिवाई और वा निहालचंदनें
विन चोरनको खेती करवेकी कही चोरी छुडाय
दीनी फेर उहांसों वे निहालचंद श्रीगोकुल आए
और वे सोले वेपारीहूं संग आए और सब वैष्णव
भए और विनके संग जो मालहतो सो सब भेट कर

दीनो सो वे निहालचंद ऐंसे कृपापात्र हते जिनके संगसूं भीलको गाम तथा व्यौपारी सब वैष्णव भए ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक माधोदासक्षत्री तिनकी वार्ता ॥

सो वे माधवदास काबुलमें रहते सो एकसमें भैयारूपमुरारी देशाधीपतीके संग काबुलगए और उहां बजारमें माधवदासजीके माथेपर तिलक देखके पूछवे गए जो तुम कोन हो और ये तिलक क्यों करयो है जब माधवजीनें कही हम श्रीगुसांईजीके सेवकहैं ॥ जब रूपमुरारीनें कही जो हमहूं श्रीगुसांईजीके सेवक हैं तब माधवदास बहुत प्रसन्न भए इतनेमें माधवदास उठके अंचल फिरायवे लगें जब रूपमुरारीनें पूंछी यह कहाहै जब विननें कही श्रीनाथजी गाय चरायके ब्रजमें पधारें हें जासूं अंचल वारत हूं तब रूपमुरारी ये सुनके बहोत विस्मय भए ऐंसे आश्चर्य भयो जो श्रीनाथजी इनको इहां दर्शन देतहें तब मनमें इनकी बहोत सराहना किये और माधवदासनें जो श्रीनाथजीको शृंगारकह्यो सो भैयारूपमुरारीनें लिखलीनो फेर माधवदासके घर जायके श्रीठाकुरजीको दर्शन किया सो साक्षात् श्रीगोवर्धननाथजीको दर्शन भयो तब मनमें कही मेरे बडे भाग्यहें जो श्रीगुसांईजीनें ऐंसे

म्लेच्छदेशमेंहू मोकों वैष्णवनको संग दियो फेर कछुकदिन रहिके चलवे लगे जब माधवदासनें कही जो तुम थोडे दिन और रहो सो पृथ्वीपति वीस मजिल जायगो तब मैं तुमकूं एकदिनमें पोहोंचतो कर देऊंगो जब रूपमुरारि रहे बीसदिन पाछे माधवदासजी रूपमुरारीके संग घोडापर बैठके एकरातमें परवतमेंको दूसरो रस्ता अस्सीकोसको एक रातमें पहुंचे सो वे रस्तामें चोर बहुत हते परंतु माधवदासजीकूं तथा भैयारूपमुरारीकूं कोईनें देखे नहीं और आखीरात रस्तामें भगवद्वार्ता करत आए जब माधवदासनें कही मैं हरिद्वारमें श्रीगुसांईजीको सेवक भयो हतो तब रूपमुरारीकूं बडो आश्चर्य भयो जो श्रीनाथजी ब्रजलीलासहित इनकों दर्शन देवेंहैं सो इनके ऊपर श्रीगुसांईजीकी बहुत कृपाहै जब माधवदास रूपमुरारीसों बिदा होय अपने घर आए सो वे माधवदास ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं काबूलमें श्रीनाथजी नित्य दर्शन देते सार ये कि प्रभूतौ केवल भावके वशहें और साधनके वश नहींहें। सो नंददासजीनें कहीहै—

दोहा—यद्यपि अगमतें अगमहैं, निगम कहत हैं जाहि।
तदपि रंगीले प्रेमवश, निपटनिकट हरि आहि॥

वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥ १९॥

श्रीगुसांई० सेवक माधवदासभट्ट नागरा कायथकी वार्ता ॥

वे माधवदास श्रीगुसांईजीके सेवक भए तादिनतें विनको चित्तशांत भयो और भगवत्सेवा करवे लगे माधवदासके पिता संसारासक्त बहोत हते और विषयी हते और माधवदास ऊपर अप्रसन्न हते और विनके पास द्रव्य बहुत हतो माधवदासकुं एक पैसा देते न हते सो ऐंसे जानते जो माधवदास भगवत् धर्ममें खर्च डारेगो और माधवदासकी निंदा बहुत करते हते जब वे वृध्द बहुत भय तब माधवदासनें विनसों कही अबतो तीर्थयात्रा करो तो बहुत आछो है तब माधवदासके पिता तीर्थकरवेको चले जब मथुराके चोबे विनको मिले चोबेननें कहा गुरुमुख होय जा और तब विननें विचार कर्यो जो ये चोबे तो मेरे गुरु भए हें सो बहुत दिन भए हें परंतु मेरो मन संसारके विषयमेंसे निकस्यो नाहिं माधवदासके गुरुके शरण जाउंगो जब मेरो मन निवृत्त होयगो ये विचारके श्रीगोकुल गए और वीनति करी जो मेरो अंगीकार करौ तब श्रीगुसांईजीनें नाम निवेदन करायो जब माधवदासके पितानें श्रीगुसांईजीके संग जायके श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये और मनमें

ऐंसी आई जो श्रीगुसांईजीके चरणारविंद नहीं छोडूंगो जहां सुधी देह रहेगी ये विचार करिके माधवदासकुं पास बुलाय लिये और मनमें कहेने लगे जो मेरे धन्य भाग्य हैं जो माधवदास जैसो पुत्र जन्म्यो तो मोकुं श्रीगुसांईजीके चरणारविंद मिले ॥ और सब तीर्थ इनके चरणारविंदमें हैं जासूं तीरथ करवे न जाऊंगो और सब द्रव्य माधवदासकों सोंपदिये सो माधवदास ऐंसे भगवदीय भये जिनके संगतें उनके पिता जो विषयासक्त हते सो विषयमेंसूं मन काढके प्रभूमें लग्यो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कटहरीया, तिनकी वार्ता ॥

एकसमें श्रीगुसांईजी गुजराततें व्रज पधारते हते रस्तामें तीनसौ असवार लेके कटहरिया लोगनको लुटते फिरते हते तब श्रीगुसांईजीकी असवारी जाती देखके आयके घेरो दियो और पंद्रे बीस गाडी हती सबको रोक लीनि तब श्रीगुसांईजीके मनुष्य एक एक गाडीपे एक एक ठाढे होय गये सो विन चोरनकुं ऐंसे दीखे जैसे गाडीपें एक एक सिंघ ठाढेहै और वे कटहरियातो श्रीगुसांईजीके रथके पास गयो जायके देखे तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम बिराजे है तब दंडवत करके ठाढो रह्यो

और वीनती करि जो मैं अपराधीहुं आप कृपाकरके मोकुं पावन करौ आपविना मेरो उद्धार करसके ऐंसो कोई नाहिं. यह वीनती सुनके श्रीगुसांईजीनें नाम सुनायो और उहां डेराकिये तब कटहरियानें सब चोरनकुं बिदा कर दिये और आप श्रीगुसांई-जीके संग गये और जायके श्रीगोकुलमें रहे कट-हरियानें सेकडो नवे पद बनायके गाये एकदिन जन्म अष्टमीपें श्रीनाथजीके आगे गाये ॥ सो पद--

" आज महा मंगल महेरानें ।
पंच शब्द ध्वनि भेर वधाई घर बेरकबाने ॥ "

सो ये पद सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये और आपनें विचार कियो जो श्रीनाथजीने कटहरियाके ऊपर कैसि कृपा करिहै जो चोरी कर-तो हतो और मनुष्यको मारतो हतो सो अब भ-गवल्लीलानको अवगाहनकरे है ऐंसे विचारके आप बहोत प्रसन्नभये और गोपालदासजीनें गायो है-

" ए वाते गुणनिधि नाथगातां ब्रह्महत्यादिक अघ टरे ॥
लीलाते लहेरि सिंधु झीले " ॥

रास रसिकने जैमले सो ये बात कटहरियामें प्रत्यक्ष देखि सो वे श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वै० ॥ २१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रूपचंदनंदा तिनकी वार्ता ॥

सो वे रूपचंदनंदा आगरेमें रहते वे एकदिन श्रीगोकुल आये सो श्रीगुसांईजीके पास राघवदास ब्राह्मण श्रीसुबोधीनीजी पढते हते जब राघवदासके मनमें ऐसी आई जो चाचाजी परदेसमें जातेहैं तो भेट बहुत लेआवेहै और मेरे सरीखो पंडित जायतो चाचाजीसों अधिकी भेटलावे क्यों जो चाचाजी कछु पढे नहींहैं सो विनके मनकी श्रीगुसांईजीनें जानी और रूपचंदनंदानें हूं जानी तब रूपचंदनंदानें राघवदाससों पूछी जो तुम पढे हो तो श्रीमद्भागवतके दशमस्कंधमें पूर्वार्धके ४९ अध्यायहैं और उत्तरार्धके ४१ अध्याय हैं सो अर्धभाग विनके कोनसी रीतसों नाम पड्यो तब राघवदासकुं कछु उत्तर आयो नहीं जब रूपचंदनंदानें कही योग्यताता मनमें चाचाजीसूं अधिक मानो हो जब राघवदासनें अपनो अपराध क्षमा करायो सो रूपचंदनंदा ऐंसे हते श्रीगुसांईजीके मनकी तथा वैष्णवनके मनकी जान जाते सो ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

सो एकदिन श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हुते जब श्रीगुसांईजीके मनमें आई जो ऐसो घोडा होय जो इहांसे चारघडीमें श्रीनाथजीके दर्शन करि आवें

जब रूपचंदनंदानें श्रीगुसांईजीके मनकी जानके वैसोही घोडा लायदियो तब श्रीगुसांईजी घोडापर असवार होयके श्रीनाथजीके दर्शन करि फिर आगरे पधारे जब रूपचंदनंदासो कही जो तूं कछू मांग तब विननें ये माँग्यो जो आगरेमें मेरे घर सिवाय दूसरे घर आयके कोइं दिन उतरनो नाहिं जब पधारें तब मेरे घर उतरें विनकी श्रीगुसांई-जीके स्वरूपमें ऐसी प्रीती हती और श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल बिराजते हते तब जो सामग्रीकी श्रीगु-सांईजीके मनमें आवती तब वे सामग्री रूपचंद-नंदा श्रीगुसांईजीके मनकी जानके झटलेके पठावते हते और रूपचंदनंदाको मन श्रीगुसांईजीके स्वरू-पमें तद्रूप होय गयोहतो ऐसी ऐसी इनकी वार्ता अनेक हैं सो वे भगवदीय कृपापात्र हते ॥ इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २२॥

श्रीगुसांईजीके सेवक यदुनाथदास तिनकी वार्ता ॥

सो जौनपुरमें रहते सो उहां एक हाथीको महा-वतकी स्त्रीसों विनको मन आसक्त हतो सो वाके देखे बिना जल नहीं पीते सो एकदिन वो लुगाई सूती हती पहेर दिन रह्यो जहांसूधी उठी नहीं यदुनाथ-दास तीन पहेर वाके दरवज्जापें ठाडे रहे जब वे उठी तब वानें लौंडीसों कही जो देख तो बाहेर

कोई पुरुषतो नहीं ठाडो है तब वा लौंडीने कही जो एक वोहि दैवको मारयो ठाडो है तब वे स्त्री बोली वोतो बावरो है जैंसे मेरे हाड चामसूं मन लगायो है वैसे श्यामसूं लगायो होतो तौ स्यानों जानती ये बात सुनके यदुनाथदासके हृदयमें प्रकाश होय गयो जैसे सूरज उदय होवे तो अंधारो मिटके प्रकाश होजाय तब उहांसों चलदिये सो घरमें आयके ऐंसो संकल्प कियो जो अब जैंसे बने तैंसे श्यामकुं भजनो वाही घडी जौनपुर श्रीगुसांईजी पधारे हते और सब वैष्णव दर्शनकुं जाते हते सो भीड देखके यदुनाथदासहूं संग गए जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम कोटिकंदर्पलावण्यस्वरूपके दर्शन भए जब दंडवत करिके श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो मोकूं शरण लेओ जब श्रीगुसांईजीनें नाम निवेदन करायो मारगकी परिणालिका समझायके श्रीठाकुरजी पधराय दीये फिर यदुनाथदास सेवा करवे लगे यदुनाथदासको मन भगवत्सेवामें ऐंसो आसक्त भयो जो वे स्त्री हाथी वालाकी रोज सामें आयके ठाडी रहै परंतु यदुनाथदास वाकी आडी देखे नहीं और बोलेहुं नहीं वे यदुनाथदास ऐंसे कृपापात्र

हते जिनको चित्त विषयसों छूटके श्रीप्रभुनमें लगगयो वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २३ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक राजालाखा तिनकी वार्ता ॥

वह राजा व्रजमें तीरथ करवेकों आयो और श्री नाथजीके दर्शन करिके और श्रीगुसांईजीके शरण गयौ और श्रीनाथजीके स्वरूपमें ऐंसे आसक्त भयो जो श्रीनाथजी विना वाकूं कछू भावे नहीं श्रीनाथजीको रटन विनकुं अष्टप्रहर रहेतो हतो एक दिन वाकी स्त्रीनें कही जो उहां पडदाकी बंदोबस्ती होय तो मैं दर्शन करूं तब राजानें कही श्रीनाथजीके इहां पडदा कैसो जब वा राणीनें श्रीगुसांईजीसूं परबारी बीनती करवायके पडदाको बंदोबस्त करवायो और दर्शनकों आई जब एक राजा भीतर हतो और कोई मनुष्य नहीं हतो सो श्रीनाथजीनें कवांड खोलडारे सो अचानक रानीके ऊपर भीड पडी सो राजानें कही मैंनें कह्यो हतो जो इहां पडता नहीं चले और श्रीनाथजीनें कवांड खोले वा राजाकी बात सत्य करवेके लिये खोले सो ऐंसे श्रीनाथजीमें आसक्त हते और श्रीगुसांईजीकी कृपातें विनको भाव सदैव ऐंसो रहतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक ज्ञानचंदकी वार्ता ॥

सो वे ज्ञानचंदकी देह जब थाकी तब सब वैष्णवनसों कही जो तुम भगवन्नाम लेओ तब वैष्णव भगवत्स्मरण करनलगे और भगवत्स्मरण करते करते ज्ञानचंदकी देह छूटी । जब श्रीगोकुलमें नवीन देह धरिके श्रीगुसांईजीकुं जायके दंडवत करी तब श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो कब आए तब ज्ञानचंदनें कही अबी आयोहूं इतनेमें श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शन खुले तब ज्ञानचंद दर्शन करिके लीलामें प्रवेश कर गये फिर श्रीगुसांईजी बाहेर पधारे जब वैष्णवननें पूछी जो ज्ञानचंद कहां गए हैं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ज्ञानचंद भक्तचंदके संग गये हें जब चाचाहारिवंशजी समझे जो ज्ञानचंदकी देह छूटी और भगवल्लीलामें गए चाचाजीनें सब वैष्णवनसों कही सो वे ज्ञानचंद ऐसे कृपापात्र हते जो सबनके देखते वैष्णवनकुं विश्वास उपजायवेके लियें भगवल्लीलामें प्रवेश कर्यो ॥ वार्ता संपूण ॥ वैष्णव ॥ २९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक भाईलाकोठारी तिनकी वार्ता ॥

जब श्रीगुसांईजी द्वारका पधारते तब भाईलाकोठारीके घर उतरते जब भाईला कोठारीको मन उद्विग्न होतो श्रीगुसांईजीके दर्शन करवेके

लिये तब भाईलाकोठारीके मनकी जानके और सब काम छोडके श्रीगुसांईजी पधारते और वे भाईलाकोठारीके घरमें ऐसो चमत्कार हतो जो कोई विनके घरमें जावे वाकी बुद्धि श्रीगुसांईजीकी कृपातें निर्मल होय जाती वा देशमें एक ब्राह्मणि श्रीगुसांईजीकी सेवक भई वानें अपनो सब द्रव्य भेट कर दीनो तब वाके परोसमें एक ब्राह्मण चुगल रहतो हतो सो वानें धौलकामें लाछबाई राणीसो कहि एक गोकुलको फकीर आयो है और कोठारीके घरम उतर्‍यो है और सबको द्रव्य ठगलेवे है तब लाछबाई राणीनें अपनो प्रधान बाजबहादुरकुं बुलायके परवानगी दीनी जो तुम राजनगर जावो और कोठारीके घर जाय सब खबर काढो तब बाजबहादुर राजनगरमें कोठारीके घर आयो वासमें दश पांच गिरासिया रजपूत बैठे हते सो श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आये हते तब बाजबहादुर विनमें जायकें बैठ गयो तब श्रीगुसांईजी पधारे सो बाजबहादुरनें उठके सबसों मिलके दंडवत करी और साक्षात् कन्हैयालालके दर्शन भये तब बाजबहादुरनें मनमें विचार कर्‍यो जो लोग मोकुं वृथा इनसूं लडावे है फिर कालके काल देखें तब बहुत डरप्यो तब

श्रीगुसांईजीसों जायवेकी आज्ञा मांगी तब श्रीगु सांईजीनें बीडा दीयो तब बाजबहादुरनें वीनती करि ऐंसी वस्तु कृपा करके देवें जो सदैव माथेपे धरके फिरुं तब श्रीगुसांईजीने एक सुपारी दीनी तब पागके खूटमें बांधके माथेपें पहेरे रहेतो जब बाजबहादुर मनमें समझो जो ये ईश्वर हैं तब श्रीगु-सांईजीसुं वीनती करी जो महाराज मेह कब बर-सेगो दुनियां बहुत घबराय रही हैतब आपने कह्यो जो आज बरसेगो जब सुनके बाजबहादुर अपने घर आयो सो रस्तामें वर्षा ऐंसी भई जो सब भीज-गयो तब दृढ निश्चय भयो जो ये ईश्वर हैं फिर वा ब्राह्मण चुगलीकरनवालेकुं मारडारनो ऐंसो विचार कर्यो तब वाको पकडाय मंगायो ये बात सुनके श्रीगुसांईजीनें कहेवाय पठायो याको मतमारो तब वा ब्राह्मणकुं कह्यो जो कोई दिन कोईकी चुगली मति करियो ये लिखायके वाकुं श्रीगुसांईजीके पास पठायो तब आयके दंडवत करिके कही जो आ-पकी कृपातें बच्योहूं अब मोकुं सेवक करो तब वा ब्राह्मणकुं शरण लियो सो वे भाईलाकोठारी ऐंसे कृपापात्र हते जो विनके घरमें जो आवे वाकी बुद्धी निर्मल होयजाती ॥ वार्ता संपूण ॥ वैष्णव ॥ २६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक हरजीकोठारीकी वार्ता ॥

सो वे तीन भाई हते जब श्रीगुसांईजी असारवामें पधारते तब तीनों भाईनको मन प्रसन्न राखते सो एक भाईके घर पोढते और एक भाईके घर रसोंइ करते और एकभाईके घर बैठक राखते और विन तिनभाईनमेंसूं हरजीकुठारी पंडित हते सो वा हरजीकोठारीनें विट्ठलसहस्रनामग्रंथ प्रकट कऱ्यो और श्रीगुसांईजीकुं पूर्णपुरुषोत्तम जानते सो वे तीनोंभाई ऐसे कृपापात्र हते जो अबसूधी विनके घरकी बैठक असारवामें प्रसिद्ध है ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ २७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास तिनकी वार्ता ॥

सो वा गोपालदास रुपालगामें रहते वा गोपालदासकी सगाई भाईलाकोठारीके घर भई हती एकदिन विनको नोता भाईलाकोठारीके घर हतो तब गोपालदास पांच वरसके हते जब विनकुं देखके श्रीगुसांईजीनें पूंछी ये कौन है जब भाईलाकोठारीनें कही जो ये गोमतीको वर है तब श्रीगुसांईजीनें कही गोमतीको वर तो सागर चहिये जब कोठारीनें कही राजकी कृपातें येही सागर होयगो जब ये बात सुनिके श्रीगुसांईजीने विचार कऱ्यो जो मेरो सेवक भाईलाकोठारी भयो याको वचन

सत्य भयो चाहीये जब आपनें गोपालदासकुं चर्वित तांबूल दियो जब गोपालदासको हृदय निर्मल भयो जब गोपालदासकुं रासलीलाके दर्शन भए और रासलीलामें सदैव रात्र रहेहे जासूं सवा पहर दिन चढ्यो हतो तोहुं गोपालदासनें केदारा रागमें वल्लभाख्यान गायो सो वे गोपालदास ऐंसे कृपापात्र हते जिननें मारगको सब सिद्धांत नवाख्यानमें वर्णन कर्यो और चौथे आख्यानमें द्वादशस्कंधकी द्वादशलीला समावेश करिके एकेक तुकमें एकेक स्कंधकी लीला गायीहै सो वे ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

और गोपालदासके हृदयमें आपने श्रीगुसांईजीनें हीं प्रवेश कीयो और आपनेंही वल्लभाख्यान गोपालदासके मुखद्वारा वरनन किये जसे श्रीमद्भागवत श्रीठाकुरजीनें शुकदेवजीके हृदयमें प्रवेश करके शुकदेवजीके मुखद्वारा वर्नन कीयो जासूं श्रीमद्भागवतमें कोई ठिकाणे श्रीराधाजी ऐसो नाम नहीं हे ऐंसे वल्लभाख्यानमेंहुं कोई ठिकाणे श्रीरुक्मिणीबहूजीका तथा श्रीपद्मावतीबहूजीको नाम नहा हे सो वे गोपालदास ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ प्रसंग ॥ २ ॥ वै० ॥ २८ ॥

श्रीगुसांईं० सेवक मानिकचंद ओसवाल बनियां ति० वार्ता ॥

सो वे मानिकचंदको श्रीगुसांईंजीकुं पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भए जब मानिकचंद तथा मानिकचंदकी स्त्री श्रीगुसांईंजीके सेवक भए और मानिकचंदनें सर्वस्व अर्पण कर दियो जब मानिकचंदजी सेवक भए जब ये पद गायो--"चहुं युग वेद वचन प्रतिपारचो"॥इत्यादिक बहुत पद गाये फिर मानिकचंदकूं श्रीगुसांईंजीनें आज्ञा करी जो तुम वेपार करौ और घरमें रहके श्रीठाकुरजीकी सेवा करौ जब मानिकचंदजी फिर व्यवहार करन लागे फिर मानिकचंदजी जब वृध्ध भए तब श्रीठाकुरजी पधरायके श्रीगुसांईंजीके पास आयके रहे सो वे मानिकचंदको ऐंसो नेम हतो पातलपर महाप्रसाद लेवेकुं बैठते सो पातलपर महाप्रसाद न छोंड एक दिन श्रीगोकुलनाथजीके मंदिरमें मानिकचंदजी प्रसाद लेवे बैठे हते सो बिन साचोराननें ऐंसी जानी जो ये पातलपर कछु छोडे नहींहै आर पातल धोयके पी जायहें तब साचोराननें मस्करी करवेके लीयें भातके नीचे गोबर धरदीयो तब मानिकचंद गोबर सहित खाय गये वा बातकी खबर श्रीकुलनाथजीकुं पडी तब श्रीगोकुलनाथजीनें हाथमें जललेके साचोरान-

को शाप दियो तुमारो साचोंरा देहसूं कोईको उद्धार नहीं होयगो और वाई दिनसूं सेवाकी जल पर्यंत साचोरा श्रीगोकुलनाथजीके घरमें नहिं छुवे ऐंसो बंदोबस्त कऱ्यो सो वे मानिकचंदजी ऐंसे कृपापात्र हते जिनकी कान श्रीगोकुलनाथजी ऐंसी राखते जिनके लीयें आज सूधी साचोरानको श्रीगोकुलनाथजीकी सेवामें नहीं आवे देवे हैं ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ २९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक देवब्राह्मण, बंगालीतिन की वार्ता ॥

सो ब्राह्मण ब्रजयात्रा करवे आए सो श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करिके विनको मन बहुत प्रसन्न भयो और साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब विननें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो मोकुं शरण लेओ तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरिके समर्पण करायो जब वा ब्राह्मणनें इहां रहके पुष्टिमार्गीय सब सेवाकी प्रणालिका सीखे फिर वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके बंगालमें गए उहां घरमें सेवा करवे लगे फिर एकदिन वा ब्राह्मणनें उडदकी दारके बडा करे तब वा ब्राह्मणके मनमें ऐंसी आई जो कछु मिष्टान्नहुं चहिये जब द्रव्यको संकोच बहोत हतो जब थोडो गुड लाए और श्रीनाथजीकुं भोग समर्प्यें तब श्रीनाथजी साक्षात् आप अरोगवेकों

पधारे और गिरिराजजी ऊपर राजभोग धऱ्यो सो नहीं अरोगे पाछें भीतरियाननें अनोसर करे जब श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलविराजत हते जबउहां श्रीनाथजीनें जताई जो आज हम भूखेंहें हम वा देवब्राह्मणके घरमें गुड और वडा अरोगवे हते जापीछे राजभोग धारेके और सरायके भीतरियानने अनोसर कर दिये जब श्रीगुसांईजी वाहीसमें श्रीगोकुलतें श्रीगिरिराजजी पधारे और सामग्री करायके राजभोग धराए। और वा ब्राह्मणकुं पत्र लिखे जो तुमनें अमुक दिन गुड आर वडा धऱ्ये हैं सो श्रीनाथजी भली भांतिसों आरोगे है ये पत्र वांचके वो ब्राह्मण बहोत प्रसन्न भयो और दो थान बंगाली मलमलके लेके चल्यो सो आयकें श्रीगुसांईजीकुं एक भेट कऱ्यो और वीनती करी जो ये थान अंगीकार करें जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो ये थान श्रीनाथजीके लायक है जब ब्राह्मणनें वीनती करी जो एक दूसरो थान लायोहूं सो आप अंगीकार करें तब श्रीगुसांईजीनें वैसेंही किया फिर वा ब्राह्मणनें वा मलमलके बागा पहिरके श्रीनाथजीके दर्शन किये। सो वे ब्राह्मण ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गणेशव्यासकी वार्ता ॥

सो वे गणेशव्यासकुं श्रीनाथजी सानुभाव हते वे गणेशव्यास एकदिन श्रीनाथजीके लियें सामग्री लावते हते तब रस्तामें बरसात पड्यो सो गाम बाहेर देवीके मंदिरमें आयके डेरा कियो तब लोगननें कही जो मनुष्य रात इहां रहे ताकुं ये देवी तो खाय जाय है। तब गणेशव्यासनें देवीका मंदिर धोयके देवीके कानमें अष्टाक्षर मंत्र सुनायो और आप उहां सोयरहे तब वा देवीनें गामके राजाकुं स्वप्नमें कह्यो जो अब मैं वैष्णव भईहुं तुम दो बकरा मोकुं नित्य पठावत हो सो मत पठैयो और तुम सब वैष्णव होय जावो नहिंतो सबकुं दुःख देऊंगी ये बात राजाकुं देवीनें स्वप्नमें कही तब वे राजानें सवारे गणेशव्यासके पास जायके सब वार्ता पूंछी जब गणेशव्यास राजाकुं संग लेके आये। सो श्रीगुसांईजीके सेवक करायो सो वे गणेशव्यास ऐसे कृपापात्र हते जिनके संगसूं देवी तथा राजा वैष्णव भये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

वा गणेशव्यासके ऊपर श्रीगुसांईजी खीजतेहते तब वे गणेशव्यास अपने भाग्य मानते। और श्रीगुसांईजी विनके पीछे उनकी बहुत सराहना करते तब एक वैष्णवनें पूंछी आप उनपर खीजतेहो और पीठ-

पाछे सहराना करोहो सो कैसे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी जो वैष्णवताती याहीको नाम हैं जो रीस-करें तोहुं अभाव न आवै सो वे गणेशव्यास ऐसे कृपापात्र हते जिनपर श्रीगुसांईजी खीजते पर वे अभाव न लावते ॥ वार्ता संपूण ॥ वैष्णव ॥ ३१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मधुसूदनदासकी वार्ता ॥

एकसमय मधुसूदनदास श्रीगोकुल आये और श्रीगुसांईजीके दर्शन करे और मनमें ऐंसी आई जो श्रीगुसांईजीको सेवक होऊं तो ठीक जब जब श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो मोकुं शरण लेओ जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो न्हाय आवो तब वे न्हाय आये तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करिके नाम निवेदन करायो जब मधुसूदनदासको चित्त बहुत प्रसन्न भयो जब श्रीगोकुलमें मन लाग्यो पुष्टिमार्गकी रीती सीखवेकुं श्रीगोकुलमें रहिगए और भिक्षावृत्तिकरके निर्वाह करवे लगे एकादिन श्रीगुसांईजीनें पूछी जो तुम भिक्षा कहां कहां मांगो हो विननें कही सबनके घरसों मांग लावुंहुं जब श्रीगुसांईजीनें कही जो हमारे सेवक तथा भट्ट तथा हमारे नौकर विनके घरसूं तुमारे भिक्षा लेनी नहीं कारण विनके घरमें हमारो द्रव्य आवेहे देव-द्रव्य गुरुद्रव्य ब्राह्मणको द्रव्य इनके अंश लीयेंसों

बुद्धि भ्रष्ट होवे है जब मधुसूदनदास वैसेही करन लागे जब मधुसूदनदासकी चित्तवृत्ति स्थिर देखके श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीके पानघरकी सेवा दीनी और मधुसूदनदासकुं सेवामें ऐसो चित्त लग्यो जो जन्मभर श्रीनाथजीकी सेवा कीनी तातें इनकी वार्ता कहां तांई लिखिये ॥ वार्ता सं० ॥ वैष्णव ॥ ३२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक ब्रह्मदास हुते तिनकी वार्ता ॥

सो वे ब्रह्मदास गोपालपुरमें रहेते हते और व्रजमें फिऱ्या करते मानसीसेवा करते मानसी जीवकुं साक्षात्कार होयगई हति और राधाकुंडपर एक बंगाली कृष्णचैतन्यको सेवक रहतो हतो सो वे ब्रह्मदासजीको मित्र हतो वेहु मानसी करतो और सदाही दूध पीके रहतो हतो फेर थोडे दिनपांछे दूध छोड दियो और छाछ पीनें लग्यो एकदिन वा बंगालीनें मानसी सेवा करि जब मानसीमें दूध भोग धऱ्यो तब प्रसाददूध मानसीमें पियो फेर नित्यकी छाछ लेवेको समय भयो फेर वा बंगालीनें शिष्यनकुं नहि कहि तोहुं वाके शिष्यननें जोरशुं छाछप्याई कारण जो वानें मानसीमें दूध पियो है सो शिष्यनकुं खबर न हती पाछे वा बंगालीकुं ज्वर आयो सो वे ब्रह्मदासजी वा बंगालीकुं देखवे आये सो वे ब्रह्मदास वैद्यकमें बहुत चतुर

हते तब ब्रह्मदासजीनें देखके कहि तुमने दूधके ऊपर छाछ लीनीहै जासों ज्वर आयोहै फिर वा बंगालीके शिष्यननें कहि इननें दूध नहिं पीयोहै तब वे बंगाली बोल्यो अपने शिष्यनसुं तुमकुं कहा खबर है जाघरको हमनें दूध पियोहै ये बाई घरके सदैव रहवे वारेहै और जब हमनें दूध पियो जब ये देखते हते सो वे ब्रह्मदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जो कोई और मनुष्य मानसीसेवा करतो सो अपनी मानसीके प्रतापतें और श्रीगुसांईजीकी कृपातें सबकि मानसी जानजाते ॥ वार्ता संपूण ॥ वैष्णव ॥ ३३ ॥

श्रीगुसांईजीको सेवक नरुवैष्णव हतो सो द्वारिकाके रस्तामें रहतो तिनकी वार्ता ॥

सो एकसमें श्रीगुसांईजी द्वारिका पधारते हते सो वैष्णव श्रीगुसांईजीकुं अपने घर पधरायके डेरा कराए वाको घर बहुत छोटो हतो तोहुं वाको आग्रह देखके श्रीगुसांईजी उहां डेरा किये और श्रीगुसांईजीनें वा वैष्णवसों पूंछी जो तुम निर्वाह कैसे करोहो जब वा वैष्णवनें कही गामके बाहेर एक वृक्षहै सो वाके नीचे आपने आगें डेराक-यो हतो सो वा वृक्षके पास बैठके भगवद्वार्ता करुंहुं और वैष्णव गाममें कोउ नहींहै जब श्रीगुसांईजीनें कही

वृक्ष मोकुं दिखाव जब वे वैष्णव श्रीगुसांईजीकुं पध-
रायके वा वृक्ष पास लेगयो जब वा वृक्षनें श्रीगुसांई-
जीकुं आते देखके दंडवत करके मूलसे ऊखरि पऱ्यो
जब श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनकुं कही याको पत्र डाल
सब उठाय लेचलो याको सर्वांग अंगीकार भयो
ये वृक्ष आगले जन्ममें वैष्णव हतो और लोगनके
दोष देखतो याहीतें वृक्ष भयो है ये बात सुनके वे
वैष्णव उहांतें आश्चर्य पायो फिर श्रीगुसांईजी द्वारि-
का पधारे और वा वैष्णवके घर जो कछु हतो सो सब
भेटकरदियो सो वे वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो जाकुं
श्रीगुसांजीनें लौकिक निर्वाह पूंछो जब विननें अलौ-
किक निर्वाह बतायो वैष्णवनकूं ऐसोही चहिये तातें
इनकी वार्ता कहा कहिये वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥ ३४॥

श्रीगुसांईजीके सेवक पाथागूजरी तिनकी वार्ता ॥

सो पाथागूजरी आन्योरमें रहते हते सो पाथा-
गूजरी एकदिन बेटाके लीयें छाक लेजात हती
रस्तामें श्रीनाथजीनें कही ये दही भात हमकुं दे
तब विननें दियो जब श्रीनाथजी आरोगे जब
आरोग चुके इतनेमें शंखनाद भये जब श्रीहस्त
धोये बिना मंदिरमें पधारे तब श्रीगुसांईजीने श्रीना
थजीके दही भातके श्रीहस्त देखिके पूंछी जो
आप कहां आरोगे है तब श्रीनाथजीनें कही जो

पाथोगूजरीके पासतें लीयो हतो वादिन श्रीगुसांईजीनें पोरियासों कही जो पाथोगूजरी जब आवै तब किवार खोल दीजियो जब श्रीनाथजी आज्ञा करते तादिन पाथोगूजरी पायके अरोगवाय जाती जा दिनतें श्रीगुसांईजीनें कुनवारामें मुख्य सामग्री दही भातकी राखी है सो वे पाथोगूजरी ऐंसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एकव्रजवासीकी बहू हती तिनकी वार्ता॥

जब वे बहू सासरें आई जादिन विनकी भैंस-खोय गई तब वाके घरके मनुष्य कहने लगे या बहूके पांव आछे नहीं हैं जादिन आई तादिनही भैंस गई। जब वा बहूके मनमें चिंता उपजी तब वानें श्रीनाथजीकुं सवासेर माखन मान्यो तब पांच सात दिनमें वाकी भैंस मिली जब वे बहू भैंसकी छाछ विलोवे लगी जब रोज एक छटांक माखन चुरायलेवे और दूसरे दिन वा माखन ताजामें मिलायके ताजो काढ लेवें ऐंसे करत करत जब सवासेर मांखन पूरो भयो जब लेके श्रीनाथजीकुं अरोगवायवे चली. घरसुं बाहेर निकसी जब ऐंसो विचार कऱ्यो जो मोकुं कोई देखेगो तो कहा कहेगो जब ऐंसी चिंता उत्पन्न भई न पाछे आयो जाय न आगें गयो जाय तब श्रीनाथजी वाकुं चिंतातुर

देखके पधारे श्रीनाथजीनें ऐंसी जानी जो ये मेरे विना दूसरो देव जानें नहींहैं जासूं पधारे और वाको मांखन लेके आरोगे सो वे बहू ऐंसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोपीनाथदासग्वाल, तिनकी वार्ता ॥

सो गोपीनाथदास ग्वालवनमें गाय भेंस चरावत हते सो एक दिन गोपीनाथदासकूं वनमें भूख लगी जब श्रीनाथजीनें आठ लडूवा राजभोगकी सामग्रीमेंसो वनमें लायके गोपीनाथदासकुं दिये तब विननें विचार कर्‍यो जो ये लडुवा श्रीगुसांईजीकी आज्ञा विना खाने नहीं । जब वे लडूवा श्रीगुसांईजीके पास ले आये और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा कारेके लडुवा श्रीनाथजीनें दीनेहैं सो तुम खावो सो गोपीनाथदास श्रीगुसाईजीकी आज्ञा विन कछू करत नहीं हते सो एक दिन गोपालदास भीतरियाकुं वनमें श्रीनाथजीनें कही जो मोकुं भूंख लागीहै जब भीतरियानें आयके श्रीगुसांईजीसों वीनती करी तब श्रीगुसांईजी सब सीतल सामग्री तयार करके आप वनमें पधारे तब तडका बहोत हतो तब गोपीनाथदास ग्वालने श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो महाराज ऐंसी घाममें काहेकों पधारे हैं श्रीनाथजीतो बालकहैं

यासूं आप पाछे पधारें तोहू श्रीगुसांईजी वनमें पधारे जब जायके श्रीनाथजीकुं सामग्री अरोगवाई तब गोपीनाथदास ग्वालने श्रीनाथजीसों वीनती करी जो महाराज आपनें ऐंसी घाममें श्रीगुसांईजीकुं काहेको श्रम करायो आप आज्ञा करते तो बहुत सामग्री आयजाति तब श्रीनाथजीनें आज्ञा करी जो इनके हाथ विना मोकुं दूसरेके हाथकी भावे नहींहै और इनके कहे विना दूसरेके हाथकी अरोगूंहुं नहीं हूं ये बात सुनके गोपीनाथदास चुप कर रहे याहीतें श्रीरघुनाथजीनें श्रीगुसांईजीको नाम नामरत्नाख्यग्रंथमें "तन्निमंत्रणभोजकः" ऐंसो वर्णन कऱ्यो है सो वे गोपीनाथदासग्वाल ऐंसे कृपापात्र हते तातें इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये। वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दोभाई तिनकी वार्ता ॥

वे दोनों भाइ पटेल गुजरातके हते श्रीजीद्वारमें राहिके श्रीनाथजीकी सेवा करते सो एकदिन वे दोउनके मनमें ऐंसी आइ जो हमनें द्रव्य खरचके श्रीनाथजीकुं सामग्री नहीं अरोगवाई है तब वे दोनों उहांते चले सो एक तलाव खुदावतो हतो सो उहां कंठी तिलक छिपायके मजूरी करन लगे सो रातकुं रसोंई करते दिनकुं मजूरी करते ऐसें करत २ बहुत

दिन बीते सो विनकुं कोईजें वैष्णवहें ऐंसों जान्यो तब विन दोऊनकी खात्री करने लागे और थोडी मजूरी करावन लागे तब विननें विचार कर्यो जो धर्म बेचके पैसा कमावनो ये बात आछी नहीं जब वे उहांसों श्रीजीद्वार आये और पैसा जो लाये हते सो श्रीगुसांजीकुं देके श्रीनाथजीकुं अंगीकार कराए जब श्रीगुसांईजीकूं सब बात कही तब श्रीगुसांई-जीनें आज्ञा करी जो वैष्णवधर्म प्रकट करके पैसा लावे वे पैसा श्रीनाथजी अंगीकार नहीं करेहे वे दोनोंभाई ऐंसे कृपापात्र हते जिननें मजूरी करी तोहू वैष्णवधर्म प्रकट कियो नहीं तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास भीतरियाकी वार्ता ॥

सो वे गोपालदास गुजरातमेंतें श्रीगुसांईजीके संग आए और श्रीगुसांईजीनें गोपालदासजीकुं श्रीनाथजीकी सेवा सोंपी श्रीनाथजी गोपालदासके ऊपर ऐंसी कृपा करते जा ठिकाणें गोपालदास सेवामें भूलते ताठिकाणे श्रीनाथजी सिखावते और गोपालदासजीको प्रसंग गोपीनाथदासग्वालकी वार्तामें लिख्योहैं. श्रीनाथजी गोपालदासकुं संग वनमें ले जाते और जो गोपालदासजीकुं न आवती सो श्रीनाथजी आप बतायके कराय लेते ऐंसे अनेक

रीतके अनुभव करावते सो वे गोपालदास ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ३९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मण, तिनकी वार्ता ॥

सो ब्राह्मण गंगाजीके तीरपर एक झोंपडी बनायके श्रीठाकुरजी पधरायके दोनों स्त्रीपुरुष सेवा करते सो वे ब्राह्मण भिक्षाकरि लावते और एक दिनको सीधो होयतो दूसरे दिनके लियें कोई देवे आवे वाके पास लेते नहीं और जब श्रीठाकुरजीको राजभोग सरे पीछे जितने वैष्णव आये होंय सबकी पातर करते और भगवत्सेवा और भगवद्दर्शन विना विनको चित्त दूसरे ठिकाने जातो न हतो ऐंसे करत करत बहुत दिन बीते तब एक पंडित गंगाजीके तटपर तप करवेकुं आय रह्यो सो पंडित बहुत विद्वान हतो और सामुद्रिकशास्त्र पढ्यो हतो और वा ब्राह्मणके घरके पास रहतो हतो और वा पंडितकुं महाप्रसादकी पातर वे ब्राह्मण धरतो हतो पाछे एकदिन वा पंडितनें ज्योतिषके बलसूं तथा सामुद्रिकसूं ऐंसे जान्यो जो या ब्राह्मणके ऊपर काल चोरीको मुद्दा आवेगो और राजाके मनुष्य पकड ले जायंगे और राजाके हुकमसों या ब्राह्मणकुं फांसी देवेंगे सो पंडित अपनें मनमें अनेक संकल्प विकल्प करवे लगे दस घडी दिन काल

चढेगो तब या ब्राह्मणके प्राण जाएंगे ऐंसे विचार करत वा पंडितको सगरो दिन गयो सो वे जब समय आयो तब वह ब्राह्मण जप करतो हतो तब वा ब्राह्मणकुं नींद आई जब स्वप्नमें वे व्यवस्था सब भई और फिर वे ब्राह्मण जाग्यो जब स्त्रीकुं कह्यो जो मैं छिवाय गयोहूं सो मोकुं न्हवाय दे जब वे ब्राह्मण न्हायके फिर सेवाकरवे लग्यो सो ये बात देखके वा पंडितनें ऐंसे विचार्‍यो जो ये शास्त्र सब झूठे हैं सब पुस्तकनको गंगाजीमें पटक देऊंगो सो वे पंडित पुस्तक लेके गंगाजीमें पटकवे चले जब वा ब्राह्मणने कही क्यौं पटकोहो ये सब सत्य हैं और जिनके ऊपर प्रभूनकी कृपा होवै विनके हजारौं वर्षके भोग प्रभू क्षणमें भुक्ताय लेवे हें यामें कछु आश्चर्य नहींहै ये बात सुनके वे पंडित चुप कर रहे पाछे एक दिन वा पंडितनें विचारकर्‍यो या ब्राह्मणकुं द्रव्यको संकोच बहुत है जब वा पंडितके पास पारसमणि हती सो वाकुं दीनी तब वा ब्राह्मणनें गंगाजीमें पटक दीनी वा पंडितनें कही मेरी पारसमणि पाछी दे और जब ब्राह्मणनें कही मणी कहा कामकी हती तब वा पंडितनें कही जो लोहेकुं सुवर्ण करेहै तब ब्राह्मणके दरवज्जापें सिला पडी हती वा ब्राह्मणनें पंडितसों कही यापें लोहा घसोतो सुवर्ण

हो जायगो तब वा पंडितनें घस्यो तब सुवर्ण होय गयो जब वो पंडित मनमें विचारके चकित होय गयो और ब्राह्मणके पांवन पऱ्यो फेर वा ब्राह्मणसों कही जो मोकुं कछु समझ नहीं पडेहै बहुत मैंनें कष्ट कऱ्यो जब महादेवजीनें ये मणि मोकुं दिनी हती सो ऐसी मणि जैसे तुमारे दरवाजेपर पत्थर पडेहै कछु अकल काम नहीं करेहै तब वा ब्राह्मणने कही जो तुम शास्त्रमें विचार करौ जो महादेवजीनें तुमकुं मणि दीनी सो महादेवजी गंगाजीको सदैव मस्तकपर धरेहै वा गंगाजीके तीरपर ऐसी अनंतमणी होंय यामें कहा आश्चर्य है और वे गंगाजी विष्णूके चरणारविंदसूं प्रकट भईहै सो विष्णूके दास वा मणीकों तुच्छ मानें यामें कहा आश्चर्यहै तब वा पंडितनें पांवन परके वा ब्राह्मणसों कहि मोकुं विष्णूकोदास करौ जब वा पंडितकुं ब्राह्मणनें श्रीगोकुल लेजायके श्रीगुसांईजीके सेवक करायो और सब मारगकी रीती सिखाई सो वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दिल्लीमें रहतेहते, तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव श्रीनाथजीके दर्शन करवेकुं गये सो दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये परंतु श्रीरामचं-

द्रजीको माहात्म्य विननें बहुत सुन्यो हतो जासूं वाके मनमें ऐसी आई जो अयोध्यामें श्रीरामचंद्र-जीके दर्शन करूं तो ठीक है तब वे श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगके श्रीरामचंद्रजीके दर्शनकुं गये श्रीरा-मचंद्रजीके दर्शन किये जब वाके मनमें अभाव आयो जो श्रीनाथजी जैसो सुख इहां नहींहै सो रामचंद्रजीकी आडी पीठ फिरिके ठाडो रह्यो जब वाकुं कोढनिकस्यो तब वानें श्रीरामचंद्रजीसों कही जो श्रीनाथजीकुं छोडिके तुमारे पास आयोहुं सो मैंनें बडो अपराध कियोहै कोढसूं अपराधकी निवृत्ति नहीं होयहै मेरी रोमरोममें कीडा पडने चहीये जब मेरो अपराधनिवृत्त होयगो ऐसे अन-न्यताके वचन सुनिके श्रीरामचंद्रजी हँसे और आज्ञा करी जो जाओ श्रीनाथजीके दर्शन करो श्रीरामचंद्रजीके वचन सुनके वाको कोढ मिटगयो और आयके श्रीनाथजीके दर्शन करे सो वे वैष्णव ऐसे अनन्य हते विनकी अनन्यता देखिके श्रीना-थजी बडे प्रसन्न भए और सब प्रकारसुं अनुभव जताए ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक कुनबी पटेल हतो तिनकी वार्ता ॥

सो वैष्णव गुजरातके संगमें ब्रजयात्राकूं चले रस्तामें वा संगके वैष्णवनकी मेहनत मजूरी करत

चल्यो जब श्रीजीद्वार एकमजल रह्यो जादिन वा वैष्णवकुं ज्वर आयो जब वानें सबकों कही जो मोकुं काल गाडीपर बेठाइयो परंतु वाकी बात कोईनें सुनी नहीं तब वाकुं चिंता उतपन्न भई जो मोकुं सवारें श्रीनाथजीके दर्शन कैसें होयंगे या चिंताके लीयें वाकुं आखी रात नींद नहीं आई वाकी चिंता श्रीनाथजी सहि न सके जब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो वाकुं बहुत चिंता मेरे दर्शनके लीयें भईहै जासूं मोकुं नींद नहीं आवेहै ये बात सुनके श्रीगुसांईजीनें कही आप सुखसें पोढें वह सबसों पहेले आय जायगो जब श्रीगुसांईजीनें वाकुं गाडी भेज सबसूं पहेलें बोलायलिये और श्रीनाथजीके दर्शन कराए दर्शन करत मात्र वाकी देहदशा भूलगई जब श्रीगुसांईजीनें याकी ये व्यवस्था देखिके चरणस्पर्श कराए तब वाकुं स्मृति आई जब श्रीगुसांईजीकुं साष्टांग दंडवत करी जब श्रीगुसांईजीनें वासों सब समाचार पूंछे जब वे संग आयो जब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसों कही इनको दर्शन मत करन देवो जब श्रीगुसांईजीनें बीनती करी जो जीवतो सदैव अपराधसूं भरेहै इननें वैष्णव जानके अपराध नहीं कियोहै जब श्रीनाथजीने कही अब इनको दर्शन

करावो वैष्णव जानके अपराध करै तो मैं अंगीकार न करूंगो फेर श्रीगुसांईजीनें विनकुं समझाये आज पीछे कोईदिन वैष्णवको अपराध मत करियो ऐसें समझायके फेर विनकूं दर्शन करवेकी आज्ञा भई सो पटेल श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो जिनकी आर्त्ति श्रीनाथजी न सहि सके ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४२ ॥

श्रीगुसांई॰ सेवक एक साहूकारके बेटाकी बहूकी वार्ता ॥

सो वे बहू एकदिन बारीमें बैठी हती सो एक तुरकनें देखी सो वा तुरककी वामें आसक्ती भई वा बहूको देखे विना वो तुरक जल न लेवै जब गाममें बहुत चर्चा होने लगि और ज्ञातमें निंदा भई जब वा बहूके घरके मनुष्य वा बहूकूं श्रीगोकुल लेगये या बातकी खबर तुर्ककुं परी सो वे विनके पाछे दौयौं सो रस्तामें जाय मिल्यो वे लोग कहेने लगे जा दुःखके मारे घर छोड्यो सो दुःख तो साथमें आयो ऐसे करते श्रीगोकुल पहुंचे फेर नाववालेकुं वा साहुकारनें कही याकुं पार मत उतारियो सो वह तुरक यमुनाजीके किनारे बैठ रह्यो वा साहूकारनें जायके श्रीगुसांईजीके तथा श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये जब वा साहुकारनें महाप्रसाद लेवेकि तैयारी करि तब श्रीगुसांईजीनें पांच पातर धराई

वा तुर्ककुं मनुष्य पठाय श्रीगुसांईजीनें बुलाय लियो जब वे पांचजने दूरदूर प्रसाद लेवे बैठे श्रीगुसांईजी विनके सामें आयके बिराजे सो वे चार जने तो प्रसाद लेके उठे और वा तुर्ककी दृष्टी और मन तो श्रीगुसाईजीके चरणारविंदमें लग रह्योऔर कछू देहानुसंधान रह्यो नहीं. जहांसूधी श्रीगुसांईजी वा तुर्कके सामें बिराजे रहे जबसूधी दर्शन करत रह्यो जब श्रीगुसांईजी उठके भीतर पधारे तबवाकी देह छूटिगई ये बात श्रीगुसांजीनें जानी जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी वा तुर्ककुं अग्निसंस्कार कराओ या बातको कारण वैष्णवननें श्रीगुसांजीसों पूंछो तब श्रीगुसांईजीनें कही ये आगले जन्ममें ब्राह्मण वैष्णव हतो ये बहू वाकी स्त्री हती सो एकदिन एक वैष्णवसुं एकांत भगवद्वार्ता करत हुती वामें कछू दोष हतो नहीं तब याके मनमें वा वैष्णव ऊपर या स्त्रीको दोष आयो हतो या अपराधतें याको म्लेच्छके घर जन्म भयो और वाकी स्त्री हती सो या क्षत्रीके बेटाकी स्त्री भई है जब या बहूकुं यानें देखी तब वा तुर्ककुं याके नेत्रनमें श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन भये जासूं या बहूमें वाको मन लग गयो जब श्रीगोकुल आयो यमुना जलपान कर्‍यो तब याको अपराध निवृत्त भयो अब ये भगवल्लीलामें प्राप्त

भयो है ये बात सुनके वा बहूकुं विरहताप भयो जब वाकी देह छूटगई सो वे भगवल्लीलामें प्राप्त भई सो वे बहु श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपापात्र हती। वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४३ ॥

श्रीगु० सेवक साठोदरा नागर गुजरातके वासी ति० वार्ता ॥

सो वे वैष्णव जा गाममें रहते वा गाममें एक दूसरो वैष्णव रहतो हतो सो दोनों परस्पर मिलाप राखते हते और हिलमिलके भगवत्सेवा करते हते सो एकदिन दोउ जनें जल भरके आवते हते रस्तामें एक वेश्याको घर हतो वाकी बेटी नृत्य करती हती सो साठोदरा वैष्णवनें देखी सो वेश्याकी बेटी दैवी जीव हती जासुं वे देखवेकुं ठाढे रहि गये तब दूसरो वैष्णव अपने घर आयो वह दूसरो वैष्णव मनमें समझ्यो ये विषयीहैं याको संग न करनौ और स्त्रीसों कहि जो साठोदरा वैष्णव मोकुं बोलायवे आवे तौ तुम कहियो घरमें नाहिं है पीछे वा साठोदरा वैष्णवनें वेश्यासों ठराव करके वाकी बेटीकुं घर ले आये रात्रीकुं न्हवायके शृंगार करायके और अष्टाक्षरमंत्र सुनायके श्रीठाकुरजीके संनिधान नृत्य करायो और श्रीठाकुरजी वाको गान सुनके बहुत प्रसन्न भये और वेश्याकी बेटीमें इतनी

सामर्थ्य भई जो संस्कृत बोलवे लगी और भगव-द्रूपमें मन लग्यो और वा वैष्णवको बहुत उपकार मान्यो और द्रव्य न लियो और मनमें ये विचार कऱ्यो जो नित्य ऐंसे वैष्णवनको सत्संग होय तो बहुत आछौ और वेश्याको कर्म छोड दियो और वा वैष्णवको सत्संग करवे लगी फेर वह दूसरो वैष्णव जो गाममें रहतो हतो वाकी स्त्रीकुं श्रीठाकु-रजीनें कही मैं अब तुमारे घरमें नहीं विराजूंगो तुमनें वा साठोदरा वैष्णवको वृथा दोष देख्यो है तब वो वैष्णव साठोदरा वैष्णवके पांवन पऱ्यो और अपराध क्षमा करायो जबसुं साठोदरानागर और दूसरो वैष्णव तथा वेश्याकी बेटी दोनों मिलके भग-वद्वार्ता नित्य करते सो वा साठोदरा वैष्णवके संगतें वेश्याकी बेटी परम वैष्णव भई तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४४ ॥

श्रीगुसां० सेवक एक वेश्याकी बेटी तिनकी वार्ता ॥

वा वेश्याकी बेटीनें साठोदरा वैष्णवके घर श्री-ठाकुरजीके आगें आखीरात नृत्य कऱ्यो जब स-वारो भयो तब वाकुं कछु देहकी सुधी रही नहीं भगवदावेशमें मग्न भई तब डेढपहेर दिन चढ गयो वाके घरके बुलायवे आये जब कछु बोले नहीं और कछु सुनेहुं नहीं फिर वाके घरके मनुष्य वाकुं पक-

डके लेगये सो घरमें जाय बावरी होय गई कछू खाय नहीं बोले नहीं सो घरके आदमीनकी दृष्टि बचायके वा वैष्णवके घर आई उहां आछी रीतसूं बोली और भगवद्वार्ता करी और प्रसाद लियो या रीतसूं नित्य करे वाके घरके मनुष्यननें राजद्वारमें पुकार करी जो या वैष्णवनें हमारी बेटीकुं बावरी करदीनी है जब राजाके मनुष्य वा वैष्णवकुं पकडके लेगये जब राजानें वा वैष्णवकुं देख्यो तो वैष्णव परम भगवदीय हतो भगवत्तेज वाके मुखपर बिराजे है तब राजा बोल्यो ये झूठी बात है ये मंत्र जंत्र कछु करे नहीं वो वैष्णव अपने घर आयो और वेश्याकी बेटीकुं वाके घरके मनुष्यननें बावरी जानके निकास दीनी अब वे बाई वैष्णवके घरमें आयके रही इतनेमें श्रीगुसांईजी पधारे वा बाईकुं नाम निवेदन करायो जब वे बाई फेर वैष्णवके घर प्रचार करवे लगी एकदिन वा साठोदरा वैष्णवकुं श्रीठाकुरजीनें कही जो मेरी सेवा शृंगार ये बाई करेगी और तुम रसोईकी सेवा करौ जब ये वैष्णव बहुत प्रसन्न भयो और वह बाई शृंगार करन लगी और वे रसोई करन लग्यो और जब वे वैष्णव व्यावृत्तीकुं जाय तब वा बाईसुं श्रीठाकुरजी बोलें बतलावें सो वे बाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी

कृपापात्र भई जासुं वैष्णवको संग सर्वथा करनो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४५ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक वाघजीरजपूत, तिनकी वार्ता ॥

सो वे वाघजी रजपूत तथा विनकी स्त्री घरमें श्रीठाकुरजी पधरायके भलीभांतिसुं सेवा करते हते और एक दो वैष्णवनकुं नित्य नेमसो प्रसाद लेवावत हते एकदिन वाघजीनें एक वैष्णवकुं न्योतो दियो और तवापूरीकी सामग्री कराई सो वा दिन श्रृंगार करके वाघजीरजपूत राजाकी असवारीमें गयो घरमें घी थोडो हतो सो वाघजीकी स्त्रीनें थोडो घी राजभोगमें धरयो तब वाघजीके श्रीठाकुरजीनें वाघजीकुं जताई जो घी थोडो है और तवापूरी गलेमें चुभतहै तब वाघजीकुं बडी आतुरता भई जब तहांसु दोडे और बजारमेंसु घी लेके और दोडके श्रीठाकुरजीके आगें धर दियो सब कपडा पहरे मंदिरमें चले गये कछु सुध न रही श्रीठाकुरजीकुं श्रम होवेगो ये बात ध्यानमें रही अनाचार मीलेगो ये बात ध्यानमें न रही तब घी धरके फिर राजाकी अस्वारीमें गयो वा समें वो वैष्णव वहां बैठो हतो वाके मनमें ऐंसी आई जोडी पेहरके मंदिरमें जायके घी धर्‍यो जासुं ये आचार विचार कछु राखे नहीं है इनके घरको प्रसाद लेनो नहीं ये बिचा-

रके उठगयो फिर वाघजी जब आयो वा वैष्णवकुं बुलायवे गयो जब वे वैष्णव छिप गयो फिर वाघजी घरमें आय दोनों स्त्रीपुरुष भूंखे रहे ऐंसे तीन दिन सूधी वह वैष्णव आयो नहीं सो वाघजी तीन दिन सूधी भूंखे रहे जब वा वैष्णवके श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें वाकी स्त्रीकुं जताई जो मैं तुमारे घरते जाउंगो तुमनें वाघजी ऊपर वृथा दोष धर्‍यो है वाको चित्ततो मेरेमें लग्योहतो और देहको भान कछु हतो नहीं जासुं तुम्हारे घर नहीं बिराजुंगो ये सुनके वा वैष्णवकी स्त्री जागपडी और अपने पतीसों कह्यो जब वो वैष्णव आयके वाघजीके पांवन पर्‍यो और अपराध क्षमा करायो और दोनोंने मिलके महाप्रसाद लियो सो वे वागजी ऐंसे कृपापात्र हते जिनका दुःख श्रीठाकुरजी सहि न सके इनकी वार्ता कहा कहिये।वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव॥४६॥

श्रीगुसांईजीके सेवक अजबकुंवरबाई, तिनकी वार्ता ॥

सो वे अजकुंवर बाई मेवाडमें रहती हती मीरांबाईकी देरांनी हती और उहां एक दिन श्रीगुसांईजी पधारे जब अजबकुंवर बाईकुं साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये जब अजबकुंवर श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और अष्टप्रहर श्रीगुसांईजीके चरणारविंदमें चित्त लग्यो रहै जब श्रीगुसांईजी पधारवे लगे तब अजबकुंवर बाईकुं मूर्छा आई तब श्रीगुसांईजी वाकी

ऐंसी दशा देखके चारदिन उहां बिराजे और अजब-कुंवर बाईकुं पादुकाजी पधराय दीये तब अबजकुंवर बाई शुद्ध पुष्टिमार्गकी रीति प्रमाणें सेवा करन लगी और श्रीनाथजी अजबकुंवरबाईके संग नित्य चोपर खेलते और अजबकुंवरबाईके मनमें ऐंसी हती जो श्रीनाथजी सदैव इहां बिराजैं तो आछौ. एक दिन अजबकुंवरबाईके ऊपर श्रीनाथजी प्रसन्न भये और कही जो कछु मांग तब अजबकुंवरनें मांग्यो जो आप सदा इहां बिराजो तब श्रीनाथजीनें कही श्रीगुसांईजी और श्रीगुसांईजीके सात लालजी जहां सूधी भूतल ऊपर मेरी सेवा करेंगे तहां सूधी गोवर्धन पर्वत नहीं छोडूंगो फेर पीछे इहां पधारुंगो और तहांसूधी नित्य आवजाव करूंगो ऐंसे बचन सुनके अजबकुंवरबाई मनमें बहुत प्रसन्न भई जासुं श्रीनाथजी मेवाडमें अजबकुंवरबाईको बचन सत्य करवेके लीयें अब सूधी बिराजे है इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४७ ॥

श्रीगुसांईजीकी सेवक बीरबलकी बेटी तिनकी वार्ता ॥

एकादिन श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हते बीरबलकी बेटीकूं श्रीगुसांईजीके दर्शन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये जब बीरबलकी बेटी श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और नित्य कथा सुनवेकुं श्रीगु-

सांईजीके पास जाती और कथामें जो सुनती सो मनमें लिख राखती एक अक्षर भूलती न हती और दिवस रात वा कथाको अनुभव करत हुती, एक दिन बीरबलकूं पादशाहनें पूंछी के साहेबको मिलनो केंसे होवेहें ये निश्चयकरके हमकुं कहो तब बीरबलनें सब पंडित और महंतनसुं पूंछी परंतु विनकी कही कछु नजरमें आई नहीं तब बहुत चिंतातुर भये और ऐंसो डरलग्यो जो पातशाह लूट लेवेगो, जब बेटीनें कही याको उत्तर श्रीगुसांईजी देवेंगे जब बीरबल श्रीगोकुल आये श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो उत्तर पादशाहकुं एकांतमें देउंगो जब बीरबलनें पादशाहसों कही तब पादशाह श्रीगोकुल आये बीरबलहु संग आये जब बीरबल आयके पादशाहके डेरापर श्रीगुसांईजीकुं पधरायलेगये जब पादशाहनें एकांतमें श्रीगुसांईजीसों पूंछी जो साहेब केंसे मिलें हैं सो उपाय बतावो जब श्रीगुसांईजीनें लौकिक रीतसों उत्तर दियो, कही जेसे तुम हमकुं मिले ऐंसे साहेब मिलते हैं तब पादशाहनें कही याको कारण समझावो, तब श्रीगुसांईजीनें कही हम हजारन उपाय करें तो तुमको मिलनो कठिन है और तुम विचाऱ्ये तो घडीहुं न लगी तुतं हमकुं

मिललिये ऐसें जीव हजारन उपाय करे तोंहुं साहेब नहीं मिलता है और साहेब विचारे तो झट जीवकुं अपनो करलेवे है, जीवके हाथ कछु नहीं है साहेबकी मर्जी होवे तो क्षण एक न लगे ये सुनके पादशाह बहुत प्रसन्न भये और श्रीगुसांईजीकुं दंडवत करी और बीनती करी जो कछु मेरो अंगीकार करो तब श्रीगुसांईजीनें कही जो हमकुं गोपालपुर एक घंटामें पहोंच्यो जाय ऐसी अस्वारी होवेतो ठीक जब पादशाहनें ऐंसो घोडो भेट कर्‍यो जो एक घंटामें दशकोस जाय और घोडाके खरचमें श्रीगोकुल और गोपालपुर ये दो गाम दीये और दंडवत करके आगरेमें गये वा घोडापर बैठके श्रीगुसांईजी नित्य गोपालपुर पधारते और पाछे श्रीगोकुल आय जाते वा घोडाकी बात गोपालदासजीने सप्तम वल्लभाख्यानमें गाईहै " तुंरग चाले वायुवेगें उतावला जाणे नौका चाली सिंधु तरवा " ऐंसी रीतीसुं गोपालदासजीनें वर्णन कर्‍यो है सो बीरबलकी बेटी ऐंसी कृपापात्र हती और श्रीगुसांईजीके ऊपर ऐसो विश्वास हतो इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता सम्पूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४८ ॥

श्रीगुसांईजीकी सेवक एक कूंजरी तिनकी वार्ता ॥

एकादिन श्रीगुसांईजी गोपाल पुरतें श्रीगोकुल-

पधारते हते रस्तामें एक कूंजरी प्याससों घबरायके पडी हती तब श्रीगुसांईजीनें खवाससों कहि ये कौन पडी है तब खवासनें कहि प्यासके मारे या लुगाईके प्रान निकसे हैं तब आपनें खवाससुं कही आपणी झारीमेंतें याकुं जल प्यावो तब खवासने कही झारी छिवाय जायगी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो झारीतो दूसरी आवेगी परंतु याके प्राणतो बचेंगे तब वाकुं जल प्यायो जब वो चेतन भई फिर वे कूंजरी अपनो सब द्रव्य लेके श्रीगोकुलमें आयके रही दिनकुं दुकान मांडके बैठे रातकुं गाम बहार जायके रहे कारण जो श्रीगोकुलमें बडी जात वालेकुं रात रहनेको पृथ्वीपती अकबर बादशाहको हुकम न हतो सो ऐसेमें कुंजरी बाहेरसों उत्तम मेवा लायके श्रीगोकुलमें बेचे और जो कोई मंदिरमें मेवा पहोंचावे वाके पास दाम थोडे लेवे मनमें ऐसे समझे जो मेरो द्रव्य या रीतसुं अंगीकार होयगो ऐसे करत करत वा कूंजरीनें आखो जन्म श्रीगोकुलमें संपूर्ण करचो और श्रीगुसांईजी यमुनाजीके घाटपर पधारते जब वा कूंजरीकुं नित्य दर्शन होते सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके होते जासुं वे कूंजरी श्रीगुसांईजीकुं पूर्णपुरुषोत्तम जानके श्रीगोकुलमें रही हती जहां सूधी वाकी देह रही तहां

सूधी वाकुं वेसेही पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन होवे सो वे कूंजरी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४९ ॥

श्रीगुसांई॰सेवक प्रेत हतीत पतीत द्वयभाईनकी वार्ता ॥

दोऊ हतीत पतीत महानदीके तीरऊपर रहते हते जो कोई रस्तामें निकसतो जाकुं मारडारते ऐंसे सब लोगनकुं खबर पडी सो वे रस्ता उजाड भयो कोई आवतो जातो न हतो वा ठेकाणेसुं चार चार कोश सूधी उजाड भयो हतो कोई खेती करवेहुं न आवतो वे ऐंसे प्रेत जबर हते कोई मंत्र जंत्रके वश न हते, जो कोई जातो ताकुं मारडारते सो एकदिन चाचाहरिवंशजी गुजराततें श्रीगोकुल जाते हते सो भूलके वे रस्ता निकसे तब दोनों प्रेत पर्वत बनके रस्तापर आयके पडे एकतो जायवेके रस्तापर आयके पड्यो और दूसरो पाछे फिरवेके रस्तापर आयके पड्यो तब चाचाजीनें जान्यो के ये कोई प्रेतहैं जब चाचाहरिवंशजीनें चरणामृत मिलायके विनके ऊपर जल डार्यो तब विननें चाचाहरिवंशजीको प्रताप जान्यो ये कोई बडे महापुरुषहैं हाथ जोडके बीनती करन लगे कही जो हमारो उद्धार करो चाचाहरिवंशजीनें विनकुं अष्टाक्षर मंत्र सुनायो नामसुनतहीं विनकी दिव्य देह

भई और भगवल्लीलामें प्रवेश भये फेर चाचाजी श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजीसों बिनती करी जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी सो वर्ष पहले ये दोऊ ठग हते और वैष्णवको वेष बनायके फिरते हते एक ठिकाणे वैष्णवके घर जायके उतरे हते सो वैष्णवतो घरमें हतो नहीं वाकी स्त्री हती सो रातकुं वाके घर रहिके वा स्त्रीकुं मारके गहेनो लेगये, फेर रस्तामें विनकुं चोर मिले सो चोरननें विनकुं मार डाऱ्ये गहेनो लेगये जैसो विनने कऱ्यो तैंसो भुक्त्यो तो सही परंतु वैष्णवकुं माऱ्यो हतो और वैष्णव बनके ठगाई करते हते या अपराधतें प्रेत भये हते जो तुम इनको उद्धार न करते तो कल्पभरसूधी प्रेतरहते वैष्णवको अपराध ऐसो हैं सो वैष्णवविना वैष्णवको अपराध क्षमा करवेकुं कोई सामर्थ्य नहीं हैं । श्रीठाकुरजीहु क्षमा न करें ये बात अंबरीषके आख्यानमें प्रसिद्धहै जासूं वैष्णवके अपराधसूं डरपत रहनो ऐंसे चाचा हरिवंशजीकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये सुनके सब वैष्णव प्रसन्न भये सो वे हतीत पतीतकुं चाचाहरिवंशजीनें श्रीगुसांईजीकी कृपातें उद्धार कियो और गोपालदासजीनें ऐंसे वल्लभाख्यानमें गायोहै "हतीत पतीतनो जुओ तुमें प्रकटइंधाण" सो वे

श्रीगुसांईजीकी कृपातें भगवल्लीलामें प्रवेश भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गंगाबाई क्षत्राणी, तिनकी वार्ता ॥

सो गंगाबाईकी माता महावनमें रहेती हती और श्रीगुसांईजीकी सेवक हती और श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें चित्त लग रह्यो हतो और वाके मनमें श्रीगुसांजीके स्वरूपमें कामबुद्धि रहती हती परंतु श्रीगुसांजीकीतो ऐसी प्रतिज्ञा हती जो परस्त्रीके सामें काम दृष्टीसों देखनो नहीं ये बात वे क्षत्राणी महावनवालीकी श्रीगुसांईजीनें जानी तब श्रीगोकुलमें आयवेको वा क्षत्राणीकुं बंदकर्‍यो बारह वर्ष पर्यंत श्रीगोकुलमें न आयवेदीनी सो महावनमें विप्रयोगकी भावनासूं श्रीगुसांईजीको ध्यान करत हती एकदिन वाकूं स्वप्न भयो जब वाकूं गर्भ स्थिति भई सो वे गंगाबाई जन्मे तब विनकी मातातो भगवल्लीलामें प्राप्त भई सो गंगाबाई जब बडी भई तब वे गंगाबाई श्रीगुसांजीकी सेवक भई और महावनसुं गोपालपुरमें आयके रही हती और विनसुं श्रीगोवर्धननाथजी हँसते खेलते बातें करते सब लीलाके दर्शन करावते और गंगाबाई तैंसि लीलाके पद बनायके श्रीनाथजीके आगें गावती और गंगाबाईनें जितने पद बनाये 'श्रीविठ्ठलगिरिधरन' ऐसी

छापधरीहै और सोलहसौ अट्ठाईशमें विनको जन्म हतो और सत्रहसौ छत्तीश वर्षसूधी वे भूतल पर रही हती एकसो आठवर्ष सूधी रही हती और मेवाडमें श्रीनाथजीके संग आई हती सो इनकी विशेष बात श्रीनाथजीके प्राकटयमें लिखी है। एक-दिन श्रीनाथजीनें श्रीहरिरायजीकुं मेवाडमें कही जो गंगाबाईकुं वस्त्र आभूषण अतिसुंदर पहिरायके रातकुं जगमोहनमें बैठाय देवो तब बैठायदीनी तब रातकुं जगमोहनमेंते श्रीनाथजी गंगाबाईकूं देहसहित लीलामें लेगये सो वे गंगाबाई श्रीनाथ-जीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हती तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥९१॥

श्रीगुसांईजीके सेवक राजा-तिनकी वार्ता ॥

सो वे राजाको मन दिवसरात भगवत्सेवामें हतो भगवत् उपयोग विना द्रव्य खरचतो न हतो और वृथालाप वृथा क्रिया वृथा ध्यान तीनो करके रहेत हतो लौकिकमें अवश्य होवे वितनो बोले, वैष्णवको संग दिवसरात छोडे नहीं और वैष्णव विना कोईके ऊपर रीझे नहीं वा राजाके गाममें एक भवैया आयो सो भवैया बहोत चतुर हतो और खेलमें ऐसो चतुर हतो जो सबकुं रीझावे बहुत दिन सूधी वा गाममें रह्यो परंतु वाको राजा

खेल देखै नहीं वे भवैया ऐसो प्रयत्न करने लग्यो जो कोई उपायसुं राजा मेरो खेल देखै तो ठीक सो वा भवैयानें राजाके कामदारनकुं मिलके ऐसो प्रयत्न करके राजा खेल देखै ऐसो ठराव कऱ्यो जब वो भवैया रातकूं ख्याल करन लग्यो और सब कामदार तथा राजा खेल देखवे बैठे सो वा भवैयानें बहोत खेल करे और बहुत तरहके स्वांग बनाये परंतु राजा रीझ्यो नहीं वा भवैयाकूं मनमें बडो पश्चात्ताप भयो और राजाके मनुष्यनसूं पूछन लग्यो जो राजा कोनसी रीतीसुं रीझेगो सो तुम बतावो तब राजाके खवासनें कह्यो जो वैष्णव विना राजा औरके ऊपर न रीझेगो तब राजाके मनुष्यनके सिखायेतें वे भवैया वैष्णवको स्वांग पहेरके तिलक मुद्रा माला धरके राजाकी सभामें आयो तब राजानें उठके वा वैष्णवकूं साष्टांग दंडवत कऱ्यो और छातीसुं लगायके मिल्यो और गादीपर बैठायके आप राजा पंखा करन लग्यो और वा वैष्णवसुं भगवद्वार्ता करन लग्यो और भंडार खोलाय दियो और जो चहिये सो लेवो ऐसे कहेके वा वैष्णवकी बहुत टहेल करी यद्यपि राजा जानतो हतो जो ये भवैया है और वैष्णवको स्वांग बनायके आयो है तोहूं राजाको वैष्णव वेषपर ऐसो

विश्वास हतो जैसे साक्षात् श्रीठाकुरजी ऊपर होवै सो वे राजा हरिगुरु वैष्णवमें भेद रंचकहुं जानतो न हतो तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दयाभवैयाकी वार्ता ॥

सो वा दया भवैयानें वैष्णवको स्वांग धरके और राजाकुं रिझायके और राजासूं विदा होयके अपने डेरापर चल्यो मनमें ऐसो विचार करन लग्यो जो बहुत दिनकी मेहनत सफल भई जब रस्तामें पाछे देखे तो चार स्त्री संग पाछे चली आवतिहै और भवैया ठाढो रहतो चार स्त्री ठाढी रही जाएं और वे चले तो संग चलवे लगजाएं सो देखके वाके मनमें आश्चर्य भयो ये कौनहै फेर वे भवैया विन स्त्रीनसुं पूंछवे लग्यो जो तुम कौनहो और मेरे संग काहेकुं आवत हो जब वे स्त्री बोलवे लगी जो हम चार हत्या हैं तेरे शरीरमें सदा रहेंहैं जब तुं मरेंगो तब तोकुं नरकमें लेजाएंगी और अब तैंने वैष्णवको वेष धारण कऱ्यो है जासुं तेरे शरीरमेसुं हम बाहिर निकसी हैं वैष्णवसुं हम बहुत दूर रहें है वैष्णवकी दृष्टीमें हम आवेंतो भस्म होय जाएहैं ये बात सुनके दया भवैया पाछें फिऱ्यो और जायके राजाके पांवन पऱ्यो और कही जो हमकुं वैष्णव करो और सब वृत्तांत

हत्यानको कह्यो जब राजानें उठके विन चार स्त्रीनकुं देख्यो वे तुरत भस्म होयगई तब दयाभवैयाकुं श्रीगुसांईजीको पत्र लिख देके अडेल पठायो सो वे दया भवैया जायके श्रीगुसांईजीको सहकुटुंब सेवक भयो और श्रीठाकुरजी पधरायके भगवत्सेवा करन लाग्यो सो कितनें दिन अडेलमें रहिके पुष्टिमार्गकी सेवाकी रीत सीखके फिर वा राजके पास जन्मसूधी रह्यो और दोनों मिलके भगवद्वार्ता करें और वा भवैयाकुं ऐसो निश्चय भयो जो वैष्णवधर्मतें अन्य धर्म सब तुच्छ हैं जो मैंने वैष्णवको झूठो वेष पह्यो तोहुं हत्या दूर भागगई और साचो रहुंगो तो श्रीगुसांईजीकी कृपातें निश्चय करके मोकुं भगवल्लीलाकी प्राप्ति होयगी ऐसे करत करत वा भवैयाकुं भगवल्लीलाकी स्फूर्ती भई और श्रीठाकुरजी सानुभाव जनावन लगे सो वे दयाभवैया वा राजाके संगतें परम भगवदीय भयो॥वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५३ ॥

श्रीगुसांई॰सेवक एक कुणबी गुजरातवासीकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव तादृशी हतो श्रीठाकुरजी विनकुं सानुभाव जनावत हते सो वैष्णव चाचाजीके संग श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं ब्रजमें गयो रस्तामें एक गाम हतो वा गाममें एक ब्राह्मणी हती वा ब्राह्मणीकुं

गलित कोढ भयो हतो और कीडा पडगये हते सो बा ब्राह्मणीको बेटा नदी ऊपर माकुं धोवेकोलियें लेगयो हतो तब वे कुणबी वैष्णव न्हाय पहले धोती धोवतो हतो सो वाको धोतीके छींटा वा ब्राह्मणीके ऊपर पडे सो जा ठिकाणे छींटा लगे इतने शरीर-मेसों कोढ मिटगयो तब वे ब्राह्मणी वैष्णवके पावन पडी और कह्यो जो मेरे शरीरकी ये व्यवस्थाहैं परंतु तुमारी धोतीकी छींटतें मेरो शरीर इतनो नीको भयोहैं तब वा कुणबी वैष्णवनें कही मैंतो शूद्रहुं तुम ब्राह्मणी होयके मेरे पांवन मति पडो जब वा ब्राह्मणीनें हाथ जोडके कही तुमतो बडे महा-पुरुषहो मेरो दुःख तुम बिना दूसरो कोई दूर कर-वेकुं सामर्थ्य नहीं हैं जासुं मेरे ऊपर कृपा करो तब वे वैष्णव ब्राह्मणीकुं चाचाहरिवंशजीके पास लेग-यो और सब वृत्तांत कह्यौ तब चाचाजीनें वाकुं नाम सुनायो और चरणामृत दीयो तब वा ब्राह्मणीको सब कोढ मिटगयो और सब अंग नीको भयो जब वह ब्राह्मणी आछी रीतिसुं अपने घरगई वाको शरीर नीको भयो देखके वा गामके लोक सब मिलके चाचाहरिवंशजीके पास आयके पांवन पडे और सबनें नाम सुन्यो और पुष्टि-मार्गकी रीती शीखे और सब गामके लोग वैष्णव

भये और वे ब्राह्मणी तथा वाको बेटा वा वैष्णवके संग श्रीगोकुल गये जायके श्रीगुसांईजीके सेवक भये श्रीनवनीतप्रियाजीके तथा श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और व्रजयात्रा करकें श्रीठाकुरजी पधरायके अपने देशमें आये सो वे कुणबी वैष्णव ऐसे कृपापात्र हते जिनकी धोतीके छींटानतें कोढ मिटगयो तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक बाई क्षत्राणि तिनकी वार्ता ॥

वे क्षत्राणी भोरी बहोत हती और श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसों करत हती और श्रीठाकुरजी विनकुं बालभाव जनावत हते और छातीसूं लपटते और गोदमें बैठते और घडी घडी भूखे होयके खायवेकुं मांगते और वे बाईकुं बहार जावे देते नहीं और जब वे बाई बाहेर जाती तो श्रीठाकुरजी रुदन करते या रीतसुं बालभाव जनावते एक दिन घरमें बिलाई लडवे लगी जब श्रीठाकुरजीनें वा बाईसुं कही मैं बहोत डरपतहुं ऐसे कहिके वा बाईकी छातीसूं लपट गये जब वा बाईनें कही जो तुमनें पूतना आदिक दैत्य मारे हैं जब तो डरपे नहीं अब काहेकुं डरपतहो तब श्रीठाकुरजी वा बाईसुं बोले नहीं तीन दिन सूधी कछू मागेंहुं नहीं

जब वा बाईनें बहुत प्रार्थना करके और रोवे लगी जब श्रीठाकुरजी फेर बोलावे लगे जासूं वैष्णवनकुं ऐंसे विचार राखनो नहीं ठाकुरजीकुं भूख नहीं लगे है और शीत नहीं लगे और प्यास नहीं लगे ये सर्व सामर्थ्यहैं ऐंसे विचारके जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करेंहैं विनकी सेवा निष्फल होवेहै श्रीमहाप्रभुजीनें निबंधमें कह्यो हैं सो श्लोक–

माहात्म्यज्ञानपूर्वस्तु सुदृढः सर्वतोधिकः ॥
स्नेहो भक्तिरितिप्रोक्ता तया मुक्तिर्नचान्यथा ॥

जासुं माहात्म्यज्ञानपूर्वक सुदृढ सर्वते अधिक स्नेह श्रीठाकुरजीमें राख्यो चहिये जैंसे कोउ राजा होवे तो हुं राजाकी माताके मनमें ऐंसे रहे है मेरो बेटा भूखो होयगो और मेरे बेटाकुं ठंढ लगती होयगी यारीतीसु वैष्णवनकुं श्रीठाकुरजी ऊपर स्नेह राख्यो चहिये सो वे बाईक्षत्रानी ऐंसी कृपापात्र हती ॥ वार्त्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेल तिनकी वार्त्ता ॥

सो वे पटेल गुजरातके संगमें श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीके लालजी सात श्रीगुसांईजीकुं काकाजी कहेते हते सो पटेल विन बालकनके मुखतें सुनके श्रीगुसांईजीकुं काकाजी कहते वा पटेलकुं ऐंसो भोरो

जानके श्रीगुसांईजीनें गायनकी सेवा करवेकेलीयें खिरकमें राख्यो सो वे पटेल गायनकी ऐंसी सेवा करतो जैसे गाय सुखी होवें गायनके नीचे झाडतो और नित्य गायनके नीचे रेती बिछावतो और वे रेती नित्य बहार काढडारतो नित्य नई नई रेती बिछावतो वह पटेल मनमें ऐंसे विचारतो के गायनके शरीरमें जीव न पडे और गायनकुं ठंढ न लगे गायनकी ऐंसी टहल देखके श्रीनाथजी वा पटेलपर प्रसन्न भये और वह पटेल गायनकुं घास धोयके खवावतो कारण जो गायनके दूधमें रज आवेगी तो श्रीनाथजी कैंसे आरोगेंगे सो वे पटेल कोईदिन पातर लेवे जाय और कोईदिन न जाय गायनकी टहलमें अवार होय जायतो पातरलेवे न जाय भूखो टहल कर्‍यो करे जब वाकुं श्रीनाथजी लडुवा देवे सो वे पटेल खायके गायकी सेवा कर्‍यो करे एकदिन वा पटेलसुं श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तुं नित्य पातर लेवे क्युंनहीं आवेहे ? जब वा पटेलनें कही काकाजी महाराज कोईदिन श्रीनाथजी लडुवा देवे जब पातर लेवे नहीं आउंहूं जब लडुवा न देवे तब पातर लेवे आउंहूं ये बात सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये और कही जो तेरी पातर नित्य खिरकमें पठावेंगे सो वे पटेल नित्य गायनकी टहल कर्‍यो करतो एकदिन

वा पटेलनें कही जो अब मेरी पातर माति पठावो मोकुं श्रीनाथजी नित्य लड्डूवा देवेहैं ये सुनके श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम लड्डुवा सब खायजावोहो कें कछू राखो हो तब वानें कही आधो लड्डूवा मेरे पास है जब वे श्रीगुसांईजीनें आधो लड्डुवा मंगायो देखेंतो शय्याभोगको लड्डूवाहै जब श्रीगुसांईजी देखके वाके ऊपर बहोत प्रसन्न भये फेर एकदिन मेघ बहोत वरस्यो हतो जब वे पटेल भूखो रह्यो जब श्रीनाथजी झारीबंटालेके वा पटेलके पास आयके वाकूं लड्डुवा दियो और झारीबंटा उहां छोडके श्रीनाथजी गये जब वे पटेल झारीबंटा लेके श्रीगुसांईजीका बैठकमें लायके श्रीगुसांईजीकुं दीये और कही जो रातकुं श्रीनाथजी खिरकमें भूलगयेहै जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी अब तुम सिंघपोरपें रखवारी करो तब वे पटेल सिंघपोरपर बैठे रहेते एकदिन श्रीनाथजी सिंघपोरवें बहार पधारन लगे तब वा पटेलनें नाहीं कही जो रातकुं गहेनो पहरके मतजाओ जो जाओगे तो काकाजी मेरे ऊपर खीजेंगे तब श्रीनाथजी पधारे तब वह पटेल पाछें गयो जब वृंदावनमें जायके श्रीनाथजीनें रास कऱ्यो तब वा पटेलकुं दर्शन भये और उहां आभूषण जो व्रजभक्तनके पडे सो सब

पटेल बीनके लायो फेर लायके श्रीगुसांईजीके आगें धरे और कही जो श्रीनाथजी माने नहीं है और रातकुं मंदीरमेंसुं हजारन स्त्री श्रीनाथजीके संग गई हती जब खबर न पडी वे स्त्री कहां रहती होएंगी मैं विनको गहेनो बीनलायोहुं ये सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये जब श्रीगुसांईजीनें मनमें विचार क-यो जो याकुं स्वाभाविक प्रपंचकी स्मृती भूलगई है और भगवत्स्वरूपमें आसक्ति भई है याकुं गायनकी सेवातें निरोधसिद्ध भयो है याके भाग्यकी बडाई कहा करनी जिनके अरसपरस श्रीनाथजी होय रहेंहें विचारके वा पटेलकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुं सिंघपोरीकी रखवारी क-यो कर जहां श्रीनाथजीजायं विनकुं जायवे दीजो तुं नाहीं मतकरियो और तोकुं संग ले जाएंतो जईओ नहीं तो मति जईओ ये सुनके वा पटेलनें बीनती करी गहनो खोइ आवेतो कैसे करनो तब श्रीगुसांईजीनें कही हमारे घर गहेनो बहोत हैं जब सुनके वह पटेल चुपकर रह्यो और सिंघपोरीपर बैठो रहेतो जब श्रीनाथजी पधारते जब वाकुं जगायके कही जाते और इच्छा होती तो संग ले पधारते वे पटेल श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एकविरक्त वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव व्रजमें पर्यटन करते सो चूकटी मांगके निर्वाह करते एकदिन कोकिला वनमें रसोई करी वा दिन डोल उत्सव हतो सो वे भूलगये हते जब रसोई करचुके तब डोलउत्सव याद आयो जब बडो पश्चात्ताप कऱ्यो पाछें विचार कऱ्यो भगवद्‌ इच्छा ऐंसी है जब कुंजकी लता बांधके डोल कऱ्यो और श्रीठाकुरजीकुं झुलायो और दार बाटी करी हती सो तीनों भोगनमें दार बाटी समर्पी सो या वैष्णवको ऐंसो भाव देखके श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न भये और श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके श्रीगुसांईजीकुं जताये जब श्रीगुसांईजीनें मनमें ऐंसी जानिके वा वैष्णवके धन्य भाग्य हैं फिर एकदिन वे वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास गये तब श्रीगुसांईजीनें वा वैष्णवकुं डोलके समाचार कहे तब वा वैष्णवनें कही श्रीठाकुरजी जो कछु मानतेहैं सो आपकी कानतें मानतहैं यामें जीवकी सामर्थ्य कछु नहीं है सो वे वैष्णव ऐंसे कृपापात्र हते जिनके भावतें श्रीठाकुरजी वश्य होय गए हते सो वा वैष्णवको ऐंसो भाव हतो तातें इनकी वार्ता कहांतांई कहिये जाकुं देखके श्रीठाकुरजी प्रफुल्लित रहते हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक विरक्त तिनकी वार्ता ॥

सो वा वैष्णवनें ऐसो नेम लीयो नित्य गिरिराजकी परिक्रमा करनी ऐसे करते बहुत दिन बीते एकदिन वाके मनमें ऐसी आई कोई दिन श्रीगुसांईजी मोसुं बोले नहींहें सो बहुत चिंता नित्य करे एकदिन वा वैष्णवके पांवमें ठोकर लगी जब परिक्रमा करवे न जायसक्यो वा दिन अन्नकूटको उत्सव हतो सो वा वैष्णवके मनमें ऐसी आई जो या रस्ता ऊपर आज श्रीगुसांईजी पधारेंगे सो वे रस्ता झाऱ्यो और कांकर वीनडारे फिर गोवर्धन पूजाके दर्शनकीये और फिर श्रीगुसांईजीके दर्शन करवे गयो जब श्रीगुसांईजीनें कही आवो वैष्णव बैठो जब वा वैष्णवनें बीनती करी जो महाराजाधिराज कोई दिन आप मोसों बोले नहींहें आज कृपा करके बोलेहैं याको कारण कहा जब श्रीगुसांईजीनें कही आज तुम पुष्टिमार्गकी रीती प्रमाणें चलेहो जासुं हम प्रसन्न भयेहैं जब वा वैष्णवनें बीनती करी जो मैं नित्य गिरिराजजीकी परिक्रमा करुंहुं जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो ये तो तेरो देहको साधन करेहैं और आजतो तैंनें श्रीठाकुरजीको सुख विचाऱ्यो है पुष्टिमार्गमें तो जैसे श्रीठाकुरजी सुखी होवै वैष्णवकुं वैसीहीं कृती करणी चहीये ये सुनके वे

वैष्णव बहुत प्रसन्न भये और सब साधन छोडके सेवा करन लगे सो वे वैष्णव ऐंसे कृपापात्र हते वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक क्षत्री तिनकी वार्ता ॥

सो वे क्षत्री हीरानकी धरती परखतो हतो एक बरसमें बरसाद न बरस्यो सो वाकी खेतीमें कछु भयो नहीं और सरकारनें मसूलके पैसा मांगे सो वाके पास हते नहीं तब सरकारनें वाको घर लूट लीयो वाके घर कछु रह्यो नहीं फेर वाकी स्त्री चरखा कातके जो कछु पैसा आवतो वासुं निर्वाह करते परंतु दोय मनुष्यनको चित्त ऐंसो रहेतो श्रीठाकुरजीकुं श्रम होवेहै ये विचार करके ये परदेश चल्यो सो जादेशमें हीरा होते हते वाई देशमें गयो उहां एक वेपारीसुं मिल्यो वासुं ठराव कर्‍यो जो मैं हीरानकी धरती परखुंहुं तुमकुं मैं जो धरती परखदेवुं सो तुम लेउ जो माल निकसे सो आधो मेरो और आधो तुमारो ऐंसे कबूल करायके वासुं धरती लेवाई सो धरती खोदाई जब माल बहुत निकस्यो ता पाछें वा वेपारीनें वा क्षत्री वैष्णवकुं कछु दियो नहीं फेर वे क्षत्रीवैष्णव दूसरे वेपारीसुं मिले वासों नक्की लिखत पढत करके फेर वा देशमें धरती लेवाई फेर वानें धरती खोदाई जब हीरा बहुत निकसे जब

विनसुं आधो माल बांटके अपनें देशकुं चल्यो इत-
नेमें जो पहलो वेपरी हतो वाके घरमें अग्नी लगी
सो सब माल जर गयो जब वे वेपारी आयके वैष्ण-
वके पांवन पऱ्यो जो मेरो अपराध क्षमा करो अब
मेरे पास कछु रह्यो नहींहै जब वा वैष्णवकुं दया
आई फेर वाकुं धरती परख दीनी सो वैष्णवनके
ऐसे धर्महोवेंहैं जो बुरोकरे तासूं भलो करणो फिर
वह क्षत्री वैष्णव अपने देशकुं चल्यो दो चार नोकर
राखके अपने देशकुं चल्यो जब रस्तामें एक तलाव
जंगलमें हतो वा तलावके ऊपर ग्यारे ठग उतरे
हते उहां क्षत्री वैष्णवनें डेरा कऱ्यो और अपनें
मनुष्यनकुं कही तुम चार जने गाममेसुं सामग्री
ले आवो तब वे मनुष्य गये जब ठगननें ऐसो वि-
चार कऱ्यो याकुं मारके सब माल लेजाएं तो ठीक
तब ठग मारवे लगे जब वैष्णवनें कही मोकुं न्हाय
लेवे देओ तब ठगननें कही जो भलें फेर वे वैष्णव
तलावमें न्हायवे लग्यो उहां न्हायके श्रीगुसांई-
जीको ध्यान कऱ्यो श्रीगुसांईजी परमदयालहैं भक्त
विरह कातर करुणामयहैं भक्तनकुं छोडे नहींहैं जहां
तहां भक्तनके पाछें फिरेंहैं जासुं वा क्षत्री वैष्णवकुं
वा तलावमें दर्शन दिये जब वा वैष्णवनें बीनती
करी जो मेरो कहा अपराधहै तब श्रीगुसांईजीनें

आज्ञा करी ये आगले जन्ममें ग्यारें चोर हते और तुम सरकारकी नोकरीमें हते तब तुमनें इनकुं मारे हते अब ये तेरौ वैर लेवेकुं आयेहैं इतनो आछो जो एक जन्में ग्यार जने तुमकुं मारेंहें नाहीं तो ११ जन्म तुमकुं लेने पडते आर एक एक जन्ममें न्यारो न्यारो वैर लेते वो क्षत्री श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके बहार आय और विन ठगनसों कही अब तुम मोकुं मारौ परंतु विन ठगननें श्रीगुसांईजीकी वाणी सुनी हती दर्शन न भये हते वा वाणी श्रवणके प्रतापतें विनकी बुद्धी निर्मल होय गई हती जैसे भगवानके पार्षदनकी वाणी सुनके अजामेलकी बुद्धि निर्मल भई हती जब यमदूत अजामेलकुं मारवे लगे हते तब भगवत् पार्षदनन छुडायो हतो वाही समय जो भगवत् पार्षदननें यमदूतनकुं भगवद्यश सुनायो हतो सो अजामेलनें सुन्यो अजामेलकुं अमृतको बिंदु पान कह्यो सो श्रीमहाप्रभुजीनें जलभेदमें लिख्योहै--

तादृशानां क्वचिद्वाक्यं दूतानामिव वर्णितम् ॥
अजामिलाकर्णनवद्बिंदुपानं प्रकीर्तितम् ॥

ऐंसे विन ठगनकुं अमृतकी बूंदनको पान भयो जब वे ठग कहन लगे तुमनें तलावमें कोणसु बातें

करीहैं और पहेले जन्मको वृत्तांत तुमकुं कौन कहतो हतो सो कृपा करके कहौ अब हम तुमारे दास होएंगे अब तुमकुं नहीं मारेंगे और हमारेको द्रव्य नहीं चहिये तुम सत्य बोलो जो कोनसु बात करीहै जब वे क्षत्री वैष्णवनें जो बात भई हती सो कहि दीनी जब वे सब ठग विनके पांवन परे और कही जो हमकुं श्रीगुसांईजीके सेवक करावौ पाछें वे क्षत्री वैष्णव रसोइ करके सबनकुं प्रसाद लेवायके अपने गाम आयो और आछे हीरानको श्रीगुसांईजीके लीयें हार करायो आर दशहजारके हीरा बेच डारे सब घरके खरचकी बंदोबस्ती करी और फेर अपने श्रीठाकुरजी पधरायके और स्त्रीकुं संग लेके और विन ठगनकुं संग लेके श्रीगोकुल आयो फेर श्रीगुसांईजीके दर्शन करे और सब ठगनकी बात कही जब वे ठग श्रीगुसांईजीकी प्रेमपूर्वक शरण गये और श्रीगुसांईजीकी कृपातें भगवत्स्वरूप और श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप और श्रीगिरिराजको स्वरूप और श्रीयमुनाजीको स्वरूप और ब्रजको स्वरूपनको विन ठगनकुं श्रीगुसांईजीकी कृपातें ज्ञान भयो सो क्षत्री वैष्णव ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ५९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक विरक्त तिनकी वार्ता ॥

सो वैष्णव श्रीगोकुलमें रहेतो और चुकटी मांगके निर्वाह करतो और वा गाममें एक क्षत्राणी वैष्णव हती सो वाके पास द्रव्य बहोत हतो और विरक्त वैष्णव क्षत्राणीके घर बहोत जातो और भगवद्वार्ता करतो परंतु लोग निंदा बहोत करते एकदिन वा वैष्णवसुं श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तूं वा क्षत्राणीके घर क्यूं जायहै तब वानें कही जो महाराज मेरो वासुं कछू मतलब नहीं है कदाचित् कछु द्रव्यको काम पडे तो वह काम वासुं निकसे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवकुं द्रव्यपात्रकी खुशामद नकरी चाहिये त्यागीकुं खुशामद न करणी श्रीमद्भागवतमें कह्यो है--

श्लोक-सत्यां क्षितौ किं कशिपोः प्रयासैर्बाहौ स्वसिद्धे ह्युपबर्हणैः किम्। सत्यञ्जलौ किं पुरुधान्नपात्र्या दिग्वल्कलादौ सति किं दुकूलैः ॥१॥ चीराणि किं पथि न संति दिशंति भिक्षां नैवांघ्रिपाः परभृतः सरितोऽप्यशुष्यन्। रुद्धा गुहाः किमजितोऽवतिनोपसन्नान् कस्माद्भजन्ति कवयो धनदुर्मदान्धान्॥२॥

ऐसे बहोत रीतिसुं वा विरक्तकूं श्रीगुसांईजीनें समझायो परंतु वो वैष्णव समझो नहीं तब श्रीगुसांईजी परमदयालहैं वा वैष्णवकुं संसारमें डूबतो देखके श्रीगुसांईजीनें लौकिक चारित्र रच्यो वा वैष्णवकुं

कही हमकुं रुपैया पांच हजार उधारे चहिये महिना एकमें पाछे देवेंगे वा क्षत्राणीसों तुम बीच पडके तुमारे नामसुं उधारे लिवाय देवो जब वा क्षत्राणीकुं कहिके रुपैया पांच हजार वे वैष्णव अपने नामसुं ले आयो सो श्रीगुसांईजीकुं दीने तब लेके रुपैया श्रीगुसांईजीनें धरतीमें गडाय दीने महिना दोढ पीछे वा क्षत्राणीनें वा वैष्णवसुं रुपैया मांगे तब श्रीगुसांईजीनें वा वैष्णवसों कही जो हमतो वर्ष दो वर्ष पीछे परदेश जाएंगे जब रुपैया आवेंगे तब देवेंगे तब वा वैष्णव सुनके चुप कर रह्यो जब वा क्षत्राणीनें वा वैष्णवकुं सिपाइनके पहरेमें बैठायदियो चुकटि मांगवे जाने न दिये और घरमें आवे न दिये एक वार दर्शन करवे सिपाईके संग जावे देवे तब मनमें ऐसो विचार क-यो याकुं बहोत दुःख देऊंगी तो श्रीगुसांईजी रुपैया देवेंगे जब वा वैष्णव श्रीगुसांईजीके दर्शन करवे गयो चार सिपाई संग गये तब श्रीगुसांईजीनें पूंछ्यो वैष्णव ये कहाहै तब वे वैष्णव रोय पड्यो और अपनी संपूर्ण हकीकत कही जब श्रीगुसांईजीनें कही वा क्षत्राणी तेरी मित्रहै वाके पास चार पांच लाख रुपैयाको द्रव्य है खावेवारो कोई है नहीं पांच हजारके लीयें तोकुं ऐसो हेरान क-यो अब तुम कैसे करोगे तब वा

वैष्णवनें कही नो एकवार क्षत्राणीके रुपैया चूके तो जन्मसूधी वाको मुख न देखूंगो तीनदिन भयेहे मैनें अन्न जल लीयो नहींहे ये सुनके श्रीगुसांईजी बहोत कृपा करिके वह द्रव्य कढाय दियो और वा वैष्णवकुं कही जो हमारे कछु द्रव्य चाहितो न हतो तेरी आसक्ती छुडायवेकेलीयें इतनो काम करनो पड्यो तब द्रव्य लेके वा वैष्णवनें क्षत्राणीकुं दियो और अपने मनमें समझ्यो जो श्रीगुसांईजी विना ऐसी कृपा कौनकरै और संसारमें डूबते नकुं कौन काढै ऐसो विचारके वा वैष्णवनें ऐसो नेम लियो वा क्षत्राणीको मुख न देखुंगो सो वे वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो जिनकुं श्रीगुसांईजीनें संसारासक्ति छुडाई ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६० ॥

श्रीगु० सेवक ब्राह्मण स्त्रीपुरुष देवीके उपासी-तिनकी वा०॥

सा वे ब्राह्मण आगरेमें रहेतो हतो सो वे ब्राह्मणस्त्रीपुरुषनें ऐसे देवीको मंत्र साधे जो देवी आयके नित्य मध्यरात्रीमें दर्शन देवै और बातें करे ऐसे करतकरत बहोत दिन बीते एकदिन चाचाहरिवंशजी श्रीगोकुलमेतें आगरेगये सो ज्येष्ठमास हतो धूप बहोत पडती हती सो तापकेलिये रस्तामें अवार होयगई, रात पेहेर गई जब आगरे पहोंचे सो बहोत श्रमित भये सो वा ब्राह्मणके चोतरापर डेरा कर्‍यो

उहां हवा आछी जानके सोयरहे जब मध्यरात्री भई जब वह देवी ब्राह्मणके घर आई देखेतो वा ब्राह्मणके चोतरापर पांच वैष्णव सोयरहेहैं देवी प्रसन्न होयके अपने बडे भाग्य मानके विन वैष्णवनकुं पंखा करन लगी और मनमें ये समझीके ये भगवद्भक्त सूतेहैं सो इनकुं उलंघके केसें जाउं और वे ब्राह्मणतो देवीके दर्शनकेलीयें बहोत आतुर हतो सो दोनों स्त्रीपुरुष बहोत प्रार्थना करन लगे और स्तुती करन लगे और आवाहन करन लगे तोहुं देवी आई नहीं आखीरात चाचाजीकुं देवी पंखा करती रही जब रात चारघडी रही तब चाचाजी उठे और संतदासके घर चले जब देवी भीतर गई विनस्त्रीपुरुषनकुं दर्शन दिये जब वे ब्राह्मण हाथजोडके पूछन लग्यो जो आज काहेकूं रातकुं नहीं पधारे हमारो कहा अपराधहै जब देवीनें कही जो तुम्हारे घरके आगे वैष्णव सूतेहते मैं विनकुं पंखा करती हती तब वा ब्राह्मणनें हाथजोडके कही जो वैष्णव त्रिलोकीसुं अधिकहैं साक्षात् भगवान् जिनके वशमेंहे और मेरे जैसे देवता तो विनकी टहल करवेकी अभिलाषा राखेंहें परंतु ये टहेल मिले नहींहे ये सुनके वे ब्राह्मण बोल्यो जो तुम कृपाकरके ऐसे वैष्णवनके दर्शन हमकुं करावो जब वा देवीनें कही

जो मैं तुमारे ऊपर प्रसन्न भईहुं और तुमारो साचो
भाव मेरेमेंहै जासु मैं तुमकुं कहूंहुं जो तुम दोउ-
जने वा वैष्णवके पास जायके श्रीगुसांईजीके शरण
जावो जब वे ब्राह्मण स्त्रीसहित संतदासजीके घर
जायके चाचाहरिवंशजीकुं मिले और सब वृत्तांत
कह्यो तब विनदोउनकुं चाचाजीनें नाम सुनायो और
मारगकी रीति सिखाई फेर विन दोउन स्त्रीपुरुषनकुं
चाचाजी श्रीगोकुल ले गये और श्रीगुसांईजीके
दर्शन कराये और सब प्रकार जणायो तब श्रीगु-
सांईजीनें कृपाकरके विन स्त्रीपुरुषनकुं नाम निवे-
दन करायो जब वे स्त्रीपुरुष श्रीनवनीतप्रियाजीके
दर्शन करके बहोत प्रसन्न भये और श्रीमदनमो-
हनजीकी सेवा माथेपधराई और सेवा करन लगे
और श्रीनाथजीके दर्शन श्रीगुसांईजीके संग जायके
करे सो वे ब्राह्मण और ब्राह्मणी बहोत प्रसन्न भये
तब श्रीगुसांईजीसुं विदा होयके आगरे आये और
एक महिनासूधी चाचाहरिवंशजी हमारे पास रहें
ऐंसी बीनती श्रीगुसांईजीकुं करके चाचाजीकुं
संग ले आये जब चाचाहरिवंशजीनें कृपाकरके
विनकुं मारगकी रीती सिखाई सो वे स्त्रीपुरुष
श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र भये ॥ वार्ता
संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६१ ॥

श्रीगुसां०से० कृष्णदासतथा ईश्वरदास दोउ भाई ति०वा०॥

सो वे दोनो भाई निष्किंचन हते और सदा श्रीगुसांईजीके पास रहेते और श्रीगुसांईजी परदेश पधारते तो संग जाते और जलघराकी सेवा करते हते और दोऊ भाई अफीम बहोत खाते हते एकदिन श्रीगुसांईजीनें विनकुं अफीम खाते देखे जब श्रीगुसांईजीनें विनकुं कही तुम अफीम छोड देवो विननें वीनती करी महाराज अफीममें कहा दोषहै तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो अफीम भगवत्स्वरूपकुं भुलावेहैं और अफीम पुरुषार्थ घटावेहैं और तत्त्वनिश्चयकुं भुलायकै अतत्त्वमें मन लगावैहै और जब अफीम न मिलै तब कोई बातमें चित्त नहीं लगेहै ये बात सुनके विन दोउन भाईननें अफीम छोडदीनी और भगवद्रसमें छके रहेते विनकुं सदा भगवद्रसको अमल रहेतो जासुं भगवद्वार्ता विना दूसरी बात नहीं करते सो वे दोउभाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६२ ॥

श्रीगुसां० सेवक एक साहुकारके बेटाकी बहू ति०वार्ता ॥

सो वे साहुकारके बेटाकी बहू सूरतगांममें रहेती हती वाको रूप बहोत सुंदर हतो और वे सती हती एकदिन अपने घरमें कवांड लगायके न्हाती हती

सो एक म्लेच्छ पादशाहको नौकर घोडापर बैठके जातो हतो सो वाकी नजर वा स्त्रीके ऊपर गई और देखके कामातुर भयो तब घोडा कुदायके वाके घरके भीतर जायपऱ्यो सो वे स्त्री नग्न नहाती हती वाको हाथ पकरलियो जब वह स्त्री बोली इतनी तसती काहेकुं लेहो मैं तुमारी चाकरहुं तुम कहो जसे करुंगी अबी मोकुं वस्त्र पेहेरे लेवेदेवो य सुनके वह म्लेच्छ प्रसन्न भयो और कही जो तुम कपडा पेहेरके हमारे संग चलो ये कहेके वा स्त्रीको हाथ छोडदियो वा स्त्रीनें कपडा पेहेरके और वा म्लेच्छके मुखमें एक तमाचो मारके एक कोठामें कवाडदेके चली गई तब म्लेच्छ सरमायके घर गयो फेर मनमें ये विचार कऱ्यो जितनो द्रव्य अपने पास हे खर-चके या लुगाईसुं विवाह करनो याकुं छोडनी नहीं ऐंसे विचारके उपाय ढूंढवे लग्यो वा स्त्रीके घरके पास एक डोकरी रहेती हती बहोत गरीब हती वा डोकरीसुं वा म्लेच्छनें पेहेचाण करी और नित्य वाके घर जाय कोईदिन आठ आना कोई दिन रुपैयो कोई दिन दो रुपैया वा डोकरीकुं दे आवै ऐंसे करते करते वा डोकरीसुं कही जो या सेठके बेटाकी बहूको नाम और बापको नाम सासु सुसरा धणी याको नाना नानी मामा मामी सबको नाम

और याके शरीरके चिन्ह और वाकी अवस्था और जन्मको वरस तथा महीना दिवस याकुं पूछके मोकुं लिखायदे तो पचाश मोहर देऊंगो तब वा डोकरीनें कबूल कर्‍यो और नित्य वाके घर जाय और वा बहूको तेलकांकसी करे और सब बातें पूंछे और आयके वा म्लेच्छकूं लिखाय देवे ऐसें करते जब सब वृत्तांत लिखाय चुकी तब वा म्लेच्छनें एक वेश्याकी छोरी मोल लीनी और साहुकारके बेटाकी बहूको नाम हतो सो नाम धर्‍यो और वाकुं सब सगानके नाम सिखाय दिये जब वह वेश्याकी बेटी हुस्यार भई सो वा साहुकारके घरके पाछे वा वेश्याका बेटीकुं ठाढी राखी और सूबाके आगें जायके पुकार्‍यो जो अमुकी साहुकारके बेटाकी बहू मेरे संग मुसलमान होवेकुं खुश है और मेरे संग पर्णवेकुं खुशहै सो वाके घरके पाछें ठाडीहै वाकुं सरकार बुलायके पूछलेवे जब हाकमनें वाकुं बोलायो और वे बात सब पूंछी और सगानके सब नाम लिखलिये और म्लेच्छ बोल्यो ये पाछें फेर बदल जायगी और सुसराके घर चली जायगी जासुं सरकार पक्को करलेवें जब वा हाकमनें वासुं पक्की लिखत करलीनी फेर वाकुं रजा दीनी फेर वा म्लेच्छनें वेश्याकी बेटीकुं वेश्याके घर पठाय दीनी

और पंदरे दिन पाछें वा सूबाके आगें पुकार करी जो वा साहुकारके बेटाकी बहूनें मेरे संग खान पान करके फेर वाके घर गईहै तब सूबानें हुकम करके वा बहूकूं पकडाई फेर वाको सुसरा वाको बाप और सब गामके पंच एकट्ठे होयके वा सूबाके पास गये परंतु सूबानें मानी नहीं कह्यो ये बाई मेरे पास आयके लिखाय गई है बहोत तकरार भई तब वाके सुसरानें कही ये कोइदिन बहार नीकसी नहींहै जासुं हम दिल्लीमें अकबर पादशाहके पास पुकारेंगे जहां सूधी हमारो दिल्लीमें न्याय न होवै तहां सूधी वा बहूको धर्म भ्रष्ट न होवै और म्लेच्छ या बहुकुं स्पर्श न करै ऐंसे सूबासों नक्की करालियो फिर सूबाको बंदोबस्ती लेके दिल्ली गये तब अकबर पादशाहनें न्याय कर्‍यो वा म्लेच्छके लाभमें हुकम कर्‍यो जब वे बहू ऊंचे स्वरसुं रोवन लगी और कहन लगी हे ईश्वर जो तुम सत्य होतो मेरे प्राणलेवो मैं या बातमें कछु जानत नहींहुं वाकी व्यवस्था देखके दिल्लीपतीके मनमें ऐंसी आई जो वा स्त्रीको मन जो म्लेच्छमें मोहित होतो तो ऐंसी रुदन न करती जासुं प्रभु मेरे न्यायमें खामी न पाडे तो बहोत आछो सो परमेश्वर मेरो धर्म राखेंगे ऐसें विचारके हुकुम दीयो और कचेरीमें ऐंसो कह्यो जो या न्यायमें कछु

स्वामिहै बराबर नहिं दीसे है फेर वा म्लेच्छके संग कर दिनी सो म्लेच्छ कचेरीसुं लेचल्यो और वे बहू ऊंचे स्वरसुं रुदन करे और छाती कूटे हजारन लोक तमाशा देखवेकुं एकट्ठे भये वा बहुकुं म्लेच्छ ले चल्यो वाई दिन श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी दिल्ली पधारे हते जहां श्रीगुसांईजीको डेरा हतो वा रस्ता होयके वो म्लेच्छ निकस्यो और वह स्त्री रुदन करती हती और बहोत मनुष्यनकी भीड संग हती जब श्रीगुसांजीनें देखी और पूंछ्यो जो ये कहाहै जब सब वृत्तांत सुन्यो तब वा तुरककुं और वा बहूकुं बुलायो और सब समाचार पूंछे और सुनके पृथ्वीपतीकुं खबर कराई जो हम याको न्याय पंद्रें दिनमें करदेवेंगे ये सुनके पृथ्वीपती प्रसन्न भयो और कही जो एक महिनाके भीतर जो श्रीगुसांईजी करेंसो न्याय मेरेको कबूलहै ऐसे कहेके बीरबल दिवानकुं श्रीगुसांईजीके पास पठायो सो बीरबलनें आयके बीनती करी ये सुनके श्रीगुसांईजीने म्लेच्छकुं और ठिकाणे रहेवेको हुकूम दियो और वा बहूकुं सास सुसराके पास राखी और दोउनकुं बुलायके विनकी सब हकीकत सुनी फेर एकदिन श्रीगुसांईजीनें दो पींजरा मंगाये एक पींजरामें वा तुरककुं बैठायो एक और पींजरामें वा बहूकुं बैठाई

और दोनु पींजरा मैदानमें धराय दिये और आखी रात वे पींजराकी पास कोई मनुष्य जाय नहीं ऐंसी बंदोबस्ती करदीनी और एक मनुष्य दिल्लीपतीकी खातरीको छानो छानो रातकुं वा पींजरेके पास बैठायो जैसे दोउनकुं खबर न पडे ऐंसी रीतीसुं वे मनुष्य बैठो रह्यो फेर वा पींजरामें मध्यरात पीछे वह बहू बोली वा म्लेच्छसुं कही जो अब मैं तेरी भईहुं और तेरे संग जन्म काढूंगी जासुं कछु तुमारो पराक्रम जाणुं तो मेरो चित्त प्रसन्न होवे जो तुमनें कैसी रीतीसो उपाय रच्यो सो तुम मोसों कहो तो मोकुं धीरज आवे तो मेरे मनकुं धिरजदेउं मैने कोईदिन तुमकुं देख्यो नहिं है जो तुमारे पराक्रम नहीं कहोगे तो मेरे प्राण पींजरासुं माथा फोडके काढ डारुंगो जब वो म्लेच्छ सुनके बहोत प्रसन्नभयो और बोल्यो जो तुम मेरेपराक्रम अब सूधी जानें नहीं हे जो तोकुं कछु खबर है नहीं तोहुं इतनोकर दिखायो है फेर वा म्लेच्छनें सब वृतांत कह्यो वा डोकरीकी और वा वेश्याकी छोरीकी सब रीती जैसी बनी हती सब कही. ये सुनके वे बहू बोली अब मेरे प्राणरहेंगे अब तेरे वश होयके तेरे पास आऊंगी ये सुनके वे म्लेच्छ प्रसन्न भयो और फेर आपणी बडाई करनलग्यो तब वे मनुष्य जो छिपके बैठो हतो वानें दोननकी

बातें आखीरात भई हती सो सब लिखलीनी हती जब सवारो भयो जब श्रीगुसांईजीनें दोनों पींजरा मंगाये और वे मनुष्यनें लिख्यो हतो सब बांच्यो जब श्रीगुसांईजीनें वे दोनों पींजरा और वे लिख्यो हतो सो पृथ्वीपतीके पास पठाय दीये सो अकबरपादशाह ये लिखत बांचके वा तुरककुं जन्म कैद दीनी और वा सूबाकुं दूर कियो और सूबासों कही जो जासमें ये स्त्री तेरे पास लिखायवेकुं आइ हती वा इसमें तैनें या स्त्रीके बापकी और सुसराको बुलायके सही क्युं न लीनी और वा वेश्याको और डोकरीको घर लूटलियो और वा बहूकुं छोडदीनी जब वा बहूनें अपने सगानसों कही जो मोकुं श्रीगुसांईजीनें जीवती राखीहै जासुं मैं इनकी सेवक होउंगी फेर वह बहू श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और वाके सासु सुसरा और मा बाप वाको धणी और जितने वाके संग गये हते सब श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके अपने देशकुं आये सो वे बहू अपने सत्यमें रही तो वाके संगकूं सब वैष्णव भये सो बहू ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६३ ॥

श्रीगुसांई० सेवक हरिदास खवास सनोडिया तिनकी वार्ता ॥

सो वे हरिदास श्रीगुसांईजीकी खवासी करते

हते सो हरिदासकुं श्रीगुसांईजीनें दोबातनकी शिक्षा दीनी एकतो हमारे द्रव्यको स्पर्श न करनो और एक परस्त्रीसों एकांत बात न करनी हमारो द्रव्य स्पर्श करेतें बुद्धी भ्रष्ट होय जाय और परस्त्रीके एकांत करेतें चित्त चलायमान होवै सो भगवदावेश हृदयमें न होवै सो हरिदासनें जन्म पर्यंत श्रीगुसांईजीकी आज्ञा पाली और एकदिन हरिदासनें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो मेरे श्रीमद्भागवत सुनवेकी इच्छा है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम उज्जैनमें जायके कृष्णभट्टजीके पास श्रीमद्भागवत सुन आवो जब हरिदास उज्जैन गये और कृष्णभट्टजीसों कही जो मोकुं श्रीमद्भागवत सुनाओ तब श्रीकृष्णभट्टजीनें वेणुगीतको प्रसंग सुनायो सो श्लोक--

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयंतीं च मालाम् ॥ रंध्रान्वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृंदैर्वृंदारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद्गीतकीर्तिः ॥

या श्लोककी सुबोधिनीको प्रसंग जामें तीनप्रकारकी सुधाको वर्णन कर्योहै एकतो सर्वभोग्या सुधा और दूसरी देवभोग्या सुधा और तीसरी भगवद्भोग्या सुधाको स्वरूप श्रीठाकुरजीनें वेणुगीतमें वर्णन करके व्रज भक्तनकुं आपके स्वरूपको बोध

करायो और वर्णन करवेकी सामर्थ्य दीनी ये प्रसंग हरिदास सुनके मूर्च्छा खायगये सो एक पहेर पाछे चेतन भये फेर हरिदासजीनें कृष्णभट्टसों कही अब श्रीमद्भागवतको प्रसंग और सुनाओ तब कृष्णभट्टजीनें कही अब मोकुं अवकाश नहीं है और मनमें कृष्णभट्टजी डरपे जो इनकी दशमीअवस्था होजायगी तो श्रीगुसांईजी खीजेंगे तब कृष्णभट्टजीनें हरिदासजीसों कही तुम जायके श्रीगुसांईजीकी सेवा करो फेर हरिदासजी आयके श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीकी खवासी करन लगे ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

एकदिन हरिदासजीनें एक साचोराके घरको बैंगणको शाक लियो हतो जब हरिदासजीके मनमें ऐंसी आई जो मोकुं इतनें वर्ष भयेहें श्रीगुसांईजीकी सेवा करुंहुं और कछु पगार नहीं लेउंहुं जासुं कछुक द्रव्य श्रीगुसांईजीको लेके चल्यो जाउं तो ठीक जब श्रीगुसांजीकी बहूजीके आभूषण एक हजार रुपैयाके लेके उहांसु चले सो हरिदासजी वृंदावन होयके और आगे चले सो एक तलाव हतो उहां एक साधूकी जगह हती उहां हरिदास सामान धरके और खरचु गये और तलाव ऊपर न्हाये तब उहां पवन आई और ब्रजकी रज उडके हरिदासके मुखमें पडी जब हरिदासजीकी बुद्धी

शुद्ध भई और पेटमेंसुं सब आसुरावेष निकस गयो तब हरिदासकुं ऐसो पश्चात्ताप भयो मैनें कहा काम कर्‍यो जब हरिदास गाठडी लेके श्रीगोकुल फेर आये और आयके श्रीगुसांईजीकुं आभूषण दिये और बीनती करी जो मेरी बुद्धी ऐंसी क्युं भई तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो हमारे सेवक और हमारी ज्ञातीके भट्ट और हमारे जलघरिया प्रचारक रसोइया मुखिया भितरिया तिनके घर हमारो विनाप्रसादी द्रव्य जायहे विनके घरको जे कोई वैष्णव खावे विनकी बुद्धी ऐंसी होवे जैसें तुमारी भई हरि गुरु वैष्णवमें विनकी विषम बुद्धी होयजायहे जहां सूधी तुमारे पेटमें वा साचोराको साक रह्यो तहां सूधी तुमारी बुद्धी बिगडी रही जब तुमारे मुखमें भगवद् इच्छातें ब्रज रज पडी और तुमकुं उलटी भई जब वे अंश निकस गयो तब तुमारी बुद्धी निर्मल भई यातें सब वैष्णवनकुं गुरु तथा श्रीठाकुरजीके अनप्रसादी द्रव्यको ऐंसो डर राख्यो चहिये सो वे हरिदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक प्रेमनिधिमिश्र, तिनकी वार्ता ॥

सो प्रेमनिधिमिश्र आगरामें श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे

और प्रेमनिधिमिश्र विशेष करके अपरसमें रहते यवनकी बास्ति जानके बहार नहिं निकसते और प्रेमनिधिमिश्रको ऐंसो नेम हतो सवापहर रात रहे गागर कंतानमें बांध राखते सो गागर लैके जमुनाजीपें जाय और नहायके फेर गागर भर लावते सो एकदिन बरसात बहुत भई जहांतहां कीच भई तब प्रेमनिधीकूं चिंता भई जो अंधेरामें जहां तहां पांव पडजायगो और दिनकुं म्लेच्छ छीजाएंगे या चिंताके लीयें आखीरात नींद न आई सो वाकि चिंताको देख श्रीगोवर्धननाथजी सहि न सके जब सवापहेर रात रहि तब प्रेमनिधि यमुनाजीपें चले घरसुं बाहेर निकसे तो एक दश बरसको छोरा मसाल लेके आवे है तब प्रेमनिधिनें जानि ये कोईको पोंचायके जाय है याके पाछें पाछें जाउंतो ठीक जहांसूधि ये या रस्तापें जाय तहांसूधि याके पाछें चल्यो जाउंगो फिर जायगो तब यमुनाजीपें जाउंगो ऐंसे करते वे छोरो यमुनाजीसूधि आयो पीछे अंतर्धान होयगयो तब वाकुं बडो आश्चर्य भयो ये कौन होयगो कहा होयगो कोई भूत प्रेतकी सामर्थ्य तो नहीं है जो मेरीदृष्टिमें आयसके ऐंसे विचार करन लग्यो फेर नहायके गागरभरके प्रेमनिधि चले तब मसाल लेके वह छोरा फेर आयगयो तब विचार कर्‍यो

जो यासों पूछुं कोनहैं पांचसातपेंड चल्यो इतनेमें एक कोसभर घर हतो सो आय गयो कछू पूंछ सक्यो नाहिं तब वह छोरा चल्यो गयो फिर यानें घरमें बिचार कऱ्यो जो कोसभर रस्ता एक पांच सातपेंडमें आय गयो ये कार्य श्रीनाथजीके हैं जासुं बहुत पश्चात्ताप भयो और वा छोराके रूपमें मन लग रह्यो और नेत्रनमेसुं जल आवे लगगयो सो वे प्रेमानिधि मिश्र ऐंसे श्रीगुसांईजीके कृपापात्र हते जिनके लीयें श्रीनाथजीकुं मसाल लेनी पडी॥प्र०१।

और प्रेमनिधि कथा ऐंसी बांचते जो कोई सुनवे आवतो वाको मन हरण होयजातो और भगवत्स्वरूपको ज्ञान होय जातो जासुं स्त्री और पुरुष बहुत मनुष्य कथा सुनवेकुं आवते सो ये बात वा प्रेमनिधीके परोसी जो दुष्ट हते विननसुं सही न गई विनदुष्टनने जायके पृथ्वीपतीसों पुकार करि तब पृथ्वीपतीनें चोबदार पठाये तब वाहीसमय प्रेमनिधीनें न्हायके उत्थापन किये हते और झारि उठाई हती और दूसरि भरवेकुं विचार करते हते तब चोबदारनें जायके पकडके पृथ्वीपतीके पास लेगये और श्रीठाकुरजी जलविना रहेगये तब पृथ्वीपतीनें पूंछी तुम कथा बांचोहो जो स्त्रीनको क्यों आवे देवोहो तब प्रेमनिधि बोले जहां भग-

वत्कथा होवेहै जो सुनवे उहां आवे विनको उठाय देनो और विनको धमकावनो और विषयदृष्टिसों देखनो और भगवन्नाम सुनवेमें प्रतिबंध करनो यामें दोष बहुत लगेहै जासुं मैं कोईको नाहिं नहिं कहूंहु तब पृथ्वीपतीनें कहि तुमकहो सो बात और है और तेरी गलीके लोगननें कहि सो बात और है जहां सूधी निर्धार नाहिं होयगो तहां सूधी तुम नाहिं छूटोगे ऐंसे कहिके विनकुं कैद पठायदियो तब श्रीठाकुरजीनें पृथ्वीपतीको इष्ट जो पीर वाको रूप धरके और पृथ्वीपती रातको सूतो हतो जहां गये तब स्वप्नमें वाकुं कहि मोकुं प्यास लगीहै वानें कहि आप जल पीवो तऱ्हें तऱ्हेंके जल मेरे घरमें हैं अनेक प्रकारकी सुगंधिवाले जल हैं तब श्रीठाकुरजी बोले कौन पियावेगो तब वो पृथ्वीपती बोल्यो जो आप फरमावोगे सोई पियावेगो तब श्रीठाकुरजीनें वाकुं लात मारी और कहि तु मेरीबात चित्त देके सुनें नहिं जाके हाथको मैं जल पियुंहुं वाकुं तनें कैद कऱ्यो है ऐंसे बचन सुनके वह पृथ्वीपती उठ बैठो तब मनुष्य पठायके वा प्रेमनिधि मिश्रकुं कैदमेसूं बुलायो और उठके वाके पांव पकड लये और कहि मेरे अपराध क्षमा करौ और साहेब प्यासे हैं तुम जायके जल प्यावो औरके हाथको नहिं पीवेहैं एक

तुमपें रीझेंहें जासुं तुम जायके साहेबकुं जल प्यावो और मैं तुमारे ऊपर राजीहुं जैसे कथा बांचो हो तैंसे बांचो हो और कोई देश कोई गाम मैं तुमारि भेट करूं सो लेवो तब प्रेमानिधि बोले हमकुं कछू नहिं चहिये द्रव्य पायके कोईको आछो नहिं भयो है जिननें द्रव्य पायेहें विनकी बुद्धि स्थिर नहिं होवेंहे विनको बहुत प्रकारके बिगाड होवेहें जासुं मैं द्रव्य नहिं छिउंगो तब पृथ्वीपति बहुत डरप्यो और कही कछू फरमावो तब प्रेमनिधीनें कही तुम कोई दिन मोकुं बुलाइयो मती येहि मागुंहुं तब दोचार मनुष्य और मसाल संग देके वाही समें प्रेमनिधीजीको घर पठाये तब घर जायके और न्हायके झारि भरि तब श्रीठाकुरजीकुं धीरज आई शांत भये वे प्रेमनिधिमिश्र श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक ब्राह्मण स्त्रीपुरुष तिनकी वार्ता ॥

सो वे ब्राह्मण इटाए गाममें रहेते हते सो देवि उपासि हते रातकुं देवि विनके पास आवती और एकदिन चाचाजी इटायामें गये रात बहुत गई जब ब्राह्मणके चौतरापें डेरा किये सो उहां सोयरहे तब रातको देवि आइ सो वैष्णवको उल्लंघन न करसकि उहां ठाढी रहि विष्णुकि माया जो देवि सो

वैष्णवको स्वरूप आछि रीतीसुं जानती हती सो पाछी गई और वे ब्राह्मण अनेक प्रकारके मंत्र तथा जप तथा आवाहन करन लग्यो जब रात दोघडि रहि तब चाचाजी उठके चले फेर देवि वा ब्राह्मणके घरमें गई तब ब्राह्मणनें पूंछी क्युं रातको नहिं पधारे तब देवीनें कहि चोतरापर वैष्णव सोये-हते विनको उल्लंघन कैसें करुं तब वा ब्राह्मणनें पूंछी वैष्णव कहा तुमसुं बडेहैं। तब देवीनें कहि अनन्य वैष्णव सबते बडेहैं इनते बडो कोई नहिं; तेतीस करौड देवता विराटके रोमरोममें है सो विराट भगवान् ब्रह्मांडरूपहैं ऐंसे अनंत कोटि ब्रह्मांड श्रीठाकुरजीके एक एक रोममें हैं।भगवानको जिनने वस करे हें ऐंसे जो वैष्णव तिनसों बडो कौनहै जिनके पाछे पूर्णपुरुषोत्तम फिरेहें तब ब्राह्मणनें कहि मोकूं वा वैष्णवके दर्शन करणेहें तब देवीनें कहि गाम बाहर जावो, अबी तुमकुं जाते मिलेंगे तब वे ब्राह्मण जायके चाचाजीसों मिले और कहि जो मेरे घर पाछे पधारो और सब बात कही तब चाचाजीनें कहि हम दशपंद्रे दिन पीछे आवेंगे और वा ब्राह्मणको एक उपरना दियो कह्यो जो वा देवीको ये उपरना दीजो फेर ब्राह्मण घरमें आयके एक खुटीपे उपरना धरदियो और न्हायके गायत्री जप करन

लग्यो और वा ब्राह्मणकी स्त्री रसोई करन लगी तब पवनचल्यो सो उपरना उडके वा ब्राह्मणके माथे ऊपर जाय पड्यो तब वाकी लुगाई वा ब्राह्मणकुं कुतिया जेसी दीसवे लगी तब वो ब्राह्मण बोल्या तु कुतिया क्युं होयगईहैं वा स्त्रीनें विचार कर्‍यो जो याको कहा भयोहै ये बावरोतो नाहिं भयोहै तब वा ब्राह्मणनें माथेसो उपरना उतारलियो फेर वे स्त्री वाकुं मनुष्य जेसी दीसवे लगी तब वा ब्राह्मणनें विचारी या उपरनामें चमत्कार है तब वा लुगाईसुं कहि ये उपरना ओढके तूं मोकुं देख तब वा लुगाईनें उपरना ओढके देख्यो तब वा ब्राह्मण वाकुं गधाजेसो दिख्यो तब वा लुगाईनें कहि तुम मोकुं गधाजेसें दिसोहो तब ब्राह्मण उपरना ओढके बजारमें चल्यो सो कोई गधा कोई कुत्ता कोई घोडा कोई उंट ऐसे अनेक प्रकारके पशु दीसें परंतु मनुष्य कोई न दीसें सो आखे गाममें फिरे दोजने एकदुकानपें मनुष्य देखे तब विनकुं जायके पूंछि जो तुम कौनसे धरममें हो विननें कहि हम वैष्णवहें और श्रीगुसांईजीके सेवकहैं और तुं क्युं पूंछेहें तब ब्राह्मणनें सब बात कहि तब वे वैष्णव पछतायवे लगे जो चाचाजी या गाममें आये हमकुं तो मिलेहुं नहिं अब आवे तो हमकुं खबर करियो

फिर वा ब्राह्मणनें मनमें विचार कर्योकरे जो अब चाचाजी आवे तो मैं वैष्णव होवुं फिर थोडेदिन पीछे चाचाजी आये सो वा ब्राह्मणके घर उतरे और दोनों स्त्रीपुरुषनको चाचाजीनें नामसुनाये फिर दोनों जने वैष्णव भये श्रीगोकुलमें आयके श्रीगुसांईजीकी कृपातें श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये फिर श्रीगुसांईजीके मुखसों कथा सुनि फिर श्रीनाथजीके दर्शन करे और श्रीठाकुरजी पधरायके इटायमें आयके भगवत्सेवा करन लगे और कितनेक दिन बीते पीछे श्रीठाकुरजी विनकुं अनुभव जतावन लगे वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनको श्रीगुसांईजीनें चाचाजी द्वारा प्रमेयबल दिखायके अंगीकार करलीये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक श्यामदास विरक्त-तिनकी वार्ता ॥

सो वे श्यामदासके ऊपर श्रीगुसांईजीकी संपूर्ण कृपा हती और श्रीठाकुरजी अनुभव जनावत हते एकदिन लालदास ब्राह्मण श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और लालदासनें बीनती करि महाराज ! मैं कैसे करुं? मेरो चित्त स्थिर नहिं रहेहै। तब श्रीगुसांजीनें कहि जो तुम एक वर्षसूधि श्यामदासको सत्संग करौ तब लालदासनें श्यामदाससों कहि जो मैं तुमारो एकवर्षसूधि सत्संग करुंगो श्रीगु-

सांईजीनें आज्ञा करि है तब श्यामदासनें कहि मेरे परदेश जानोहै तब लालदासनें कही मैंहुं तुम्हारे संग तुमारी टेहेल करतो चलुंगो तब वे श्यामदास चले लालदास विनके संग चले रस्तामें एक गाम आयो वा गाममें एक वैष्णवके घर मंडाण हतो वानें वाई दिन पांचसौ मनुष्य जिमायवेको विचार कर्‍यो हतो सो विननें श्यामदास तथा लालदासकुं न्योतो दियो तब दोनों जने प्रसाद लेवे गये उहां जायके बैठे सो श्यामदासकुं पातलमें सब कीडा-कीडासे दीसे तब श्यामदासकुं श्रीठाकुरजीनें ऐसी जताई ये द्रव्य कन्याविक्रयकोहै सो मैं कोईदिन अंगीकार करुं नाहिंहुं और याहीतें ये सामग्री मैं नाहिं अरोग्योहुं यातें तुम प्रसाद मतलीजो तबश्याम दासनें प्रसाद लेवेकि नाहिं करि तब सब वैष्णव श्यामदासकुं समझावे लगे श्यामदासतो उठके चले गये सो वा गाममेंसुं दूसरे गाम चले गये और लालदासतो उहां बैठे रहे मनमें ये विचार कियो जो श्यामदास स्यानो वैष्णव नहिंहै वैष्णवनको कह्यो नहीं माने हैं ऐसे समझके लालदास प्रसाद लेवे बैठे प्रसाद लेके श्यामदासके पास गये वादिनतें श्याम दास विनसों कछू बोलते नहिं हते पातलधरदेते ऐसे करते करते एकवर्ष भयो तब श्रीगोकुल गये तब

लालदासनें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो श्याम-
दास कछू समझे नहिं है पांचसो वैष्णवनको कह्यो
न मान्यो महाप्रसाद न लियो तब श्रीगुसांईजीनें
आज्ञा करि जो तुमने हमारि आज्ञा और वैष्ण-
वाकि आज्ञा मानि नहिं तुमकुं कह्यो हतो जो तुम
श्यामदासको सत्संग करो जब तुमनें पांचसो वैष्ण
वनके कहे सों प्रसाद क्यों लियो वह कन्याविक्र-
यको द्रव्य हतो श्रीठाकुरजीनें नहिं अरोग्यो हतो
जासुं तुमनें प्रसाद लियो अबतो दो वर्ष पर्यंत श्याम
दासकी टहल करोगे तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होवेंगे
तब वे लालदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लैके श्याम-
दासजीकी टहल करन लगे सो वे श्यामदास श्रीगु-
सांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं श्रीठाकुरजीनें
ऐंसी जताई सो कन्याविक्रयके द्रव्यतें शुभकार्य
होवै सो व्यर्थ जाय ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥६७॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णवकी बेटी तिनकी वार्ता ॥

सो वैष्णवकी बेटीको विवाह श्रीरामचंद्र
उपासीके इहां भयो हतो वे बाई बालपनेसुं श्रीगु-
सांईजीकी सेवक भई हती और भगवत्सेवामें
तत्पर भई और श्रीठाकुरजा पधरायके सेवा करन
लगी और बालपनेसुं भगवद्धर्मनको आचरण
करने लागी श्रीमद्भागवतमें कह्यो है ॥ श्लोक-

" कौमार आचरेत् प्राज्ञो धर्मान् भागवतानिह "
याको अर्थ प्राज्ञ जे बुद्धिमान् हें सो बालअव-
स्थासुं भगवद्धर्मनको आचरण करें ऐसें वा वैष्ण-
वकी बेटी अनन्य श्रीकृष्णचंद्रकी भक्त हती सो
वे बाई जब वाके पतीके घर गई जब वाको पति
श्रीरामचंद्रजीको उपासी हतो सो देखके वह बाई
वाके पतिसुं भाषण करती नहीं एकदिन वाके पतीनें
पूंछी जो तुमारे श्रीकृष्णचंद्र कहा करतेहैं वा बाईनें
कही जो बाललीला और दान लीला और रास-
लीला और चौर लीला मानलीला जन्मलीला बन-
लीला विहारलीला सबलीला जितनी हैं सो एकका-
लावछिन्न करतेहैं जब वाके पतिनें कही जो हमारे
श्रीरामचंद्रजी राजलीला करतेहें ऐंसे करते नित्य
झगडो विन दोउनको चलतो सो श्रीठाकुरजी नित्य
आयके विनको झगडो चुकावते और कहते सर्वत्र
मैं हुं तुम मेरेमें अभेद जानो मेरेमें भेद नहींहै वा
स्वरूपमें वा स्त्रीकुं श्रीकृष्णचंद्रजी दीखते और वा
पुरुषकुं श्रीरामचंद्रजी दीखते जब वे स्त्रीपुरुषनको
नित्य ऐंसे करते आखोजन्म झगडत गयो और
नित्य श्रीठाकुरजी झगडा चुकावतरहे जन्मसूधी
विनकुं संसार व्यवहार याद आयो नहीं सो वे बाई

वैष्णवकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपापात्र भगवदीय हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक आठ वैष्णव हते तिनकी वार्ता ॥

सो वे आठजने एकगाममें रहते हते सो वे श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आये सो सातजनेनके पास द्रव्य हतो और एक दुर्बल हतो वाके पास कछु भेट करवेको श्रीफल नहीं हतो सो सात जनेननें जब भेट करी और एक वैष्णव जो दुर्बल हतो वानें कछु भेट न करी वाके पास एक सेरभर चोखा हते सो वे चोखा वा वैष्णवनें छिपाय राखे हते जो कोईकूं खबर न पडेगी जब श्रीनवनीतप्रियाजीके भंडारमें धर देउंगो ये समझके वानें छिपाय राखे हते जब सबने भेट करी तब वो वैष्णव सरमायके बैठरह्यो जब वाकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तैंनें चोखा छिपाय राख्येहें सो लावो जब श्रीगुसांईजीनें चोखा श्रीमुखसों वा वैष्णवके पासतें मांगलीये जेंसे श्रीठाकुरजीनें सुदामाके पास तंदुल मांगे हते जो वे चोखा अर्धतो श्रीनाथजीके भंडारमें पठाये और अर्ध तो श्रीनवनीतप्रियाजीके भंडारमें पठाये ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

फेर एकदिन वे आठ वैष्णव गोपालपुरमें श्रीनाथजीके दर्शन करवेकुं आये जब वे सात जने तो

आछी जगामें उतरे और वे दुर्बल वैष्णव तो जहां तहां पडरह्यो और कछु खायवेकुं तथा ओढवेकुं वाके पास हतो नहीं सो भूखो पड रह्यो सात जनानें वाकी खबर काढी नहीं. जब श्रीनाथजी मध्य रातकुं शय्या भोगको लड्डुवा और ओढवेकी सुफेती लेके वा वैष्णवकुं दीनी और कही जो श्रीगुसांईजीनें मोकुं तेरे पास पठायोहे वा वैष्णवनें श्रीनाथजीकुं पहचानें नहीं जब सवारो भयो तब लोगननें श्रीनाथजीकी सुफेती वा वैष्णवकुं ओढी देखी तब श्रीगुसांईजीकुं लोगननें कही जो ये आपके घरसुं श्रीनाथजीके वस्त्र कैंसे ले गयोहे जब श्रीगुसांईजीनें मनमें ऐंसी जानी जो श्रीनाथजीनें दीयेहें फिर मंगलाके समें श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं आज्ञा करी जो ये सात जन्मतो याकी खबर राखें नहींहें परंतु मेरे वैष्णवकुं दुःख पडे सो में कैंसे सहीसकुं ये सुनके श्रीगुसांईजीनें विन सातजनानकुं बुलायके कही जो तुम एकएकजना वार प्रमाणें याकी टहल करो श्रीनाथजी तुमारी सेवा मानेंगे और जादिन श्रीनाथजीकी सेवाको काम होवे तोहुं तुमारे याकी टहल छोडनी नहीं श्रीनाथजीकी सेवासुं शतगुणी गुरूकी सेवा विशेषहे गुरूकी सेवासुं सतगुणी वैष्णवकी सेवा विशेषहे परंतु वैष्णव निर्लोभी निष्कपटी

और अन्याश्रय रहित पुष्टिमार्गकी रीती विना दूसरी रीती न जाणे और लोगनकुं अपनी वैष्णवता न जनावे और पुष्टिमार्गकी रीतीमें कुशल होवे ऐंसे वैष्णवनकी सेवा सर्वतें अधिक है यासुं अधिक कछु नहींहै सो तुम सात जना याकी टहेलमें तत्पर रहो ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

फेर एकदिन वे आठ वैष्णव श्रीगोकुल गये और नित्य उहां दर्शन करते और नित्य श्रीगुसांईजीके मुखसुं कथा सुनते एकदिन सब वैष्णव आये और वे दुर्बल वैष्णव आयो नहीं तब श्रीगुसांईजी पुस्तक खोलके विराजे रहै तब वैष्णवननें बीनती करी आप कथा वांचो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जिनके लीयें कथारस श्रीमहाप्रभुजीनें प्रकट कऱ्योहैं वे आवेंगे जब बांचेंगे जब वे दुर्बल वैष्णव आयो तब कथाको आरंभ श्रीगुसांईजीनें कऱ्यो जब वाहीसमय एक द्रव्य पात्र बैठो हतो वानें कही जो येतो मजूर जेंसो है यामें कहाहै जब श्रीगुसांईजीनें कही तुमनें जो धन एकट्ठो कऱ्यो है सो सब इहां छोडजाओगे और याने जो भगवद्रस और भगवद्गुणानुवाद एकट्ठो कऱ्यो है सो ये संग लेजायगो जासुं मजूर ये भये के तुम भये ये सुनके वो द्रव्यपात्र बहुत लजायो और सब धंदो

छोडके वा दुर्बल वैष्णवको सत्संग करन लग्यो सो वह दुर्बल वैष्णव ऐंसो कृपापात्र हतो और वे सात वैष्णव श्रीगुसांईजीकी आज्ञातें जन्म पर्यंत वाकी टहेलमें लगे रहते सो वे आठ वैष्णव ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ६९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक तीन तूंबावाले वैष्णव ति० वार्ता ॥

सो वे वैष्णव विरक्त हते सो एक तूंबा खासाको और एक सेवकीको और एक बहारको ऐंसे तीन तूंबा राखते हते और जा गाममें जाते तहां भगवदिच्छासु निर्वाह करते एक गाममें गये जहां मेह बहुत बरस्यो कछु रसोईको उपाय बन्यो नहीं जब तीन दिन सूधी भूखे रहे चौथे दिन बरसात बंद भयो सो वे वैष्णव तलावपें नहायवे गये तब वा गामको ब्राह्मण वैष्णव नहातो हतो सो वा विरक्त वैष्णवकुं वह ब्राह्मणवैष्णव अपने घर ले गयो आछी रीतीसुं वाकी टहेल करी वो ब्राह्मणवैष्णव ऐंसे समझ्यो के मेरे घर साक्षात् भगवान् पधारेहैं और तीन दिन सूधी विनकुं राख्यो महाप्रसाद लेवायो और वा विरक्त वैष्णवके हृदयमें सदा भगवदआवेश रहतो हतो सो वे प्रसन्न भये और भगवद आवेशतें बोले जो कछु मांग जो तुमारो मनोरथ होयगो सब पूरण होयगो तब वह ब्राह्मणवैष्णव

हाथ जोडके बोल्यो जो मेरे तो कछू मनोरथ नहींहै परंतु या गामको राजा बहुत धर्मवालोहै और ब्राह्मणनकी भक्ति वा राजाकुं बहुतहै ब्राह्मणकी रक्षा आछी भांतिसुं करेहें साठवर्षको भयोहे वाकुं पुत्र नहींहै सो होवे तो बहुत आछो ये सुनके वो विरक्तवैष्णव भगवद् आवेशसोंभरे हते और भगवद इच्छासुं बोले जो राजाके चार बेटा होवेंगे और राजा वैष्णव होयगो तब ऐसे कहके वैष्णव गये फिर वह ब्राह्मणवैष्णव राजाके पास गयो और जायके आशीर्वाद दियो तब राजानें वा ब्राह्मणकुं आदर करके बैठायो और बीनती करी आप जैसेनको आवनो बडे भाग्यनतें होवेहै और हम जेंसे गृहस्थ दीनचित्तवालेनकुं आपबिना कौन पावन करे हम आपके दर्शनमात्रसुं पवित्रभयेहें परंतु आपके आयवेको कारण कहो ये वचन राजाके सुनके वह ब्राह्मण वा वैष्णवको वचन स्मरण करके और राजाकी भक्ति देखके बहुत प्रसन्न भयो और कहवे लग्यो राजा मेरे घर एक परम भगवदीय आयो हतो सो वह वैष्णव कहिगयो है जो राजाके चार बेटा होयंगे जब राजानें कही जो ब्राह्मण तुम सुनो मैंनें बेटाके लीयें बहुत उपाय कियेहें सो तुम सुनो या गाममें एक विश्वनाथ ब्राह्मण रहेहै वा ब्राह्मणकुं महादेवजी दर्शन

देवेंहैं और महादेवजी संपूर्ण कृपा वा ब्राह्मण ऊपर राखेहैं जो वा ब्राह्मणनें मोकुं यज्ञ करवेकी कही और जब वा ब्राह्मणके कहेसुं मैनें चार बखत महारुद्र यज्ञ कऱ्यो तोहु मेरे पुत्र न भयो फेर वा विश्वनाथ ब्राह्मणनें श्रीमहादेवजीसों पूंछी जो या राजाके पुत्र क्युं नहीं होवेहैं मैंने चार वार महारुद्र यज्ञ करायो है तोहुं याके पुत्र नहीं भयो तब महादेवजीनें कही मैं श्रीठाकुरजीकूं बीनती करुंगो फेर महादेवजी वैकुंठमें जायके श्रीठाकुरजीसों प्रणाम पूर्वक बीनती करी जब श्रीठाकुरजीनें कही जो या राजाके सात जन्म पर्यंत पुत्र नहीं लिख्यो है तब ये सुनके श्रीमहादेवजीनें वा ब्राह्मणकुं कही जो तुं कछु प्रयत्न मति कर और हठहुं न कर वा राजाके कर्ममें पुत्र नहीं लिख्योहै जब वह ब्राह्मण बैठरह्यो वह ब्राह्मण मोसों ऐसो बोलगयो और तुम कहोहो चारपुत्र होवेंगे ये बात कैसे बनेगी? तब वह वैष्णवब्राह्मण बोल्यो जो यामें कछु खर्च नहीं लगे है और कछु मेरे चहीयेहु नहीं मैं तो तुमकुं यातें कहवे आयोहु जो और लोग कहेंगे हमनें बेटा दियेहैं सो तुम और कोईको कह्यो मानियो मति और मेरे कहेको विश्वास राखो ये कहेके वे वैष्णवब्राह्मण अपनें घर गयो और शुद्धचित्तसुं भगव-

त्सेवा करन लग्यो फेर भगवदिच्छातें वा राजाकी चार स्त्रीनिकुं गर्भ रह्यो और दसमहिना बीते पीछे राजाके चार बेटा भये जब राजानें वा वैष्णव ब्राह्मणकुं बुलायके कही जो तुम कोनसे धर्मप्रमाणें चलोहो और कोनदेवकी उपासना करोहो सो कृपाकरके कहो और जो वैष्णव तुमकुं मेरे पुत्र होएंगे ऐसो आशीर्वाद दियो हतो सो वैष्णव कहांहै और वाकुं और तुमकुं कहा चहीयेहै सो कहो. जब वा ब्राह्मणवैष्णवनें कही जो हमकुं तो कछु नहीं चहिये और वे वैष्णव हमारो गुरुभाईहै और मेरे गुरुनके पासहै और विरक्त दशामेंहैं वाकुं तो कछु अपक्षा नहींहै और इहां बुलायसुं वे आवेंगे नहीं. जब राजानें कही जो मोकुं तुमारे गुरूके दर्शन कराओ जब वा ब्राह्मणवैष्णवनें श्रीगुसांईजीकुं बीनती पत्र लिख्यो फेर श्रीगुसांईजी कृपाकरके श्रीगोकुलतें पधारे और वा राजाकुं दर्शन दिये और वा राजाकुं साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये और वे राजा श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और अपने सर्व परिकर और कुटुंब सबकुं श्रीगुसांईजीके सेवक कराये और श्रीठाकुरजी श्रीमदनमोहनजी पधरायके सेवा करन लग्यो और श्रीगुसांईजी फेर श्रीगोकुल पधारे फेर एकदिन वा विश्वनाथब्राह्मणनें

महादेवजीसों बीनती करी जो तुमनें कही हती जो या राजाके सात जन्म सूधी पुत्र नहीं होयगो सो चार पुत्र कैसे भये ? तब श्रीमहादेवजीनें जायके श्रीठाकुरजीकुं कही जब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी मेरे जो अनन्य भक्त है विनके मैं अधीनहुं और वे चाहेसो करसकें और जिननें मोकुं तनमन प्राण समर्पण कियोहै वीनकुं कोन सो अर्थ बाकी रह जायहै वे चाहेतो मोकुंहुं जन्म लेनो पडे और पुत्र देवें यामें कहा आश्चर्य है ये कछु बडो आश्चर्य नहीं है जासुं ये शंका तुम करो मति वैष्णवनको कियो वृथा नहींहोवेहें वैष्णव त्रिगुणातीतहें और कालके वश नहींहें और कोईके वश नहींहें जासुं तुम शंका छोडके जाओ तब महादेवजीनें वा विश्वनाथब्राह्मणकुं कही जो वैष्णव त्रिलोकीकुं पवित्र करे हें और श्रीठाकुरजी विनके पाछें फिरेहैं जैसे गौ पीछे वत्स फिरेहें ऐंसे वैष्णवनके लीयें श्रीठाकुरजी अनेक प्रकारके अवतार लेवेह वैष्णव जैसे इच्छा आवे ऐंसे करेहें जिनकुं भगवच्चरणारावेंदको दृढ आश्रय है सो कहानाहिं करसकेंगे श्रीभागवतमें कह्यो है॥ श्लोक-

"यत्पादपङ्कजपरागनिषेवतृप्ता योगप्रभावविधुताखिलकर्मबंधाः॥ स्वैरं चरंति मुनयोऽपि न नह्यमानाः"॥

वे वैष्णव स्वतंत्र आचरण करहें विनके ऊपर

कोइको हुकम नहीँहै जीत्यो है काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर जिननें ऐंसे वैष्णव सर्व करण समर्थ हैं ये सुनके विश्वनाथब्राह्मणनें महादेवजीसों कही मोकुं वैष्णव करो तब महादेवजीनें कही जो वा ब्राह्मणवैष्णव जीननें राजाकुं वैष्णव कर्योहै विनके पास तुम जाओ और हमारो नाम देके कहो तो वे तुमकुं वैष्णव करेंगे फेर विश्वनाथ वा ब्राह्मण वैष्णवके घर गयो जायके वा ब्राह्मणवैष्णवकुं सब समाचार कहे तब वा ब्राह्मणवैष्णवनें विश्वनाथ ब्राह्मणकुं आदर करके बैठायो और श्रीठाकुरजीके दर्शन करवाये और महाप्रसाद लेवायो फिर पत्र लिखके विश्वनाथब्राह्मणकुं श्रीगोकुलपठायो फिर विश्वनाथब्राह्मण श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो सो वे विरक्तवैष्णव तीन तूंबावाले ऐंसे भगवदीय हते जिनकी कृपातें वा राजाको सब देश वैष्णव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७० ॥

श्रीगुसांईजीकी सेवक एक ब्राह्मणी-तिनकी वार्ता ॥

वा बाई वैष्णव जा गाममें रहती हती वा गाममें एक महादेवजीको पूजारी रहेतो हतो सो शिवको निर्माल्य खातो हतो शिवनिर्माल्य खायवेको दोष पद्मपुराणमें लिख्यो है पार्वतीजीनें शिवनि-र्माल्य खावेवालानकुं शापदियो है सो वे महादेवको

पूजारीकी देह छूटी सो वाकुं एक वृक्षनीचे अग्निसंस्कार करवे गये सो वाको धूवां आकाशमें गयो एक देवताको विमान जातो हतो ताकुं धूवांको स्पर्श भयो सो वे देवता विमान सहित भूमिपर आयके पऱ्यो तब वाकुं देखके बहोत लोग एकट्टे भये सो वा गाममें बडो सोर भयो तब गामको राजा देखवेको आयो सो वे देवता कहेनलग्यो जिननें अश्वमेध यज्ञ कऱ्यो होय सो वाको फल देवेतो विमान सहित स्वर्गमें जाऊं जब राजानें सब पंडित एकट्टे करे कोईकुं कछु उपाय सूझो नहीं सो वे पंडित राजाके कहेतें उपाय करन लगे कोई पाठ करे कोई हवन करे कोई वेद पाठ करें परंतु विमान तो कोई उपायसूं स्वर्गमें जाय नहीं. जब वे बाई जल भरवे गई हती सो वा ब्राह्मणीनें पूंछ्यो ये काहेकी भीडहै जब सब बात लोगननें कही जब वे ब्राह्मणी गागर धरके जायके कही जो तुम सब दूर होय जाओ मैं विमानकुं स्वर्गमें पठाउंगी जब सब लोग सरक गये वा ब्रह्मणीनें हाथमें जल लैके कही जो मैं जलकी गागर लावुंहुं सो एक पेंडको फल तुमकुं देउंहुं ऐंसे कहेके वा विमानपर जल छांट्यो सो वे देवता जल पडतमात्र वा ब्राह्मणीकी स्तुती करते करते विमान सहित स्वर्गमें गये

ये बात देखके वे राजा और सब गाम वे ब्राह्मणीके पांवन परे और कहने लगे जो हमकुं तीन दिन मेहनत करते भईहें और हमने तीन दिन सूधी अन्न जल लियो नहींहै और बहोत उपाय कीये है परंतु कछु भयो नहींहै और तुमनें सहज विमान स्वर्गमें पठाय दियो वाको कारण कहा ? जब वे बाई बोली ॥ श्लोक--

" विप्राद्द्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभपादारविन्दविमुखात् श्वपचं वरिष्ठम् ॥ मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थप्राणं पुनाति सकुलं न तु भूरिमानः ॥ "

वा ब्राह्मणीनें ये श्लोक कह्यो । याको अर्थ--कोई ब्राह्मणहै और द्वादशगुण सहितहै और पद्मनाभ जो श्रीठाकुरजीके चरण कमलतें बहिर्मुखहै ऐंसे ब्राह्मणसुं भगवानकी भक्तिकरनार जो चांडाल सो श्रेष्ठ है कैंसोहे जो चांडाल जाने मन और वाणी भगवानके अर्पण करीहै और भगवानके विरहसुं आतुर है मन जाको ऐंसो जो चांडाल सो अपनी कुल सहित प्राणनकुं पवित्र करेहें और वे ब्राह्मणहै सो प्राणपवित्र न करे सो कुलकुं कहा करेगो ये बात सुनके वे राजा और पंडित सब वे ब्राह्मणीके घरमें आये और आयके ब्राह्मणकिुं कही जो तुं कछु गाम ले और खर्च ले और हमकुं पवित्र कर तब वा ब्राह्म-

णीनें सुनके कही जो मैं तो निरपेक्षहुं और मोकुं कछू चाहिये नहीं और तुमारे पवित्र होवेको विचार होवेतो श्रीगुसांईजीके शरण जाओ जब वा राजानें वा ब्राह्मणीके नामको बीनती पत्र लिखके श्रीगोकुलपठायो और श्रीगुसांजीकुं वा गाममें पधराये और सब सेवक भये तब वा राजाकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये जब वे राजा श्रीगुसांईजीके आगे वा ब्राह्मणीकी बहोत बडाई करी और भगवत् सेवा माथे पधरायके सेवा करन लग्यो जब वा राजानें बीनती करी जो महाराज भगवत्स्वरूपमें प्रेम और आसक्ती और व्यसन कैंसे होवै? जब श्रीगुसांईजीनें वा राजाकुं श्रीनवतीनप्रियाजीके स्वरूपको ज्ञान करायो और भक्तिवर्धिनी ग्रंथ पढायो। सो वे बाई ब्राह्मणी ऐसी कृपापात्र हती जाके संगतें सब गाम वैष्णव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७१ ॥

श्रीगुसांई०सेवक एक सेठको लडको हतो तिनकी वार्ता ॥

जब श्रीगुसांईजी परदेश पधारे तब वा लडकानें श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें कथा सुनी सो दशमस्कंधके द्वादशअध्यायकी श्रीसुबोधिनीजी सुनी सो–

श्लोक–"कृष्णः कमलपत्राक्षः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥
स्तूयमानोऽनुगैर्गोपैः साग्रजो व्रजमाव्रजत् ॥"

या श्लोककी सुबोधनीमें नित्य श्रीठाकुरजी गौचारण करके व्रजमें पधारतेहैं ये लीला नित्य है ये बात वा लडकानें सुनी और श्रीगुसांईजीसुं बीनती करी जो महाराज ये लीला अबी है के नहीं? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये लीला नित्य है. और अखंड है और सर्वत्र व्यापक है ये बात सुनके वो लरका व्रजमें गयो और स्यामढाकके पास जायके बैठो सांझ पडी गौ आवेकी विरीयां भई जब वाकुं दर्शन न भये तब वाकुं बहोत ताप भयो जो सांझपडी तोहुं ठाकुरजी पधारे नहीं तब वाको विप्रयोग देखके श्रीनाथजीनें दर्शन दिये और सब गोपबालक संग वेणुनाद करते गायनके संग श्रीनाथजी पधारे सो देखके वा लडकाकुं देहदशा भूल गई और नयो देह धरके वा गोपनके लडकानके संग नित्य लीलामें प्रवेश कियो सो वैष्णवको लडका श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं नित्य लीलाके दर्शन देके श्रीनाथजीनें अपनी लीलामें अंगीकार कियो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक आसकरणराजा तिनकी वार्ता ॥

सो वे आसकरणजी नरवरगढमें रहते विनकुं रागसुनवेको व्यसन बहुत हतो सो गान सुनायवेके लीयें देशदेशके कलावत गवैया उहां आवते हते

और सबकुं आदरपूर्वक सन्मान करते हते और रागकी परीक्षा बहुत आछी हती, ये बात तानसेनजीनें सना तब तानसेनजी आसकरनजीके पास आये सो आसकरनजीके पास विष्णुपद गायो॥सो पद--

राग सारंग--कुँवर बैठे प्यारीके संग अंगअंग भरे रंग बलबलबल त्रिभंगी युवतिन सुखदाई॥ ललितगती विलास हास दंपति मन अति उल्हास विकासित कच सुमनवास स्फुटत कुसुमनिकर तैसीहै शरद रेन जुन्हाई॥ १॥ नवनिकुंज मधुपगुंज कोकिल कल कूंजत पुंज सीतल सुगंध मंद वहत पवन अतिसुहाई॥गोविंद प्रभु सरस जोरि नवकिशोर नवकिशोरी निरख मदन फोज मोरी छल छबीले नवल कुंवर व्रज नृपकूल मनिराई॥२॥

ये पद सुनके राजा आसकरन बहुत प्रसन्न भये और तानसेनसु कही जो मैनें बहुत पद सुनेहें परंतु ऐसो विष्णुपद कोईदिन सुन्यो नहीं है सो तुमनें ऐसे पद कहांते सीखेहैं सो हमकुं शिखाओ जब तानसेनजी बोले श्रीगोकुलमें श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजीहें विनके सेवक गोविंदस्वामीहें विननें ऐसे सहस्त्रावधि पद कियेह परंतु श्रीगुसांजीके सेवक विना वे औरकुं शिखावते नाहीहें मैहुं विनके संगतें श्रीगुसांईजीको सेवक भयोहुं जासु मैंहुं कोईकुं शिखावत नाहीं हुं जब राजा आसकरननें कही तुमकुं जो गाम अथवा द्रव्य चहीये सो लेवो परंतु

ऐंसे पद सिखावो तब तानसेनजीनें कही जो मैं तुमारे पास द्रव्यकेलीयें नहीं आयोहुं मैंनें ऐंसी सुनी हे जो राजा आसकरन गुणकी परीक्षाबहुत आछी करेहें सो बात देखवेकी लीयें आयोहुं जेंसी सुनी हती तैसी देखी तो सही और कछु मेरे काम नहीं हे और कछु मोकुं चाहिये नहींहे ये बात सुनके राजा आसकरननें कही मैंहुंश्रीगुसांईजीको सेवक होउंगो और गोविंदस्वामीकुं मिलुंगो तुम दश पंदरे दिन इहां रहो और कृपाकरके मोकुं संग लेचलो जब तानसेनजी उहां रहे और थोडे दिन पीछे राजा आसकरनजीकूं संग लेके श्रीगोकुल गये जब श्रीगुसांईजी ठुकरानी घाटपर संध्या करते हते सो राजा आसकरनजीकुं साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम कोटि कंदर्पलावण्य ऐंसे स्वरूपके दर्शन भये जब श्रीगुसांईजीकुं साष्टांग दंडवत करके ठाडे रहे जब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी आसकरनजी बोहोत दिन भये काहां सूधी श्रीठाकुरजी तुमारी बाट देखेंगे तब आसकरननें कहि श्रीठाकुरजी आप भटकवेको पार लावेंगे तो कछु ढील नहिं लगेगी तब श्रीगुसांईजीनें कही न्हायके मंदिरमें आवो जब आसकरनजी न्हाय आये तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके आसकरनजीकुं नाम निवेदन

करवायो वाई समय गोविंदस्वामी श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्निधान कीर्तन करते हते श्रावण मास हतो ॥ सो पद--राग मलहार--

आई जु स्याम जलदघटा ओलहर चहुं दिशतें घनघोर ॥
दंपति परस्पर बाहीं जोटी विरहत कुसुमवीनत कालिंदीतटा॥
बडी बडी बूंदन बरषन लाग्यो तेसी लहेकत बीज छटा ॥
गोविंदप्रभुपीयप्यारीउठचलेओढेलालपटदोराडियेजायवंशीबटा।

ये पद गोविंदस्वामी श्रीनवनीतप्रियाजीके संनिधान गावते हते सो राजा आसकरननें सुन्यो और तानसेनसों कही जो ये बहुत सुंदर गान करेहें यामें मेरो मन बहोत लगगयो है येही गोविंदस्वामी होयंगे और तब तानसेननें कही ये गोविंदस्वामीहें जब राजा आसकरनजी नित्य गोविंदस्वामीके पास जाते रमणरेतीमेंहु संग फिर्‍यो करते ॥ प्रसंग॥ १॥

फेर राजा आसकरननें श्रीगुसांईजीसुं बीनती करी जो महाराज अब मेरे कहा करनो जब श्रीगुसांईजीनें ये आज्ञा करी भगवत्सेवा करौ ऐसे कहेके श्रीमदनमोहनजीको स्वरूप पधराय दियो जब राजा आसकरननें बीनती करी जो मैं भगवत्सेवाकी विधी समझत नहींहुं आप कृपा करके मोकुं समझावें जब श्रीगुसांईजीनें सेवाकी रीती कही सवारे उठके माला और यज्ञोपवीत संभारनो माला-

दास्य धर्महै जनेउ वैदिकधर्महै जनेउको अधिकार न होवै तो मालामात्र संभारनो और श्रीमहाप्रभुजीको और श्रीठाकुरजीको ध्यान करके नाम लेके दंडवत करके बाहेर आवनो फेर देह कृत्य-करके चरणामृत लैके सूर्योदय पहेलें दातुन करनो तेल लगाय मुखशुध्यर्थं बीडो खानो जादिन ब्रत होवै तादिन न खानो स्नानकर श्रीयमुनाजीकी रज लै भगवत्पादाकृति तिलक करिये दश प्रकारके तिलक सकामहै भगवानके चरणकमलतें मनुष्यकुं अंतरायपाडेहें सो दश प्रकारके तिलक न करनें ॥

" वर्तुलं तिर्यगच्छिद्रं ह्रस्वं दीर्घतरं तनुम् ॥
वक्रं विरूपं बद्धाग्रं भिन्नमूलं पदच्युतम् ॥

अर्थ–वर्तुलं–गोलतिलक १। तिर्यक्–वांको २। अच्छिद्रं–वीच्या विनाको ३। ह्रस्वं–बहोत छोटो ४। दीर्घतरं–बहोत-नाशीका सुधीलांबो ५। तनुं–बहोतपातलो६। वक्रं–आडो ७। विरूपं–नीचेसुं सांकडोने उपरसुं पहोलो ८। बद्धाग्रं–उपरसुं बांध्यो ९। भिन्नमूलं–नीचेसुं दोय लकीर जुदी जुदी ॥ "

ये जो दशप्रकारके तिलक हैं सो भगवानके चरणारविंदसुं दूर करेंहें सो ये दश तिलक छोडके ऊर्ध्वपुंड्र तिलक करनो, पाछे पंचमहाभूत जो या देहमें है तिनकी भीतर शुद्धि और बाह्यशुद्धि करनी तब राजा आसकरनें पूंछ्यो. हे प्रभो! पंचम-

हाभूतकी शुद्धीके प्रकार आप कहें तब श्रीगुसां-ईजी हँसके प्रसन्न होयके कहने लगे जो छे मुद्रा करियेतो पंचमहाभूतकी बाह्य शुद्धि होवै, सो सुनो पद्म धारणतें पृथ्वीकी शुद्धी और शंखधारणतें जलकी शुद्धी और चक्र धारणतें अग्नीकी शुद्धी और गदाधारणतें वायूकी शुद्धी और नाम मुद्रा-धारणतें आकाशकी शुद्धी, और संप्रदाय मुद्रा-धारणतें भक्तीकी प्राप्ती होतहै अब पंचमहाभूतकी अभ्यंतर शुद्धी सुनो रजचरणामृततें पार्थिवांशकी शुद्धी, और जलचरणामृततें जलांशकी शुद्धी, और प्रसादी तुलसीतें अग्न्यंश शुद्धी, और भग-वदीयके संगतें वायवीयांश शुद्धी, और गुरुदर्शन तथा भगवद्दर्शनतें आकाशकी शुद्धी, या प्रकार पंचमहाभूतकी शुद्धी बाहेर और भीतर करके भगवत्सेवा करनी तब भगवतमंदिरके पास जायके दंडवत करके ये श्लोक बोलनो ॥ श्लोक–

नमो नमस्तेऽस्त्वृषभाय सात्वतां विदूरकाष्ठाय मुहुः कुयोगिनाम् । निरस्तसाम्यातिशयेन राधसा स्वधामनि ब्रह्मणि रंस्यते नमः ॥

ये श्लोक पढके मंदिरमें जानो तब तिष्टि झारी बंटा बीडी उठायके प्रसादी पात्रमें ठलायके मांजके ठिकाणे धरके मंदिर मार्जन करनो और मृत्तिकाकी

पृथ्वी होवै तो लींपनो और गच्ची वा पाषाणकी धरती होवै तो भीनो वस्त्र फेरके सूको फेरनो सिंहासन उठायके झटकके नित्य प्रमाणें बिछावनो फेर झारी भरके सिंहासन पासे तबकडीमें धरमी और मंगल भोगकी सामग्री सिंहासनपासे ढाँक धरनी पीछे तीनबेर घंटा बजायके तब श्रीठाकुरजीकुं जगावनें और जगायवेकी वियाँ जगावेके पद अथवा यथाधिकार पाठ करके जगायके सिंहासन पर पधारयके ऋतु अनुसार उढायके टेरा देनो फेर शय्या उठायके झटकके मंदिर वस्त्र करके फेर शय्या बिछाइये और शय्याके कसना डोलतें लेके प्रबोधिनी पर्यंत बांधनें शीतकालमें नहीं बांधिये फेर आचमनकी झारी भरके मंगल भोग सराइये तिष्टीमें आचमन कराय मुखवस्त्र करके बिडा अरुगवायके मंगलआर्ती उतारिये पाछे एक परातमें पीढा बिछायके वाके ऊपर वस्त्र बिछाईये और हाथकु सुहातो जल लैके श्रीठाकुरजीकुं स्नान कराईये और अंगवस्त्र कराईये और श्याम स्वरूप होवै तो न्हवाय पीछें फुलेल लगाईये फेर अंगवस्त्र करिये और गौर स्वरूप होवै तो स्नान पीछे फुलेल न लगाईये और अतर लगाईये पाछे शृंगार कराईये वस्त्र तथा आभूषण मेण शलाका कतरनी ये सब वस्तु पासे लै बैठीये शीत-

काल होवै तो स्नानते पहले अंगीठी धरिये श्रीठाकुरजी बालकहें याते सूकोमेवा माखन मिश्री धरके शृंगार कराईये ऋतु प्रमाणें वस्त्र पहराईये यथारुचि शृंगार कराईये उत्सवके दिन उत्सवके शृंगार कराईये पाछे राजभोग धरिये परंतु श्रीठाकुरजीकुं ऐसो समय देखके जगाईये जो मंगला पीछे शृंगार और शृंगार पीछें राजभोग धरवेकूं ढील न लगे श्रीप्रभूनकुं श्रम न होवै फेर राजा आसकरनजीनें पूंछी जो आपके इहांतो गोपीवल्लभभोग आवेहें और ग्वाल बोलेहें ग्वालके समय घैयामथके अरोगे हें सो तो आपनें कही नहीं याको कारण कहा तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके कह्यो जो गोपवल्लभ और ग्वाल और संध्याभोग और संध्या आरती और सांझके समयको ग्वाल वैष्णवनके घरमें नहीं होवै ये अधिकार हमारे कुलको है औरकुं नहींहें जब राजा आसकरननें बीनती करी हे महाराज कृपानाथ आपनें मोकुं श्रीमदनमोहनजी पधरायदीये परंतु श्रीमदनमोहनजीके स्वरूपमें कौनसी लीला प्रकट है सो कृपा करके कहें तब श्रीगुसांईजीनें ये सुनके कही जो श्रीमदनमोहनजीके स्वरूपमें फल प्रकर्णके प्रथम अध्यायकी लीला प्रगटहै और प्रकर्णकी लीला गुप्त है जब श्रीमदनमोहनजीनें वेणुनाद

कर्‍यो सो व्रज भक्तनकुं आकर्षण कीये फेर व्रज-भक्त वेणुनाद सुनके जा कारजमें लगे हते सो कारज छोडके व्रजभक्त तुरत गमन कीये जब श्रीठाकुर-जीके पास गये तब श्रीठाकुरजी बोले ॥ सो श्लोक--

"स्वागतं वो महाभागाः प्रियं किंकरवाणि वः ॥
व्रजस्यानामयं कच्चिद् ब्रूतागमनकारणम् ॥ १ ॥
रजन्येषा घोररूपा घोरसत्त्वनिषेविता ॥
प्रतियात व्रजं नेह स्थेयं स्त्रीभिः सुमध्यमाः ॥ २ ॥"

ये गमन वाक्य कहे सो सुनके व्रजभक्तनकुं चिंता भई जासुं वाक्य ग्रहण न कीये, फेर सो चिंता आतुर होयके विनके नेत्रनमेंतें जल चलवे लग्यो फेर ब्रजभक्त श्रीठाकुरजीके वाक्य बिचारे सो वाक्यनमेंसु सुमध्यमा ऐसो पद निकस्यो और ये रात घोर रूप नहींहै ऐसे बचनको विचार कीये जब ब्रजभक्त अपने मनमें ऐसे समझे येतो व्यंग वाक्यहें फेर संपूर्ण श्रीअंगके दर्शन भये सो प्रभु-नको स्वरूप गौर देख्यो जब ऐसो विचारे जो हमारो भाव देखके प्रभु मोहित भयेहें सो तन्म-यता निश्चय भई जो प्रभुनको चित्त हमारेमेंहे नहीं होवै तो गौर कैसे होवें फेर चरणारविंदको दर्शन भयो सो चरणाबिंद साधन भाक्ति रूपहै और पादु-काहे सो अंतराल हैं जैसे वाक्य व्यंगहें जो वाक्य

श्रीअंग सुखद होवैतो व्रजभक्त ग्रहण करें नहीं तो न करें फेर देखें तो दक्षिणचरणारबिंदको अंगुलीको स्पर्शमात्र पादुकाजीको देख्यो जब दास्यभक्तीकी स्फूर्ती भई फेर फलरूप भक्ती जो श्रीमुख तिनके दर्शन भये सो फलरूप भक्तीके आगें चार प्रकारकी मुक्ती तुच्छहै ऐंसे दर्शन भये स्वरूपमुक्तीकुं प्राप्त भ-ई जो अलक सो फलरूप भक्ती जो मुखारबिंद ताको आश्रय करेंहें याते स्वरूपमुक्ती करके कहा सो स्वरूपमुक्ती भक्तीके आगें तुच्छहै फेर सांख्ययो-गरूपी जो कुंडल विनके दर्शन भये सो सामीप्य मुक्तीकुं प्राप्तहें अतिनिकटहैं परतु फलरूपभक्ती जो श्रीमुख ताको आश्रय कियो हें यातें सामीप्यमुक्ति करके कहा सालोक्यमुक्तीमें अक्षरानंदको अनुभव है सो गंडस्थलयुक्त जो अधरामृतके आगें अन्य रस तुच्छहें सो अक्षरानंदरस तुच्छ हैं सालोक्य मुक्तिकरके कहा और सायुज्यमुक्तिमें ब्रह्मानंदको अनुभव है, वाक्य--'जले निमग्नं जलपानवत्' जेंसे ज-लमें डूबके जल पीवनो ऐंसो ब्रह्मानंदको अनुभव है सो हास्य सहित जो अवलोकन वामें जो भक्तिरस है वा भक्तीके आगें ब्रह्मानंदरसको अनुभव कहा कामको ऐंसे भक्तिरसके आगे चतुर्विध जो मुक्ति व्रजभक्तनकुं तुच्छ लगेहै ये निश्चय भयो श्लोक–

" वीक्ष्यालकावृतमुखं तव कुंडलश्रीगंडस्थलाधरसुधं हसितावलोकम् ॥ दत्ताभयं च भुजदण्डयुगं विलोक्य वक्षः श्रियैकरमणं च भवाम दास्यः ॥"

ऐसो दास्य रसतें प्राप्त भये जो व्रजभक्तनके भाव तिनकुं देखके आप बहुत प्रसन्न भये । यद्यपि आत्माराम हते तोहुं विनको प्रेम देखके आपने रमण कियो। वाक्य-- "आत्मारामोऽप्यरीरमत्" ऐसो व्रजभक्तनके भावतें श्यामस्वरूप हते सो गौरभये या रीतीको श्रीमदनमोहनजीको स्वरूप राजा आसकरननें श्रीगुसांईजीके मुखतें सुनके श्रीमदनमोहनजीकुं पधरायके और तानसेनजीकुं संग लैके राजा आसकरन अपने देशमें आये व्रजभक्तनके भावसों सेवा करन लगे राजकाज सब दिवानकुं सोंपदीये और श्रीमदनमोहनजीकी सेवा तथा कीर्तन करनलगे और जब अनवसर होवै तब राजा मानसी सेवा करे ऐसे करते करते बहोत दिन बीते॥ प्र० २॥

फेर एकदिन राजा आसकरनके ऊपर दक्षिणको राजा चढि आयो जब राजा आसकरनकुं खबर भई तब राजा आसकरन लडाई करवेकुं चले जब शत्रुका सेनाके पास आये तब वरसाद भयो सो राजा आसकरनकी सेनापर तो जलको वरसाद और शत्रुनकी सेनापर पत्थरकी सिलानपर बर-

सात भयो शत्रुनकी सेना मारीगई जब राजा आशकरन जीतके पाछें फिरे घोडापर असवार भये और मानसीसेवा करनलगे फेर सब सेवा करी रसोई सिद्धकरी और भोग समर्प्यो सो कढीकी हांडी भोग धरवेकुं जाते हते इतनेमें घोडा कूद्यो जब राजा आसकरनको ध्यान सेवामेंसुं बहार निकस्यो और ऐसें मालूम पड्यो जो कढीकी हांडी मेरे हाथतें पडगई और कढी ढुलाय गई सो बाहार देखेतो सब वस्त्र कढीसुं भरगये जब दिवाननें पूंछ्यो जो ये कहा जब आसकरनजीनें कही जो मोकुं कढी बहोत भावेहें यासुं हांडी भरके में कमरसों बांध राखी हती सो फूटगईहै ऐसें कहके सो बात गुप्तराखी फेर राजा आसकरननें मनमें ये विचार कियो जो तनुजा सेवा और वित्तजा सेवा मानसी सेवा सिद्ध होवेके लीयें करनी कहीहै अब मानसी सेवा श्रीगुसांईजीकी कृपातें सिद्ध भईहै जब राज और घर कहाकामको है ये विचारके भतीजेको राज्य देदियो और श्रीठाकुरजी वस्त्रआभूषण सब तथा पात्र श्रीगुसांईजीके इहां पठाय दिये और आप श्रीगोकुलमें जायके रहे सब लीलाके दर्शन साक्षात् होवै लगे जैसे लीलाके दर्शन होवै तैसे पद करके गावन लगे ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

एकदिन राजा आसकरन न्हायवे जाते हते सो श्रीठाकुरजीनें मुरली बजाई सो राजा आसकरनजी सुनके श्रीठाकुरजीकी आडी दौड गये उहां श्रीठाकुरजी ठाडेहै और अलौकिक सब लीलाहै और सब ब्रजभक्त आवेंहें और होरीको खेल होवेंहें ऐंसे दर्शन राजा आसकरनजीकुं भये तब राजा आसकरनजी देहदशा भूल गये और दर्शन करके धमार गायवे लगे ॥

सो धमार—या गोकुलके चौहटे रंगराची ग्वाल ॥

मोहन खेले फाग नैनलेनेरी रंगराची ग्वाल ॥

ये धमारमें जैसे दर्शन करतगये तैंसे गाते गये ऐंसे तीनदिनसूधी गायोकरे और कछु सुध न रही जब श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनसुं कही राजा आसकरनजी तीनदिनसुं नहीं दीखेहेंसो कहांहै जब लोगननें कही जो तीनदिनसों रमणरेतीमें ठाढेहैं जब श्रीगुसांईजीनें मनुष्य पठायके बुलाय लीये जब श्रीगुसांईजीके मनुष्य विनकुं ले आये देखेतो उन्मत्त जैसे होय गये हैं तब श्रीगुसांईजीनें कही अब इनकुं लौकिक सुधि नाहींहें भगवल्लीला साक्षात्कार होयगई हैं ये ब्रजमें जहां इनकी इच्छा होवै तहां ये फिरेंगे इनकुं कछु कहो मती ॥ प्रसंग ॥४॥

एकदिन राजा आसकरन सेनभोग आयहते

जब जगमोहनमें बैठे हते सो व्रजभक्त दूधको कटोरा हाथमें लेके यशोदाजीकुं कहेहै जो ये दूध बहुत उत्तमहै कपूर मिसरी मील्यो है तुम ठाकुर जीकुं अरुगावो जब जशोदाजी दूधको कटोरा लैके श्रीठाकुरजीकुं आरोगावै पधारे जब श्रीठाकुरजी सखामंडलीमें विराजते हते जब जशोदाजी कहेवेलगे जो लाल तनक दूध पीवो तब ये सब दर्शन आसकरनजीकुं साक्षात् भये जब आसकरनजीनें यह पद गायो--

राग केदारौ—कीजे पान ललारेओटचोदूधलाई जशोदामैया ॥
कनककटोराभरपीजे व्रजबालललाडलेतेरीवेनी बढेगी भैया॥ १
ओटचो नीको मधुरो अछूतो रुचिसो करीलीजे कन्हैया ॥
आसकरनप्रभुमोहननागरपयपीजेसुखदीजेप्रातकरोगी घैया॥

जब श्रीयशोदाजी तथा रोहिणीजी श्रीठाकुरजी तथा श्रीबलदेवजीकुं सेनभोगधऱ्यो और सब सखा सहित जेमन लगे तब ये दर्शनआसकरनजीकुंभये जब आसकरनजीनें ये पद गायो--

रागकान्हरो--वियारु करत है घनश्याम ॥
खुरमा खाजा गुंजा मठरी पिस्ता दाख बदाम ॥ १ ॥
दूध भात घृत सांनि थारभरि ले आई व्रजवाम ॥
आसकरन प्रभुमोहन नागर अंगअंग अभिराम ॥ २ ॥
रागकेदारौ--मोहन लाल वियारू कीजे ॥
व्यंजन मीठे खाटे खारे रुचिसों भाग जननीपैंलीजे ॥ १ ॥

मधु मेवा पकवान मिठाई ता ऊपर तातो पय पीजे ॥
सखासहितमिलीजेमोरुचिसों जूठिनआसकरनकोदीजे॥२॥

ये सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये फेर श्रीगुसांईजीनें ये विचार कियो जो प्रभू कैंसे दयालहैं आसकरनके ऊपर कैंसी कृपा करीहै जो लौकिकके राजानकुं राजाके अंतमें नर्क मिलेहै और आसकरनकुं राजके अंतमें भगवत् लीलाके दर्शनभयेहें औरलीलाकी प्राप्तीहुं होयगी ऐंसे श्रीप्रभुनकी कृपा बिचारके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये पाछे सेनसमयमें दर्शन राजा आसकरननें करे ता पाछें राजाआसकरननें श्रीठाकुरजीके नेत्रनमें नींद झमक रही है ऐंसो देख्यो और एक सखी हाथ जोडके श्रीठाकुरजीके आगें ठाडीहोयके बीनती करे हें जो आपकुं नींद आय रहीहै सो पोढो ये दर्शन लीलासहित राजा आसकरनकुं भये । जब राजा आसकरननें ये पद गायो--

रागकेदारो--पोढीये पिय कुंवर कन्हाई ॥
युक्तिनवल विविध कुसुमावलिमे अपनें करसेज बनाई॥१॥
नाहिन सखी समय काहूको ग्वालमंडली सब वेराई ॥
आसकरन प्रभु मोहन नागर राधाकों ललिताले आई ॥२॥
रागकेदारो--तुम पोढो हौं सेज बनाउं ॥
चापूं चरनरहुं पांयनतर मधुरें स्वरके दारो गाउं॥ १ ॥

सहेचरि चतुर सबे जुरि आई दंपति सुखनयनन दरसाउं ॥
आसकरन प्रभु मोहन नागरयहसुखश्यामसदाहौं पाउं ॥२॥
राग केदारो–पोढरहो घनश्याम बलैया लेहूं ॥
श्रमितभये हो आज गा चारत घोष परतहै घाम ॥ १ ॥
सीरी बियार झरोखनके मग आवत अति सीतलसुखधाम ॥
आसकरन प्रभुमोहन नागर अंग अंग अभिराम ॥ २ ॥

या रीतीसुं राजा आसकरनजीकुं जैसी जैसी लीलाके दर्शन होते सोईसोई पद गावते और श्रीगुसांईजी इनके उपर सदैव प्रसन्न रहते और गोविंदस्वामीके सतसंगतें नित्य श्रीनाथजी आसकरनजीसों बातें करते और खेलते ॥ प्रसंग ॥९॥

सो एकदिन राजा आसकरन श्रीजी द्वार आये। और श्रीनाथजीके दर्शन करे ऐसी लीलाके दर्शन भये सब व्रजभक्त यशोदाजीके घर मिलके उरांहनो देवे आये हैं और श्रीठाकुरजीकुं यशोदाजीके पास ठाढे देखके उराहनोदेवे भूलगयेहैं और श्रीठाकुरजीके स्वरूपमें विनको मन मोहित भयो है ऐसी लीलाके दर्शन आसकरनजीकुं भये जब आसकरनजी चकित होयरहे जब चतुर्भुजदासजी दर्शन करते हते। विननें ये पद गायो–

राग आसावरी–भूली री उराहनेको देवो॥
परगये दृष्टि श्यामघनसुंदर चकित भई चितेवो ॥ १ ॥

चित्रलिखीसी ठाडी ग्वालिन को समजे समझेवो ॥
चतुर्भुजप्रभुगीरिधरमुखनिरखत कठिन भयो घर जेवो॥२॥

ऐंसो पद आसकरनजी सुनके बहुत प्रसन्न भये और विचार कऱ्यो जेंसे अनुभव मोकुं भयो है ऐंसी कृपा चतुर्भुज दासके ऊपरहूं है ऐसो विचारके श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो महाराज आपकी कृपा चतुर्भुजदासके ऊपर बहुत है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो कुंमनदासजीके बेटा हैं जिनकुं श्रीगोवर्धननाथजी बिना क्षणभर रह्यो न जाय ऐसेनको बेटा ऐंसे होवे यामें कहा आश्चर्य है। फेर एकदिन आसकरनजी सांझके समय गोविंदकुंडके पास ठाडे हते देखे तो व्रजभक्तनके यूथ चले आवें हें और आयके सब गोपीजन ठाडी भई इतनेमें श्रीनाथजी गाय चरायके घरमें पधारतेहैं गायनके संग गोरजसुं व्यापत है मुखारविंद जिनको ऐंसे प्रभुके दरशनकुं रस्तामें गोपीजन आवेंहें ऐंसे दर्शन आसकरनजीकुं भये। जब आसकरनजीनें ये पद गायो–

राग गौरी–मोहन देखि सिराने नैना ॥
रजनीमुख आवत गायन संग मधुर बजावत वैना ॥ १ ॥
ग्वालमंडली मध्य बिराजत सुंदरताको ऐना ॥
आसकरन प्रभु मोहननागर वारों कोटिकमैना ॥ २ ॥

आसकरनजीनें ऐंसे पद बहोत गाये फेर आसकरनजी रातकुं श्रीगुसांईजीके पास कथा सुनवेको नित्य जाते जैंसे वचनामृत सुनते तैंसो अनुभव होतो हतो। फेर एकदिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकुं जगायवेकुं पधारे वाहीसमय अपने अपने घरतें सब ब्रजभक्त सद्य माखण और मलाई और दूध और अनेक प्रकारकी सामग्री लैके सब पधारेहैं और गोपीजन यशोदाजीकुं कहेंहें हे यशोदाजी लालजीकुं जगाओ हम तुमारे लालजीके दर्शनकरके और सामग्री अरोगायके जो दही बेचवे जायेंहें तो हमकुं दशगुणो लाभ होवेंहें यातें हम तुमारे घर आईहें सो लालजीकुं जगाओ तो इनको मुख देखके जावें तब ऐंसे दर्शन आसनकरजी भये जब आसकरनजीनें पद गायो--सो पद--

राग बिभास-प्रातसमयघरघरतेंदेखनकोआईगोकुलकीनारी
अपनो कृष्णजगाय यशोदा आनंद मगंलकारी ॥ १ ॥
सबगोकुलके प्राणजीवन धन या सुतकी बलिहारी ॥
आसकरनप्रभु मोहन नागर गिरिगोवर्धन धारी ॥ २ ॥

राग बिभास-उठो मेरे लाललाडिले रजनी वीती
तिमिर गयो भयो भोर ॥
घरघरदधिमथनियाघूमे अरुद्विजकरत वेदकी घोर ॥ १ ॥
करिकलेउ दधिओदन मिश्री वांटिपरोसों ओर ॥
आसकरणप्रभु मोहन नागरवारों तुम परप्राण अंकोर ॥२॥

फेर आसकरनजीकुं बाललीलाके दर्शन भये यशोदाजी दही विलोवेहैं और श्रीठाकुरजी बालक-चेष्टा करेहैं और दोड दोडके दही मथन करतें रैकुं पकडेहैं यशोदाजीकूं देवे नहींहैं और यशोदाजी श्रीठाकुरजीकुं समझावेहैं जो लला बहुत अवार भईहै मोकुं दधि मथन करन दे ऐसे दर्शन राजा आसकरनजीकुं भये हैं जब आसकरनजीनें ये पद गायो ॥ सो पद--

राग रामकली–मोहे दधि मथन दे बलिगई ॥
जाउ बल बल वदन ऊपर छांड मथनी रई ॥ १ ॥
लाल देउंगी नवनीतलौंदा आर तुम कितठई ॥
सुताहित जान विलोक यशोमाति प्रेमपुलकित भई ॥ २ ॥
ले उछंग लगाय उरसो प्राणजीवनजई ॥
बालकेलि गुपालजूकी आसकरण नित नई ॥ ३ ॥

ये पद सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और ये विचारे जो आसकरनकुं प्रभुनको स्वरूप लीला-सहित हृदयारूढ भयोहै सो सब लीला सहित प्रभु इनकुं दर्शन देंतेहें ऐंसे विचारके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये ॥ प्रसंग ॥ ६ ॥

फेर एकदिन आसकरनजी श्रीगोकुलमें आये श्रीनवनीत प्रियाजीके दर्शन करवेकुं गये तब आस-करनजीकुं ये लीलाके दर्शन भये श्रीयजोदाजी

श्रीठाकुरजीकुं पालने झुलावेहें और गोपीजन मिलके यशोदाजीके पास आईहें और गोपीजन कहेहें जो हमारो ऐंसो नेम है ज्यांसूधी तेरे लालकुं हम खेलावें नहीं आर हम पालना झुलावें नहीं तहां सूधी हमारो चित्त घरके काममें नहीं लगेहै और जो कदाचित् घरको काम करें ता सब काम बिगडे हैं जासुं हम सगरी सूती उठके तुमारे लालकुं खिलावन आईहें ऐंसे सब गोपीजन कहेहें और यशोदाजी हसेहें ऐंसी लीलाके दर्शन आसकरणजीकुं भये जब आसकरणजीनें य पद गायो॥राग रामकली--

यह नित्यनेम यशोदाजू मेरें तिहारोई लाललडावनकुं॥
प्रातसमय उठ पलना झुलाउं शकट भंजन यश गावनकुं॥१
नाचत कृष्ण नचावत गोपी करकटताल बजावनकुं॥
आसकरण प्रभुमोहन नागर निरख वदन सचुपावनकु॥२॥

सो ऐंसे अनेक प्रकारकी लीलाको अनुभव होतो हता सो राजा आसकरण व्रजमें फिरते हते और ज्यास्थलमें जाते वाई स्थलमें श्रीठाकुरजी वेसी लीलाके दर्शन देते हते एकदिन राजा आस करन दानघाटीपर जाते हते उहां देखेतो श्रीनाथजी कामली ओढके हाथमें लकुटी लेके सखामंडली संग लेके ठाढेहें और व्रजभक्त दहीं बेचवेकुं जातहें और सब सखा देखके गोपिनकुं पकडतहें और

कहेहें हमारो दहिंको दान लगेहै सो देजाओ गोपीजन कहेहें जो दहींको दान हमनें सुन्यो नहींहै और तुम कबके दानी भये जब आसकरणजीनें पद गायो सो--

राग बिभास--नंदकिशोर यह बोहनी करन न पाई ॥
गोरसके मिषरसहि ढंढोरतमोहन मीठी तानन गाई ॥ १ ॥
गोरस मेरे घरहि बिकेहें क्यौं वृंदावन जाय ॥
आसकरण प्रभुमोहन नागर यशोमति जायसुनाय ॥ २ ॥
राग बिभास--कबतें भयोहें दधिदानी ॥
मटुकी फोरत हरवा तोरत यह बातमें जानी ॥ १ ॥
नंदरायकी कान करतहुं और जसोदारानी ॥
आसकरणप्रभु मोहन नागर गुणसागर अभिमानी ॥ २ ॥

सो ऐसी लीलाके दर्शन राजा आसकरणजीकुं दानघाटीपर भये फेर एकदिन राजा आसकरण परासोलीमें गये उहां श्रीठाकुरजी वेणुनाद करेंहें और व्रजभक्त पधारतहें अतिउत्कंठासहित श्रीठाकुरजीके पास गमन करतहें ऐंसे दर्शन आसकरणजीकुं भये तब ये पद गायो–

राग केदारो–गोपमंडलीमध्यमनोहरअतिराजतनंदकेनंदा ॥
शोभित अधिकशरदकीरजनी उडुगणमानोपूरणचंदा ॥
व्रजयुवती निरखमुख ठाडी मानत सुंदर आनंदकंदा ॥
आसकरणप्रभुमोहननागरागिरिधरनवरसरासिकगोविंदा॥२॥

यारीतीसों राजाआसकरनकुं अनेक लीलाके

दर्शन भये श्रीगुसांईजींकी कृपातें सो राजा आसकरण ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ ७ ॥

और राजा आसकरण ब्रजमें फिऱ्यो करते हते कोईदिन श्रीगोकुलमें कोईदिन श्रीजी द्वारमें कोई दिन ब्रजके और स्थलनमें फिरते खान पानको कछु उपाय न राखते विनकी ऐंसी दशा देखके श्रीगुसांईजीनें सब वैष्णवनकुं और मुखिया भीतरियानकुं और बहू बेटीनकुं कहि राख्यो हतो जो राजा आसकरण जब आवैं इनकुं खावेको जो हाजर होवै सो धरदेनो कारण जो दोदो चारचार दश दश दिनमें जो यह भगवदिच्छासुं जो मिलेहै सो लेलेवेहें ऐंसे श्रीगुसांईजीनें कहेराखिसो एकदिन श्रीगोकुलमें आसकरणजी आये तब श्रीगोपिनाथजीके बेटीजी लक्ष्मी बेटीजी सत्यभामा बेटीजी बालपणेसों विधवा हते और श्रीनवनीतप्रियाजीकी रसोईकी सेवा करते हते और नवनीतप्रियाजीके राजभोग साजवेके समय आसकरणजीकुं आये देखके बेटीजीनें विचार कऱ्यो वैष्णव भूखो जायगो तो फेर पांच सात दिनमें आवेगो और श्रीनाथजी याके हृदयमें विराजेहें आपकोश्रम होवेगो योविचारके लक्ष्मी बेटीजीनें सत्यभामा बेटीजीसुं कहि तुम श्रीनवनीतप्रियाजीके लीयें दूसरी सामग्री तैयार

करो और ये मैं आसकरणजीकुं धरदेऊं इनके हृद-
यमें श्रीनवनीतप्रियाजी अरोगेंगे ऐसे विचारके वो
थार आसकरणजीके आगें धरदियो तब आसक-
रणजी सबलेगये फेर और सामग्री सिद्ध करके तब
श्रीनवनीतप्रियाजीकुं राजभोगधरें पाछे भोग सराये
तब श्रीगुसांईजी आरती उतारवेकूं पधारे तब श्रीन-
वनीतप्रियाजीको मुखारविंद बहुत प्रसन्न देखके
श्रीगुसांईजीनें पूछी आज कहाहै तब श्रीनवनीतप्रि-
याजीनें कहि आज हम दुगुणो राजभोग अरोगेहें
तब श्रीगुसांईजीनें कहि सामग्रीतो अधिक भई नहिं
हें तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कहि या बातकुं बेटीजी
जानेहें फेर श्रीगुसांईजीनें भोजन करवेके समय बेटी
जीकुं पूंछि तब लक्ष्मी बेटीजी मनमें डरपके और
हाथ जोडके सब बात कहा ये बात सुनके श्रीगु-
सांईजी बहुत प्रसन्न भये और आज्ञा करी जो वैष्ण-
वको स्वरूप ऐंसोहिहै जान्यो जायतो परंतु जहां
सूधी आप न जणावें तहांसूधी जीवको कोई उपाय
नहिं है ऐंसे कहके आप चुप कररहे सो वे आस
करणजी ऐसे कृपापात्र हते जो विनके हृदयमें विरा-
जके श्रीनवनीतप्रियाजी अरोगें सो ये बात श्रीगु-
सांईजीनें गोपालदासजीके हृदयमें प्रवेश करके
वल्लभाख्यानमें गाईहै सो तुक—

लक्ष्मी सत्यभामा बेउ अग्रजनी अनुहार रेरसना। श्रीनवनीतप्रियजेनें रीझव्या सेव्या विविधि प्रकाररेरसना॥१॥

या आख्यानमें सातबालक और सात बहूजी और छे बेटी जीनको वर्णनहै परंतु श्रीनवनीतप्रियाजीकूं रिझाए ऐंसो शब्द लक्ष्मी बेटीजी और सत्यभामा बेटीजी विना औरमें नहिं कह्योहै सोवे आसकरणजी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७३ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दोउ भाई साचोरा तिनकी वार्ता ॥

सो वे दोउ भाई साचोरा गुजरातमें रहते हते एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब दोउ भाईनकुं नाम निवेदन कराए तब वे दोनों भाई श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे आर दिवसरात्र भगवद्वार्ता करते और श्रीसुबोधिनीजी बांचते और कछु धंदा नहीं करते भगवदिच्छासुं निर्वाह करते एक दिन वैष्णवनको साथ श्रीगोकुल जातो हतो तब वा गाममें वा साचोरानके घरमें जायके उतरे विनके घर कछु हतो नहीं जब विन दोनों भाईननें विचार कर्‍यो जो ये वैष्णव आयेहें सो हमारे घरतें प्रसाद लीये विना न जाय तो ठीक तब वीननें ऐंसो विचार कर्‍यो जो अमुक बनियाकी दुकान अपने परोसमें है और वो अपनो मित्र है वाकी दुकान

खोलके जितनी सामग्री चाहिये इतनी काढ लेवें फर ये बानिया आवेगो जब दाम चुकाय देवेंगे ऐसे विचारके रातकुं वाकी दुकान खोली और जेसामग्री जितनी चहीती हती इतनी तोलके लीनी तब बडो भाई सामग्री लैके घर आयो और छोटो भाई दुकान बंद करवेकुं रह्यो जब सरकारके मनुष्यननें वाकुं चोर जानके पकऱ्यो फेर छोटे भाईने बडे भाईकुं खबर दीनी जो तुम रसोई करके वैष्णवनकुं प्रसाद लेवाईओ और मैं राजासूं निवटके काल आवुंगो ये बात वा साचोराके परोसीननें जानी विनने राज्यमें जायके कही मैं इनके परोसमें रहूहूं ये नित्य बहोत चोरी करके घरमें लावेहैं और लोगनकुं लूट लावेहैं और सब जगामें डाको पाडेहैं ऐसे झूठी बातें बनायके सरकारके मनुष्यनकुं समझायो याकुं मारडारो तो बहुत आछो तब सरकारके मनुष्यननें वा परोसीकी बात साँची मानके वाकुं मारडाऱ्यो और गामक दरवाजापर वाको माथो टांग दियो और वृक्षसों वाको धड बांध दियो और गाममें जाहेर कऱ्यो जे कोई मनुष्य चोरी करेगो वाके ये हाल होवेंगे और वाको बडो भाई तो घरमें न्हायके रसोइ करके भाग धरके वैष्णवनकुं प्रसाद लिवाये विन वैष्णवनकुं जावेकी उतावल हती सो दो

पातर घरमें करधरी एक अपनी और भाईकी जब भाई आवेगो तब प्रसाद लेउंगो ऐंसे विचारके दो पातर ढांकके विन वैष्णवनकुं पहोंचावे गयो गामके दरवाजा पर देखे तो भाईको धड और माथो टांग्यो है देखके बहुत उदास भयो और सेवामें न्हायो हतो छोटो भाई माऱ्यो गयो ऐंसी खबर बडे भाईकुं पहले पडी न हती जब दरवाजापर देखके रोवे लग्यो और वो धड हतो सो हाथ जोडके वैष्णवनकुं जय-श्रीकृष्ण करन लग्यो सो वैष्णव देखके बहुत चकित भये और वाको धड छोडके और शीशकोभी छो-डके धडके ऊपर मिलाय दियो और श्रीनाथजीको प्रसादी वस्त्र हतो सो वाके गलामें बांध दियो और चरणामृत वाके मुखमें मेल्यो सो वैष्णवनकी कृपातें छोटो भाई जीवतो भयो और उठके वैष्णवनकुं दंडवत करन लग्यो आर वैष्णवनकुं वीनती करी आजको दिन कृपा करके ईहां रहो इतनेमें वा राजाके मनुष्यननें राजाकुं खबर करी जो वा ब्राह्मणकुं आज सवारे मरायो हतो सो वैष्णवननें जीवीतो कऱ्यो तब वे राजा सुनके बहोत डऱ्यो आयके वैष्णवनके पांवन पऱ्यो और वीनता करी मेरे अपराध क्षमा करो और मोकुं तुमारो दास करो और जैसे बने तैसे मोकुं शरण लेउ फेर वा

राजाने वा साचोरा दोनों भाईनको परोसीकुं पकडायके मार डारवेको हुकम कऱ्यो तब वैष्णवननें छोडायो फेर राजानें कही ये वैष्णव द्रोही और धर्मद्रोही मेरे गाममें नहीं चहिये राजानें वाकुं देशमेंसु बाहेर काढयो और वाको घर लूट लियो फेर राजा विन वैष्णवनके संग श्रीगोकुल गयो और वैष्णव भयो सो वे दोनों भाई साचोरामें ऐसे कृपा पात्र हते जिनकी चित्तकीवृत्ती दिवस रात्र श्रीगुसांईजीके चरणारविंदमें और वैष्णवनकी सेवामें रहती हती फेर वा राजानें दोनों भाई साचोरानकुं आजीविकाकर दीनी सो वे दोउ भाई साचोरा ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥७४॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रामदास खंभातके तिनकी वार्ता ॥

एक समें श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे जब रामदासजीकुं नाम निवेदन करायो फेर रामदासजीनें श्रीगुसांईजीसुं पूंछी अब कहा आज्ञा है तब श्रीगुसांईजीनें कही अष्टाक्षर तथा पंचाक्षरको जप करौ तब रामदासजी एकांतमें बैठके जप करते फिर रामदासजीकुं श्रीगोवर्धननाथजीनें दर्शन दिये और कही जो तुम ब्रजमें आयके हमारी सेवा करौ तब रामदासजी ब्रजमें जायके श्रीगुसां-

जीकी आज्ञा लैके श्रीनाथजीके शाकघरकी सेवा करन लगे फेर श्रीनाथजी शाक घरमें आयके रामदासजीसों बातें करे । फेर एक दिन गुलाल कुंडपर श्रीनाथजी पधारे और रामदासजी कुं कही गये तुम शीतल सामग्री लैके गुलालकुंडपर आईयो सो रामदासजी लैके गये उहां श्रीनाथजी आरोगे सब सखामंडलीकुं बाँट दीये सो रामदासजीकुं सब लीलाके दर्शन भये इतनेमें शंखनाद भये श्रीनाथजीतो झट मंदिरमें पधारे और रामदास-जीतो धीरे धीरे भोगके दर्शन समे आय पहोंचे और अपने मनमें बहोत डरपे जो श्रीगुसांईजी कहा कहेंगे तब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो रामदासजी मेरे संग गये हते जासुं तुम कछु इनकुं मत कहो तब श्रीगुसांईजीनें रामदासजीसों कही जो श्रीनाथजी तुमकुं संग लेजाय तहां नित्य जाओ तुमारे बडे भाग्य हैं शाकघरमें दूसरो मनुष्य करेंगे और तुमकुं अवकाश होवे जब शाकघरमें सेवा करियो फेर एकदिन श्रीनाथजी रामदासजीकुं कदमखंडीपर लेगये और उहां रासकिये और गोविंदस्वामी कीर्तन गाते हते और स्यामदास मृदंग बजावते हते ऐसे अनेक लीलानके दर्शन

श्रीनाथजीनें रामदासजीकुं कराये सो वे रामदासजी ऐसे कृपापात्र अष्टाक्षरमंत्रके जप करके भये सो नारद पंचरात्रमें कह्यो है ॥ श्लोक--

" किंमंत्रैर्बहुभिर्विनश्वरफलैरायाससाध्यैर्मखैः किंचिल्लोपविधानमात्रविफलैः संसारदुःखावहैः ॥ एकः सन्नपि सर्वमंत्रफलदो लोपादिदोषोज्झितः श्रीकृष्णः शरणं ममेतिपरमो मंत्रोयमष्टाक्षरः ॥ "

सो अष्टाक्षर जप करते रामदासजीकुं लीलानके दर्शन श्रीनाथजीनें पुष्टिमार्ग राखवेके लीयें कराये जो कोई वैष्णव अष्टाक्षर मंत्रको जप करेंगे विनके सब मनोरथ पूण होएंगे॥ वा०वै सं० ॥७५॥

श्रीगुसांईजीके सेवक ताराचंद भाईकी वार्ता ॥

सो ताराचंद भाई श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आये तब श्रीगुसांईजीके दर्शन कीये साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये फेर ताराचंदभाईनें नाम निवेदन किये और श्रीनवनीतप्रियाजीके स्वरूपमें आसक्त भये फेर कोई दिन ताराचंदको मन चलायमान होवे लग्यो वृथा विचार करन लगे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवनकुं वृथा लाप तथा वृथा क्रिया तथा वृथा ध्यान वर्जित हैं सो ये सुनके ताराचंदभाईनें विचार कर्‍यो जो मेरे मनकी आपने अंतर्यामी पणेसुं

जानी है जासुं बडे भाग्य माने और बहुत शिक्षा मानी और अपने मनकुं स्थिर करवेकुं उपाय ढूंढवे लगे फेर सर्वोत्तमजीनें ढूंढयो सो ॥ श्लोक–

"श्रद्धाविशुद्धबुद्धिर्यः पठत्यनुजिनं जनः ॥
स तदेकमना सिद्धिमुक्तां प्राप्नोत्यसंशयः ॥"

या रीतिसुं ताराचंदभाईनें विचार कियो जो श्रद्धा सहित शुद्धबुद्धिसहित जो श्रीसर्वोत्तमजीको पाठ करेहैं और एकसो आठ नामनको अर्थ चित्तमें धारण करेहैं विनको मन स्थिर होवे है और कृष्णाधरामृतरूपी जो सिद्धी है वा जविकुं प्राप्त होवे है यामें संशय नहीं ऐसे विचारके ताराचंदभाई श्रीगुसांईजीकी आज्ञातें सर्वोत्तमजीको पाठ करनलगे फेर थोडे दिनमें श्रीठाकुरजी अनुभव जतावन लगे सो वे ताराचंद श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥७६॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मणकी वार्ता ॥

सो वे ब्राह्मण पंडित बहुत हतो और कर्ममार्गमें आसक्त हतो फेर वह ब्राह्मण श्रीगोकुल आयो और श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और भगवत्सेवा करनलग्यो।एकादिन वा ब्राह्मणवैष्णवनें श्रीगुसांईजीके मुखतें दैवीजीवनके लक्षण सुने जो लौकिककर्म तथा वैदिककर्म जो दैवीजीव करेंहैः सो

कपटतें करेंहे नहीं करें तो विनको कछु बाधा नाहींहें लोकशिक्षार्थ करेंहें सो पुष्टिप्रवाहमर्यादा-ग्रंथमें कह्यो हे। सो श्लोक—

"लौकिकत्वं वैदिकत्वं कापट्यात्तेषु नान्यथा ॥
वैष्णवत्वं हि सहजं ततोऽन्यत्र विपर्ययः ॥"

ये बात सुनके मनमें विचार कर्‍यो जो कर्ममार्गमें तें आसक्ती छोडी चहीये फेर श्रीठाकुरजी पधरायके अपने देशमेंआयके सेवाकरन लग्यो चुकटी मांगलावे और निर्वाह करे और श्रीठाकुर-जीकी मंगलाते सेन पर्यंत आखोदिन सेवा करेकर्म करवेको अवकाश आवे नहीं फेर एकदिन बहुत अवारभई जब झटपट बुहारी करन लग्यो बुहा-रीकी दोरी तूटगई तब जनेऊ उतारके बुहारी बांधी परंतु श्रीठाकुरजीकुं अवार न होवें ऐसो मनमें समझो फेर श्रीठाकुरजी वा ब्राह्मणकुं देखके हँसे और कहने लगे जो मैं तेरेपर प्रसन्नहुं जो तुं जानें हें जो ब्राह्मण वेदकर्म न करे तो नरकमें जाय ऐसे तु जानेहें तोहुं मेरे लीयें नर्क जानो कबूल कर्‍यो जासुं मैं तेरेपर प्रसन्नहुं और तुं मागेंगो सो देउंगो तब वा ब्राह्मणनें हाथ जोडके कही जो महाराज! मोकुं कछु नहीं चहीये आप सदा मोसुं बोलो और बातचीत करौं यासुं अधीक मैं कछु मांगु नहींहुं।

श्रीगुसांईजीकी कृपातें मोकुं ऐंसो सुख भयो है तब श्रीठाकुरजीनें कही जो अब जनेऊ पेहेर लेवो तब वा ब्राह्मणनें कही जो अब मोकुं कर्ममार्गसों कहा काम है तब श्रीठाकुरजीनें कही जो लोगनके दिखायवेकुं जनेऊ पह्‌र्‍यो चहिये तब वो ब्राह्मणनें जनेऊ पहेरके सेवा करन लग्यो और नित्य श्रीठाकुरजी वासुं बोलते और सब अनुभव जतावते सो वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्रहतो जिननें नर्कमें जानो कबूल कर्‍यो परंतु प्रभुनकुं अवार न होयवे दीनी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक हरिदास तथा मोहनदासकी वार्ता ॥

सो वे हरिदास घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते हते और मोहनदास विनके घर आयके उतरे हते सो दिवस रात दोनों जने भगवद्रसमें छके रहते और हरिदासजी मोहनदासमें बहोत आसक्त भये सो मोहनदास विना एक क्षण रहे न सकते और भगवत्सेवा कर्‍यो करते और ग्रंथ देखे करते और साक्षात् श्रीठाकुरजीको आविर्भाव मोहनदासजीमें मानते और जब मोहनदास जायवेकी बात करते तब सुनके हरिदासजीकुं मूर्च्छा आय जाती और ऐंसी भावना करते जो जन्मपर्यंत मोहनदा-

सजी इहांसों न जायतो आछो तब एकदिन मोहन-
दासनें निश्चय कऱ्यो के सवारे जानोहै तब हरिदास-
जीनें स्त्रीसुं कही जोतू घर और श्रीठाकुरजी और
बेटा सब संभार राखो मेरे प्राण नहीं रहेंगे जब
मोहनदास इहांतें जाएंगे तब सर्वथा मेरे प्राण नहीं
रहेंगे ऐसे हरिदासजीनें स्त्रीसों कही तब स्त्रीनें
सुनके विचार कियो जो मोहनदास न जाय और
मेरे पतीके प्राण रहें ऐसो उपाय करनो ये विचारके
रातकुं बेटाकुं विष दियो जब पाछली रातभाई तब
बेटानें प्राण छोडे तब रोय उठी तब मोहनदास
तैयारी करत हते सो कमर छोडके वास्त्रीकुं जायके
पूंछी जो ये तुमारा बेटा रातकुं आछो हतो आज
कहा भयो सो तुम साँच कहो तब हरिदासकी
स्त्रीनें साँचो कह्यो ये सुनके मोहनदासजी चकित
भये और ऐसो विचार कियो जो इनको कैसो
स्नेह है और म कैसो कठिन हुं ऐसे विचारके वा
बालकके मुखमें चरणामृत दियो और भगवन्ना-
मको उच्चार कियो और श्रीठाकुरजीकुं वीनती
करके वा बालकके कानमें अष्टाक्षर कह्यो तब वे
बालक जीवतो भयो तबतें मोहनदासनें ऐसो नेम
लीयो जो आज पीछे हरिदासजी धक्का मारके
काढेंगे तोहुं इहांतें नहीं जाउंगो फेर जन्मपर्यंत

मोहनदास हरिदासके घरमें रहे सो वे हरिदास तथा हरिदासकी स्त्री ऐसे कृपा पात्र हते जिननें वैष्णवको संग न छोड्यो या बातके लीयें पुत्र जेसी वस्तु त्याग करी तब तें श्रीठाकुरजी हरिदासजीको ऐसो स्नेहदेखके बहोत प्रसन्न भये और कहां तांइ कहिये॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥७८॥

॥ श्रीगुसांईजीके सेवक एक चोरकी वार्ता ॥

सो चोर श्रीनवनीतप्रियाजीके मंदिरमें रातीकुं छिप रह्यो पात्र तथा आभूषण तथा वस्त्र सब एकट्ठे करके एक गांठ बांधी आर उठायवे लग्यो तब गांठ उठी नहीं वानें आखी रात उपाय तो बहोत करे परंतु सवारसूधी गांठ न उठी फेर वह चोर पकड्यो गयो तब श्रीगुसांईजीके पास लेगये तब श्रीगुसांईजीनें कही जो याकुं छोडदेओ पृथ्वीपतीकुं खबर पडेगी तो याकुं मारडारेगो सो श्रीगुसांईजीकुं बहोत दया आई और चोरकुं छुडाय दियो फेर वा चोरके मनमें ऐसी आई जो मेरे प्राण जाते श्रीगुसांईजीनें मेरेपर कृपा करके मोकुं प्राण दान दिये हैं इनकी शरण जाउं तो ठीक फेर वो चोर श्रीगुसांईजीको सेवक भयो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो अब तु चोरी मत करे जब वा चोरनें हाथ जोडके कही जो महाराज चोरी

करे विना मोसुं रह्यो नहीं जायगो तब श्रीगुसां-
ईजीनें कही जो तुं निर्दय होयके चोरी मत कर
जाके पास सो रुपैया जितनो द्रव्य होवै तब वाकी
दो रुपैया जितनी चोरी करे ता वाको मन न
दूखे और सत्य भाषण करे तो श्रीप्रभुजी दया-
लुहे तेरो मन फर डारेंगे और आपके चरणारविं-
दमें लगावेंगे ऐंसे कहेके वा चोरकुं वैष्णवताकी
रीती सिखायके बिदा कियो फेर वा चोरनें एसो
विचार कियो जो कोई राजाकी चोरी करूंतो एक
वार काम होयजायगो गरीबकी चोरी अब नहीं
करुंगो ऐंसे वाके मनमें विचार आयो फेर वे चोर एक
राजाके घर चोरी करन गयो सो आछो मनुष्य बनके
गयो राजाकी पोरीपर जो पूछे वाके आगें सत्य
बोले जो तुम कहां जाके आओहो जब वो कहे हम
चोरी करवे जावेहें तो श्रीठाकुरजीकी प्रेरनातें सबके
मनमें ऐंसी आई जो ये मस्करी करेहें जासुं वाकुं
कोईनें रोक्यो नहीं वे राजाके घर निःशंक होयके
भीतर घुस गयो फेर चोरी करके चल्यो आयो जो
पूंछे जासु सत्य कहे सो सबनें वाकी हांसी जानी
फेर पीछे जब खबर परी जो घरमेंसुं जव्हारात गये
फेर वाकूं पकड लाये फेर राजानें वा चोरवैष्णवसों
पूंछ्यो जो तेनें केंसे चोरी करी वानें सब सब

सत्य कह्यो और कह्यो जो मैंने सबकुं कहीहै परंतु तुमारे मनुष्यननें मेरी बात साँची मानी नहीं फेर राजाने या बातकी तपास करी तो सब बात वा चोरकी साँची निकसी तब राजानें वा चोरकुं नोकर राख्यो और सब काम सोंप्यो सो वे चोरनें सब राजाको काम माथे उठाय लीयो फेर श्रीगुसांईजीकुं पधरायके बहोत द्रव्य भेट कर्यो और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो सो श्रीगुसांईजीकी कृपातें परम भगवदीय भयो वा चोरकुं श्रीगुसांईजीकी आज्ञाको ऐसो विश्वास हतो यातें वाके लौकिक अलौकिक सब सिद्ध भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ७९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक दयालदासबनीया तिनकी वार्ता ॥

सो वा दयालदासके पास लाख रुपैया हते सो धरतीमें गाडदीये और एक पैसा खर्च न करनो ऐसो नेम लीयो फेर एक दिन श्रीगुसांईजी उहां पधारे जब वो दयालदास सेवक भयो और कही जो महाराज एक पैसा खर्च न होवे और मेरो कल्याण होवे ऐसी रीति सिखावो बारह आना नित्य कमाई लावुंहुं और चार आना नित्य खरचुंहुं तब श्रीगुसांईजीनें कही जो तुं मानसी सेवा कर फेर वानें मानसी सेवाकी रीती सब सीख लीनी फेर

नित्य वे मानसी सेवा करतो दो पहेर सूधी और कछु काम करतो नहीं ऐसे करते करते एक दिन मानसी सेवामें खीर करी वामें खांड बहुत पडगई सो फेर काढनलग्यो तब श्रीठाकुरजीनें वाको हाथ पकऱ्यो और आज्ञा करी जो यामें तो तेरो खर्च नहीं लग्यो है सो तूं खांड क्यूं काढे हैं ये बात सुनके वाके अंतःकरण खुलगये और भगवत्स्वरूप साक्षात्कार होय गयो और लक्ष रुपैया हते सो श्रीगुसांईजीकुं पठाय दिये जैसो वाको द्रव्यमें चित्त हतो तैसो श्रीठाकुरजीमें लग्यो सो वह दयालदासबनिया ऐसो कृपा पात्र हतो वाकुं फलरूप मानसी सेवा सिध भई ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री पुरुष हते तिनकी वार्ता ॥

सो वे दोनों जनें श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे एकदिन स्त्री परोसीके घर गई वाके घर वैभव बहुत देख्यो सो वाकुं पूंछी तुमारे घर वैभव कैसो भयो तब वानें कही हम देवीकी पूजा करें हें यातें भयो है फेर वा परोसननें कही तुम देवीकी पूजा करौ तो तुमारे घर वैभव बढजाय फेर वैष्णवकी स्त्री परोसनकी देवीकी मूर्ती लेआयके घरमें बैठाई और पतीसों कह्यो जो देवीकी पूजाको सामान लावो और

वैष्णव पैसा बेंचतो हतो सो पैसा बेचन गयो तब एक पसारीकी दुकानसुं देवीकी पूजाको सामान लेवै बैठो सो सामान लियो और पैसानकी कोथलीके बदले भूलमें पसारीकी रुपैयानकी कोथली उठायलीनी तब पसारी पकडके सरकारमें लेगयो उहांके हाकेमनें ये न्याय कर्‍यो याकुं गद्धापर बैठायके गाममें फेरनो तब वाकुं गद्धाके ऊपर बैठायके गाममें फेर्‍यो तब वैष्णवके मनमें आई मैनें अन्याश्रय कर्‍यो जब ये फल भयो जब घरमें जायके तत्काल देवीको स्वरूप पाछो पडोसीके घर धराय दियो फेर चित्त लगायके श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे तब वाके मनमें ऐसो निश्चय भयो वैष्णवनकुं अन्याश्रय सर्वथा बाधा करे हैं जासुं वैष्णवकुं अन्याश्रय न करनो अन्याश्रयतें अनिष्ट होवैहै और श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होवेहैं जासुं सर्वथा अन्याश्रय न करनो ऐसी शिक्षा वा वैष्णवकु लगी सो वे स्त्री पुरुष ऐसे कृपापात्र हते जिनसु अन्याश्रय छुडायके श्रीठाकुरजी बोलन लगे ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक देवाभाई पटेल तिनकी वार्ता ॥

सो देवाभाई पटेल गुजरातमें रहते और श्रीठा-

कुरजी पधरायके सेवा करते और नित्यनेमसुं वैष्णवनको प्रसाद लेवावते जादिन कोई वैष्णव प्रसाद लेवेवालो न मिले तो तादिन देवाभाई तथा देवाभाईकी स्त्री भूखे रहते और भगवद्रसमें छके रहेते फेर एकदिन श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते तब देवाभाईके बेटानें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो महाराज ! जादिन वैष्णव नहीं आवे तब देवाभाई भूखे रहेहैं और मैंतो प्रसाद लेके खेतीकरवे जाउंहुं और मातापिताकुं भूखो राखके मैं प्रसाद लेऊंहुं ये अपराध कैंसे मिटे ? ये बात देवाभाईके बेटाका सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और आज्ञा करी जो तुम नित्य न्हायके श्रीठाकुरजीके चरणस्पर्शकरो और भोगधरो तो तुमारो अपराध निवृत्त होवेगो और देवाभाईकुं श्रीगुसांईजीनें कही जादिन कोई वैष्णव न आवे तब गौकूं पातर धरके तुमकुं प्रसाद लेनो तब ते देवाभाई ऐंसे करन लगे और देवाभाईको बेटा खेती करतो हतो वामें द्रव्य बहोत आवते सो जितनो द्रव्य घरमें खर्च होतो सो करते और अधिकीको द्रव्य श्रीनाथजीद्वार पठाय देते वे देवाभाई पटेल श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता ॥ संपूर्ण वै०॥८२॥

श्रीगुसां० से० एक डोकरी धानीपूनीवालीकी वार्ता ॥

वह डोकरीनें श्रीगुसांईजीकुं बीनती करके श्रीठाकुरजी माथे पधराये तब सेवा करन लगी तब वह डोकरी सूत काँतके निर्वाह करती जब कातवे बैठे तब श्रीठाकुरजी वा डोकरीके पासकी पुनीमें आयके बिजारते और बाललीला करते और वा पूनीको गादी तकीया करके बैठते और एक एक पूनी वा डोकरीके हाथमें काँतवेकुं देते और भूख लागती तो डोकरी पास धानी मांगते सो एकदिन डोकरीकी व्यवस्था श्रीबालकृष्णजी श्रीगुसांईजीके तीसरे लालजीनें देखी और वा डोकरीसुं कही ये लालजी हमकुं दे तब वा डोकरीने लालजी पधराय दिये फेर डोकरी श्रीठाकुरजी बिना बहुत दुःखी भई श्रीठाकुरजी वा डोकरीकी आर्ति सही न सके तब श्रीठाकुरजीने बालकृष्णजीसुं कही जो डोकरीके घर पहोंचायदेव. धानीपूनी बिना मोकुं नहिं चले तब श्रीबालकृष्णजीनें वही रातमें आयके श्रीठाकुरजीकुं डोकरीके घर पधराय लाये और कही जैसे नित्य करते हो वो तैंसेही करौ श्रीठाकुरजी तेरेपर प्रसन्न हैं सो वे डोकरी ऐसी कृपापात्र हती जिन विना श्रीठाकुरजी रहे न सके वार्ता ॥ संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८३ ॥

श्रीगुसांई० सेवक वैष्णवक्षत्रीमथुरामें रहेते तिनकी वार्ता ॥

सो वे क्षत्री वैष्णव श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा भलीभांतिसूं करते भगवद्वार्ता बहुत आछी करते और पुष्टिमार्गके ग्रंथ तथा विनके भावार्थ श्रीगुसांईजीसुं सुनते हते तब मथुराके वैष्णव भगवद्वार्ता सुनवेकुं वा क्षत्रीवैष्णवके घर आवते हते और नित्य क्षत्रीवैष्णव अपने हाथनतें चना सेंकके भोग धरते हते और मंडलीमें बांटते हते ऐसे करते करते बहुत दिन भये एक शेठ द्रव्यपात्र वा मंडलीमें आयवे लग्यो तब वो चनाको प्रसाद लेके डार देवे तब श्रीमहादेवजी वैष्णवको रूपधरके भगवन्मंडलीमें नित्य आवते हते कोईकुं खबर न पडती एक वा क्षत्री वैष्णव पहेचानते हते सो जब चना वह शेठ डार देतो हतो तब महादेवजी वीन लेते तब एक दिन क्षत्री वैष्णवनें महादेवजीकुं चना वीनते देखे पाछें वा शेठकुं मंडलीमें आवेकी नहीं कही तब वे शेठ श्रीगोकुल गयो तब श्रीगुसांईजी वासुं बोले नहीं और श्रीनवनीतप्रियाजीनें वा शेठकुं दर्शन न दीये फेर वो शेठ मथुरामें पाछो आयो और जायके वा क्षत्रीवैष्णवके पांवन पर्यो तब क्षत्रीवैष्णवनें कही तुमनें भगवत्प्रसादको अपमान कर्योहै जासुं तुमकुं मंडलीमें आयवेको अधिकार नाहींहै फेर

वो शेठ दीनता करके पांवन पड्यो फेर वा शेठकुं मंडलीमें आयवे दियो तब श्रीगुसांईजीनें और नवनीतप्रियाजीनें दर्शन दीयो सो वैष्णवनकुं जहां न्यातिव्यवहार बाधा न करे ऐंसो प्रसाद मिलेतो सर्वथा अपमान न करनो ऐसो विचार राखनो सो वह क्षत्रीवैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिननें करोडपती शेठकुं तुच्छ गण्यो और जिनके लिये श्रीगुसांईजीनें और श्रीठाकुरजीनें वा शेठकु त्याग कियो सो वे क्षत्रीवैष्णव ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक निष्किंचन स्त्री पुरुषकी वार्ता ॥

सो वे स्त्रीपुरुष श्रीठाकुरजीकी सेवा करते हते सो वा गाममें एक शेठ रहतो हतो वा शेठकुं घर वा वैष्णवकी स्त्री एक दिन श्रीठाकुरजीके दर्शन करवे गई सो वैभव बहुत देख्यो मनमें ऐंसी आई जो मेरे घर ऐंसो वैभव श्रीठाकुरजीको होय तो आछो फेर अपने घर आयके पतिसुं कही जो मैं तो वैभवसों सेवा करुंगी वाके पतिनें कही जो द्रव्य तो बहोत है परंतु द्रव्यमें अनर्थ बहुत होवेहै जब द्रव्य होवै तब कोईकी बात मनमें आवै नहीं और खरचवेको मन होवै नहीं और द्रव्यको अभिमान आय विना रहे नहीं और द्रव्यवान अपराधसुं

डरपे नहीं और द्रव्यवान गरीबसुं प्रीति करे नहीं और द्रव्यवान आछे बुरेकी परीक्षा करे नहीं और द्रव्यवान गरीबनका अपमान बहुत करे जासुं द्रव्यमें बहुत अनर्थ होवे हैं, और द्रव्यवान सत्संग करे नहीं और द्रव्यवान कोईको अहित करतें डरपे नहीं जासुं तुं द्रव्यकी अपेक्षा छोड दे परंतु वो स्त्री मानी नहीं कहिवे लगी वैभव विना सेवा नहीं करूंगी और रिसायके बैठ रही ऐंसे दो दिन सूधी सेवा न करी। वाको पति एकलो सेवा करे तीसरे दिन वाके पतिनें कही जो इहांतें एक कोश दूर एक वृक्ष है वाके नीचे जायके द्रव्य चहीये जितनो लेआवा तब वह स्त्री टोकरा लेके गई जब वा वृक्षके नीचे धरती खोदी तब द्रव्य बहुत निकस्यो तब वो स्त्री टोकरामें भरवे लगी तब वा वृक्षको भीतरसुं वाणी भई जो तुं हमकुं कछु देके द्रव्य लेजा तब वा स्त्रीनें कही जो तेरे कहा चंहिये! तब वानें कही जो तेरे घर श्रीठाकुरजी बिराजे हैं सो तुम झारी भरोहो जितनी झारीको फल दे जा और इतने टोकरा द्रव्यके भर लेजा और तब वा स्त्रीनें कही जो अब द्रव्य लेजाऊं जो झारी भरुंगी तो एक झारीको फल नित्य तोकुं देऊंगी और नित्य टोकरा भरके लेजाऊंगी और जब तेरो द्रव्य नहीं

लेजाऊंगी जब झारीको फल नहीं देउंगी तब वो वृक्ष
बोल्यो अब जो तुं झारी भरेगी वा झारीको फल
नहीं चहिये कारण जो तेरे पास द्रव्य होय सो
जब तेरी झारी श्रीठाकुरजी अंगिकार न करेंगे।
वा स्त्रीनें कहि काहेते अंगिकार न करेंगे ? तब
वृक्षनें कहि तेरो चित्त द्रव्यमें रहेगो श्रीठाकुरजी
चित्त लगाय बिना अंगीकार कैसे करेंगे ? आजतें
पेहेले जो तुमने झारी भरी है विनको फल देवो तो
द्रव्य ले जाव तब वा स्त्रीनें कही जो निष्किंचनप-
णकी झारी श्रीठाकुरजी अंगिकार करे हैं ये निश्चय
मोकुं तुमारे कहतें भयो है वा झारीको फल नहीं
देउंगी और तेरो द्रव्य मोकुं चाहिये नहीं मैं निष्किं-
चन होयके नित्य झारी भरुंगी जो प्रभू अंगीकार
तो करेंगे ऐसे कहके वा स्त्रीनें द्रव्य डार दियो और
ऐसी चली आई और आयके अपने पतीसुं कही
मैं निष्किंचन होयके झारी भरुंगी मैंने तुमारो कह्यो
न मान्यो और द्रव्यपात्र शेठके घर दर्शन करवेकुं
गई जो मेरी दोदिन सेवा छूटी और द्रव्य मेरे
घरमें आवेगो तो कहा जाने कितनी सेवा छूटेगी
नोकर राखुंगी सब सेवा विनकुं देउंगी और मैं
वैभवकी रक्षा करुंगी जासुं मेरे द्रव्य नहीं चहिये
ऐसे कहिके सेवा करन लगी सो वे स्त्री पुरुष श्रीगु-

सांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिननें भगवत्सेवा छोडके द्रव्य ग्रहण न कियो । तातें इनकी वार्ता कहा कहिये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८५ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक. पटेलवैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे पटेल गुजरातसुं आयके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो तब सब व्रजयात्रा कर आयो एकदिन श्रीगुसांईजी कथा कहेते हते तब श्रीयमुनाष्टककी कथा वा पटेल वैष्णवनें सुनी वा पटलनें पूंछो. हे महाराज! आठ श्लोकमें अष्टसिद्धि आपनें आज्ञा करी है परंतु कौनसे श्लोकमें कौनसी सिद्धि वर्णन करी है सो कृपाकरके समझावो.तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी साक्षात् सेवापयोगी देहकी प्राप्ति जो सिद्धि पहले श्लोकमें कहीहै तत्तल्लीलावलोकन जो सिद्धि सो दूसरे श्लोकमें कहीहै और तद्रसानुभवरूपी जो सिद्धि सो तीसरे श्लोकमें कहीहै और सर्वात्मभावरूपी जो सिद्धि सो चौथे श्लोकमें कहीहै और यमुनाजीको स्वरूप षट् गुणसंपन्न सो चौथे श्लोकमें कह्योहै और भक्तिदातृत्वरूपी जो सिद्धि सो पांचमें श्लोकमें कहीहै और भगवत्तात्पर्यज्ञत्वरूपी जो सिद्धि सो छठे श्लोकमें कहीहै और भगवद्वशीकरणत्वरूपी जो सिद्धि सो सातमें श्लोकमें कही है और भगवद्रसपोषकत्वरूपी जो सिद्धि सो आठवें श्लोकमें

कही है और जिनके ऊपर भगवत्कृपा है और श्रीयमुनाजी कृपाकरेंहैं विनकुं एक एक श्लोकमें अष्टसिद्धि दर्शन देवेहैं, ऐंसे श्रीगुसांईजीनें आज्ञा- करी। तब वा पटेलकुं श्रीयमुनाजीनें वैसेही दर्शन दीये जेंसे श्रीगुसांईजीनें कहीहती तेंसे दर्शन वा पटेलकुं भये सो वे वैष्णव पटेल श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव॥८६॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्रजवासी, तिनकी वार्ता॥

सो वे ब्रजवासी श्रीनाथजीकुं परेकहतो सो ब्रज- वासी गायनकी खिरकमें सेवा करतो हतो और एक सीधो भंडारमेंसुं लेजातो हतो और आठ पहर गायनकी सेवा मनलगायके बहुत आछी करतो हतो एकदिन कोई वैष्णवकु श्रीगुसांईजी श्रीठा- कुरजी पधराय देते हते सो वा ब्रजवासीनें देख्यो फेर एकदिन श्रीगुसांईजीसुं वा ब्रजवासीनें बीनती करी जो मोकुं श्रीठाकुरजी पधराय देवो वाही समय श्रीगुसांईजी न्हायके पधारते हते जब आगे एक पत्थर पड्यो हतो वा पत्थरकुं श्रीगुसांईजीके खडा- उंकी ठोकर लगी सो दूरजाय पड्यो और उहां वे ब्रजवासी ठाडो हतो श्रीगुसांईजीनें कही परेपरे ऐंसे कहके श्रीगुसांईजी भीतर पधारे जब वो पत्थर ब्रजवासीनें उठाय लियो फेर वा ब्रजवासीनें मनमें

ऐंसो समझो ये मोकुं श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजी पधरायदीये और परेपरे श्रीठाकुरजीको नाम कहि दियोहै ऐंसो भोरो हतो सो वे पत्थरकुं ठाकुरजी मानके पधराय लेगयो फेर मनमें समझ्यो जो सीधोतो एक आवे सो परे कहा खायेगो और मैं कहा खाउंगो ऐंसे समझके भंडारिसुं कही अब हमकुं दो सीधा देओ भंडारीनें दो सीधा दिये सो फेर जायके रसोई करी और ब्रजवासी भोरो बहुत हतो जब वानें दो पात्र करदीनी फेर कही आव भाई परे! एक पातर तेरी और एक पातर मेरी जब श्री-ठाकुरजी आये नहीं तब वो ब्रजवासी कहनेलग्यो जो भाई तुं आयके अपनी पातर संभार ले जो बरोबर है के फेर फार है जो तुं नहीं आवेगो तो मैं दोनों पातर तलावमें डार देउंगो तब श्री-ठाकुरजी वाको शुद्ध भाव जानके और भोरो जानके पधारे और साक्षात्स्वरूप धरके जीमन लगे ऐंसे नित्य कृपा करके पधारते एकदिन श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तुं दो सधिा कहा करेहें? जब वानें कही जो आपनें वो परे पधराय दीयोहै सो एकपातर वे खाय है और एक पातर मैं खाउं हुं ये बात सुनके श्रीगुसांईजी मुसकायके चुप कर रहे फेर एक दिन भंडारीनें वा ब्रजवासीसुं कही

जो तुम सूरत गाममें जायके भेट ले आवो जब ब्रजवासीनें कही सूरत गाम कहा होवेहै भंडारीनें कही सूरत गाम सहेर है जब वा ब्रजवासीनें कही भेटपत्र और प्रसादकी थेली देवो तो में सूरत जाऊं जब उहांसुं प्रसाद और पत्र लेके और रसोई करके सूरतकी तैयारी करी और कही जो भैया परे ! मैं तो सूरत जाउंगो और तुं आवेगो के नहीं आवेंगो? जब श्रीठाकुरजीनें कही जो मैं आवुंगो. जब वानें कही जो तेरे छोटे छोटे पांव हैं और छोटे छोटे हाथ हैं तुं कैसे चलसकेंगो जब श्रीठारकुजीनें कही मैं थोडो थोडो चलुंगो और थोडीवार तेरे कांधे-पर बैठुंगो । ये बात कहिके श्रीठाकुरजी ब्रजवा-सीके साथ चले वे उहां ते ब्रजवासी चले जब दो तीन कोसआये तब श्रीठाकुरजीनें कही मैं थक्यो हुं जब वा ब्रजवासीके कांधा ऊपर बैठे जब थोरी दूर चले जब सांझ भई तब श्रीठाकुरजीनें कही जो आज इहां सोयरहो फेर काल सूरत चलेंगे फेर उहां सोय रहे फेर सवारे उठे सो ऐसे ठिकाणे उठे जहांसुं सूरत दोयकोश रही हती तब उहांतें चले फेर सूरत आये उहां गाम बाहेर डेरा कीये और उहां श्रीठा-कुरजीकुं बैठायके वो ब्रजवासी पत्र और प्रसाद लेगयो गाममें वैषणवनकुं पूंछके दियो वे पत्र वांचके

वैष्णवननें विचार कियो जो एकदिनमें पत्र कैंसे आयो होयगो जब ये विचार कियो यामें भेद कछु अवश्य होयगो तब वैष्णवननें वाकुं सामग्री दिवाई और एकदिनमें सब ठिकाने फिरके पांच हजार रुपैया एकट्ठे करके और हुंडी करायके तब ब्रजवासीकुं दीनी सो ब्रजवासी लेके और परेकुं संग लेके उहांतें चले फेर रस्तामें आयके सोय रहे फेर सवारे उठके पहेर दिन चढ्यो गोपालपुरमें आये फेर भंडारीके पास गयो और दो सीधा मांगे जब भंडारीनें कही सूरत क्युं गयो नहीं जब वानें कही सूरत जाय आयोहुं पत्र और वस्त्र लायोहुं सो भंडारीकुं दीये जब भंडारीनें पांच हजारकी हुंडी और वस्त्र और वैष्णवनके कागद देखके चकित होयगयो जो एकरातमें कैंसे गयो होयगो और कैंसे आयो होयगो सो ये बातकी बीनती श्रीगुसांईजीके आगें करी। श्रीगुसांईजी सुनके ऐंसी आज्ञा करी जो ए सब श्रीनाथजीके काम है आज पीछे या ब्रजवासीकुं कछु काम मत बताइयो और जन्म सूधी दोय सीधा याकुं नित्य दीजियो और नित्य वा ब्रजवासीकुं बुलायके श्रीगुसांईजी परेकी बातें पूंछो करते आज परेनें ये कही आज परेनें ये कही ऐंसे नित्य कऱ्या करे सो ब्रजवासी भोलो

हतो जन्मसुं श्रीठाकुरजीकुं परे समझो करे ऐंसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक स्त्री पुरुष हते तिनकी वार्ता ॥

सो वे स्त्रीपुरुष गरीब हते और नित्य लकडीको भारो लायके गाममें बेचके निर्वाह करतें और नित्य पैसा अधेला जो बचे सो धरराखतें और कोई वैष्णव आवे विनके संग महाप्रसाद बांटके लेते एक दिन अचानक आठ वैष्णव आये जब वा स्त्रीपुरुषनें विचार कऱ्यो जो कहा करणो जब वा स्त्रीनें कही जो मेरी साडी पेहेरवेकी एक हें सो तुम बेचके सामग्री लावो सो वे पुरुष सामग्री लायो तब वा स्त्रीनें किंवार ढाकके रसोई करी और श्रीठाकुरजीकुं भोग धऱ्यो फेर वाके पतीसुं कही जो में कोठीमें बैठी हुं तुम भोगसरायके अनवसर करके वैष्णवनकुं पातर धरो वा पुरुषनें ऐंसेही कऱ्यो तब वैष्णव कहने लगे जो तुमारी स्त्री कहांहे ? तब वा वैष्णवनें कही स्त्रीको लाजको स्वभाव बहुत है जासुं बहार नहीं आवेहें वाकी प्रकृति बडी खराब है ऐंसे वा पुरुषनें कही जब वैष्णव बोले वह आवेगी तो हम प्रसाद लेवेंगे याको कारण ये है वैष्णव है के नहीं हमकुं खबर कैंसे पडे वैष्णव न होवे तो वाके हाथकी रसोई कैंसे लेवे ये बात सुनके वो वैष्णव

विचारमें पडगयो जब मंदिरमें मदनमोहनजी श्री-स्वामिनीजीसाहित विराजते हते जब श्रीस्वामि-नीजी बोल्ये श्रीठाकुरजीसुं कही जैंसे द्रौपदीके चीर बढाये हते तो या बाईके चीर बढायतें तुमकुं कहा हरकत है? ऐंसे कहके श्रीस्वामिनीजीनें और श्रीठाकुरजीनें कोठीमें जायके वा लुगाईकुं दर्शन दिये और उहां वस्त्र पहराय दिये वे बाई हाथ जोडके बोली हे महाप्रभु हे महामंगलरूप हे शरणा गतवत्सल हे अशरणशरण आपकुं ऐंसो श्रम मेरे लिये भयो मैंनें आपकुं श्रम दियो और मैंनें ऐंसो काम कर्‍यो ऐंसे आपकुं श्रम भयो सो मोकुं धिक्कार है ऐंसे कहिके वा बाईको हृदय भर आयो ये सुनके श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न भये और अलौकिक वस्त्र दान करे जलमें भीनें होजाय और बहार सूके होये जाएं नीचोवनें और सुकावनें न परें ऐंसे वस्त्र सदा वाके पास रहें कोईदिन घटे नहीं तब वे बाई बाहेर आयके वैष्णवनकुं परोसन लगी तब वैष्णव प्रसन्न होयके प्रसाद लेन लगे फेर वे वैष्णव प्रसाद लेके बिदा होयके गये तबतें वा कोठीमेंतें कोईदिन अन्न खूटतो नहीं जब काढते तब भरी रहेती काहेतें श्रीठाकुरजीनें वा कोठीमें वा बाईकुं

दर्शन दिये हते सो वे स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

श्रीगुसां०से० एक विरक्त तथा शेठ आगरेमें रहेते ति०वा०॥

सो वे विरक्त वैष्णव चुकटी मांगके निर्वाह करते और श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसों करते और श्रीठाकुरजी वाके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते फेर कोई दिन वा शेठके वा विरक्त वैष्णवसुं मिलाप भयो तब वा शेठनें कही तुम श्रीठाकुरजी पधरायके मेरे घरमें रहो और तुम हम हिलामिलके सेवा करें तब सो विरक्तनें ऐंसो कऱ्यो वो शेठके घरमें जायके रह्यो और बहारकी जे सामग्री चहाती सो विरक्त खरीद लावतो एकदिन बजारमें नयो खरबूजा पहेलो पहेलो आयो हतो सो वे विरक्त वैष्णव खरबूजा लेने लग्यो सो एक रुपैया खरबूजावालेनें कीमत करी हती सो विरक्त रुपैया देने लग्यो उहां बडी जातवालो आयो वो बोल्यो मैं सवा रुपैया देऊंगो जब वैष्णव बोल्यो मैं देढ रुपैया देऊंगो ऐंसे करते दोनोंजनें सामासामी बढे वो बडी जातवालो पांच बोल्यो तब वैष्णव दस बोल्यो जब वो बीस बोल्यो तब वे वैष्णव तीस बोल्यो जब वो चालीस बोल्यो ऐंसे करते हजार रुपैया सूधी दोनों जनें बढगये जब वा वैष्णवनें हजार रुपैयामें खरबूजा

लियो फेर घर लेके गयो और खर्च लिखायो तोहुं वा शेठने कछु पूंछी नहीं के या खरबुजाके हजार रुपैया कैंसे दिये ऐंसो विश्वास वैष्णवके ऊपर हतो कछु मनमेहुं ये बात न लाये फेर ठाकुरजीनें खर-बूजा उठाय लीयो और सिंहासन ऊपर खेलवे लगे जब उत्थापन भये तब खरबूजा शेठनें श्रीठाकुर-जीके पास देख्यो तब शेठ बहुत प्रसन्न भयो और श्रीठाकुरजीसुं बीनती करी जो खरबूजा मोकुं देवें तो समारके भोग धरुं तब श्रीठाकुरजीनें कही ये खरबूजा मैं काल आरोगुंगो ये खरबूजा मोकुं बहुत प्रिय है ये सुनके शेठ बहुत प्रसन्न भये और मनमें कही जो विरक्त धन्य हैं हजार रुपैया खरचते डऱ्यो नहीं सो वे विरक्त वैष्णव और शेठ ऐंसे कृपा पात्र हते जिननें हजार रुपैया खरचे तोहुं शेठके मनमें दोष न आयो सो वे दोनों ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ८९ ॥

श्रीगुसांईं० सेवक परमानंददास सोनी तिनकी वार्ता ॥

सो परमानंददाससोनीकुं श्रीमद्भागवत और चार वेद और पुराण और सुबोधिनीजी सब जिह्वाग्र हते और श्रीगुसांईजी कथा वांचते सो नित्य परमा-नंददास सुनते और विनको हार्द सब समझते और

कथामें जो कोई वैष्णव प्रश्न करतो तब श्रीगुसां-
ईंजी आज्ञा करते के परमानंदहासकुं पूंछलेउ तब
श्रीगुसांईंजी ऐंसी कृपा राखते हते जो कोई आयके
पूंछते तो परमानंददास उत्तर दे सकते, फेर एक
दिन पंडित चार आये श्रीगुसांईंजीके पास आये
जब श्रीगुसांईंजी सेवामें न्हाएहते तब वे चार पंडि-
तनकुं परमानंददास सोनीनें आदर देके बैठाये
फेर उहां चर्चा निकसी जो जगत् सत्य है के अस-
त्य है तब पंडितननें कही जगत् असत्य है ब्रह्मके
स्वरूपमें जगत् कल्पना मात्र है जैसे डोरीमें सर्प
जैसे सीपमें रूपो कल्पना मात्र है ऐंसे जगत् ब्रह्ममें
कल्पना मात्र है । जब परमानंद सोनीनें पूंछी जो
जैसे डोरीमें सर्प और सीपमें रूपो कल्पना मात्र
है सो दूसरे ठेकाणे सर्प तथा रूपो देखे विना
कल्पना नाहीं होवेहै ऐसो जो ब्रह्ममें जगत् मिथ्याहै
तो कल्पना करवेवाले मनुष्यने सत्य जगत् कहां
देख्यो है सो बतावो ये सुनके पंडित पीछें फिर-
गये सो परमानंददास सोनी ऐंसे विद्वान् हते जि-
नकुं श्रीगुसांईंजीकी वाणीपर अत्यंत विश्वास हतो
सो परमानंददास ऐसे कृपापात्र हते जिनकुं सर्व
शास्त्र हस्तामलक हते तिनकी वार्ता कहांताईं
कहिये वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक खंडनब्राह्मण तिनकी वार्ता ॥

सो श्रीनंद गाममें रहेतो हतो सो वह खंडन ब्राह्मण शास्त्र पढ्यो हतो सो जितने पृथ्वीपर मतहै सबको खंडन करतो ऐसो वाको नेम हतो याहींतें सब लोगननें वाको नाम खंडन पाड्यो हतो सो एकदिन श्रीमहाप्रभुजीके सेवक वैष्णवनकीमंडलीमें आयो सो खंडन करन लग्यो वैष्णवननें कही जो तेरे शास्त्रार्थ करनो होवै तो पंडितके पास जा हमारी मंडलीमें तेरे आयवेको काम नहीं इहां खंडन मंडन नहींहै भगवद्वार्ताको काम है भगवद्यश सुननो होवै अथवा गावनो होवै तो इहां आवो तोहुं वानें मानी नहीं नित्य आयके खंडन करे ऐसे वाकी प्रकृति हती फेर एकादिन वैष्णवनको चित्त बहुत उदास भयो जब वो खंडनब्राह्मण घरमें सूतो तब चार जनें वाकुं मुद्गर लैके मारन लगे जब वानें कही तुम मोकुं क्यों मारोहो जब चार जनेननें कही तुम भगवद्धर्म खंडन करोहो और भगवद्धर्म सर्वोपर है सर्व धर्मनतें श्रेष्ठहै केवल भगवत्परायण हैं भगवदर्पण कर्‍यो हैं तन मन धन जिननें विनको कोई अर्थ बाकी रह्यो नहींहैं शास्त्रमें कह्योहै जिननें आत्मनिवेदन कर्‍यो है विनकुं कछु अर्थ बाकी रह्यो नहींहै सर्व सिद्ध भये हैं ऐसे धर्मनकुं

खंडन करे हैं जासुं तोकुं मार देवेहैं ये सुनके खंडन ब्राह्मण विन चारजनेनके पांवन पड्यो और दूसरे दिन भगवन्मंडलीमें आयके वैष्णवनके पांवन पड्यो और वैष्णवनसुं वीनती करी के मोकुं कृपाकरके वैष्णव करो और वैष्णवनकुं संग लैके श्रीगोकुल आयके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और श्रीगुसांई-जीके पास रहिके मार्गके अनुसार सब शास्त्र पढ्यो और भगवतसेवा करन लग्यो और भगवद्गुण गान करन लग्यो और अपनो जन्म सफल कर मान्यो सो वे खंडनब्राह्मण श्रीगुसांईजीकी कृपाते मंडन भयो और साकार ब्रह्मको स्थापन करन लग्यो सो दैवीजीव हतो सो आसुरीजीवनकी संगतीतें वाकी बुद्धी फिरगई हती वाकुं दैवीजीव जानके श्री-ठाकुरजीनें जोरसुं खेंचलीयो सो फेर मंडनब्राह्मण वाको नाम भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेल, तिनकी वार्ता ॥

सो वे पटेल गुजरातमें रहतो हतो सो श्रीगुसां-ईजी गुजरातमें पधारे तब वह पटेल सेवक भयो हतो सो परामें रहतो हतो और गाममें नित्य भगवद्वार्ता सुनवे जातो हतो गामके और पराके बीचमें एक कोसका रस्ता हतो सो नित्य वह पटेल भगवद्वार्ता सुनवे जातो हतो और एकदिन एकादशीको व्रत

हतो सो भगवन्मंडलीमें जागरण भयो सो रातके दो बजे पाछे पटेल उहांसुं चल्यो और रस्तामें आवते एक प्रेत मिल्यो वा प्रेतनें रस्ता रोक्यो जब पटेल पाछें फि-यो फेर आडो आयके प्रेतने रस्ता रोक्यो जब वो पटेल बोल्यो जो तुं कोनहै और क्युं चरीत्र करेंहैं जब वो प्रेत बोल्यो मैं प्रेतहुं तोकुं खाउंगो तब पटेल बोल्यो क्युं खावे नहीं है जब प्रेतनें कही तेरे पास आवुंहुं परंतु आयो नहीं जाय है. जब पटेल बोल्यो जो तूं मोकुं स्पर्श करवेकुं सामर्थ्य नहीं है जब ये सुनके प्रेत दोड्यो और पटेलके पास आयो तब प्रेतके अंगमें अग्नीको दाह होवै लग्यो जब प्रेत पुकारवे लग्यो महापापी हतो ब्रह्मराक्षस हतो ये देखके वा पटेलके मनमें दया आई तब जल लेके प्रेतपर छांट्यो जब वो प्रेतकुं बोलवेकी शक्ती भई और भगवत्स्वरूपको ज्ञान भयो और विचार आयो जो ये कोई महापुरुष है जब प्रेत कहने लग्यो हे वैष्णवराज! मैं तेरी शरणहुं मेरे अपराध क्षमा करो मेरो उद्धार करो तब वा पटेलनें तलावमेंसुं जल लेके और अष्टाक्षर मंत्र पढके वा प्रेतके ऊपर दूसरीवार डा-यो सो तत्काल वे प्रेतयोनीसुं मुक्त भयो और जय जय करतो वैकुंठ गयो सो वे पटेल वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐसो

कृपा पात्र हतो सो वे प्रेत भगवत्पार्षद होयके जिनके चरित्रनकुं वैकुंठमें गायो करतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक निष्किंचन वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे निष्किंचन वैष्णव स्त्री पुरुष मथुराजीमें रहते हते सो आंबके दिन हते सो वे वैष्णव दो पैसाके आंब लेवे गयो सो एक टोकरा आंबको एक मालीके पास हतो सो मालीनें कही आखो टोकरा एक रुपैयामें ल्यो तो देउं तब वा वैष्णवनें रुपयामें वह टोकरा लनो कऱ्यो और टोकरा लेके यमुनाजीके किनारे आंब धोये और आंब धोय धोयके एक एक आंब श्रीठाकुरजीकुं भोग धरते गये और श्रीठाकुरजी आरोगते गये जब सब आंब आरोग चुके तब वा मालीकुं निष्किंचन वैष्णवने कही जो रुपैया रोक नहीं हैं दश पंदरे दिनमें देउंगो तब मालीनें कही मेरे आंब पाछे देवो तब माली आंब ले चल्यो फेर एक दूसरो शेठ गाममें रहतो हतो वाके मनुष्यनें आंब लीये और शेठके घर ले-गयो जब वा शेठनें आंबा लेके भोग धरन लग्यो जब श्रीठाकुरजीनें कही ये आंब तो मैं पहले अरो-गयोहुं अमुक वैष्णवनें मोकुं भोग धऱ्ये हैं तब शेठनें कही हे महाराज! आप रस्तामें केसे आरोगो तब

श्रीठाकुरजीनें कही जो श्रीगुसांईजीकी वाणी सत्य करवेके लीयें आरोग्योहुं श्रीगुसांईजीनें वल्लभाष्ट-कमें कह्यो है ये मारग आपने आपके लीयें प्रकट कऱ्यो है कोई कछु वस्तु कोई ठेकाणें अर्पण करे है सो वस्तु आप साक्षात् वदनकमलमें आरोगोहो ऐंसे मैं मानुंहुं ॥ सो श्लोक--

"प्रादुर्भूतेन भूमौ व्रजपतिचरणांभोजसेवाख्यवर्त्म-
प्राकट्यं यत्कृतं ते तदुत निजकृते श्रीहुताशेतिमन्ये ॥
यस्मादस्मिन् स्थितोयत्किमपिकथमपिक्वाप्युपाहर्तुमिच्छ-
त्यद्धातद्गोपिकेशः स्ववदनकमले चारुहासे करोति ॥१॥"

ऐंसे श्रीगुसांईजीनें कह्योहै जा कोई वैष्णव जा ठेकाणे कछु हमकुं समर्पेंगो सो हम सब अरोगेंगे ये सुनके वे शेठ बहुत प्रसन्न भयो और आंब उठा-यके प्रसादीमें धरे और वा वैष्णवकुं बुलायो और वासुं पूंछी जो तुमने आंब क्युं लाये नहा वानें कही रुपैया रोक नहीं हतो जासुं माली पाछो लेगयो तब शेठनें कही तुमनें आंब तो आरोगायलीये तब ले-वेकी मतलब कहारही जब वो वैष्णव बोल्यो आरो-गवेवारे जाने कें तुम जानो। तब शेठ उठके वा वैष्ण-वके पांवन पऱ्यो और छातीसुं लगाय लीयो और कही श्रीठाकुरजीकी आज्ञा है तुम इहां महाप्रसाद लेवो तब वा शेठके घर वा निष्किंचन वैष्णवनें महा-

प्रसाद लियो सो निष्किंचन वैष्णव ऐंसो कृपा पात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९३ ॥

श्रीगु०से०नानचंद बनिया राजनगरमें रहते हते ति०वा०

सो वे नानचंद द्रव्यपात्र हते और श्रीगुसांईजीकुं पूर्णपुरुषोत्तम जानते हते इतनेमें श्रीगोकुलनाथजीको विवाह आयो तब नानचंदके ऊपर श्रीगुसांईजीनें कुंकुमपत्री लिखी जब नानचंदनें सब देशमें वैष्णवनकुं समाचार दिये सब वैष्णव गुजरातके गोकुलनाथजीके विवाह ऊपर श्रीगोकुल आये सो जितने वैष्वण विवाह पर गये सबनके संग पांच पांच रुपैया भेटके दिये और हजार रुपैयाकी हुंडी भेट पठाई सो सब लोग कहवे लगे नानचंद लोभीहै एक हजार रुपैया भेट पठाईहै ये बात कोईनें श्रीगुसांजीके आगे कही तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो नानचंदके अंतःकरणकी हम जानत हैं वाको भाव गुप्त है लोगनके देखते हजार रुपैया पठायेहैं परंतु दश हजार वैष्णवके संग पांच पांच रुपैया पठाये सो गुप्तरीतिसुं पचास हजार पठायेहैं सो वाके अंतःकरणकी बात हम जानते हैं सो वे नानचंद ऐंसे कृपापात्र हतेजिननें गुप्तरीतिसुं सेवा करी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक डोकरी तिनकी वार्ता ॥

सो वा डोकरीके माथे बालकृष्णजी विराजते हते सो भलीभांतिसुं सेवा करती हती सो एकदिन वा डोकरीको काल आयो डोकरीकुं साक्षात् मूर्तिमान् काल देखायो जब वा डोकरीनें कालसों कह्यो अब मैंतो नहीं आवुं तब काल फिरगयो ऐंसे करके डोकरीनें आठबेर कालकुं फेऱ्यो फेर कालनें धर्मराजासुं कही मैं आठबेर पाछो फिर आयोहुं जब जाउंहुं तब भगवत्सेवामें लगी होवै और दूरसुं मोकुं आवतो देखके हाथसुं नाहीं करे फेर वाके शरीरमें ऐंसो कछु तेज दीखे है कें वाके पास मोसुं गयो नहीं जाय।जब यमराजाने कही वे डोकरी तेरे दंडमें नहीं आवेगी येतो भगवद्भक्तहै कालके माथे पांव धरके भगवल्लीलामें पहोंचेगी फेर एकदिन श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे तब वा डोकरीनें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीकुं पधराय दीये और देह त्यागके भगवल्लीलामें प्राप्त भई सो वे डोकरी कैंसी हती जाने आपकी इच्छासुं देहत्याग करी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक डोकरी तिनकी वार्ता ॥

सो वा डोकरी राजनगरमें रहती हती डोकरीके माथे श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजी पधराय दीये हते

सो भलीभांतिसों सेवा करती हती सो वह डोकरी नि-
ष्किंचन हती वाके घर चमचा नहीं हतो सो सामग्री
सीरी करके नित्य भोग धरती एकदिन वो डोकरी
सामग्री करचुकी हती तब ऐंसी खबर भई कें श्री-
गुसांईंजी पधारे हैं तब श्रीठाकुरजीकुं ताती सामग्री
भोग धरी और चमचाके ठिकाणे एक दातन धऱ्यो
और श्रीठाकुरजीसों बीनती करी जो आप ये
सामग्री दातनसुं सीरी करके अरोगेंगे मैं दर्शन करी
आवुं जब श्रीठाकुरजीकी आज्ञा लेके गई फेर दर्शन
करके आई दोचार वैष्णव वा डोकरीके संग आये
फेर बा डोकरीनें भोग सरायके विन वैष्णवनकुं
दर्शन करायके श्रीठाकुरजी अनवसर करे वैष्णव
डोकरीके संग जो आये हते विननें दातन देख्यो
जब अपने घरमें जायके कोईनें एक कोईनें दोय
कोईनें चार कोईनें पचास कोईनें सो दातन श्रीठा-
कुरजीकुं भोग धऱ्ये सो ऐंसे करते बहुत लोग धरवे
लगे दोचार दिन पीछे एक दिन वैष्णवके घर चाचा-
हरिवंशजी आये सो दातन भोग धऱ्ये देखे जब
पूंछी ये दातन क्युं भोग धऱ्येहै तब वा वैष्णवनें
कही और सब वैष्णव धरेहैं जब चाचाजीनें श्रीगु-
सांईंजीके पास सब वैष्णवनकुं एकट्ठे कऱ्ये और
दातनकी पूंछी सबने कही वा डोकरीके घर देखके

हम सबननें धऱ्ये हैं जब चाचाजीनें वा डोकरीकुं पूछी जब डोकरीनें कही मेरे घर चमचा नहीं हतो सो मोकुं दर्शनकी उतावल हती मैनें एकदिन एक दातन चमचाके ठेकाणे धऱ्यो हतो वादिन इन वैष्णवननें देख्यो है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये डोकरीनें तो ठीक कऱ्यो और तुमनें तो देखादेखी करी सो वाजबी नहीं जासुं वैष्णवकुं भगवत्सेवाकी रीती पूंछके और समझके करनी देखादेखी करनी नहीं देखादेखी करे तो भगवत्सेवामें कहे जो प्रतिबंधहै सो होवै और समझके करेतो भगवत्सेवामें कहेहैं सो फल होवैं जासुं वैष्णवनकुं सेवाकी रीति पूंछके करनी सो वे डोकरी जो सेवा करती सो पूंछके और विचारके करती सो वा डोकरी ऐसी कृपापात्र हती॥वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९६ ॥

श्रीगुसांई०से०एक भगवदीय और एक तादृशीकी वार्ता ॥

सो वे गुजरातके वासी हते जिननें आपसकें परीक्षा लीनी सो भगवदीय वैष्णव राजनगरमें रहते हते और तादृशीवैष्णव धौलकामें रहते हते और एक दूसरेकुं मिलवेकुं मन बहुत करते हते सो एक समय भगवदीयकी बेटीको विवाह आयो तब तादृशी वैष्णवकुं कुंकुमपत्री लिखी जब तादृशी वैष्णव जा समय कन्यादानको समय हतो तब भगवदी-

यके घर आये ता समय भगवदीय लौकिककार्य छोडके और तादृशी वैष्णवकुं मिले और घरमें लायके न्हवायके महाप्रसाद लेवायके और विनकुं सुवायके फेर कन्यादान करवेकुं बैठे फेर दूसरे जब उठावेको समय भयो तब तादृशी वैष्णव श्रीठाकुरजीके मंदिर आगे सूते हते फेर दूसरे दिन भगवदीय वैष्णव न्हायके एक पहरे ठाडे रह्ये परंतु वा तादृशाकु जगायो नहीं मनमें ये जान्यो के इनकुं कैसे जगायो जाय और तादृशी जानके सोय रहै जब पहरे दिन चढ्यो जब जानके उठे जब तादृशीने पूंछी तुम कबके न्हायेहो जब वा भगवदीयनें कही अबी न्हायोहुं जब वो तादृशी मनमें समझ्यो याके भगवदीयपनेंमें कसर नहींहै फेर तादृशी आपने गाम धोलका गयो फेर तादृशी वैष्णवको लग्न भयो तब राजनगरसुं भगवदीय वैष्णवकुं धोलका बुलाय वाही समय वरघोडो पर्णवेकुं चढ्यो हतो वाई समय भगवदीय जाय पहोच्यो तब वे वैष्णव घोडा ऊपरसुं उतरके और विनकुं घरमें लेगये और न्हवाय धोवाय महाप्रसाद लेवायके फेर आयके परणवेकुं बैठे सो वे भगवदीय वैष्णवनें या रीतिसुं परीक्षा लीनी और मनमें कह्यो याके तादृशीपणामें कसर नहीं है सो वे दोउ वैष्णव ऐसे कृपापात्र

हते जिननें एक दूसरेकेलीयें लौकिक कारज छोड दियो और देहकुं अनित्य जानके भगवदीयको मिलाप मुख्य राख्यो ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वै०॥९७॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेलकी वार्ता ॥

सो वह पटेल वैष्णव राजनगरमें रहेतो हतो वा पटेल वैष्णवके दो बेटा हते और एक स्त्री हती और बडे बेटाकी दोय स्त्री हती और छोटे बेटाकी एक स्त्री हती ऐंसे सात मनुष्य श्रीगुसांईजीके शरण आये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे तब छ जनेनको मन तो श्रीठाकुरजीमें लग्यो हतो और एक बड बेटाको मन लौकिकमें बहुत हतो सो कछु भगवत्संबंधी कार्य करतो नहीं हतो और लौकिकमें तद्रूप होय रह्यो हतो एकादिन वाके पितानें एक वैष्णवसुं कही जो याको मन प्रभूमें लगे तो आछो तब वा वैष्णवन कहा जब श्रीगुसांईजी कृपा मेरे ऊपरकरेंगे तब लगेगो फेर बहुत दिन बीते एकदिन वो वैष्णव वा पटेलकी दुकानपर गयो और वाको बडो बेटा चोपडामें नामो लिखतो हतो सो दो तीन घडीसूधी वैष्णव बैठरह्यो परंतु वा पटेलके बडे बेटानें कछु वैष्णवकुं बोलायो नहीं जब वा वैष्णवनें जायके वाके कानमें कही जो ऊठ चेत तीन दिन पीछे तेरो मृत्यु आयो है ऐंसे कहेके वो

वैष्णव चल्यो गयो सो वाको चित्त उदास होय गयो दुकान बंद करके सोय रह्यो कछु खावेमें पीवेमें मन न लगे वैद्यको औषध करें तोहुं लगे नहीं फेर पितासों कही अमके ठेकाणे वैष्णव रहे है वाकुं बुलाय लावो वाकुं जब बुलायवे गये तब वो वैष्णव आनाकानी करके दोदिन आयो नहीं तीसरे दिन आयो जब वाकी नाडी देखके कही जो तुमारे दोघडीमें मृत्यु है कोई दूसरो तुमकुं आवरदा देवै तो बचोगे वानें सब घरकेनसुं पूंछी तब कोईनें आवरदा देनी कबूल करी नहीं फेर वो पटेलको बेटा रोयके कहेवे लग्यो हे वैष्णव मैं तेरी शरण हूं तुम मेरी रक्षा करो जब वा वैष्णवनें कही तु नित्य भगवत्सेवा और भगवत्स्मरण और भगवत्कथामें चित्त राखे तो तेरो काल फिर जायगो तब वानें हाथ जोडके कही अब जो जीवतो रहुं तो दिवस रात भगवत्सेवा तुमारी कृपातें करूं ऐंसो कह्यो जब वा वैष्णवनें आशीर्वाद दियो तब वे मर्‍यो नहीं फेर भगवत्सेवा करन लग्यो जाकुं भगवत्सेवामें ऐंसी आसक्ती भई जैसी लौकिकमें हती जासुं दशगुणी सेवकाई भई सो वे पटेल वैष्णव ऐंसो कृपापात्र भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मा बेटाकी वार्ता ॥

सो वे मा बेटा तीर्थ करवेकुं गये सो तीर्थ करते करते श्रीगोकुल गये सो श्रीगुसांईजीके दर्शन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये तब विन मा बेटानें बिनती करी हमकुं सेवक करो तब श्रीगुसांईजीनें विनको कृपा करके नाम निवेदन करायो और श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लैके श्रीनाथजीके दर्शन कर आये परंतु श्रीगुसांईजी विना एक दिन रहे न सकते वा बेटाकी ऐंसी आसक्ती श्रीगुसांईजीमें भई फेर ऐंसे कितनेक वर्ष श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके पास रहते तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी अब देशमें जाओ तब विननें कही महाराज! आपके दर्शन विना कैसे रह्यो जाय तब श्रीगुसांईजीनें विनकुं ऐंसो स्वरूप पधराय दियो जो आप वा स्वरूपसुं नित्य दर्शन देवें और बातें करें और भोजनकरें शृंगार सेवा करें ऐंसी रीतीसुं वे मा बेटा जन्मपर्यंत श्रीगुसांईजीके स्वरूपकी सेवा घरमें करते और कछु जन्मपर्यंत आसक्ती संसारमें जिनकी भई नहीं वा स्वरूपमें आसक्त रहे और वेगुप्त रीतीसुं सेवा करते कोईकुं खबर न पडी कें जो विनके घर श्रीठाकुरजी बिराजते हैं ऐंसे जन्मपर्यंत गुप्त रीतीसुं सेवा

करी वे मा बेटा ऐंसे कृपा पात्र भगवदीय हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ९९ ॥

श्रीगुसांई॰सेवक देवजीभाई पोरबंदरमें रहते ति॰वार्ता ॥

सो वे देवजी भाई लुवाणा वैष्णव हते सो नित्य भगवद्वार्ता सुनवेकुं जाते हते सो एक दिन देवजी-भाईकुं ज्वर आयो सो सात दिन सूधी प्रसाद लेवायो नहीं और न्हायेहुं नहीं उठे हुं नहीं सातमें दिन सब वैष्णव मिलके देवजी भाईके घर आये और विन वैष्णवनकुं आये जानके देवजी भाईकुं अपार हर्ष भयो और आनंदके आवेशसुं नृत्य करण लगे आनंदके आवेशसुं ज्वर गयो और सर्व वैष्ण-वननें प्रसन्न होयके कहि जो कछु मांगो जब देव-जीभाईनें कही मोकुं जन्मपर्यंत तुमारे भगवदीयको सत्संग न छूटे य मांग्या सो वे देवजीभाईकी सत्सं-गमें ऐंसी आसक्ती हती जैसी सत्संगमें वृत्रासुरकुं हती ॥ यदर्थी श्लोक–

" ममोत्तमश्लोकजनेषु सख्यं संसारचक्रे भ्रमतः स्वकर्मभिः ।
त्वन्माययात्माऽत्मजदारगेहेष्वासक्तचित्तस्य न नाथभूयात्॥"

वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०० ॥

श्रीगुसांई॰से॰स्त्री पुरुष राजनगरवासी तिनकी वार्ता ॥

सो वे स्त्री पुरुष राजनगरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते हते दिवस रात जिनकी वृत्ती श्रीठाकुरजीमें

हती और वैष्णव आये गयेको सत्कार बहुत करते ता पाछे एक समय दुष्काल पड्यो अन्न बहुत महेंगो हतो घास मिलतो नहीं हतो सो एकदिन वा वैष्णवके घर गेहूं खरीद लाये हते सो घरके चोकमें डारे हते सो एक गाय दूबरी बहुत हती सो आयके खावे लगी जब वे गाय हाके सो जाय नहीं जब वा वैष्णवकी स्त्रीने गाय हातसुं सरकाई जब गाय पडगई सो गायके प्राण छूट गये वा वैष्णवकुं बहुत पश्चात्ताप भयो सब वैष्णवननें वाके माथे हत्याको दोष देके दूर कऱ्यो तब वा स्त्री पुरुषनें अन्नजलत्याग कियो और प्राण छोड देवें ऐंसो विचार कियो दो दिन पीछे श्रीगोकुलनाथजी राजनगर पधारे सब वैष्णव दर्शनकुं गये तब या बातकी श्रीगोकुलनाथजीकुं खबर परी जब श्रीगोकुलनाथजी परमदयालु अशरणशरण भक्तवत्सल दीनबंधु पतितपावन ऐंसे आपको बिरद विचारके या वैष्णवनकुं बोलायो वाकुं सब बात पूंछी और दूसरे वैष्णवनकुं पूंछी सब वैष्णवनकी बात सुनके ऐंसी आज्ञा करीकें याके माथे हत्या नहीं है जब वा वैष्णवकुं आज्ञा करीकें तूं जायके सेवा कर और निष्किंचन वैष्णवकुं बुलायके प्रसाद लेवाय जब वा वैष्णवनें ऐंसे कऱ्यो फेर श्रीगोकु-

ीनाथजीनें वा वैष्णवके हाथको जल अरोगे सो वे वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो अवगुण छिपायो नहीं वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०१ ॥

श्रीगुसां० से० दोउ पटेल राजनगरमें रहेते ति० वार्ता ॥

सो वे दोनोंभाईविननें भाईलाकोठारीके घरमें श्रीगुसांईजीके पास नाम पाये हते और नित्य भगवद्वार्ता सुनवे जाते और विनकेपर ऐंसी कृपा हती जो भगवद्वार्ता सुनते सो कंठ होय जाती ऐंसे करते करते बहुत दिनमें सुबोधनीजी सर्व कंठाग्र होय गई फेर वे दोउभाई श्रीगोकुल आय रहे और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये फेर श्रीगुसांई-जीकी आज्ञा लैके ब्रजयात्रा करवे गये और फेर श्रीनाथजीके दर्शन करके श्रीगिरिराजकी तरेटीमें कोठडी लेके रहे और नित्य श्रीनाथजीकी सेवा करते और भगवद्वार्ता करते और भगवद्वार्ताके आवेशमें आवते तब श्रीनाथजी आयके सुनते और कहते और श्रीनाथजीकुं दोउभाई बिना रह्यो नहीं जाय जैसे गायकुं बछडा विना रह्या नहीं जाय या रीतीसुं श्रीनाथजी विनके पाछें फिरते सो वे दोउ भाई पटेल श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक श्रोता वक्ता दोनोनकी वार्ता ॥

सो वे श्रोता वक्ता अपने देशमेंसुं श्रीगोकुल गये सो श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करे और श्रीगुसांईजीके मुखारविंदसुं कथा सुनवे लगे और सुनके दिवस रात भगवद्वार्ता कर्‍यो करते सो भगवद्रसमें ऐंसे लीन होय जाते पांच पांच सात सात दिन विनकुं देहकी शुद्धी न रहती ऐंसे भगवदावेशयुक्त होय जाते सो कोईदिनमें विन दोऊ जनेनकी देह छूटी जब अग्नि संस्कार वैष्णवननें कर्‍यो तब एक श्रोता वैष्णवके हाडकानमें छेद देखे तब वैष्णवननें श्रीगुसांईजीकुं विनती करी जो महाराज या श्रोता वैष्णवके हाडनमें छेद क्युं पडगये तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो या वैष्णवकुं भगवद्वार्ता सुनवेकी ऐंसी आतुरता हती जो याके रोम रोममें श्रवण होयजाते और भगवद्वार्ता सुनवेकी उत्कंठा रोम रोममें होजाती भगवद्वार्ता सुनवेकी ऐंसी आतुरता चहिये ये बात सुनके वैष्णव बहुत प्रसन्न भये सो वे श्रोता वक्ता ऐंसे कृपापात्र हते॥ वा०सं०॥वै०॥१०३

श्रीगुसांईजीके सेवक एक बनिया तिनकी वार्ता ॥

सो वह बनिया वैष्णव गुजरातमें रहते हते सो श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसुं करते और वैष्णव आवते तिनकी टहेल भली भांतिसुं करते और

घरमें भगवद्वार्ता होती और वाके गाममें देवीको मंदिर हतो सो वे देवी वाके घर भगवद्वार्ता सुनवेकुं आवती और कोई देखतो नहीं हतो और ये वैष्णव देखतो सो एकदिन वा वैष्णवके घर वैष्णव आये तब वरसाद बहुत भई हती लकडी सब भीज गई हती रात बहुत गई हती सो वा वैष्णव लकडी लेवेकुं चल्यो रस्तामें देवीको मंदिर हतो अंधारी रात हती सो देवी दरवाजामें बाहेर निकलके ठाडी हती देवीनें कही वैष्णव कहां जाओहो जब वा वैष्णवनें कही लकडी लेवे जाउंहुं जब देवीनें कही अंधारी रात और वरसाद पडे है लकडी कहां ढूंडोगे और मेरे कमाड नये करनेहैं जासुं एकजूनो कमाड उतार लेजाओ जब वा वैष्णवनें एक कमाड उतार लियो और घरमें टूकटूक करके लेगयो और काम चलायो सब सामग्री करी और वैष्णवनकुं महाप्रसाद लेवायो वा वैष्णवके परोसमें एक ब्राह्मण रहतो हतो वा ब्राह्मणकी स्त्रीनें वा वैष्णवकी स्त्रीसुं पूंछी जो तुमारे लकडी छाणा सब भीज गये बरसादमें तुम लकडी कहांसुं लाये वा स्त्रीनें कही हमतो देवीके कमाड उतार लायेहें फेर दूसरे दिन वा ब्राह्मणकी स्त्रीनें अपने पतिसुं कही देवीके कमाड तुमहु उतार लावो तब वा ब्राह्मण देवीके

कमाड रातकुं उतारवे गयो जब वाके कमाडसुं हाथ चोंट गये सो हाथ छूटे नहीं वे ब्राह्मण तो बहुत दुःखी भयो और एक पहर सूधी ठाढो रह्यो कछु उपाय लगे नहीं जब वा ब्राह्मणकी स्त्री पतीकूं ढूंढवे गई उहां जायके देखे तो पतीकी ये व्यवस्था भईहे तब वाकी स्त्रीनें कमाडकुं पकडके पतीके हाथ छुडावन लगी जब स्त्रीके हाथहुं चोंट गये जब वे स्त्रीपुरुष दोनों रोवन लगे और देवीकी प्रार्थना करन लगे सो आखीरात रोयो करे जब दोघडी रात रही तब देवी बोली जो तुम मेरे दो कमाड नये कराय द्यो और तुमारे परोसमें बानिया वैष्णव रहे हें वाके घर एक भारो लकडीनको नित्य पहोंचावो तो तुमकु छोडुं जब वा स्त्रीपुरुषनें ये बात कबूल करी फेर वे ब्राह्मण ब्राह्मणी घरमें आये, नये कमाड करायके देवीके मंदिरकुंलगाये और बानिया वैष्णवके घर लकडीको भारो नित्य पोहोंचावन लगे ऐंसे करत करत चातुर्मास बीत गयो और बानियावैष्णवके घर लकडा बहुत होयगये तब वा बानिया वैष्णवनें ब्राह्मणकुं कही अब लकडी मत लाव मैं देवीकुं कहूंगो तब वा बानिया वैष्णवनें देवीसों कही जो अब या ब्राह्मणकुं छोड द्यो तब देवीनें छोडदियो तब वा ब्राह्मणनें बानिया वैष्णवकु कही

जो देवी तुमारो कह्यो मानेहैं याको कारण कहो तब वा बनियानें कही जो वैष्णवधर्म ऐंसोहीहै तब वा ब्राह्मणनें कही हमकुं वैष्णव करौ तब बनियावैष्णवनें वा ब्राह्मणकुं श्रीगोकुल पठायो तब वे स्त्रीपुरुष श्रीगोकुलमें जायके श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीनाथजीके दर्शन करके और सेवा पधरायके फेर देशमें आये सो वे बनियावैष्णवके ऊपर श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपाहती जिनसुं श्रीठाकुरजी बोलते चालते ऐंसे परम कृपापात्रहते॥वार्ता सं.वै.॥१०४॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वेश्या, तिनकी वार्ता ॥

जाको माधवदाससों स्नेह हतो वा वेश्याकुं जबसुं माधवदासनें त्याग करी तबतें वे लूण और टिकडा खाती हती और घी नहीं खाती हती और शाक दाल चावल तेल बिगेरे खाती न हती ऐसे करते बारह बरस बीते तब श्रीगुसांईजी पधारे जब वह वेश्या दर्शनकुं गई और श्रीगुसांईजीके मनुष्यनसों कही जो श्रीगुसांईजीकुं बीनती करो मोकूं शणर लेवें. मनुष्यननें कही जो श्रीगुसांईजी तुमकुं शरण नहीं लेवेंगे जब वेश्यानें अन्न जल छोड दियो और प्राण छोडवेको संकल्प कऱ्यो दोदिन भये जब वानें अन्न जललियो नहीं तब उहांके वैष्णवननें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो जा

दिनतें माधवदासजीनें वाको त्याग कियो है वा दिनतें यानें वेश्यापनो छोड्योहै और वादिनसुं नोन टिकडा खायहै और आपके पधारवेकी बाट देखे है बारें वर्ष भये हैं और आपने वाकुं शरणलेवेकी नाहीं कही है जासुं वह देह छोडे है यातें आप कृपाकरके वाकुं शरणलेवेंतो ठीक। सब वैष्णवनकी बीनती सुनके श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो याकुं अबी बुलावो और याकुं शरण लेउंगो तब वा वेश्याकुं वैष्णव बुलायलाये और श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन करायो और भगवत्सेवा पधराय दीनी तबतें वेश्या श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करन लगी और तरहतरहके शृंगार और सामग्री करके श्रीमदनमोहनजीकुं अंगीकार करावन लगी फेर कितनेक दिन पीछे श्रीगुसांईजीकी कृपातें श्रीमदनमोहनजी सानुभाव जनावन लगे सो वे वेश्या ऐंसी परम कृपापात्र भगवदीय हती॥वार्ता॥सं०वै०१०५

श्रीगुसांईजीके सेवक पटेल वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे पटेल गुजरातमेते एक संग श्रीगोकुल जातो हतो सो वा संगमें पटेल गयो रस्तामें घास खोद लावे और बेचके निर्वाह करे सो श्रीगोकुल गयो और घास खोदवेकी दरात बेचके श्रीगुसांईजीकुं भेट करी श्रीगुसांईजीतो अंतरयामी है तब

वा पटेलकुं बुलावें और पास बैठावें तब दूसरे वैष्ण-
वननें कही यामें कहा गुण है याकुं बुलावोहो तब
श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी यानें सर्वस्व अर्पण कर्‍यो
है जासुं श्रीठाकुरजी याके ऊपर बहुत प्रसन्न हें
दो दिनसूधी भूखो रह्यो और हातनसुं घास खोद
लायो जब दरात लीनी कोईकी आशा नहीं राखे
है ऐसे निष्किंचन वैष्णव हमकुं बहुत प्रियहैं सो
श्रीगुसांईजीनें सर्वोत्तमजीमें श्रीमहाप्रभुजीको नाम
कह्यो है सो "स्वार्थोज्झिताऽखिलप्राणप्रियः" या-
को अर्थ-संपूर्ण स्वार्थ जिननें त्याग कर्‍यो हैं ऐसे जो
वैष्णव है प्राणनसों प्रिय जिनकुं सो वे पटेल श्रीम-
हाप्रभुजीकुं प्राणनसों प्यारे लगेहें ऐसेनके हृदयमें
श्रीठाकुरजी बिराजे हें जासुं याके भाग्यकी कहा
बडाई करनी सो पटेल वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो॥
वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०६ ॥

श्रीगुसां० सेवक वेणिदास और दामोदरदास ति० वार्ता॥

सो वे दोनों भाई राजनगरमें कपडा खरीद करने
गये उहां श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसां-
ईजीकुं पधरायके सूरत गाममें लाये और सब घरके
मनुष्यनकुं नाम निवेदन कराये फिर सब कुटुंब
लेके ब्रजयात्रा गये और ब्रजमें श्रीठाकुरजी पध-
रायके सेवा करन लगे और कुटुंब सगरो देशमें

पाछे पठायो और वे दोउ भाई उहां रहे सांझ और सवार और मध्याह्न श्रीगुसांईजीकी खवासी करते और रसोई करते और श्रीठाकुरजीकी सेवा करते एक दिन श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके आज्ञा किये जो कछु मांगो। तब विन दोउ भाईननें कही जो हरि गुरु वैष्णव तीनोंके ऊपर हमारो सरखो भाव रहें और तीनोंके दास हम होयके रहें य मांगे. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके आज्ञा दीनी जो ऐंसेही होयगो तब ऐंसे करते पांच सात वर्ष उहां रहे फिर विनके बेटानकुं द्रव्य बहुत मिल्यो तब विनके बेटा कुटुंब सहित ब्रजमें आयके विन दोउ भाईनकुं और श्रीठाकुरजीकुं सूरत गाममें पधराय लाये सब मिलके सेवा करन लगे हरि गुरु वैष्णवकी सेवा सिद्ध होवै लगी इच्छा आवे जैसे मनोरथ करन लगे सो वे दोनों भाई ऐंसे कृपापात्र भगवदीय भये और जैसे जो मनोरथ करते श्रीठाकुरजीकुं पूंछके करते और संसारमें आसक्त न हते द्रव्यमें जिनको चित्त नहीं हतो केवल श्रीगुसांईजीके चरणारविंदमें जिनको चित्त हतो इनके भाग्यकी बहोत बडाई कहांताईं कहिये श्रीगुसांईजी जिनकी सराहना करते ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ १०७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्रजवासीकी वार्ता ॥

एक समय श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे सो जामनगरमें एक बनिया सो जोडा बेचतो सो वाकी दुकानपर ब्रजवासी जोडा लेवे गये सो जोडालिये और वाकुं पैसा देवे लगे जब वा बनिया और काम लग्यो हतो तब वा ब्रजवासीकी बात सुनी नहीं तब वा ब्रजवासीनें वा बनियाकुं लात मारी और पैसा दिये फेर दूसरेदिन वा बनियाने वा ब्रजवावासीकुं देख्यो जब बनियाके मनमें आई जो मैं देवीको उपासी हुं और जाकुं कहुं जो मरजा सो मनुष्य मरजायहै या ब्रजवासीकुं काल्ह मैंनें मरजायवेको शापदियो हतो सो ये मर न गयो याको कारण कहा तब वा बनियानें अपनी देवीकुं पूंछी जो वह ब्रजवासी मऱ्यो नहीं याको कारण कहा? तब देवीनें कही येतो वैष्णव है यासुं तो मैं डरपुहुं वैष्णवसुं तो ब्रह्मा रुद्र शेष लक्ष्मी इत्यादिक सब डरपेहैं तब वा बनियानें कही मैंहुं वैष्णव होउंगो फेर जायके वा ब्रजवासिसों मिलके श्रीगुसांईजीके शरण गयो नामनिवेदन करके रीतिभांती शीखके श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो सो वे ब्रजवासी श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपा-

पात्र हतो जिनकुं देवी प्रतिबंध न करसकी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक बनियाकी वार्ता ॥

सो वे बनिया देवीकी उपासना छोडके ब्रजबासीके संगतें वैष्णव भयो तबतें जोडा बेचनेको धंदा छोडदियो जब वाकुं दश पंधरे दिन सेवा करते भये हते वाकुं एक ब्राह्मणवैष्णव मिल्यो सो वह बनिया वैष्णव अपने घर लायो और आदरसत्कार कऱ्यो और अनसखडी महाप्रसाद लिवायो पाछें वा ब्राह्मणकुं खबर पडी जो ये बनिया थोडेदिन पहले मोचीको धंदो करतो हतो तब वाके मनमें बहुत ग्लानी उपजी जो या बनियाके हाथकों क्यूं खायो तब वा ब्राह्मणकुं कोढ निकस्यो तब वा ब्राह्मण बडो दुःखी भयो तब श्रीगुसांईजीके पास वह ब्राह्मण गयो और जायके सब बात कही तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी हरिदासकी बेटीके घर जाओ वे तुमारो उपाय करेगी तब वह ब्राह्मण हरिदासजीकी बेटीके घर आयो तब हरिदासजीकी बेटीकुं सब बात कही तब हरिदासजीकी बेटीनें मनोरथ करके वैष्णवनकुं बुलाये और ध्वजा चढाई और सब वैष्णवनकुं प्रसाद लिवायो तब वैष्णवनकी जूठण वा कोढवाले ब्राह्मणकुं लिवाई तब वा ब्राह्मणका कोढ

मिट गयो वैष्णवनकी जूठनको प्रताप श्रीभागवतमें लिख्योहै नारदजीनें व्यासजीसों कहीहै सो श्लोक–

"ते मय्यपेताखिलचापलेऽर्भके दांतेऽधृतक्रीडनकेऽनुवर्तिनि ॥ चक्रुः कृपां यद्यपि तुल्यदर्शनाः शुश्रूषमाणे मुनयोऽल्पभाषिणि ॥ १ ॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदितो द्विजैः सकृत्स्म भुंजे तदपास्तकिल्बिषः॥एवं प्रवृत्तस्य विशुद्धचेतसस्तद्धर्म एवात्मरुचिः प्रजायते ॥ २ ॥"

चार महापुरुष चातुर्मासमें एक ठेकाणे रहे हते विनकी टहेल नारदजीकी मा करती हती और जूठन लायक खाती हती और बेटाकुं खवावती हती वा जूठनके प्रतापसुं नारदजी कहेहें व्यासजी मैं नारद भयोहुं और साक्षात् भगवत्स्वरूपको अनुभव करुंहुं और भगवदवतारनमें गिनती भईहै सो भगवदीयकी जूठनको ये प्रताप हैं तब वे ब्राह्मणको कोढ मिट गयो और वैष्णवधर्मकुं सर्वोपर जानन लग्यो सो वे बनिया श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र भयो जाके वृथादोष देखेतें वा ब्राह्मणकुं तुर्त कोढ भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १०९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक श्रीनाथजीके बीनकारकी वार्ता॥

सो वे बीनकारजी श्रीनाथजीके पास बीन बजावते हते और महाप्रसाद लेते हते और अधिकी महाप्रसाद मिलेतो वैष्णवनकुं लेवाय देतेहते फेर

कोई समय बीनकारके विवाहको दिन आयो जब बीनकारनें विचार कियो परदेशमें जायके कछु द्रव्य लाऊंतो ठीक विवाहको काम चलजाय तब श्रीनाथजीनें ऐंसे विचाऱ्यो जो ये बीन बहुत आछी बजावेंहें न जायतो ठीक। तब श्रीनाथजीनें वाकी बीनमें सोनाकी कटोरी धरदीनी सवारे बीन बजावे आये सो बीनमेंसु कटोरी निकसी तब बीनकारनें श्रीगुसांईजीके आगें जायके बीनती करी जो ये कटोरी मेरी बीनमेसुं निकसीहै तब श्रीगुसांईजी जानगये जो श्रीनाथजीनें दीनी होयगी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुमनें परदेश जायवेको विचार कियोहै सो श्रीनाथजीकी आज्ञा नहीं है जासुं तुम मतिजाओ तुमारो कारज होवै इतनो द्रव्य हमारे पास ल्यो तब वा बीनकारनें बीनती करी जो मैं देवद्रव्य और गुरुद्रव्य नहीं लेऊंगो आपकी कृपातें सब कारज सिद्ध होऐंगे तब वा बीनकारजीनें विचार कियो अब परदेश जानो नहीं जो इच्छा होयगी सो होवेगो तब गुजरातमेंसों संग आयो और वा संगमें एक वैष्णव हतो वाकुं बीनकारजीकी बातकी सब खबर पडी तब वानें बीनकारकुं बुलायके वाको विवाह रुपैया पांचसौ खर्चके कर दियो तब श्रीनाथजी बहुत प्रसन्न भये सो वे

बीनकारजी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिन विना श्रीनाथजीकुं रह्यो न गयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक प्रेमजीभाई लुवाणाकी वार्ता ॥

सो वे हालारमें रहेते हते सो वे प्रेमजीभाई ब्रजयात्रा करवेकुं गये सो उहां जायके श्रीगुसांईजीके सेवक भये और ब्रजयात्रा करके श्रीनाथजीके दर्शन करके फेर प्रेमजीभाईनें श्रीगुसांईजीसुं बीनती करी जो महाराज मोकुं सूक्ष्म सेवा पधराय देवें तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके वस्त्रसेवा पधराय दीनी फेर प्रेमजीभाई श्रीठाकुरजी पधरायके देशमें आये फेर भलीभांतीसुं सेवा करन लगे फेर एकदिन प्रेमजीभाईके मनमें ऐंसी आई जो और वैष्णवनके इहां तो स्वरूप बिराजेहें और अपने इहांतो वस्त्रसेवा है सो श्रीठाकुरजी कैंसे अरोगत होएंगे फेर उत्थापनके समय ऐंसे दर्शन भये जितने वस्त्रजीमें तारहते सब स्वरूपात्मक दीखवे लगे जब प्रेमजीभाईकुं ऐंसे दर्शन भये तब प्रेमजीभाईनें मनमें निश्चय कियो जो श्रीठाकुरजीके स्वरूप सब एकहिंहैं मोकुं वृथा संदेह होवेहें तब प्रेमजीभाईको संदेह श्रीठाकुरजीनें सब मिटाय दियो सो वे प्रेमजीभाई ऐंसे कृपापात्र हते॥वार्ता सं०॥वैष्णव॥ १११

श्रीगुसांईजीके सेवक वृंदावनदास छबीलदासकी वार्ता ॥

सो वे दोउ भाई आगरेमें रहते हते तब वे दोनों भाई संतदासजीके घरमें भगवद्वार्ता सुनवे जाते हते सो वे नित्य कथा प्रसंग सुनते हते एकादिन ऐंसो प्रसंग आयो जो नामनिवेदन विना भगवत्प्राप्ति नहीं होवेहै और भगवत्सेवाको अधिकार न होवे तब विन दोनों भाईननें ऐंसो नेम लियो जो नाम निवेदन विना जल न लेनो सवारे उठके श्रीगोकुल गये सो रातकुं श्रीगोकुल पहोंचे तब श्रीगुसांईजीके दर्शन किये दंडवत करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो महाप्रसाद ल्यो तब विननें बीनती करी जो हमनें रातसुं ऐंसो नेम लियो है जो नामनिवेदन विना जल न लेनो. तब श्रीगुसांईजी विनकी आर्त देखके कृपा करके नाम सुनाये और जल लेवेकी आज्ञा करी फेर दूसरे दिन श्रीनवनीतप्रियाजीके संनिधान निवेदन करवायो तब वे दोनों भाईनकुं बहुत आनंद भयो फेर श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो अब हमारे कहा करनो? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी भगवत्सेवा करो और आगरेमें हृषीकेशजीको सत्संग करो. तब सुनके बहुत प्रसन्न भये तब श्रीठाकुरजीकी सेवा माथे पधराई और भली भांतिसुं सेवा

करन लगे और वृंदावनदास और छबीलदास ऐसे कृपा पात्र भये जिनकुं निवेदनकी ऐसी आरात भई जिनसों एक दिन रह्यो न गयो तातें इनके भाग्यको पार नहीं ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक धोबी तिनकी वार्ता ॥

सो वे धोबी श्रीनाथजीके वस्त्र धोवतो हतो सो श्रीगुसांईजीनें एक दिन देख्यो तब श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो तुम ऐसो प्रयत्न करके श्रीनाथजीके वस्त्र धोवे है सो इनको तूं कहा स्वरूप जाने है तब वा धोबीनें कही जो महाराज ये वस्त्र श्रीनाथजीके श्रीअंगको स्पर्श भये हैं सो साक्षात् भगवत्स्वरूप है और मैंनें इन वस्त्रनको स्पर्श कियो हें सो मैंहुं भगवत्स्वरूप होउंगो तब श्रीगुसांईजीनें हँसके कही अस्तु फेर वा धोबीकी देह छूटी जब भगवत्स्वरूप होय गयो मारवाडमें एक राजाके गाममें राजाके इहां वे धोबी श्रीठाकुरजी भयो तब सेवा पूजा प्रतिष्ठा बहुत भई और बडे वैभवसुं राजा सेवा करन लग्यो तब वा गाममें चाचाहरिवंशजी गये और एक बनियाकी दुकानपर उतरे तब वा बनियाने वा गामके श्रीठाकुरजीकी बहुत बडाई करी फेर चाचाजीनें संगके वैष्णवनसुं कही चलो देखें कहा है तब चाचाजी देखके कही ये तो श्रीनाथजीको धोबी है

परंतु दिव्यदृष्टीसुं देख्यो जायहै तब चाचाजीनें माथो धुणायो तब राजा सेवा करतो हतो तब राजानें देख्यो तब राजानें मनुष्य पठायके चाचाजीकुं बुलवायो और कही जो तुमनें माथो क्युं धुणायोहै. तब चाचाजीनें सब बात कही तब राजानें कही जो ये बात मेरे मानवेमें कैंसे आवै?तब चाचाजीनें कृपा करके वा राजाकुं दिव्यदृष्टी दीनी तब वा राजाकुं सब पदार्थ अलौकिक दीखवे लगे जैसे अर्जुनकुं श्रीठाकुरजीनें दिव्य नेत्र दिये. जब वानें श्रीठाकुरजीको विश्वरूप देख्यो और जैसे प्राचीनबर्हिराजाकुं नारदजीनें दिव्य दृष्टी दीनी तब जितने पशु यज्ञमें मारे हते सो सब पशु दीखवे लगे ऐंसे चाचाजीनें श्रीगुसांईजीकी कृपातें वा राजाकुं दिव्यदृष्टी दीनी तब वे ठाकुरजी राजाकुं धोबी दीखे तब वे राजानें तत्काल चाचाजीसुं बीनती करी मोकुं शरण ल्यो तब चाचाजीनें श्रीगुसांईजीकुं पधरायके वे राजा और राजाको गाम सब श्रीगुसांईजीके सेवक कराये सो वे धोबी श्रीनाथजीके वस्त्र धोवत धोवत तद्रूप भयो वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११३ ॥

श्रीगुसां० से० एक राजा धोबी ठाकुरजी सेवतो ति० वा० ॥

जब राजाकुं श्रीठाकुरजी धोबी निश्चय भयो

तव राजानें चाचाजीकुं कही जो श्रीगुसांईजीकुं पधरावो तब श्रीगुसांईजीकुं पधरायके राजा वैष्णव भयो और भगवत्सेवा करन लग्यो और भगवद्वार्ता करन लग्यो और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो चाचाजी सदैव मेरे पास रहें तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी जो वर्ष एकमें पांचदिन तुमारे पास चाचाजी रहेंगे तब राजानें कह्यो जो महाराज पांच दिन बारह महिनामें आवें तो मेरो निर्वाह कैसे होय तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीमद्भागवतमें कह्यो है एकक्षणभर चाचाजी जैसेनको सत्संग होवे तो वाके बरोबर स्वर्गको सुख और मोक्षको सुख वा एकक्षणभरके बरोबर नहीं होवेहैं। सो श्लोक-

" तुलयामि लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥ "

सो या श्लोकमें कह्यो है एक क्षणभर जो भगवत्संगीके संगको सुख है वाके बरोबर और कोई सुख नहीं सो तुमकुं तो पांच दिन प्रतिवर्ष ये सुख मिलेगो तब राजानें हाथजोडके बीनती करी महाराज एक वर्षतो जरूर चाचाजीकुं मेरे पास राखें तब श्रीगुसांईजीने हां कही फेर एकादिन वा धोबी ठाकुरनें राजासुं कही जो मोकुं तुमारे श्रीठाकुरजीके मंदिरके गोखलामें बैठाय देवो और एक

पाताल महाप्रसादकी मोकुं नित्य धराय देवो और मेरो सब वैभव उठायके श्रीनाथजीके उहां पठाय देवो तब राजानें वैसेंही कर्‍यो और एक वर्ष सूधी चाचाजीनें उहां रहेके राजाकुं सब रीति पुष्टिमार्गकी सिखाई सो वह राजा श्रीगुसांईजीको ऐसो भगवदीय भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेलको बेटा और पटवारीकी बेटी तिनकी वार्ता ॥

सो वे दोउनको बालपनेसों आपसमें स्नेह बहुत हतो तब वे पटवारीकी बेटीको विवाह भयो और परदेशमें सासरे गई सासरे जायवेके समय वाके सगे पहोंचायवे गये और पटेलको बेटाहु गयो जब वे सब पहोंचायके पाछे फिरे तब पटेलको बेटा एक झाडपर चढके वाकी गाडी देख्यो कर्‍यो जब वे गाडी दूर गई तब पटेलके बेटाकुं विरहताप भयो तब वाके प्राण छूटगये तब वा वृक्षके नीचे वा पटेलके बेटाको चोतरा बनायो फेर बहुत दिन बीते पीछे पटवारीकी बेटी पीहरमें आई सो वा वृक्षके नीचे गाडी ठाडी राखी और पूंछ्यो ये चोतरा इहां क्युं बन्योहै.तब लोगनने सब समाचार कहे तब वा पटवारीकी बेटीको प्राण छूटगयो तब वाको चोतरा वा वृक्षके नीचे बनायो फेर थोडे दिन पाछे श्रीगुसां-

ईजी वा देशमें पधारे और वा वृक्षके नीचे डेरा किये सो वा वृक्षके ऊपर दोनों भूत होयके रहे हते सो विननें श्रीगुसांईजीको पधारे जानके मनमें विचार कऱ्यो हमारो उद्धार होवै तो ठीक, तब वे दोनों रातकुं श्रीगुसांईजीके डेराकी चौकि देवे लगे सिपाईनकुं जायके कही तुम सोय जावो हम चौकि करेंगे तब सिपाईनें पूंछी तुम कौनहो तब विननें अपनी सब बात कहि. तब वा सिपाईनें आयके बीनती करी श्रीगुसांईजी विनकुं देखवे पधारे जब श्रीगुसांईजीकी दृष्टि विन भूतनके ऊपर पडी तब वे दोनों भूतयोनीसुं छूटके दिव्य रूप होय गये और श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके विनको दृष्टिद्वारा नाम निवेदन करायो और आपके प्रताप बलसुं तुरत भगवल्लीलामें प्रवेश कराये सो वे श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वार्ता सं०वै०॥ ११६॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दो प्रेत उद्धरे तिनकी वार्ता ॥

एक समें श्रीगुसांईजी गुजरात पधारते हते एक गाम बाहरे डेरा कियो श्रीगुसांईजी कोई दिन वा गाममें पधारे नहीं हते जब सांझ पडगई तब श्रीगुसांईजीनें डेरा कियो तब उहां दो प्रेत रहते हते सो विननें विचार कियो जो श्रीगुसांईजी इहां पधारेहैं इनके शरण जाय तो कल्याण होय तब वे

दोउ प्रेतननें श्रीगुसांईजीके जलघरियाकुं दिखाई दीनी तब जलघरियानें श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो महाराज या कूवामें दोय प्रेत ठाढेहैं विनकी दृष्टीको जल अपने काम आवेके नहीं तब श्रीगुसांईजी देखवेकुं पधारे तब वे दोनों प्रेतननें साष्टांग दंडवत करी तब श्रीगुसांईजीनें विनकुं ऊपर कृपादृष्टी करके नामनिवेदन करायो सो तत्काल प्रेतयोनीसुं छूटके भगवल्लीलामें गये तब वा गाममें वैष्णव रहते हते विनने श्रीगुसांईजीसुं पूंछी जो ये दोनों आगले जन्ममें कौन हते तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये दोनों आगले जन्ममें स्त्रीपुरुष कान्यकुब्ज ब्राह्मण हते और मर्यादामार्गके वैष्णव हते सो मर्यादारीतिसुं सवा करते हते जब वा ब्राह्मणकी देह छूटवे लगी तब वाकी स्त्रीनें पूंछयो जो अब मैं कैसे करूं तब वा ब्राह्मणनें कही तुं अन्न-जल त्यागके देह छोड दीजो सो वा स्त्रीनें वैसेहि कऱ्यो सो वानें भगवत्सेवा छोडके देह त्याग करी और वाके पतीनें देहत्यागको रस्ता बतायो या अपराधसुं दोनों प्रेत भये सो अब इनको उद्धार भयो है जासुं वैष्णवकुं सहज भगवत्सेवा न छोडनी और कोईकुं भगवत्सेवा छोडावनीहु नहीं भगवत्से-वाके आगे सब धर्म तुच्छ हैं यासुं अधिकी कोई

धर्म नहीं है श्रीठाकुरजीनें गीतामें कही है श्लोक-- "सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज" इत्यादि वचनतें भगवत्सेवाके आगे सब धर्म तुच्छ हैं प्रह्लादजीनें कही है ॥ सो श्लोक--

"देवोऽसुरो मनुष्यो वा यक्षो गंधर्व एव च ।
भजन् मुकुंदचरणं स्वस्तिमान् स्याद्यथा वयम् ॥"

या रीतिसुं भजनसो सेवा याके सब धर्म तुच्छ हैं ये सुनके सब वैष्णव बहोत प्रसन्न भये सो वे दोनों प्रेत श्रीगुसांईजीकी कृपातें भगवल्लीलामें गये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक राजा जोतसिंहजी तिनकी वार्ता ॥

सो वे राजाके पुरोहितको बेटा बडो पंडित हतो और भगवद्धर्ममें कुशल हतो और श्रीगुसांईजीको सेवक हतो और भगवल्लीलाको अनुभव करतो हतो एकदिन राजाके पास गयो तब राजा रासाई देवीकी पूजा करतो हतो तब वा पुरोहितनें राजासुं कही जो ऐंसी देवीतो हजारन पंढरपुरमें जल भरेहैं तब वा राजानें कही मोकुं दिखायदे फेर वे राजा और पुरोहितको बेटा पंढरपुरमें आये श्रीविठ्ठलनाथजीके दर्शन किये और वैभव कछु देख्यो नहीं तब वा पुरोहितसुं कही जो मेरी देवीको वैभव जितनो है यासुं बीसमो भाग श्रीविठ्ठलनाथजीको नहींहैं

तुम मोकुं काहेकुं लायेहो तब वा पुरोहितनें श्रीगु-
सांईजीकी कृपातें वा राजा जोतसिंहकुं दिव्यदृष्टी
दीनी तब श्रीविट्ठलनाथजीके सब वैभवके दर्शन
होवै लगे अनेक प्रकारकी रचना और अनेक प्रका
रकी कुंज और अनेक प्रकारके मनुष्यनकुं सेवा
करते और अनेक प्रकारके वैभव रत्नजडित स्तंभ
किवाँड सब दीखवे लगे तब राजा देखके विस्मित
होय गयो और पुरोहितके बेटाके पांवन पऱ्यो
फेर पुरोहित वा राजाको हाथ पकडके दूसरी आडी
लेगयो उहां देखे तो हजारन स्त्री जलभरके आवे हैं
और सब स्त्रीनसुं पाछे वा राजाकी रासाई देवी
जलभरके आवती हती सो वे राजानें देखी तब
राजानें देवीसुं पूंछ्यो जो ये कहाहे सो वा देवीनें
कही जो मैंतो सेवा करुंहुं तेरे कछू पूंछनो होवै
सो पुरोहितसुं पूंछ लीजो मैं तो अबी सेवामें जाउंहुं
ऐंसे कहिके वे देवी चलीगई फेर राजाके पुरोहितनें
दिव्यदृष्टि खेंचलीनी तब साधारण रीतिसुं जैसे
नित्य दर्शन होते ऐंसे श्रीविट्ठलनाथजीके दर्शन
होवै लगे तब वे राजा हाथ जोडके पुरोहितसुं कह्यो
जो मोकुं तुमारो सेवक करो तब पुरोहितनें कही
जो मैं अडेलमें श्रीगुसांईजीको सेवक भयोहुं विनकी
कृपातें असाधारण सुख होवै है तुमहुं श्रीगुसांईजीके

शरण जाओ तो सब कारज सिद्ध होवेंगे तब राजा पुरोहितकुं संग लैके अडेल जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो आर नामनिवेदन किये जब श्रीठाकुरजी पधरायके ब्रजमें श्रीनाथजीके दर्शन करके वे राजा अपने घर आयो और पुरोहितकुं पास राखके सब सेवाकी रीतिसुं सीखी और स्नेहसुं भगवत्सेवा करन लगे थोडेदिन पीछे श्रीगुसांईजीकी कृपातें श्रीठाकुरजी सानुभाव जतावन लगे सो वे राजा पुरोहितके संगतें भगवदीय भयो ॥ वार्ता संपूर्ण वैष्णव ॥ ११७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दोउ विरक्त तिनकी वार्ता ॥

सो एक विरक्त ताद्दशी भगवदीय हतो और एक साधारण हतो ताद्दशी भगवदीय परदेश जायवे लग्यो तब वा साधारण वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी अब मेरे कहा करनो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम याके संग परदेश जावो और याको सत्संग करौ ये कहे जैसे करौ तब वा वैष्णवनें काहि जो आज्ञा सो ताद्दशी भगवदीय परदेश चल्यो तब वो दूसरो विरक्त ताद्दशीके संग चल्यो सो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लैके चल्यो रस्तामें एकादिन ताद्दशी भगवदीय पाछे रह्यो और साधारण आगे चल्यो सो एक गाम हतो वा गाममें बैठ रह्यो सो जहां बैठो

हतो वाके परोसमें वेश्याको नृत्य होवे लग्यो और साधारणवैष्णव देखने लग्यो सो ऐंसो मग्न भयो जो कछु देहकी सुद्धी रही नहीं फेर वो तादृशी भगवदीय वाकुं ढुंढवे निकस्यो ढूंढत ढूंढत वा गाममें आयके मिल्यो परंतु वो वेश्याको नृत्यमें ऐंसो मग्न हतो जो कछु वैष्णवकुं पहेचान्यो नहीं फेर वैष्णव वाकुं बहार खेंच लेगयो तोहुं कछु सुद्धि आई नहीं, फेर भगवदिच्छासुं वा तादृशीके पावनकी रज उडी सो पवनसुं वाके मुखमें गई तब वाको विषयावेश मिट्यो तब वाको चेत भयो फेर सुद्धि आई देखे तो वे तादृशी पास ठाडे है उठके वाके संग चल्यो फेर कोईदिन श्रीगुसांईजीके पास जब गये तब वा तादृशीनें श्रीगुसांईजीसु सब समाचार कहे फेर श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो याकुं वेश्याकी रजको स्पर्श भयो हतो जासुं आवेश आयगयो फेर तेरे चरणकी रजको स्पर्श भयो जब याको विषयावेश उतर्‍यो सो वैष्णवकी चरणरजको ऐंसो माहात्म्य है जिनके पांवनकि रजकुं ब्रह्मा और शिव और शेष और सनकादिक इच्छा करे हैं परंतु प्राप्ति नहीं होवे है ऐंसे वैष्णवके पांवनकि रजसों विषयावेश मिटे यामें कहा आश्चय है सो तादृशी वैष्णव सुनके

चुप होय गयो सो वे वैष्णव ऐंसे कृपापात्र हते ॥
वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११८ ॥

श्रीगुसां० सेवक एक ब्राह्मणी अडेलमें रहती ति० वार्ता ॥

सो वे ब्राह्मणीकुं श्रीगुसांईजीनें नामनिवेदन करायके आज्ञा करी जो श्रीनवनीतप्रियाजीकी परिचारगी करो सो परिचारगी करन लगी एक दिन दारकी तपेलीमें माजती वखत दाग रहिगयो तब कोईकुं खबर न परी तब श्रीनवनीतप्रियाजीकुं राजभोग धरवेकुं श्रीगुसांईजी पधारे तब श्रीनवनीतप्रियाजीनें कही जो राजभोगकी सामग्री छिवायगईहै तपेलीमें दाग रहिगयोहै तब श्रीगुसांईजीनें दूसरी सामग्री कराई और श्रीनवनीतप्रियाजीकुं समर्पी और वा ब्राह्मणीकुं यमुना पार उतार दीनी वे ब्राह्मणी यमुनाजीके घाटपर झूपडी बनायके पडी रहती और घाटपर गाय भेंस आवें सो गोबर थापे और उपला बेचे घाट उतरवेकुं लोग आवै उहां रसोई करे विनकुं उपलादेवे ऐंसे करके वो ब्राह्मणी निर्वाह करे परंतु गोबर बहुत हतो जासुं उपलानको ढगला बहुत होयगयो एकदिन एक व्रजवासी नाव लैके उपला लेवेगयो तब वा ब्राह्मणीसुं पूंछो ये उपला बेचेगी? तब वा ब्राह्मणीनें व्रजवासीकुं पहचान्यो तब वा ब्राह्मणीनें कही उपला

काहेको चहिये मंदिरके लिये चाहते होवै तो लैजावो सब श्रीगुसांईजीके हैं मैहुं श्रीगुसांईजीकी दासीहुं तब ये सुनके उपला भरायके नाव लेगयो तब श्रीगुसांईजीने पूंछी ये सुंदर उपला कहांसु लायोहै तब वा ब्रजवासीनें वा ब्राह्मणीकी दंडवत कही और सब समाचार कहे तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये और आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मणीकुं बुलाय लावो फेर वे ब्रजवासी दूसरी नाव लेगयो और उपला भरके वा ब्राह्मणीकुं संग ले आयो फेर वे ब्रह्मणीनें श्रीगुसांईजीके दर्शन कऱ्ये बहुत दिन भये हते तब अपनो दोष विचारके आंखनमेंसुं जलबहेवे लगगयो श्रीगुसांईजी देखके वा ब्राह्मणीकुं धीरज दीनी और आज्ञाकरी जो रोवो मति अब श्रीनवनीतप्रियाजी तुमारे ऊपर प्रसन्न भयेहैं जावो परिचारगीकी सेवा करो फेर वे ब्राह्मणी अत्यंत श्रद्धासहित बहुत संभारराखे परिचारगी करन लगी थोडेदिन पीछे श्रीनवनीतप्रियाजी अनुभव जतावन लगे और वा ब्राह्मणीके ऊपर कृपाकरके बोलन लगे फेर एक दिन श्रीनवनीतप्रियाजीके खीरमें मेवा थोडो हतो सो वा ब्राह्मणीकुं श्रीनवनीतप्रियाजीनें आज्ञा कीनी जो खीरमें मेवा थोडो हैं तब ब्राह्मणीनें श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी तब श्रीगुसांईजी सुनके बहुत

प्रसन्न भये और विचार किये जो याके धन्यभाग्य है श्रीनवनीतप्रियाजीनें ऐंसी कृपा करीहैं सो वे ब्राह्मणी श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपापात्र हती जाकुं काढ दीनी तोहुं दोष न आयो और सदैव वा ब्राह्मणीको चित्त श्रीगुसांईजीके चरणारबिंदमें रहतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ११९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दुर्गादास तिनकी वार्ता ॥

सो वे दुर्गादास पूरवदेशमें रहते सो तीर्थयात्रा करवेकुं आये तब वे दुर्गादास श्रीगोकुलमें आये तब श्रीगुसांईजी यमुनाजीके घाटपर विराजते हते तब साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम कोटिकंदर्पलावण्यस्वरूपके दर्शन भये तब दुर्गादासनें श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी जो महाराज मोकुं शरण लेयो मैं बहुत जन्मसुं भटकतहुं तब श्रीगुसांईजीकुं दया आइ तब कृपा करके नामनिवेदन कराये फेर दुर्गादास व्रजमें बहुत दिन रहे और श्रीगोवर्धननाथजीके सेवा दर्शन किये फेर दुर्गादास विदा होयके देशकुं गये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे जिनके संगते बहुत वैष्णव भये और श्रीठाकुरजी दुर्गादासके पास बालककीसी न्याइं जो चाहे सो मांग लेते और बाललीलाको संपूर्ण अनुभव करा-

वते सो वे दुर्गादास ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक चतुरविहारी तिनकी वार्ता ॥

सो चतुरविहारी श्रीगोकुलमें आये हते और श्रीगुसांईजीके दर्शन किये तब श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी मोकुं शरणलेउ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन करायो तब श्रीनवनीतप्रियाजीके राजभोगको समय हतो और चतुरविहारीकु लीला सहित दर्शन भये तब चतुरविहारीनें नयो पद बनायक गायो सा पद--"कीयें जो चटक मटक ठाडो रहत न घटपर" ये पद गायो--और य सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये तब श्रीगुसांईजीनें जाण्यो के श्रीनवनीतप्रियाजीनें इनकुं लीलाको अनुभव करायो तब श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये फेर चतुरविहारीजी श्रीजीद्वारमें आयके श्रीगुसांईजीके संग श्रीनाथजीके दर्शन किये तब मंगलाको समय हतो चतुरविहारीनें नये पद गाये और राजभोगके समय श्रीनाथजीके संनिधान चतुरबिहारीजीनें पद गायो सो पद--"अनत न जईएहो पिये रहिये मेरे मेहल" ये सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये सो वे चतुरविहारी श्रीगुसांईजी पोढते तब पंखा करते और पद गावते सो वे चतुरबिहारी श्रीगुसां-

ईंजीके चरणाबिंदकी जन्मपर्यंत सेवा करते हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक क्षत्राणीकी वार्ता ॥

सो श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब वा क्षत्राणीनें बीनती करी महाराज मोकुं शरण ल्यो तब श्रीगुसांईजीने मनुष्यनकुं समस्या करिके कही याकुं न्हवाओ सो न्हायके श्रीगुसांईजीके संनिधान आई जब श्रीगुसांईजी नाम सुनायवे लगे तब वा क्षत्राणीके मनमें ऐसी आई जो श्रीगुसांईजी ऊंचे स्वरसुं बोलें तो ठीक तब श्रीगुसांईजी वाकुं धीरे धीरे नाम सुनावन लगे परंतु वे क्षत्राणी जानके बोले नहिं तब श्रीगुसांईजी हेला करके बोले जो सुनेहे के नहीं तब वे क्षत्राणी बोली जो आपके वचनामृत सुनवेके लीयें मैं जानके नहीं बोलीहुं तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये तब वा क्षत्राणीकुं नाम निवेदन कराये फेर श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगी थोडेदिन पीछे श्रीठाकुरजी वा क्षत्राणीकुं यशोदाजी जैंसो अनुभव करावन लगे श्रीठाकुरजी घरमें जैसे यशोदाजीसुं बालचेष्टा करते जैसे वा क्षत्राणीसुं बालचेष्टा करनलगे सो वे क्षत्राणी ऐसी परम कृपा पात्र हती॥वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव१२२

श्रीगुसांईजीके सेवक माधवदास कपूर तिनकी वार्ता ॥

सो माधवदास आगरेमें रहेते एकसमय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे सो जनार्दनदास चोपडा क्षत्रीके घर उतरे उहां माधवदासजी दर्शनकुं गये सो साक्षात् श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन भये तब माधवदास देखके विस्मित भये तब श्रीगुसांईजीसुं बीनती करी महाराज! मोकुं शरणल्यो तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन करायो और सेवा पधरायदीनी तब माधवदासजी सेवा करन लग सेवा करते करते माधवदासजीकुं श्रीठाकुरजीकी लीलाको अनुभव भयो कोईसमय तो श्रीनाथजी रासलीलाके दर्शन करावते और कोई समय दानलीलाके दर्शन करावते और कोई समय बाललीलाके दर्शन करावते ऐंसि अनेक प्रकारकी लीलानके दर्शन माधवदासजीकुं होते सो वे माधवदासजी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते।वै०१२३

श्रीगुसांईजीके सेवक भीष्मदास क्षत्रीकी वार्ता ॥

सो भीष्मदास पूर्वदेशमें रहेते सो तीर्थयात्रा करवेकेलियें श्रीगोकुल आये सो श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी मोकुं शरण लेउ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके भीष्मदास और भीष्मदासके कुटुंबकुं नाम निवेदन करायो

और भीष्मदासनें श्रीनाथजीके दर्शन किये और दर्शन करके बहोत प्रसन्न भये और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी महाराज मोकुं भगवत्सेवा पधराय दीजे तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके पधराय दीनी और श्रीबालकृष्णकी सेवा भीष्मदास भलीभांतिसुं करन लगे फेर एकदिन भीष्मदासजीकुं श्रीबालकृष्णजीनें स्वप्नमें कही जो हमकुं नयो मंदिर करायदेवो तब भीष्मदासजीनें श्रीगोकुलमें नयो मंदिर करायो और श्रीगुसांईजीकुं बीनतीकरके और श्रीठाकुर-जीकुं नये मंदिरमें पधराये और भीष्मदास तथा विनकी स्त्री भलीभांतिसुं सेवा करन लगे और जन्म-पर्यंत श्रीगुसांईजीके चरणारबिंद छोडके कहुं गये नहीं और भीष्मदास नित्य सांझके समें रमणरे-तीमें जाते और उहां रासलीला आदिक सब लीला-नके दर्शन होते सो वे भीष्मदास परम कृपा पात्र भगवदीय भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक नारायणदास सनाढ्य ब्राह्मणकी वार्ता ॥

सो वे नारायणदास अन्योरगाममें रहेते हते नारायणदास श्रीगुसांईजीके दर्शन करवेकुं आये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन दिये तब नारा-यणदास श्रीगुसांईजीके शरण आये और नित्य श्रीनाथजीकी सेवा कर्‍योकरते तब नारायणदा-

सकुं लौकिकमें सगे दुःख बहुत देते. तब नारायण-दास श्रीगोकुलमें आयके रहे और जन्मपर्यंत श्रीनवनीतप्रियाजीकी सेवा करतेरहे विन नारायण-दासकुं सेवामें ऐंसी आसक्ति हती जैसे अफीमखाय-वेवालेकुं अफीम विना रह्यो न जाय ऐंसे नारायण-दासजी सेवाविना न रहसकते और श्रीनवनीतप्रियाजी विनकुं सूते जगायके सेवा करावते और सेवाके समय विनके पास आयके बैठते और बातें करते और सेवा करवावते सो नारायणदास श्रीगुसांई-जीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १२५

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव जमनादास
दक्षिणमें रहेते तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव दक्षिणमें रहेते हते एक समय श्रीगुसांईजी दक्षिण पधारे हते तब वे जमनादास श्रीगुसांईजीके सेवक भये हते और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे वा देशमें म्लेछनको राज हतो जब चैत्र महीना आयो तब एक माली गुला-बके फूल बेचवे आयो और वे जमनादासजी फूल-नके शोकी बहुत हते फेर वा मालीसों वा जमना-दासनें पूंछी जो या फूलनको कहालेवेगो ? तब वाने कही एक रुपैया लेऊंगो तब उहां एक तुर्क आयो वानें कही फूल हमारे सरदारकुं चहिये मैं दो रुपैया

देऊंगो तब जमनादासनें पांच कहे तब वा तुर्कने दस कहे ऐंसे आपसमें दोउ जने बढवे लगे जब लाख रुपैया सूधी बधे तब वे जमनादास लाख रुपैया देके एक फूल लाये और लायके श्रीठाकुरजीकी पाग ऊपर धरायो वाई समय श्रीगुसांईजी गिरिराजजी ऊपर श्रीनाथजीको शृंगार करते हते तब श्रीनाथजी झुक झुकजांएं तब श्रीगुसांईजीनें पूंछचो जो बावा! क्यूं झुकोहो? तब श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं कही जो आपके सेवक जमनादास दक्षिणमें रहेहें सो वानें लाख रुपैयामें एक फूल लेके अपनें श्रीठाकुरजीकुं धरायो है सो वाके भावके बोझसुं लचक लचक जाउंहुं ऐंसो वाको भावहै जानें मेरे लीयें एक फूलके लाख रुपैया खरचेहें ये बात सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और वा वैष्णवकुं श्रीगुसांईजीने पत्र लिखके एक व्रजवासी पठायो जो तुमनें अमकेदिन फूल धरायो है सो श्रीगोवर्धननाथजीनें अंगिकार कियो है ये समाचार वा जमुनादास वैष्णवके पास पहोंचे सो पत्र बांचके बहुत प्रसन्न भयो और पांचलाख रुपैयाको हीरा लेके श्रीगुसांईजीकुं पठायो सो वे जमुनादास वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते। द्रव्यकुं तुच्छ जाणते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक बंगाली तिनकी वार्ता ॥

सो वे गोडिया वृंदावनमें रहतो हतो और मजूरी करतो हतो एक समय श्रीगुसांईजी वृंदावन पधारे तब वे श्रीगुसांईजीको सेवक भयो तब वाकुं वैष्णव जानके लोग मजूरी अधिकी देवे लगे तब वानें अपने मनमें विचार कियो जो धर्म बेचके खानो सो अनुचितहै शास्त्रमें लीख्योहै जो भगवानके नाम लैके भिक्षा मांगे सो भिक्षा देवेवाले नरकमें जाय. जासुं धर्म देखायके भिक्षा और रोजगार करनों नहीं ये बिचारके वो गौडिया जब मजूरी करवे जातो तब तिलकमुद्रा धोतो और कंठी छिपाय राखतो ऐसे धर्म गुप्त राखके मजूरी करतो फेर एकदिन वो तिलक धोवते भूलगयो और मजूरी करवेकुं तैयार भयो तब श्रीठाकुरजी बोले जो तिलक धोयके जावो. ये सुनके बहुत प्रसन्न भयो फेर नित्य श्रीठाकुरजी वासुं बातें करते और सब सुख देते वे गौडिया श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२७ ॥

श्रीगुसांई० से० एक ब्राह्मण भागनगरमे रहते ति०वार्ता ॥

सो वे एक समय श्रीगुसांईजी दक्षिण पधारे और वा ब्राह्मणकुं वेद पढते देखे तब श्रीगुसांई-जीनें विचाऱ्यो ये ब्राह्मण वेदको पाठ बहुत आछो

करे है परंतु कछु समझे नहीं है कछु समझेतो आछो इतनेमें वा ब्राह्मणके मनमें ऐंसी आई जो इनकी शरण जाऊं तो ठीक। तब वह ब्राह्मण श्रीगुसांईजीके शरण गयो और कथा सुनवे लग्यो तब श्रीगुसांईजीकी कृपातें वा ब्राह्मणकुं वेदको अर्थ स्फुरित भयो तब वह ब्राह्मण श्रद्धासहित वेदको पाठ करन लग्यो तब एक दिन श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसों ऐंसी आज्ञा करी जो ये ब्राह्मण हमारे निज मंदिरके आगे नित्य वेद पढे तब शृंगारसुं लेके राजभोग पर्यंत नित्य निजमंदिरके आगे वेद पढतो और कहुं अक्षर और मात्रा भूले तो श्रीठाकुरजी आयके बतावते वे ब्राह्मण ऐंसो कृपापात्र भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १२८ ॥

श्रीगुसांई० सेवक माधुरीदास माली तिनकी वार्ता ॥

सो वे माधुरीदास नित्य फूल वीनके हार कर लावते सो एकदिन श्रीनाथजीनें माधुरीदासकुं शिखायो जो तूं या रीतिको हार गूथ,तब माधुरीदासनें हार तैयार करके श्रीगुसांईजीकुं दियो. तब श्रीगुसांईजीनें मुखियाकुं दियो तब मुखियानें श्रीनाथजीकुं धरायो सो वह हार बडो बहुत भयो तब मुखियानें श्रीगुसांईजीसों कही जो हार बडो है तब श्रीगुसांईजीनें माधुरीदाससों कही नित्य तुम हार करो

हो आज ऐंसो क्युं कऱ्यो? तब माधुरीदासनें कही जो मोकुं श्रीनाथजीनें पास बैठके शिखायोहै तब श्रीगुसांईजी आप न्हायके हार धरायवेकुं पधारे तब श्रीनाथजीकुं हार धरायो तब हार पूरो भयो तब श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीसुं पूंछी याको कारण कहा ? तब श्रीनाथजीनें तीनकारण बताये एक तो तुमारे हाथ विना कोईको हाथ सुहाय नहीं है और दूसरो कारण ऐंसो हार रतननको चहिये सो बनवाओ ३ रे कारण ये मुखियाके मुखसुं वास आवे है. तब तें श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी मुखियासुं लेके जितने सेवक हैं सो सब मुख बांधके सेवा करौ वा दिनतें सब सेवक मुख बांधके सेवा करें हैं सो वे माधुरीदास माली श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वै० १२९॥

श्रीगुसां० सेवक धर्मदास सो अडींगमें रहते ति० वार्ता ॥

सो वे धर्मदास आंखनसुं नहीं देखते हते श्रीगुसांईजी नित्य घोडापर बैठके श्रीजीद्वार पधारते और श्रीगोकुलतें दोय घडीमें गोपालपुर आवते और गोपालपुरसुं दोय घडीमें श्रीगोकुल पधारते ऐंसे आवजाव नित्य होती एक दिन श्रीगुसांईजी अडिंगसुं बाहर निकसे रस्तामें एक आंधरो ब्राह्मण ठाढो हतो और घोडा वाके ऊपर आवे लग्यो तब श्रीगुसांईजीनें घोडो थाम्यो तोहु वह ब्राह्मण घब-

राय गयो रस्तामेसुं इतउत जाय न सक्यो तब श्रीगुसांईजीकुं बहुत दया आई तब श्रीगुसांईजीनें नीचे उतरके वाके नेत्रऊपर जल छांटयो तब वाके नेत्र खुलगये तब श्रीगुसांईजी तो घोडाऊपर अस्वार होयके गोपालपुर पधारे तब वह ब्राह्मणहुं पीछे पीछे धीरे धीरे गोपालपुर पोहोंच्यो और जायके श्रीगुसांईजीके दर्शनकर्‍ये और बीनती करी रस्तामें आपने मोकुं नेत्र दिये हैं मैं वोही ब्राह्मण हुं मोकुं शरण लेवो तब श्रीगुसांईजीनें दूसरे दिन वा ब्राह्मणकुं नाम निवेदन करायो और श्रीनाथजीके दर्शन कराये और श्रीगुसांईजीनें कृपा करके ग्रंथ पढाये जहां सूधी वाकी देह रही तहां सूधी वे उहांही रहे तब थोडे दिनमें वाकी देह छूटी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो धर्मदास बहुत आछो वैष्णव हतो॥ वै० १३०

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव हतो जाने खोटे कर्म करके श्रीगुसांईजीकी परीक्षा लीनी, तिनकी वार्ता ॥

सो एक दिन चार वैष्णव मिलके भगवद्वार्ता करते हते और श्रीगुसांईजीको प्रताप वर्णन करते हते तब एक अन्यमार्गी बोल्यो मेरो उद्धार करें तब खरी बात है तब वैष्णवननें कही तेरो उद्धार करेंगे यामें संदेह नहीं है तब वैष्णवनकी बात सुनके और श्रीगुसांईजीके पास जायके सेवक भयो फेर

जायके श्मशानमें बैठो और उहांही रसोई करके खावे ऐसो भ्रष्ट भयो फेर आयके विन वैष्णवनसों कहे मैं ऐसे कर्म करुं हुं अब श्रीगुसांईजी मेरो उद्धार करेंगे तो खबर परेगी. ये समाचार विन वैष्णवननें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी तब श्रीगुसांईजी कछु बोल्यो नहीं. फेर एक राजा हतो तीर्थ करतो करतो श्रीगोकुल आयो तब वा राजानें श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो महाराज! मोकुं गलित कोढ भयोहे मैनें औषध बहोत कीयेहें सो मिट्यो नहींहे और फेर तीर्थ करवेके लीयें निकस्योहुं तोहु रोग मिट्यो नहींहे अब आप कछु उपाय बतावें तो मिटेगो. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो हमारो सेवक अमुकगाममें श्मशानमें बैठाहे बाकी जूठन खावोतो मिटजायगो. तब वे राजा श्रीगुसांईजीकी बातपर विश्वास राखके वा गाममें जायके और उहां श्मशानमें गयो और वासुं जूठन मांगी तब वानें नाहीं कही जब वे खायवे बैठो और थोडो खायवो रह्यो तब राजानें औरसुं वाकी पातलमेंसुं उठायके जूठन खाई तब तत्काल वा राजाको कोढ मिटगयो और देह निर्मल भई. फिर वानें राजासु पूंछी जो याको कारण कहाहे ? तब वा राजानें श्रीठाकुरजीकी सब बात

वाके आगें कही फिर वाके मनमें बहोत पश्चात्ताप भयो जो मैं ऐंसो भ्रष्ट हुं तोहुं श्रीठाकुरजी मोकुं याद करेंहें और मेरेमें इतनी सामर्थ्य धरदीनीहे फेर वो वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास जायके अपराध क्षमा कराये और रोयवे लग्यो तब श्रीगुसांईजीनें शास्त्र प्रमाणें प्रायश्चित्त करायके फिर वाके ऊपर कृपा करके वाकुं सेवा पधराय दीनी तब वो भगवत्सेवा करन लग्यो भगवत्सेवाके प्रतापतें वाको चित्तनिर्मल होयगयो और श्रीठाकुरजीके चरणारविंदमें चित्त लग्यो वह परीक्षा करवे आयो तोहुं श्रीगुसांईजीनें वाकुं छोडचो नहीं ऐंसे परम दयाल हते ॥ वै० ॥ १३१

श्रीगु० से० एक राजा पूरव देशमें रहतो तिनकी वार्ता॥

सो वे राजा अन्य मार्गीहतो और वाके देशमें वैष्णव रहते विनकी निंदा करतो ऐंसे कहेतो जो वैष्णव मार्ग आछो नहींहै पेहेले दूसरे वैष्णवकुं प्रसाद लेवावेहें और पीछे आप खावेहें जासुं ये सबको जूठन खावेंहें तब ऐंसे कहेके फिर लोगनसुं कहे वैष्णव तो उच्छिष्टभोगी है ऐंसे कहके निंदा बहु-त करतो तब तो वैष्णवनकी निंदा श्रीठाकुरजी सही नहींसके तब वा राजाकुं कोढ भयो जैसें जैसें राजा निंदा करे तैसें तैसें कोढ बढतो जाय तब आखो शरीरमें कोढ बढगयो तब राजा बहुत दुःखी भयो

बहुत औषध कऱ्ये और कर्मविपाक देखके प्रायश्चित्त कऱ्ये परंतु कोढ तो बढतो जाय तब वा राजाकुं वैष्णवननें कही जो तुम तीर्थयात्रा करो तब राजा तीर्थयात्रा करवे निकस्यो और जा तीर्थमें जाय जैसी विधि और जैसे दान लिखे होवें वैसे करे ऐसे करतेकरते श्रीगोकुल आयो श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और कोढ संबंधी बीनती करी. तब श्रीगुसांईजी तो अंतर्यामीहै सो जानगये जो यानें वैष्णवनकी निंदा करीहै यातें कोढ भयोहै तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी श्मशानमें हमारो सेवक बैठोहै बिनकी जूठन खावोगे तो तुमारो कोढ मिटैगो तब वा राजानें वैसेही कियो सो जूठन लेतेही कोढ मिटगयो जैसे सूर्यउदयतें अंधकार मिट जाय जैसे अमृत पीयेतें मृत्युको भय मिटजाय जैसे ज्ञान भये ते संसार मिटजाय जैसे भक्तीके उदयतें त्रिविधताप मिटजाय ऐसे जूठनलेतमात्रसुं कोढ मिटगयो सो वा राजाकी देह निर्मल भई तब श्रीगोकुल आयके श्रीगुसांईजीके सेवक भये और वीनती करी महाराज मैंने वैष्णवनकी निंदा बहुत करीहै तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवको द्वेष बहुत बुरो है श्रीठाकुरजी और श्रीमहाप्रभुजी वैष्णवनको अपराध क्षमा नहीं करें वैष्णवको अप-

राध वैष्णवसुं क्षमा होवै है जासुं हमनें वैष्णवके पास तुमारो अपराध क्षमा करायो है सो श्रीठाकुरजीनें गीताजीमें कह्यो है—श्लोक ॥

"अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मंतव्यः सम्यग्व्यवहितो हि सः ॥"

या प्रकारसुं गीताजीमें कह्यो है जो दुराचारी होवै और अनन्य होयके मोकुं भजतो होवै वाकुं साधु समझणो वाने भलो निश्चय कर्‍यो है जासुं वैष्णवकी निंदा करनी नहीं यह सुनके वा राजानें अपनो अपराध क्षमा करायो और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो दिन दिन वा राजाकुं सत्संग लगतो गयो तैसे भगवद्भाव बढतो गयो तब वा राजाके ऊपर श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये सो श्रीगुसांईजीकी कृपातें अनुभव भयो सो वे राजा ऐसो कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक शेठको बेटा और दासी तिनकी वार्ता ॥

सो वह शेठ श्रीगुसांईजीको सेवक हतो सो वह शेठकी देह छूटी तब अपने घर दासी हती सो बेटा और ठाकुरजीकी सेवा वा दासीकुं सोंपगयो हतो सो वो शेठको बेटा दासीकुं माजी कहेतो सो एक समय वा गाममेसुं वैष्णव श्रीनाथजीद्वार जायवे लगे तब वह शेठके बेटानें कही माजी ! मैं

यात्रा जावुंहुं तब वा दासीनें कही तुम अबी श्रीनाथजीके दर्शनकुं मति जावो. श्रीनाथजीकी इच्छा नहीं है तब वो शेठको बेटा मान्यो नहीं और वा संगमें चल्यो गयो रस्तामें एक राजाको गाम आयो वा राजाके गाममें सरकारके मनुष्यनके संग वा साहुकारके बेटाकी लडाई भई तब वा गामके राजानें आखो संग कैद कर्यो दोदिन पाछे सब संगकुं छोड दियो और एक शेठके बेटाकुं कैद राख्यो और वे संगतो श्रीजीद्वार गयो श्रीनाथजीके दर्शन करे और यात्रा करके फेर देशकुं आये तब रस्तामें वो गाम आयो तब वह शेठको बेटा कैद हतो सो वे संगवालननें वा राजाकुं कहेके छुडायो फेर वाके गाम आयो तब वा दासीकुं कही जो माजी! मोकुं श्रीनाथजीके दर्शन न भये उलटो दुःख पायो तुमारी कृपा होवेगी तब श्रीनाथजी दर्शन देवेंगे फेर वा दासीकुं दया आई तब वा शेठके बेटाकुं कही जो तुम वैष्णवनकी टहेल करो तब तुमकुं श्रीनाथजी दर्शन देवेंगे तब शेठको बेटा वैष्णवनकी टहेल करन लाग्यो सो जो वैष्णव आवै तिनकुं न्हवावे और महाप्रसाद लिवावे और पंखा जलपान करै और पांवदाबे आखोदिन आपके अंगसुं टहेल करे एकादिन तादृशी भगवदीय अद्भुतदासजी आये

तब विनकी टहेल बहुत करी तब वा अद्भुतदासनें कही कछु मांगो. तब वा शेठके बेटानें कही मोकुं श्रीनाथजीके दर्शन होवें और व्रजयात्रा होवे फेर अद्भुतदासनें कही होवेंगे श्रीगुसांईजीकी कानतें श्रीनाथजी दर्शन देवेंगे तब वह शेठको बेटा दासीकुं संग लेके श्रीनाथजीके दर्शनकुं गयो और जायके दर्शन करे और श्रीगुसांईजीके दर्शन करे फेर वा दासीनें श्रीगुसांईजीकूं बीनती करी जो महाराज ! याके करममें दर्शन नहीं हते और वैष्णवनकी कृपासुं भये हैं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी श्रीनाथजी वैष्णवनके वशमेंहे वे चाहेतो ब्रह्मांड फेरडारे जब वैष्णव प्रसन्न होवै तब कर्मरेख खोटी खरी सब मिटजाय ऐंसे श्रीगुसांईजीके बचन सुनके वह दासी बहुत प्रसन्न भई तब वे शेठको बेटा यात्रा करके अपने घर आयो और सेवा करन लग्यो वह दासी और शेठको बेटा ऐंसे कृपापात्र हते। वै० १३३

श्रीगुसांईजीके सेवक रूपा पोरिया तिनकी वार्ता ॥

सो रूपा पोरिया श्रीनाथजीकी सिंघपौरीपर बैठते हते और रातकुं धौल गावते हते एक दिन गोविंदस्वामीने कही जो तुम धौल मत गाओ तुमारो राग आछो नहीं है तब विननें न गायो तब श्रीनाथजीकुं आखीरात नींद न आई सवारे जब श्रीगुसां-

ईजीनें श्रीनाथजीकुं जगाये तब श्रीनाथजीके नेत्र लाल देखें फिर श्रीनाथजीसों श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो आपकुं उजागरा क्यूं है? तब श्रीनाथजीनें कही जो रूपा नित्य धोल गावे हैं जब हमकुं नींद आवे हें सो रात्रकुं गायो नहीं जासुं नींद नहीं आई तब रूपाकुं श्रीगुसांईजीनें कही जो तेनें धोल क्यूं नहीं गायो तब रूपापोरियानें हाथ जोडके कही जो गोविंदस्वामीनें नाहीं करी है तब गोविंदस्वामीसों श्रीगुसांईजीनें कही तुमनें रूपाकुं गायवे की नहीं क्यूं करी? श्रीनाथजीकूं नींद नहीं आई. तब गोविंदस्वामीनें कही जो मोकुं ये खबर नहीं हती जो खांड आर गुड एक भाव है तब श्रीगुसांईजीनें कही कर्म तें कृपा न्यारी है॥ तब गोविंदस्वामी चुप कर रहे तब रूपापोरिया नित्य धोल गाते तब श्रीनाथजीकुं नींद आवती ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

एक दिन रातकुं श्रीनाथजीकुं भूंख लगी तब श्रीनाथजीनें रूपापोरियाकुं लात मारके जगायो और आज्ञा करी जो मोकुं भूंख लगी है तब रूपापोरियानें श्रीगुसांईजीकुं जगायके बीनती करी तब श्रीगुसांईजी न्हायके सामग्री लेके भीतर पधारे और श्रीनाथजीकुं अरोगाये फेर रूपापोरियापर श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये ऐंसे अनेक प्रकारकी

लीला रूपापोरियासूं श्रीनाथजी करते और केतनेक लोग ऐसे लिखेहैं जो रूपापोरिया श्वान भये सो ये बात झूठी है कारण जो जानके अन्नप्रसादी रूपापोरिया खाय नहीं और अजानको इतनो दंड होय नहीं जासुं ये बात सर्वथा झूठी है वे रूपापोरिया श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वै० १३४

श्रीगुसांईजीके सेवक एक चूहुडो, तिनकी वार्ता ॥

सो वह चूहुडो गोवर्धनमें रहेतो हतो सो श्रीनाथजी नित्य बिलछूकुंड पर खेलवे पधारते और वे चूहुडो नित्य घास खोदवे जातो तब श्रीनाथजीनें वाकुं दर्शन दिये नित्य श्रीनाथजीवासुं बातें करते एक दिन वह चूहुडो गोपालपुर सूधीश्रीनाथजीके संग बातें करते आयो तब श्रीगुसांईजीनें देख्यो तब श्रीगुसांईजीनें बोलायके वाकुं पूंछी श्रीनाथजीनें तोसुं कहा बात करी तब वानें कही महाराज वनकी बात करते हते नित्य मोकुं आपकी कृपातें वनमें दर्शन देवे हें और जा दिन मोकुं दर्शन न होवै वा दिन में अन्न जल नहीं लेऊंहुं तब दूसरे दिन सवारकुं आयके दर्शन दे जाएं और कोई दिन रातकुं दर्शन दे जाएं ये सुनके श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनकुं कही जो राजभोगकी माला बोले तब याकुं सबसुं पेहले दर्शन कराय देवो ये करके बहार

जाय तब औरनकू करावो सो वे मनुष्य ऐसे करनलगे फेर एक दिन वह चूहडो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमाणें आय न सक्यो राजभोग होयचुके और ताला मंगल भयो तब आयो ताला लाग्यो देखतेही वाको चित्त उदास होयगयो और तब ज्वर चढगयो फेर मंदिरके पीछे जायके पडरह्यो और बहुत विरहताप भयो फेर वाको दुःख श्रीनाथजी सही न सके फिर श्रीनाथजीनें छडी लेके भीतकुं खोदके मोखो करदियो और मोखामेसुं वाकुं बुलावे लगे तब वह उठके ठाढो भयो और श्रीनाथजीके दर्शन किये और श्रीनाथजीनें वाकु दोय लडुवा दिये तब वह उहांसु लडुवा लेके गिरिराजसुं नीचे आयके एक लडुवा खाय लियो और एक लडुआ बांध राख्यो तब गाममें ऐसी बात होय गई कोईने दिनकुं श्रीनाथजीके मंदिरके पाछें मोखो कियोहै ये सुनके श्रीगुसांईजी उदास भये और सब भीतारियाने सामानकी तपास करवाई तब भीतरियानें कही कछु सामान गयो नहीं तब वा चूहडानें श्रीगुसांईजीसों जायके बीनती करी ये मोखो तो श्रीनाथजीनें कियो है मोकुं दर्शन देवेके लीयें सब बात श्रीगुसांईजीसो बिनती करी और लडुवा देखायो तब श्रीगुसांईजीनें मनुष्यनकुं कही जब

ये दर्शन करवे आवे तब सबसुं पहले सब समयमें दर्शन करायदेनें और याकुं नित्य पातर धरनी तब श्रीगुसांईजीके मनुष्य वैसेंही करते वह चूहुडो श्रीनाथजीको ऐसों कृपापात्र हतो जाकुं श्रीनाथजी बिना सब संसार फीको लगतो ॥ वैष्णव ॥ १३९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव कुनबीकी वार्ता ॥

सो वह कुनबी वैष्णव गुजरातिके संग श्रीगोकुल आयो उहां जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी मोकुं गायनकी सेवामें राखो सो वह वनमें गाय चरावतो और गायनकुं चादरसों पहोंचतो और गायनके नीचे नित्य सूकी जगा राखतो और तनमनसुं गायनकी सेवा करतो वाकी ऐंसी सेवा देखके श्रीगोवर्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये और वा पटेलकुं खीडकमें दर्शन देवे लगे और खेलवे लगे और उहां छाक मंडली करते तब वा पटेलकुं गोपग्वालनके संग बैठायके खवावते तब वह पटेल महाप्रसादकी पातल लेवे जातो नहीं नित्य एकवार श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं जातो तब श्रीगुसांईजीनें एक वार पूंछो जो पटेल तुम प्रसाद कहां लेवोहो तब वा पटेलनें हाथ जोडके कही जो श्रीगोवर्धननाथजी वनमें छोकरानके संग नित्य भोजन करन

पधारेहैं और मोकुंहुं खवावेहैं तब पातल काहेकुं लेवे आवुं ये सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये फेर एक दिन वैष्णव मंडलीमें एक वैष्णवनें पद गायो-"नाचत रासमें गोपाल" तब वा पेटलनें कही "नाचत घासमें गोपाल" तब वे वैष्णव पटेलकुं पकडके श्रीगुसांईजीके पास लेगये तब श्रीगुसांई-जीके आगें वैष्णवनें बिनिती करी जो महाराज ये पटेल ऐंसे कहेहे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो यानें घासमें नाचत देखे तब कही और तुमनें रासमें नाचत देखे तब कही सो दोनोंकी बात साची हैं श्रीगोवर्धननाथजीकी इच्छा होवे जहां जाकुं दर्शन देवे दोनोंकी बात साची है ये सुनके वे वैष्णव बहुत प्रसन्न भये सो वे पटेल श्रीनाथजीके सखाभावसों रहते श्रीगुसांईजीकी कृपातें ऐंसो अनुभव भयो हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक द्वारकादास, तिनकी वार्ता ॥

सो वे सीलगाममें रहते हते सो हथियार बांधते हते और श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शनकुं आवते विनकी देहकी दशा भूलजाती और दूसरे मनुष्य मंदिरके बाहर उठायके लावते तब श्रीगुसांईजी पधारके द्वारकादासकुं हेला पाडते तब देहकी शुद्धि आवती जब दर्शनकुं आवते तब सदैव ऐंसी दशा

होती सो वे नित्य श्रीनाथजीके स्वरूपरसमें छके रहेते वह द्वारकादास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १३७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक पठानके बेटा तिनकी वार्ता ॥

सो वे पठानके बेटानें श्रीगुसांईजीके पास नाम सुन्यो और जातको व्यवहार छोडके वैष्णवकी चाल चलन लग्यो तब वाके मा बाप और सब सगा पृथ्वीपतीके आगें पुकारबे गये. तब पृथ्वीपतीनें कही जो तू कंठी तोडडार. जब वानें कही जासुं मेरो दिल लग्योहे वाकुं कंठी बहुत प्रियहे और वे यहि बानासुं रीझतहें. तब पृथ्वीपतीनें कही तलवार लावो याको माथो काटडारें तब वो पठानको बेटा बोल्यो दूसरी तलवार काहेकुं मंगावोहो ये मेरे पास है सो लेउ ये सुनके पादशाह विचार करन लग्यो विचार करके कही देखो याकी कैसी धर्ममें निष्ठा है याके ऊपर मैं बहुत खुश हुं याकुं कोई कछु मति कहो और ये बडो साचो मनुष्य है फेर पादशाहनें वाकुं नोकर राख्यो सो वह पठानको बेटा श्रीगुसांईजीको ऐंसो टेकको कृपापात्र हतो वानें कंठी न तोडी माथो कटावनो कबूल कर्‍यो॥वै. १३८

श्रीगुसां॰सेवक एक रजपूत और रजपूतकी बेटी ति॰वार्ता ॥

सो एक समय वे रजपूत अपनी बेटीकुं विनके

सासरेतें बुलायके घर लेजाते हते और चाचाहरि-
वंशजी गुजराततें श्रीजीद्वार आवते हते रस्तामें
विनको संग भयो तब चाचाहरिवंशजीनें विचार
कियो ये दोनों बाप बेटी जीवतो दैवीहै सो विचार
करके विनके संग आये और सांझकुं विनके घर
उतरे और भगवद्वार्ता करी और सबके मन भिजाय
दिये और वा रजपूतके घरके मनुष्यनकुं सबकुं नाम
सुनाये और सबकुं अपरसकी रीति सिखाई और
रजपूतकी बेटीको वार्ता सुनके श्रीगोवर्धननाथजीमें
मन लग गयो और विरहताप भयो और श्रीगो-
वर्धननाथजी वा रातकुं वाके पास पधारे और सब
सुखदिये फेर श्रीनाथजीनें कृपा करी तब वा रज-
पूतकी बेटीकुं श्रीनाथजी संग लेके पधारे और वा
रजपूतकी दिव्यदृष्टी भई चाचाजीकी कृपातें सोवे
बेटी श्रीनाथजीके संग लीलामें गई वा रजपूतनें
जाती देखी तब वे रजपूत आयके चाचाजीके पांवन
पऱ्यो जो वा बेटीकुं श्रीनाथजी ले गये और हमकुं
क्युं नहीं लेगये सो याको कारण कहो. तब चाचा-
जीनें कही जो तुमकुंहु लेजायंगे परंतु हाल तुमसुं
कारज करावनो है और वे रजपूत सुनके प्रसन्न
भयो और चाचाजीके संग आयो और आयके
श्रीगुसांईजीके तथा श्रीनाथजीके दर्शन किये और

नाम निवेदन कऱ्यो और श्रीठाकुरजी पधरायके अपनें देशमें आये और घरमें भगवत्सेवा करन लग्ये और श्रीगोवर्धननाथजी नित्य वा रजपूतकुं दर्शन देते और वा रजपूतकी बेटी सहित कोई कोई दिन दर्शन देते वे रजपूतके संगसों आखो गाम वैष्णव भयो सो वे रजपूत श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते॥वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव ॥ १३९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक विरक्त वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे विरक्त वैष्णव गुजरातसुं श्रीजीद्वार गये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीनाथजीकुं तथा श्रीगुसांईजीकुं और भगवदीयनको एक स्वरूप जानते हते और व्रजमें फिऱ्यो करते एक दिन रस्तामें जाते हते एक डोकरीके बेटाकुं सर्पने काट्यो सो मरगयो सो डोकरी बहुत रुदन करती हती वाकुं देखके और वा विरक्तकुं दया आई तब भगवन्नाम सुनायके वाके बेटाकुं जीवतो कऱ्यो ये बात देखके सब लोक विनके पाछें लगे हमकुं ये मंत्र सिखावो तब वानें अष्टाक्षरमंत्र कह्यो विन लोगननें कही ये मंत्र तो हमकुं आवेहै तब वा वैष्णवनें कही विश्वास राखनो तोहु विन लोगनकुं विश्वास न आयो तबवह वैष्णव चल्यो गयो सो वे विरक्तवैष्णवकुं भगवन्नामपर ऐसो विश्वास हतो

यासुं अधिक कोई मंत्र मानतो न हतो और जो कारज करते तो ये नामके प्रतापतें करते सो ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक विरक्त वैष्णवकी वार्ता ॥

श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे और रस्तामें वह वैष्णव श्रीगुसांईजीके संग चल्यो और द्वारका होयके श्रीगुसांईजीके संग श्रीगोकुल गयो और जन्मपर्यंत श्रीगोकुलमें रह्यो तब श्रीनाथजीकी सेवा शुद्ध चित्त होयके करतो और जहां भूलजातो तब विनकुं श्रीनवनीतप्रियाजी सिखावते जो ऐंसे यह वस्तु यारीतीसुं होयहै वे विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनके संग श्रीनवनीतप्रियाजी बालभावसुं खेलते ॥ वैष्णव ॥ १४१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक क्षत्राणी, तिनकी वार्ता ॥

सो वह क्षत्राणी श्रीगुसांईजीके पास नाम सुनवेकूं बैठी परंतु वाकुं अष्टाक्षरमंत्र आयो नहीं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तोकुं मेरो नाम आवेहै तब वा क्षत्राणीनें कही हा प्रभु आवेहै तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये नाम लियो कर तब वह क्षत्राणी श्रीगुसांईजीको नाम लियो करती दिवस रात वा नामके प्रतापतें श्रीनाथजीनें वा क्षत्राणीकुं दर्शन दिये और वाके घर आयके माखन

मांगते और दूध अरोगते सो वे क्षत्राणी ऐंसी श्रीगु-साईंजीकी कृपापात्र हती ॥ वैष्णव ॥ १४२ ॥

श्रीगुसांईजीके से० आनंददास साचोरा ब्राह्मण ति० वा०॥

सो वे आनंददास गुजरातमें रहते हते और श्रीगु-सांईजीके कृपापात्र हते और आनंददास व्रजयात्रा करन गये वा देशमें एक वैष्णव हतो बहुत द्रव्य पात्र हतो और वा शेठकुं श्रीठाकुरजीनें कही जो आनंददास साचोराके हाथकी सामग्री मोकुं बहुत भावेहै जासुं तुम आनंददासकुं बुलावो तब वे शेठ आनंददासकुं बुलायलाये और ऐंसी कही जो जन्म पर्यंत तुम हमारे घर रहो प्रभु तुमारे ऊपर रीझें हैं जासुं इनकुं प्रसन्न करो और वे आनंददास आछी रीतीसुं न्हायके सामग्री करन लगे और अनेक प्रकारके मनोरथ करते सो वा गाममें एक ढगुजाट रहतो हतो वाकु सब लोग ढगु पांडे कहते वह आखो दिन अपरसमें रहेतो हतो सो एक दिन वा शेठके इहां प्रसाद लेवे गयो तब आनंददासकुं देखके खूब चिल्लायो कही जो मैं अजानके हाथको नहीं लेऊं रिसाय गयो तब कोई कछु बोल्यो नहीं परंतु आनंददासको चित्त उदास भयो फेर रातकुं वा ढगुजाटकुं श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें कही जो तूं याके हाथको प्रसाद नहीं लेवेगो तो बहिर्मुख होवेगो

तब सवारे प्रसाद लेवेके समय वे ढग्गुजाट आयके आनंददाससों बीनती करी जो मेरे अपराध क्षमा करौ मैं तुमारे हाथको प्रसाद लेवेकुं आयोहुं तब आनंददासनें विनकुं प्रसन्नतासों प्रसादकी पातर धरी और कछु मनमें दोष लाये नहीं वे आनंददास साचोरा ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं श्रीठाकुरजी सब सामग्री सिखाय जाते ॥ वैष्णव ॥ १४३ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक नाऊ वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे नाऊ द्वारकाके रस्तामें रहते हते उहांश्रीगुसांईजी पधारे और श्रीगुसांईजीके नख उतारे जहां सूधी नख उतार्‍या करे तहां सूधी तो मनुष्य देखे और जब नख उतार चुक्यो और राछबांधे तब साक्षात् पूर्ण पुरषोत्तमके दर्शन भये और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी महाराज ! मोंकुं शरण लें तब श्रीगुसांईजीनें नामानिवेदन करायो और वे नाऊ परम भगवदीय भयो और सब राछ कुवामें डार दिये और ऐंसो विचार कर्‍यो के व्यवहार करके निर्वाह करुंगो ऐंसे विचारके वे नाऊ भगवत्सेवा करन लग्यो और व्योपार करन लग्यो तब श्रीठाकुरजी धीरेधीरे प्रसन्न भये वे नाऊ श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं थोडे दिननमें भगवल्लीलाको अनुभव भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४४ ॥

श्रीगुसांईं०सेवक भीमजी दुबे साचोरा ब्राह्मणकी वार्ता ॥

सो वे भीमजी दुबेको गाम गुजरातके रस्तापर हतो और श्रीगुसांईंजी गुजरात पधारे तब वा गाममें मुकाम कर्‍यो हतो और भीमजी दुबे तलावपर न्हावे आयो हतो उहां भीमजी दुबेकुं श्रीगुसांईंजीके दर्शन भये तब साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब भीमजी दुबे श्रीगुसांईंजीको सेवक भयो और ग्रंथ और मारगकी रीती सीखवेके लीयें भीमजी दुबे श्रीगुसांईंजीके संग गये और सब रीती सीखे और ग्रंथ सीखे और श्रीठाकुरजी पधरायके फिर आयके अपने घरमें रहे आर जब नागजीभाई श्रीगोकुल आवते जावते दो चार दिन भीमजीके पास रहते और भगवद्वार्ता करते और भगवद्रसमें छके रहते और एक समय नागजी भाई भीमजी भाईके घर गये तब भीमजीभाई घरमें हते नहीं तब नागजीभाई आपनो नाम कहके श्रीगोकुल चलेगये जब भीमजीभाई आये और खबर सुनी जो नागजीभाई पाछे गये तब भीमजीभाईकुं बडी उदासा भई और महाप्रसाद लिये नहीं तब रस्तामें नागजीभाई सूते तब श्रीगोवर्धननाथजी पधारके आज्ञा करी जो तुम भीमजीभाईकूं मिले विना आयेहो और भीमजीभाई भूखेहैं

जो तुम भीमजीभाईके मिले विना आवोगे तो हम तुमकुं दर्शन नहीं देवेंगे तब नागजीभाई सूते उठके पाछें गये और भीमजीभाईकुं जायके मिले और चार पांच दिन रहे तब भीमजीदुबेकी प्रसन्नता राखके नागजीभाई श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं गये और श्रीनाथजीनें पहलेतें श्रीगुसांईजीकुं कही जो नागजीभाईनें भीमजीकुं दोदिन भूखे राखेहें तब नागजीभाई श्रीगुसांईजीकें पास गये और दर्शन किये तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो वैष्णवको और श्रीठाकुरजीको एकस्वरूप जानना वैष्णव कछु ओछी वस्तु नहींहैं जिनके लियें पूर्णपुरुषोत्तमकुं अपेक्षा भईहै और पृथ्वीपर जन्मलेनो पडयोहै ऐसें वैष्णवनकुं श्रम देनों न चहिये ये सुनके नागजीभाईनें अपराध क्षमा करायो सो वे भीमजीदुबे श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते॥ जिनकी आर्ति श्रीनाथजी न सहिसके ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४५ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक राजनगरमें रहते तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णवको ऐंसो नेम हतो एक दो चार वैष्णवनको प्रसाद लेवायके लेतो और जो दिन वैष्णव कोई नहीं आवतो तब स्त्री पुरुष प्रसाद न लेते ऐंसो बिनको आग्रह हतो सो कोई दिन वे शेठ

परदेश गये और स्त्रीकुं कहीगये जो तूं नित्य वैष्णवनकुं प्रसाद लेवाइयो और जितनें वैष्णव प्रसाद लेजाय इतने पैसा गागरमें डारदीजो तब वा स्त्रीनें ऐंसेही करी फेर जब शेठ परदेशतें आयो तब आयके पैसा गिनें तो पैसामेंसुं पांच रत्न निकसे तब स्त्रीसुं पूंछी तब स्त्रीने कही मैनें तो पैसा डारे हैं कछु रत्न डारे नहीं तब विन दिननमें श्रीगुसांईजी राजनगरमें बिराजते हते तब वे वैष्णव पांच रत्न लैके श्रीगुसांईजीके पास गये तब श्रीगुसांईजीसों बीनती करी जो महाराज याको कारण कहा होयगो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो ये पांच भगवदीय तादृशी आये होयेंगे जासुं ये पांच रत्न होय गयेहैं जासुं वैष्णवनकुं अवश्य करके जैसे बने तैसे आदर करनो वे वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐंसो कृपापात्र हतो जिनकुं रत्नद्वार वैष्णवके स्वरूपको ज्ञान भयो सो श्रीठाकुरजीनें करवायो ॥ वैष्णव ॥ १४६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक चूहडो बहारवाला, तिनकी वार्ता ॥

सो वह चूहडो नित्य गोकुलकी गल्ली झाडतो और मनमें ऐंसे जानतो श्रीगुसांईजी ठकुरानी घाटपर पधारेहें इनके चरणारबिंदमें कूरो कचरो न लगें तो आछी बातहे और वैष्णव जूठनकी पातर डारते सो वह लेतो वैष्णवनकी जूठन जो खाई तब

वाकुं दिव्यदृष्टी भयी सब मारगकी रीति वाकुं समझ पडगई और वेदशास्त्रको ज्ञान होय गयो जैसे नाभाजीकुं भयो हतो सो विननें भक्तमाल करीहै ऐसे या चूहडाकुं ज्ञान भयो. एक दिन श्रीगोकुलमें काशीके पंडित आये सो विननें रसोई करी तब खायके वा चूहडाकुं जूठन देवे लगे तब वा चूहडानें कही मैं तो कोईको जुठन नहीं लेऊं तब वे दूसरी रोटी देवे लगे तब कही ये तो अनप्रसादीहै श्रीठाकुरजीकुं भोग नहीं धरीहै सो मैं नहीं लेउंगो तब विननें कही भोग धरीहै तब वा चूहडानें कही ये रोटी श्रीठाकुरजी अरोगे नहींहै तुमारी ये रसोई सब जूठनकी है चूला फूंकके रसोई करी है तब वेदनके तथा शास्त्रनके वचन वा चूहडाने कहे जब वे पंडित सुनके चकित होयगये और कहन लगे जिनके चूहडा ऐसे पंडितहै वे कैसे होवेंगे इनसु आपणे वाद करणो खोटो है ऐसे विचारके पंडित पाछें गये ये बात कोई वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों कही. जो पंडित या चूहडाकी बातें सुनके पाछे गये हैं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो या चूहडानें शुद्ध भावसों वैष्णवनकी जूठन लीनी है सो याकुं सब ज्ञान होय गयो यामें कहा आश्चर्य है ? वैष्णवकी जूठन लीयेसुं तो हृदय शुद्ध होवे हैं और ज्ञानदृष्टी

होवेहैं वे अन्यमार्गी पंडित कहा जाने ऐसे कहेके श्रीगुसांईजी चुप होय रहे सो वे चूहडो ऐसो कृपापात्र हतो जो वैष्णवनकी जूठन खायके ऐसो भाग्यशाली भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव पूरवदेशमें रहतो हतो सो श्रीगुसांईजी पूरवकुं पधारे हते तब सेवक भयो और फेर वाके मनमें ऐसी आई जो श्रीगुसांईजीके दर्शन कर आऊं तो ठीक सो वे वैष्णव गोपालपुर आयो और आयके श्रीगुसांईजीके दर्शन करे साक्षात् नंदकुमारके दर्शन भये और श्रीगिरिराज पर जायके श्रीनाथजीके दर्शन करे और उहां देखे तो श्रीगुसांईजी तथा श्रीनाथजी एक स्वरूप दीखे है. कोई समय तो श्रीनाथजीमें श्रीगुसांईजी दीख पडें और कोई समय तो श्रीगुसांईजीमें श्रीनाथजी दीख पडें तब वा वैष्णवनें निश्चय कऱ्यो जो ये दोनों एकहीहै जो इनकुं न्यारे न्यारे समझे सो मनुष्यकी गिणतीमें नहीं है सो वे वैष्णव ऐसो विचार करन लग्यो ये दोनों सेव्य और सेवक एक हैं सेवार्थ दोय दीखे है वास्तवते एकही है सो गोपालदासजीनें गायो हैं--"रूप बेउ एक ते भिन्न थई विस्तरे विविध-लीलाकरे भजनसारे"जो ऐसे श्रीगुसांजीको रूप

धरके सेवा करके न बतावते तो सेवाकी खबर कैसे पडे वस्तुतः एकही है सो वे वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो दोनों स्वरूपनकु एक जानके मग्न रहतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १४८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक श्रावककी बेटी तिनकी वार्ता ॥

सो श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हते और रूपचंदनंदाके घर विराजते हते और दश पंद्रें लुगाई रस्तामें जाती हती वाई समय एक मनुष्यनें तकसीर करी हती वाकुं पृथ्वीपतीके हुकुमसुं फांसी चढावते हते वा दसपंदरे लुगाईमें एक श्रावककी बेटी हती सो मनुष्यकुं फांसी देते देखके परगई और मूर्च्छा आई या बातकी खबर श्रीगुसांईजीकुं पडी तब श्रीगुसांईजीनें विचार कऱ्यो जो याको कैसो दयाको स्वभावहै दैवी जीव विना औरकुं ऐसी दया होय नहीं ये विचार करके श्रीगुसांईजीनें वाकुं अचेत जानके एक ब्रजवासीकुं कही याके ऊपर जल छांटो तब वा ब्रजवासीनें जल छांटयो दो घडी पाछे वाकी मूर्च्छा खुली तब वा श्रावककी बेटीनें वा ब्रजवावासीसों पूंछी जो तुं कोनहै? तब वाने कहा श्रीगुसांईजीको मनुष्य हुं. तब वे श्रावककी बेटी श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं आई और ब्रजवासीनें सब बात वाकुं मूर्छा आई सो कही तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा

करी ये शुद्धभाववाली है याके ऊपर जितनो रंग चढावो इतनो चढे तब वे श्रावककी बेटी बोली आप जेंसो कारीगर रंग चढावेवालो और कोन मिलेगो ये सुनके श्रीगुसांईंजी बहुत प्रसन्न भये और वाकुं नाम सुनाये और निवेदन कराये फेर घरमें आयके सब धोवे लीपवे लगी तब वाके धनीनें पूंछी ये तूं कहा करेहे? तब वाने कही मैं श्रीगुसांईं-जीकी सेवक भई हुं. तब वाके पतीनें कही मैंहुं श्रीगुसांईंजीको सेवक होय आउंहुं तब वाको धनी सेवक भयो सो दोनों स्त्रीपुरुष श्रीठाकुरजीको पधरायके सेवा करन लगे और नित्य श्रीगुसां-ईंजीके दर्शन करवेकुं आवते फेर श्रीगुसांईंजी श्रीगोकुल पधारे तब वा श्रावककी बेटीनें बीनती करी जो मोकुं आपके दर्शनविना रह्यो नहीं जायगो तब श्रीगुसांईंजीनें आज्ञा करी जो तुं नित्य यमुना-जल भरवेकुं आईयो और जब तूं यमुनाजीमें नहावेगी हम तोकुं दर्शन देवेंगे तब वा श्रावककी बेटी ऐसें करन लगी फेर कोई दिन व्रजवासी श्रीगोकलतें आगरे आये सो वाके घर उतरे सो वे व्रजवासीको जप करवेको समय भयो तब कही जो मैं श्रीगुसांईंजीकी बैठकमें गौमुखी भूलगयोहुं सो श्रीगोकुल पाछे जाउंगो जब प्रसाद लेउंगो तब

वा श्रावककी बेटी ये कही बैठोबैठो मैं श्रीगुसांईजीके दर्शनको जाउंगी तब तुमारी गौमुखी लेती आउंगी इतनो कहके जलभरवेकुं गई सो यमुनाजीमें न्हाई और श्रीगुसांईजीके दर्शन कऱ्ये और गौमुखी लेचली तब वा ब्रजवासकिुं दीनी तब वे ब्रजवासी और विचारमें पडगयो ये श्रीगोकुल जायके कैसे लाई होएगी तब उठके पांवन पऱ्यो तब वानें कही ये सब श्रीगुसांईजीको प्रताप है श्रीगुसांईजी जब अलौकिक देहको दान करें तब सब कारज सिद्ध होवें ये सुनके वे ब्रजवासी चुपकर रह्यो सो वे श्रावककी बेटी ऐसी कृपापात्र भई जिनकुं अलौकिक पदार्थ सर्वत्र सर्वमें व्यापक दीखते हते ॥ वै० ॥ १४९

श्रीगुसांई० सेवक दोय भाई पटेल सो मलिया-
गिरि चंदन लाये ति० वार्ता ॥

वे पटेल गुजरातसुं ब्रजमें गये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये सो उहां श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवामें रहे सो श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा तन मन धनसों करके एकदिन श्रीगुसांईजीनें मलियागर चंदन लेवेकुं दोभाईनकुं पठाये सो वे दोनों भाई मलियागर पर्वत ऊपर जायके चंदनको झाड काटवे लगे तब एक भाईकुं तो सर्पनें फूंक मारी सो दूसरे भाईनें श्रीगोवर्धननाथजीको नाम लेके जल

छांट्यो तब वाको विष उतर गयो तब श्रीगुसांईजीकुं जायके मलियागर चंदन दियो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम कछु मांगो तब विननें बीनती करी जो हम हाथनसुं श्रीनाथजीकुं चंदन धरावें तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी भलें धरायो फेर एक भाईनें चंदन धरायो और दूसरो भाई पंखा करन लग्यो फेर दूसरे दिन दूसरे भाईनें चंदन लगायो दूसरो भाई पंखा करन लग्यो सो वे दोनों भाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनसुं श्रीनाथजी बोलते चालते और वनमें संग लेजाते सो वे श्रीगुसांईजीकी कृपातें ऐसे दोनों भाई भगवदीय भये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १५० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक किशोरीबाई तिनकी वार्ता ॥

सो वे किशोरीबाई एक वैष्णवकी बेटी हती और बालकपणामें श्रीगुसांईजीकी सेवक भई हती पाछें शीतला निकसी और शीतलाके रोगसुं किशोरी बाईके हाथ पांव लूले भये और मा बापतो मरगये हते और एक किशोरीबाईकी बहन एकवार आयके खवाय जाती और किशोरीबाई बालकपणेंसुं यमुना अष्टकको पाठ सीखी हती सो अष्टप्रहर यमुना अष्टकको पाठ कर्‍यो करती सो एक दिन किशोरीबाईकी बहनकुं रिस चढी सो

किशोरीबाईकुं खवायवे न आई तब श्रीयमुनाजी पधारके किशोरीबाईकुं रसोई करके प्रसाद लेवाय गये, वाई दिन आधो रोग मिट गयो फेर दूसरे दिन यमुनाजीनें ऐसी कृपा करि तब सब रोग मिटगयो तीसरेदिन किशोरीबाई आप रसोई करन लगी और महाप्रसाद लियो चौथे दिन किशोरीबाई रसोई करन लगी वाई समय किशोरीबाईकी बहनके मनमें ऐसी आई जो चारदिन भये किशोरीबाईनें कछू खायो नहीं है तब वे बहन खबर काढवे आई तब किशोरीबाईकी बहन देखे तो किशोरीबाई रसोई करेंहें तब वे बेहेन देखके चकित होयगई और मनमें विचार कियो ये लूली कैसे मिटगई होयगी फेर किशोरीबाईकी बहननें लोगनकुं कही तब सब गामके लोग देखवे आये सो विस्मय भये तब किशोरीबाईके लिये वा गाममें श्रीगुसांईजी पधारे तब किशोरीबाई चलके दर्शन करवेकुं आई और श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो महाराज मोकुं सेवा पधराय देउ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुमारे ऊपर श्रीयमुनाजीकी कृपा भईहे सो यमुनाजीकी रेती एक थेलीमें तुमकुं पधराय देउं विनकी सेवा सब साजसुं करो तब किशोरी-बाई प्रसन्न भई और श्रीगुसांईजीनें रमणरेतीकी

थेली दीनी सो वे सिंघासन ऊपर पधरायके मार्गकी रीतीसुं सेवा करन लगी सो किशोरीबाईके ऊपर ऐंसी कृपा भई कोईदिन तो श्रीनाथजी वा गादीके ऊपर दर्शन देवे और कोईदिन श्रीनवनीतप्रीयाजी कोई दिन श्रीमथुरानाथजी कोई दिन श्रीविठ्ठलेशजी कोईदिन श्रीद्वारकानाथजी कोई दिन श्रीगोकुलनाथजी कोई दिन श्रीगोकुलचंद्रमाजी कोई दिन श्रीबालकृष्णजी कोई दिन श्रीमदनमोहनजी या रीतीसुं किशोरीबाईकुं.सब स्वरूपनके दर्शन लीलासहित होवन लगे सो वे किशोरी बाई श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपापात्र भई ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक दोउभाई पटेल तिनकी वार्ता ॥

सो वे दोउ एक गाममें रहते हते सो वा गाममें एक देवीको मंदिर हतो सो जूनो होयगयो हतो तब वा गामको राजा देवीको भक्त हतो सो राजानें ऐंसो विचार कर्‍यो जो देवीको नयो मंदिर बने तो ठीक तब गामके मनुष्यनके ऊपर कर डार्‍यो यथाशक्ति सबके पास लेनो वे दोनों भाई पटेलनके ऊपर दो रुपैया डारे तब वे दोनों भाईनने विचार कियो जो अपनो द्रव्य तो श्रीठाकुरजीको है सो कैंसे दियो जाय तब वा राजा कैसे छोडे सो उपाय करनो फेर दोनों भाईननें ऐंसो विचार कियो या देवीकुं

कूवामें डारदेनी तब रातकुं आयके वा देवीकुं कूवामें पटकआये और घरमें आयके सूते तब वो देवी राजाकी छातीपर जायके चढी जो कूवामें पडीहुं सो तुं मोकुं काढ और वे वैष्णव पटेल दोयभाई तेरे गाममें रहे विनकुं दो रुपैया दंड कऱ्योहै सो छोड देउ तब राजा चौंक उठयो वाई समय वे दोनों पटेलनकुं बुलायके दंड माफ कऱ्यो और देवीकूं कूवामेंसुं कढाई सो दोनों पटेलनको श्रीठाकुरजी ऊपर ऐसो विश्वास हतो सो देवीकुं तुच्छ गणी और देवी विनकुं कछु पराभव न करसकी सो वे दोनों पटेल ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६२॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णवकी वार्ता ॥

वाके शरीरमें कोढ भयो हतो तब वे वैष्णव जायके व्रजमें रह्यो और श्रीगुसांईजीके दर्शन तथा श्रीनाथजीके दर्शन नित्य करते और श्रीगुसांईजीसुं बीनती करतो महाराज मेरो कोढ मिटजाय ऐसी कृपा करौ तब श्रीगुसांईजी आज्ञा करते जो श्रीठाकुरजी करेहें सो विचारकरके करेहें फेर वा वैष्णवसुं श्रीनाथजी बोलन लगे तब वा वैष्णवनें श्रीनाथजीसुं कही मेरो कोढ मिटे सो उपाय बतावो तब श्रीनाथजीने कही हम कछु वैद्य नहीहें ऐसी कहके वाकी परीक्षा करते तब वो वैष्णव कहते

जो प्राण जायेंगे तो कबूल परतु अन्याश्रय न करुंगो ऐसे कहके बैठ रहते एक दिन वाकुं श्रीनाथजीनें कही जो तुं अमकगाममें अमक वैष्णव घर जायके दर्शन करिआव वो वैष्णव कहेगो तब तेरो कोढ जायगो तब वो वैष्णव वा गाममें वा वैष्णवके घर गयो और उहां जायके दर्शन करे देखेतो वा वैष्णवनें वेश्या राखीहै परंतु वाकु अभाव न आयो तब वा वैष्णवननें पूंछी जो तुम कैसे आये तब विननें कही श्रीनाथजीनें ऐसी आज्ञा करी है तब वा वैष्णवकुं पश्चात्ताप भयो तब वानें कही जो मै ऐसो पतित हुं तोहुं मोकुं श्रीनाथजी नहीं भूले हैं मैनें काहेकुं ऐसे कऱ्यो है तब वाकुं बहुत विरहताप भयो सो वा तापसुं वाको देह छूटगई और वा वैष्णवको कोढ मिटगयो और नूतन अंग होय गयो सो ये दोनों कारज श्रीनाथजीनें एक समय कऱ्यें एक वैष्णवकुं लीलामें लियो और एकको कोढ मिटायके सेवाकी योग्यता दीनी सो वे कोढी वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो ॥ वै० ॥ १५३॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मेहा धीमर, तिनकी वार्ता ॥

सो वे मेहा रावलके पास गोपालपुरमें यमुनाजीके किनारेपर रहेतो हतो सो श्रीगुसांईजी गुजराततें श्रीगोकुल पधारे सो गोपालपुरके घाट उतरे और

गोपालपुर डेरा किये वाई दिन श्रीगोकुल पधार-वेको मुहूर्त नहीं हतो सो वे मेहाधीमर मछली पकडवेके लीयें यमुनाजीके किनारापर बैठो हतो तब मेहाधीमरकुं एक वैष्णवनें कही जो तोकुं एक रुपैया देउं श्रीगुसांईजी ईहां विराजे तहांसूधी जाल मति डारियो तब मेहाधीमर रुपैया लेके घर गयो और मेहाधीमरनें वैष्णवकुं ऐसी कही मोकुं खायवे-को दिवाईयो श्रीगुसांईजी भोजन करचुके और सब वैष्णवनकुं पातर धराइ और वा वैष्णवनें व्रजवासीसों कही या गाममें मेहाधीमर रहेहै याकुं बुलाय लाव मेहाधीमर आयो और श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये और बीनती करी जो महाराज मोकुं शरण लेउ तब श्रीगुसांई-जीनें कृपाकरके नाम सुनायो और मेहाके घरके सबनकुं नाम सुनायो तब वा मेहाकुं श्रीगुसांईजीके स्वरूपको ज्ञान भयो तब मेहाधीमरनें ये पद गायो ॥ सो पद–

राग भैरव–श्रीविठ्ठलप्रभु महा उदार ॥
महापतित शरणागत लीनें निर्भयपद दीनो निर्धार ॥१॥
वेदपुराण सार जो कहिये सो पुरुषोत्तम हाथ दियो ॥
मेहा प्रभु गिरिधर प्रगटे पुष्टिमारग रस प्रकट कियो ॥२॥

सो ये पद सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये

और वैष्णव कहनलगे जो मेहा सवारे जाल डारके बैठो हतो और दर्शनमात्रसुं याकी निर्मल बुद्धी कैसी भईहै और प्रभूकी कृपाको पार नहीं फिर श्रीगुसांईजीनें मेहाकुं जूठन धरी सो वे मेहानें लीनी तब भगवल्लीलाको अनुभव भयो फेर श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके संग आये श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे फेर अन्नकूटपर श्रीनाथजीके दर्शनकुं आये तब मेहानें ये पद गाये--

राग सारंग–हमारो देव गोवर्धन पर्वत गोधन जहां सुखारो ॥
सुरपतिको बलि भाग न दीजे कीजे मतो हमारो ॥ १ ॥
पावक पवन चंद जल सूरज पर्वत आज्ञा लीने ॥
ता ईश्वरको कह्यो कीजीये कहा इंद्रके दीने ॥ २ ॥
जाके आसपास सब व्रजकुल सुखी रहे प्रभुपारे ॥
जोरे सकट अछूतो लेले भलो मतो को टारे ॥ ३ ॥
बडेबडे बैठ विचार मतो करि पर्वतको बलि दीजे ॥
नंदलालको कुंवर लाडिलो कान्ह कहे सो कीजे ॥ ४ ॥
माखन दूध दह्यो घृत पायस सब लेले व्रजवासी ॥
यज्ञस्वरूपधरे बलि भुक्तत पर्वत शैलनिवासी ॥ ५ ॥
मिट्यो भाग सुरपति जिय जान्यो मेघदिये मुकुराई ॥
मेहा प्रभु गिरधरकर राख्यो नंदसुवन सुखदान सुखदाई॥६
राग सारंग–सुनिये तात हमारो मतो श्रीगोवर्धन पूजाकीजे॥
जो तुम यज्ञ रच्यो सुरपतिको सो बली इहां ले दीजे॥१॥
कंदमूलफल फूलनकी निधि जो मांगो सो पावो ॥
यह गिरि वास हमारो निशिदिन निर्भय गाय चरावो ॥२॥

दूध दहीके माठ भराये व्यंजन अमृत अपार ॥
मधुमेवा पकवान मिठाई भरि भरि राखे थार ॥ ३ ॥
बडेबडे बैठि विचार मतो करि कान्ह कहे सोइ कीजे ॥
विविध भांतिको अन्नकूट करि पर्वतको बलि दीजे ॥४॥
यह नग नाना रूपधरत है व्रजजनको रखवारो ॥
देवनमें यह बडो देवता मोहूको अतिप्यारो ॥ ५ ॥
नंदनंदन और रूप आप धारि आपन भोजन कीनो ॥
मेहा प्रभु गिरिधरन लाडिलो मांगमांग सब लीनो ॥ ६ ॥

ये पद गाय चुक्यो तब मेहाकुं मूर्च्छा आई तब मेहाकुं श्रीगुसांईजीनें कृपादृष्टि करके ठाडो कियो और आज्ञा करी जो श्रीनाथजीकी आज्ञा ऐसी है कछुक दिन भूतलपर रहो ये सुनके उठ बैठे और दंडवत करी और कही जो "निजेच्छातः करिष्यति" ऐसे कहेके ठाकुरजीकी सेवामें तत्पर भयो फेर मेहा गोपालपुरमें आयके सेवा करन लग्यो फेर मेहाकी स्त्रीके गर्भ भयो और प्रसवको समय भयो मेहा गाममें नहीं हतो तब मेहाकुं बेटा भयो तब मेहाकी स्त्रीकुं बडो पश्चात्ताप भयो ये दुष्ट बेटा क्युं भयो मेरी भगवत्सेवा छूटी ऐसे विचारके रुदन करवे लगी तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी जो रो मति न्हायके मेरी सेवा कर तब वे स्त्रीनें रीतीप्रमाणें न्हायके भगवत्सेवा करी फेर जब मेहा आयो तब मेहानें कही तैने ऐसी अवस्थामें

सेवा क्युं करी तब वा स्त्रीनें कही मोकुं श्रीठाकुर-
जीनें आज्ञा करीहै तब मेहा सुनके बहुत प्रसन्न भयो
और मेहानें बहुत नवे पद करके भगवल्लीला अनेक
प्रकारसुं गाईहै सो वे मेहा श्रीगुसांईजीके ऐसे भग
वदीय कृपापात्र हते ॥ वैष्णव ॥ १५४ ॥

श्रीगुसां०से० एक वैष्णव मोहनदास हते तिनकी वार्ता ॥

सो वे मोहनदास गोपालपुरमें रहते हते तब
गोविंदकुंडपें नित्य न्हावे जाते गोपालपुरसुं चढके
और गोविंदकुंडकी आडी उतरते एकादिन उतर-
वेके रस्तापर गोवर पऱ्यो हतो तब वे वैष्णव दूसरी
आडी उतऱ्यो सो श्रीगुसांईजीनें उतरतो देख्यो
तब श्रीगुसांईजीनें माथो हलायो फेर वे मोहनदा-
सनें श्रीगुसांईजीकुं दंडवत करके पूंछन लग्यो जो
आपने मोकुं देखके माथो क्युं हलायो?तब श्रीगु-
सांईजी बोले जो तुम श्रीगिरिराजपर कारण बिना
पांव धरोहो और पावनसुं खूंदोहो सो गिरिराजको
माहात्म्य कछु जानो नहीं हो तब दूसरे वैष्णवनें
पूंछो जो श्रीगिरिराजजीको माहात्म्य आप कृपा
करके कहो तब श्रीगुसांईजीनें पद्मपुराणकी कथा
कही जो एक दिन श्रीठाकुरजी तथा नारदजी
वनमें ठाडे हते तब श्रीठाकुरजीनें कही नारदजी
जल लावो तब नारदजी जल लेवेकुं गये उहां जायतो

एक सरोवर हतो और दोय ऋषी तपस्या करते हते और तलावके पास मनुष्यनके हाडनको पर्वत हतो और नारदजी देखके विस्मय होय गये सो नारदजी जल लीये विना पाछें आये तब श्रीठाकुरजीनें पूंछी जो जल क्युं लाये नहीं तब नारदजीनें समाचार कहे और कारण पूंछो तब श्रीठाकुरजीनें कही जो दो ऋषी तपश्चर्या करेहैं गोवर्धन पर्वतके दर्शनके लियें फेर देह छोडेहैं फेर जन्मेहैं फेर तपश्चर्या करेहै इनके इतने जन्म भयेहैं जिनके शरीर छूट छूटके हाडनको पर्वत होय गयोहै तो हु गोवर्धन पर्वतके दर्शन नहीं भये हें ये सुनके नारदजी बहुत विस्मय भये सो श्रीगुसांईजी आज्ञा करेंहें जो आपनकुं गोवर्धन पर्वत श्रीमहाप्रभुकी कानतें दर्शन देवेहें और ऐंसे रूप श्रीगोवर्धनपर्वत साक्षात् लीलामध्यपाती सो ऐंसे गोवर्धनपर पांव कैंसेधऱ्यो जाय कछु भगवत्सेवा को कार्य होवे तो ऊपर चढनो नहीं तो सर्वथा पांव धरनो नहीं य सुनके वा मोहनदासकुं बहुत पश्चात्ताप भयो और श्रीगुसांईजीसों अपनो अपराध क्षमा कराये फेर श्रीनाथजीकी सेवा दर्शन विना कोईदिन गिरिराजपर पांव धरते नहीं हते सो ऐंसे श्रीगुसांईजीके कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १५५ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक चतुर्भुजदासब्राह्मण ति० वार्ता ॥

सो वे चतुर्भुजदास पंडित बहुत हते और विद्याको अभ्यास विशेष हतो और अकबर पादशाहसों मिलाप विशेष हतो अकबर पादशाह जो कछु पूंछते सो जबाब तुरत देते एकदिन पादशाहनें चतुर्भुजदासकी सराहना करी तब बीरबलनें कही ये तो मेरी चाकरी करतो हतो. तब पादशाहनें पूंछी तब चतुर्भुजदासनें कही जो आपके मिलवेके लीयें कोन कोनकी चाकरी न करी चहीये ये सुनके पादशाह बहुत प्रसन्न भयो और चतुर्भुजदासकुं महीनाके हजार रुपैया कर दिये और जो कोई पंडित आवतो तिनके संग चतुर्भुजदास वाद करते और सब पंडितनकुं जीत लेते फेर एक समय चतुर्भुजदास मथुराजीमें आये और विश्रांतघाटपर न्हाये और उहां कहेन लगे जो "विद्या भागवतावधि" ये सुनके एक वैष्णव बोल्यो "चातुरी विठ्ठलेशावधि" तब चतुर्भुजदासनें कही जो मोकुं विठ्ठलनाथजीको मिलाप करायदे तब वो वैष्णव चतुर्भुजदासकुं श्रीगुसांईजीके पास ले गयो तब श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम कोटिकंदर्पलावण्य ऐंसे स्वरूपके दर्शनभये तब चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये

और श्रीगोवर्धननाथजीके कवित्त बनाये और आ-खो जन्मपर्यंत श्रीजीद्वार छोडके कहुं गये नहीं एक दिन पृथ्वीपतीकूं खबर पडी जो चतुर्भुजदास गोपा-लपुरमें है तब मनुष्य बुलायवेकुं पठाये तब चतुर्भु-जदासनें पृथ्वीपतीकुं पत्र लिख्यो वा पत्रमें लिख्यो--

"जाको मन नंद नंदनसुं लाग्यो नीको ॥
सुखसंपतकी कहां लग बरनो सब जग लागत फीको ॥"

ये पत्र लेके वा मनुष्यनें पृथ्वीपतीकुं दियो तब पृथ्वीपतीनें विचार कियो जिनकुं जगत फीको लग्यो तो तिनकुं अपने कैसे मीठे लगेंगे सो वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र भये ॥ वैष्णव ॥ १५६

श्रीगुसांईजीके सेवक विरक्त वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वह ब्राह्मण वैष्णव एक गामडामें रहतो हतो सो चुकटी मांगके निर्वाह करतो और श्रीठा-कुरजीकी सेवा भली भांतिसों करतो और श्रीठा-कुरजी सानुभाव जतावत हते सो वे वैष्णवनके घरनतें चुकटी मांगतो तब एक वैष्णवके घर चुकटी लेवे गयो सो वाके बेटाकी देह छूटी हती तब वे वैष्णव वाईसमय गयो तब वा वैष्णवनें विचार कियो जो याको आवरदा बहुत हतो क्युं याकी देह छूटी ऐंसो विचार कियो याको अकाल

मृत्युभयो है तब वा वैष्णवनें चरणामृत वाके मुखमें दियो और चरणामृतको श्लोक पढ्यो-

"अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् ॥
विष्णोःपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥"

ये अक्षर बोल्यो तब श्रीठाकुरजी वा वैष्णवकी वाणी सत्य करवेके लीयें वा वैष्णवके बेटाम प्राण संज्ञा धरी तब वा वैष्णवको बेटा जीवतो भयो जा समय वा ब्राह्मण वैष्णवनें वाकुं जीवतो कर्‍यो वाई समय वा ब्राह्मणवैष्णवमें भगवदावेश भयो हतो फेर जब बहारे आयो तब लोगननें वा ब्राह्मणवैष्णवसों पूंछी ये कैंसे जीयोहै तब वानें कही चरणामृत और अष्टाक्षरमंत्रसुं जीवतो भयोहै लोगननें ये बात झूठी मानी सो ब्राह्मण वैष्णव ऐंसो कृपापात्र हतो जाको चरणामृत ऊपर दृढ विश्वास हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ १६७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गुलाबदास क्षत्री तिनकी वार्ता ॥

सो वे गुलाबदास परम कृपालु जो श्रीगुसांईजी तिनके शरण गये फेर थोडेदिन पाछे म्लेच्छके देशमें जायके रहे और भ्रष्ट होय गये और भक्षाभक्ष करन लगे और गुलाबखान नाम धरायो फेर ये बात श्रीगुसांईजीनें सुनी तब श्रीगुसांईजीनें विनकुं बुलायवेके लीयें एक वैष्णव पठायो तब वा वैष्ण-

वनें जायके कही गुलाबदास तुमकुं श्रीगुसांईजी बुलावेंहें तब गुलाबदास वेश्याके पास बैठे हते सुनके कही जो मैं ऐंसो भ्रष्टहुं तोहुं श्रीगुसांईजी संभारेहैं ऐंसे तीनवार वैष्णवसुं पूंछी जो श्रीगुसांईजी मोकुं संभारेहें तव विरहताप भयो तब गुलाबदासके प्राण छूटगये वे वैष्णव देखके चकित भये फेर उहांसुं चल्यो और मनमें विचार कियो ये संदेह श्रीगुसांईजीसों पूछूंगो तब श्रीगुसांईजीके पास आयके देखे तो गुलाबदास श्रीगुसांईजीकुं पंखा करत देख्यो तब वा वैष्णवको संदेह दूर भयो सो वे गुलाबदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनके कर्म विरहतापसुं जरगये और शुद्ध होयके भगवल्लीलामें चलेगये॥वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव॥ १५८

श्रीगुसांईजीके सेवक धोंधी कळावत तिनकी वार्ता ॥

सो वह धोंधी बडीजातवालो हतो और गान विद्यामें कुशल हतो और श्रीगुसांईजीको सेवक भयो तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके वा धोंधीकुं श्रीनवनीतप्रियाजीके कीर्तनकी सेवामें राखे सो वे धोंधी श्रीनवनीतप्रियाजीके संनिधान कीर्तन करते हते एकादिन कीर्तन सुनके श्रीनवनीतप्रियाजीनें ताल दियो तब श्रीगिरिधरजी ठाढे हते सो एक हजार रुपैयाके सोनाके कडा पहेरे हते सो उतारके

धोंधीकुं दीये तब श्रीगुसांईजीनें ये बात सुनी और श्रीगिरिधरजीकुं कह्यो जो श्रीनवनीतप्रियाजीनें ताल दियो जो तैनें इकेलो कडो क्युं दियो सब गहेनो क्युं नांहिं दियो इतनो तुमारो लोभीपणो अधिको है तब श्रीगिरिधरजी बोले जो मैं आपसुं डरप्यो जासुं नहीं दियो तब श्रीगुसांईजी सुनके बहोत प्रसन्न भये तब वा धोंधीकुं आज्ञा करी जो नित्य तेरे मन लगायके कीर्तन करनें तब वे धोंधी नवे पद करके गायवे लग्यो वे धोंधी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण॥ वैष्णव ॥ १५१॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक बनियाकी वार्ता ॥

सो वे बनिया गोपालपुरमें रहते हते और जो कोई श्रीनाथजीके दर्शन करके आवें वासुं शृंगार पूंछलेते सो पाछें जो आवे विनके आगें शृंगार कहे सब लोग जाने जो ये बडो वैष्णव है वैष्णव जानके विनके पाससुं सोदा लेवे ऐंसे करके लोगनके पास ठगके बहुत रुपैया एकठे करे ऐंसे करते करते साठ वरसके भये और साठ हजार रुपैया एकठे करे एकदिन सूरदासजी भगवदिच्छातें वा बनियाके पास कछु लेवेकुं आये तब वा बनिया सूरदासजीके आगें श्रीनाथजीके शृंगारकी बडाई करन लग्यो तब सूरदासजीनें मनमें जान्यो ये

पाखंडी है तब सूरदासजीनें कही श्रीनाथजीके दर्श-नकुं चल. तब वानें कही सांझकुं आऊंगो फिर सांझकुं सूरदाजी आये तब कही काल आऊंगो ऐसे करते दो चारदिन काढे एकदिन सूरदासजीनें ये पद गायो-

"आज काम काल काम परसुं काम करना ॥
पहले दिन बहुत काम काममें पच मरना ॥ १ ॥
जागृत काम सोवत काम विमुख भयो चरणा ॥
छांड काम सुमर श्याम सूर पकर शरणा ॥ २ ॥"

ये पद सूरदासजीनें वा बनियाकुं सुनायके खेंचके लेगये फेर जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन कराये तब सूरदासजीनें श्रीगुसांईजीसों विनती करी जो याकुं शरण ले तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन करवायो फिर भेट करवेको समय भयो तब वा बनियानें एक रुपैया भेट कर्यो तब सूरदासजीनें वा बनियाकुं उपदेश करवेके लीये एक पद गायो--सो कीर्तन--

सूरसाठी प्रारंभः ॥

राग सारंग--कृष्ण सुमर तन पावन कीजे॥जोलों जग स्वप-नासो जीजे ॥ १ ॥ अवधि उसास गिनत सब तेरे ॥ सो बीतत भई आवत नेरे ॥ २ ॥ जो ये स्वपनें न्याई विचारे ॥ कबहुं न जन्म विषय लग हारे ॥ ३ ॥ गर्ही विवेक बीज जो बोवें ॥ कबहुं न जठर अग्निमें सोवें ॥ ४ ॥ वारवार तोकुं समझावे ॥ जो छिन जाय सो बहोरि न आवे ॥ ५ ॥ ठगनी विषय ठगोरी

जाई ॥ घटिका घटत जो छिनाछिन जाई ॥ ६ ॥ गनतहिं गनत अवधि नियरानी ॥ छांड चल्यो निधि भई बिरानी ॥ ७ ॥ होत कहा अबके पछतानें ॥ तरुवर पत्र न मिलें पुराने ॥ ८ ॥ पवन उडे सो बहुरि न आवें ॥ कर्ता और अनेक बनावें ॥ ९ ॥ जल थल पशु पंछी सूकर क्रिमि ॥ मानुष तनु पायो सब जग भ्रमि ॥ १० ॥ कबहूं नीके नाथन गायो ॥ एक मदन दश दिशाहिं भ्रमायो ॥ ११ ॥ सो तनु तूं खोवें रति बिगतानि ॥ काँच गहें छोडी चिंतामनि ॥ १२ ॥ मनहीं मन माया अवगाहत ॥ नायक भयो तिहूंपुर चाहत ॥ १३ ॥ स्वर्ग रसातल भू रज धानी ॥ तोउ न तृप्त भयो अभिमानी ॥ १४ ॥ ऐंसेहि करत अवधि सब बीती ॥ गयो न ज्ञान रह्यो मदरीती ॥ १५ ॥ कबहूं सजन मिलि करत बडाई ॥ कबहूं ललना ललित लडाई ॥ १६ ॥ कबहूं हय हाथी रथ आसन ॥ कबहूं पलका सुखद सुवासन ॥ १७ ॥ कबहूं चमर छत्र शिर ढोरे ॥ कबहूं सुभट पशुन चढि दोरे ॥ १८ ॥ कबहूं तोरन छत्र बनावे ॥ कबहूं मदगज यूथ लडावे ॥ १९ ॥ नौबत द्वार बजतहीं ठाढी ॥ त्योंत्यों तृष्णा शतगुण बाढी ॥ २० ॥ दिव्यवसन फल फूल सुवासी ॥ नवयौ-वन अबला सुखरासी ॥ २१ ॥ द्वार कपाट सहस्र एकलागें ॥ सुभट पहेरुवा चहुं दिश जागें ॥ २२ ॥ रमणी रमत न रजनी जानी ॥ माया मद पीयो अभिमानी ॥ २३ ॥ सुत बित वनिता हेत लगायो ॥ तब चेत्यो जब काल चितायो ॥ २४ ॥ झूठो नाटक संग न साथी ॥ नोबत द्वार न हय रथ हाथी ॥ २५ ॥ भूप छिनकमें भयो भिखारी ॥ क्यों कृतशूल सहें अब भारी ॥ २६ ॥ भयो अनाथ सनाथ न बांध्यो ॥ त्रिजग शूल शर-सन्मुख सांध्यो ॥ २७ ॥ मनुष देह धरि कर्म कमायो ॥ ते

तिरछे दुखदारुण आयो ॥ २८ ॥ जेहिं तन काज जीव वध कीनें ॥ रसना रस आमिष रस लीनें ॥ २९ ॥ सो तन छूटत प्रेत करि डार्‍यो ॥ प्रेत प्रेत कहि नगर निकार्‍यो ॥ ३० ॥ हिंसाकर पालन करि जाकी ॥ विष्टा क्रिमी भस्म भइ ताकी ॥ ३१ ॥ रोग भोग अरु विषय भयानक ॥ हरिपद विमुख विषय रसपानक ॥ ३२ ॥ जाग जाग इहांको तेरो ॥ माया स्वप्न कहत सब मेरो ॥ ३३ ॥ कृष्ण बिना तोहि कोन छुडावे॥ को करुणामय बिरद कहावे ॥ ३४ ॥ अन्य देवको नहीं भरोसो ॥ बातन खटरस लाख परोसो ॥ ३५ ॥ जे जन कह्यो नृपतिकी न्याई ॥ मृगतृष्णा करि कोन अघाई ॥ ३६ ॥ ऐसे अन्य देव सुखदायक ॥ हरि बिन कोन छुडावन लायक॥३७॥ धर्मराज सुनि कृती तिहारी ॥ तूं विषयन रत सुरत विसारी ॥ ३८ ॥ गर्भ अग्नि रक्षा जिन कीनी ॥ संकट मेटि अभयता दीनी ॥ ३९ ॥ हस्त चरण लोचन नासा मुख ॥ रुधिर बूंदतें लह्यो अधिकसुख ॥ ४० ॥ सो सुखतें स्वपनें नहिं जान्यो ॥ प्राणनाथ निकट न पहिचान्यो ॥ ४१ ॥ कित यह शूल सहें अपराधी ॥ मम सिखतें एको नहिं साधी ॥ ४२ ॥ कोटिक बार मानुष तनु पायो ॥ हरि पथ छोड अपथकूं धायो ॥ ४३ ॥ समय गये असमय पछतैये ॥ मानुष जन्म बहुरि कित पैये४४॥ पारस पाय जलधिमें बोरें॥पुन गुन सुनत कपालहिं फोरें॥४५॥ चिंतामणि कौडी ले दीनी ॥ सुनि परमित करुणा अतिकीनी ॥ ४६ ॥ जूझत सामें पीठ दे भागे ॥ पुन पुरुषारथ कहे नहिं लागे ॥ ४७ ॥ पाय कल्पतरु मूल छिदावे ॥ सो तरु पुन कैसे तूं पावे ॥ ४८ ॥ मधु भाजन पूरण विधि दीनो ॥ सो तैं छांड हलाहल पीनो ॥ ४९ ॥ कामधेनु तज अजा विसाई ॥

हरिबल छांड विषय अवगाही ॥ ५० ॥ यह नर देह श्याम बिन खोई ॥ कदि कौतुकलों बाँधि बिगोई ॥ ५१ ॥ काहे न कर्म कियो ते ऐसो ॥ ध्रुव शुक सनकसनंदन जैसो ॥ ५२ ॥ सुर नर नाग असुर मुनि देवक ॥ हरिपद भजत सबे है सेवक ॥ ५३ ॥ परदक्षिणा दे सीस नमावें ॥ मनसिज तोहि न परस न पावें ॥ ५४ ॥ जाके भजत एतो सुख लहिये ॥ सुन शठ सो कैसे बिसरैये ॥ ५५ ॥ अगनित पतित नाम निस्तारे ॥ जन्ममरण संताप निवारे ॥ ५६ ॥ निर्भय होय भक्ति निधि पाई ॥ कबहुं काल व्याल नहिं खाई ॥ ५७ ॥ सब सुख जीवन कृष्ण नाम पद ॥ भव जल व्याधि उपाय परमगद ॥ ५८ ॥ श्रीभागवत परम हितकारी ॥ द्वाररटत हरि सूरभिखारी ॥५९॥ परम पतितकूं शरणहि लीजे ॥ पदरज दान अभयता दीजे६०

इति सूरसाठी संपूर्ण ॥

ऐंसे एक तुक कही जब वा बनियानें हजार रुपेया भेट कऱ्ये ऐंसे सूरदासजीनें साठ तुकको पद गायो जैंसे जैंसे एक एक तुक सुनतो गयो और एक एक हजार रुपैया भेट करतो गयो साठ तुक सूधी साठ हजार रुपैया भेट करे सूरदासजीके वचन वा बनियाके हृदयमें कैंसे उतरे जैंसे सूरज-उदय होवे और अंधकार मिटजाय तैंसे सूरदास-जीके वचननतें वाके हृदयको अंधारो सब मिटगयो और प्रफुल्लितमन होय गयो और मनमें ऐंसो विचार कियो जो आज मेरो जन्म सफल भयो सो वे बनिया

दुकानपें आयके साठ हजार रुपैया काढके श्रीगुसांईजीके उहां पठाय दीने फिर दुकानपर बैठो और कोईके आगे फेर शृंगारकी बात करतो नहीं और नित्य श्रीनाथजीके और श्रीगुसांईजीके दर्शन करके प्रसाद लेते पाछें थोडेदिन भये तब श्रीनाथजी वा बनियासुं बोलन लगे और आयके दूध दही ले जाय और दूसरो रूप धरके दाना लेके वा बनियाकी दुकानपै सौदा ले जाय और दाना पटकजाय विना दानानके हीरा मोती होयजाय तब वे बनिया हीरा मोती सब वीनके श्रीगुसांईजीके आगें धर आवे घरमें कछु राखे नहीं ऐंसे मनमें समझे जो द्रव्य घरमें राखुंगो तो प्रभुनमेंसो चित्त निकस जायगो जासुं निर्वाह जितनो राखतो। सो वे बनिया श्रीगुसांईजीको ऐंसो कृपापात्र हतो ॥ वैष्णव १६० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजा रानी तिनकी वार्ता ॥

सो वे राजा और विनकी स्त्री दोउ वैष्णव भये और भगवतसेवा करन लगे फिर वा राजाकी एक बेटी भई और बडी भई सो राजाके मनमें ऐंसी हती जो कोई राजासों विवाह कऱ्यो चहिये और रानीके मनमें ऐंसी आई जो मैं अन्य मार्गीकुं बेटी नहीं देउंगी तब वैष्णव ढूंढवेके लीये बहुत प्रयत्न करे सो एक राजा वैष्णव मिल्यो फिर वाकुं बेटी दीनी

तब राजा विवाह करन आयो सो विवाह करके अपने देशमें लेगयो फिर रानीनके पास वाकुं बैठाय दीनी और वह राजातो भगवत्सेवा करे और कोई स्त्रीकुं सेवाको काम न सोंपे और वह जो राजाकी बेटी नवी पर्णीहती वाके पतिके पास सेवा करवेकुं जाय परंतु वो सेवा न करवे देवे. तब वानें कही जो तेरी सेवा करनकी ईच्छा होवे तो अमका शेठके घर जायके जलकी गागर भरलायदे और वा गागरके पैसा लायके मोकुं दे तब तोकुं सेवा करन देउंगो। फिर वानें जायके वा शेठनें घर गागर भर लाई तब वा शेठनें वा गागरके जलसुं झारी भरी तब वा राजाकी स्त्रीनें कही जो या गागर भरवेकुं पैसा मोकुं देवो तब वा शेठनें कही जो या जलकी झारी श्रीठाकुरजी अरोगेहें सो याकी न्योछावरतो सर्वस्व है जासुं जितनो मेरे घरमें द्रव्य है सो लेजाओ फिर वा राजाकी रानीकुं ज्ञान भयो जो मेरे घर श्रीठाकुरजी बिराजेहैं सो एक जलकी गागरकी इतनी कीमतहै तो आखो। दिन सेवा करे इनकी कहा कीमत होयगी फिर घर जायके पतीके पांवन परी जो अब मैनें तुमारी कृपातें भगवत्सेवाको स्वरूप जान्यो है जासुं अब तो सेवाविना अन्न जल न लेउंगी तब वह राजा प्रसन्न होयके वा रानीकुं सेवा करवे दीनी तब

दोनों स्त्रीपुरुष सेवा करन लगे सो वे राजा रानी ऐंसे कृपापात्र हते जिननें अन्य मार्गीकुं बेटी न दीनी और बेटी ऐंसी कृपापात्र भई वानें शेठके घर जायके एकदिनमें भगवत्सेवाको स्वरूप जान्यो सो वे राजा रानी और जमाई और बेटी वे चारों जनें श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र भये ॥ वैष्णव ॥ १६१ ॥

श्रीगुसां० से० एक वैष्णव शकुन देखके चलतो ति० वार्ता॥

सो वे वैष्णव गुजरातमेंसो जायके श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीको सेवक भयो वह वैष्णव जो कछु काम करतो सो शकुन देखके करतो एकदिन शकुनकी बात निकसी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो दर्शनके आगें शकुनको कहा काम है और श्रीगुसांईजीनें वाई समय सूरदासजीको कीर्तन कह्यो सो-

पद-मिल हें गोपाल सोई दिन नीको ॥ जोतिष निगम
पुराण बडे ठग, जानो फांसी जीको ॥ १ ॥ जे बूझेंतों
उत्तर देहुं, विन बूझें मत फीको ॥ कमल मीन दादुर
युंतर सत, सब घन परत अमीको ॥ २ ॥ भद्रा भली
भरणी भवहरणी, चलत मेघ अरु छीको ॥ अपने ठोर
सबे ग्रह नीके हरण, भयो क्यूं सीको ॥ ३ ॥ सुन मूढ
मधुकर व्रज आयो, ले अपयशको टीको ॥ सूर जहांलों
नेम धर्म व्रत, सो प्रेमी कौडीको ॥ ४ ॥

ये पद श्रीगुसांईजीनें श्रीमुखसोंआज्ञा करी तब वा वैष्णवकुं निश्चय भयो जो आज पीछे सर्वथा

शकुन नहीं देखुंगो सो वा वैष्णवको श्रीगुसांईजीके वचनपर ऐसो विश्वास हतो ॥ वैष्णव ॥ १६२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक बाई, तिनकी वार्ता ॥

सो वह बाई गोलवाडमें रहेती हती तब श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे तब (गोलवाडमें) वा गाममें मुकाम कऱ्या तब वह बाई जल भरवेकुं जाती हती सो श्रीगुसांईजीके दर्शन किये तो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब वह बाई श्रीगुसांईजीके शरण आई और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगी. फिर वा बाईको बेटा हतो सो वाट मारतो जो कोई रस्तामें वेपारी मिले विनकुं मारके धन लूट लावतो, तब वा बाईनें अपनें बेटासुं कही जो तू कोई दिन वैष्णवकुं मति मारियो। तब वाके बेटानें कही जो मैं कैसे पेहेचानूं?ये वैष्णव है तब वा बाईनें कही जो तूं जाकुं लूटें जब विनकुं इहां पकड लाव मैं पहेचानुंगी। तब वाको बेटा वैसेंही करतो पकड लावतो तब वा बाईकुं दिखावतो सो एक दिन ११ वेपारीनकुं पकड लायो तब विनमें एक वैष्णव हतो सो वाकी मानें देखके कही जो याकुं छोड दे तब वा वैष्णवनें कही ये १० मनुष्य मेरे भाई हैं सो मैं इनके पाछें प्राण देउंगो तब वा बाईनें वा वैष्णवको आग्रह देखके सबकूं छुडाय दिये और वा वैष्णवसुं

कही तुम रसोई करो और महाप्रसाद लेउ । तब वा वैष्णवनें रसोई करी और १० जनेनकुं महाप्रसाद लेवायो फिर वा बाईकुं और वाके बेटानकुं लिवायो और वा बाईके बेटानके संग १५० अस्वार चोरी करवेकुं फिरते हते सबकुं प्रसाद लिवायो तोहुं महा प्रसाद खूट्यो नहीं तब वा बाईके बेटानें पूंछी जो तुमनें रसोई तो ११ मनुष्यनकी करी हती परंतु सबकुं महाप्रसाद पूरो कैसे भयो और अगीयार मनुष्य खावे इतनो बधी पर्‍यो है याको कारण कहा? तब वा वैष्णवनें कही जो हकको खावे है और अपनी मेहनतको द्रव्य कमायके खावे है विनको कोई दिन घटे नहीं है तब वो पटेल बोल्यो हमकुं ऐसो सिखावो तो बहुत आछो. तब वा वैष्णवनें कही तुम चोरी करनो छोड देवो और खेती करके खावो तो तुमकुं ऐसे होवेगो तब वा बाईके बेटा पटेलनें चोरी करनो छोड दियो और सब गामकुं चोरी करनो छुडाय दियो और खेती करन लगे सो वह बाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपा पात्र हती जिनके संगतें आखो गाम श्रीगुसांईजीकुं पधरायके वैष्णव भयो।वै. १६३

श्रीगुसां० सेवक कुमनदासजी बेटा कृष्णदास ति० वा० ॥

सो वे कृष्णदास श्रीनाथजीकी गायनकी सेवा करते और एकदिन कुमनदासजीकुं श्रीगुसांईजीनें

पूंछी तुमारे कितने बेटाहै। तब विननें कही हमारे दोढ बेटा है। तब आपनें आज्ञा करी दोढ कैसे होवै? आधे बेटाकी समझण पाडो तब कुमनदासजीनें कही पुष्टिमार्गमें भगवत्सेवा और भगवद्गुणगान ये दोनों मुख्यहै तब दो काम करे सो बेटा आखो और एक करे सो आधो सो चतुर्भुजदास दो काम करेहै सेवा और गुणगान और कृष्णदास एक सेवा करेहै जासुं आधो बेटाहै ये सुनके श्रीगुसांईजी मुसकाये और आज्ञा करी वैष्णवकुं ऐसेही चाहिये सो वे कृष्णदास दिवसरात गायनकी सेवा करते और गाय चरावते हते। एक दिन गायनमें सिंघ आयो जब गाय बचावेके लीयें कृष्णदासने आपणे प्राण दिये और सिंघकी झपाट सहेगये और जब कृष्णदासके प्राण छूटे वाही समय श्रीनाथजी खिरकमें गोपीनाथदास ग्वालके पास गाय दोहते हते और कृष्णदास बछरा पकड रह्ये हते सो गोपीनाथदास देखते हते सो ये बात कुमनदासजीकी वार्तामें लिखीहै यातें इहां लिखेनहींहै सो कृष्णदासजी ऐसे कृपापात्र भये ॥ वैष्णव १६४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोकुलभट्ट और गोविंदभट्ट कृष्णभट्टजीके बेटा तिनकी वार्ता ॥

सो वे दोनों भाई बालपणेसुं श्रीगुसांईजीके

सेवक भये और श्रीगुसांईजीके पास पढे हुते सो पुष्टिमार्गके श्रीसुबोधिनीजी आदिक ग्रंथनमें बडे प्रवीण हते और शास्त्रार्थमें बडे कुशल हते जब वे बडे भये तब एक भाई उज्जैनमें रहते और एक भाई श्रीजीद्वारमें रहते सो वर्षके वर्षमें श्रीनाथजीकी सेवा और घरके श्रीठाकुरजीकी सेवा करते जा वर्षमें गोविंदभट्ट श्रीजीद्वार जाते तब गोकुलभट्ट उज्जैन आवते और गोकुलभट्ट श्रीजीद्वार जाते तब गोविंदभट्ट उज्जैन आवते और श्रीगुसांईजीकी कृपातें जिनको चित्त श्रीनाथजीविना क्षण एक रही न सकतो और श्रीगोवर्धननाथजी और घरके श्रीठाकुरजी दोनों स्वरूपनमें जिनकी एकसारखी प्रीति हती। यातें घरके श्रीठाकुरजी और श्रीनाथजी विनके उपर बहुत प्रसन्न रहते और शृंगार धरते और भूल जाते तो श्रीनाथजी विनकुं शिखावते वे दोनों भाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपा पात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १६५ ॥

श्रीगुसां॰ सेवक यादवेंद्रदास आगरेमें रहेते ति॰ वा॰ ॥

सो वे यादवेंद्रदास श्रीगुसांईजीके सन्निधान रहते सो वे यादवेंद्रदास श्रीसुबोधनीजीकी सब पंगती कंठाग्र राखते और दिवसरात भगवल्लीलाको अवगाहन करते और भगवद्रसके प्रतापसुं

सखीभाव विनको होयगयो सब लीलानको दर्शनको अधिकार भयो एक दिन श्रीगुसांईजीके दर्शन श्रीगोवर्धननाथजीके संग युगल स्वरूपके भये जैंसे गोपालदासजीनें गायो है आख्यानमें--

रूपां बेउ एक ते भिन्न थई विस्तरे विविध लीलाकरे भजन सारे ॥ विविध वचनावली नयनसेनें मली सांगनां सूचवे निश विहारे ॥ १ ॥ विविध मुक्तावली पाठसूत्रें करी गलसरी शोभतां कर सिंगारे ॥ विविध कुसुमावली ग्रथित हाथें करी एकएकनें कंठ आरोपें हारे॥२॥ विविध मेवा भोग मधुर मिष्टान्न रस दसमस्यां अर्पते बहुप्रकारे ॥ विविध बीडा सुगंध कर्पूरनें एलची लौंग पूगी पानखेरसारे ॥ ३ ॥

ऐंसे दर्शन यादवेंद्रदासजीकुं भये ऐंसी कृपा यादवेन्द्रदास पर श्रीगुसांईजीनें कीनी और जैंसे दर्शन करते तैंसे पद नूतन करके गावते सो वे यादवेंद्रदास क्षत्री श्रीगुसांईजीके ऐंसे परम कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १६६ ॥

श्रीगु० से० मथुरामल और हरजीमल दोउ भाईनकी वार्ता ॥

सो जब पुरुषोत्तमदास चोपडाक्षत्री वृद्ध भये और श्रीलाडलेशजीकी सेवा न बनवेलगी तब श्रीलाडलेशजीनें श्रीगुसांईजीसों आज्ञा करी जो अब मेरी सेवा मथुरामल और हरजीमलकुं करवेकी

आज्ञा देवें तो बहुत आछो है पुरुषोत्तमदास वृद्ध भये है तब श्रीगुसांईजीनें विनके माथे श्रीलाडलेशजी पधराय दिये सो वे दोनों भाई श्रीलाडलेशजीकी सेवा बहुत प्रीतिसुं करन लगे और श्रीलाडलेशजी बिन दोनों भाईनसुं बालककीसी न्याई झगडा करकरके अनेक प्रकारके पदार्थ मांगते और वे दोनों भाई श्रीलाडलेशजीकुं प्रसन्न राखते जैंसे बालक उदास न होवे वैसे करते छेलो जन्म जिनकुं होवे तिनकी ऐंसी वृत्ती होवे सो वे दोनों भाई श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिननें मन क्रम वचन करके श्रीलाडलेशजीकुं प्रसन्न किये॥ वैष्णव॥ १६७

श्रीगुसांईजीके सेवक एक बलाई तिनकी वार्ता ॥

एकसमय श्रीगुसांईजी गुजराततें व्रजकुं पधारते हते रस्तामें आवते एक ठेकाणे रस्ता भूलगये सो उहां एक बलाई मिल्यो सो वा बलाईसुं वैष्णवनें रस्ता पूंछयो तब वा बलाईनें कही या रस्तामें तो चोर लूटे हैं जासुं तुम चलो मैं दूसरो रस्ता लेजाउं तब विन वैष्णवनकुं संगलेके दूसरो रस्ता चल्यो सो आछो रस्तो ले आयो और फेर वा बलाईकुं कही जो तेरो गाम कहाहै तब बलाईनें कही तुम जावो वही रस्तामें मेरो गाम आवेगो तब श्रीगुसांईजीके मनुष्यननें कही जो हमारे संग

चलें तो खावेको देवें और खरचीहुं देवेंगे तब वो संग चल्यो रस्तामें डेरा भये रसोई भई श्रीठाकुरजी अरोगें और श्रीगुसांईजीनें भोजन किये पाछें सब वैष्णवननें प्रसाद लिये और सब वैष्णवननें वा बलाईकुं जूठन दीनी सो जूठन लेत मात्रही वा बलाईको अंतःकरण निर्मल भयो और श्रीगुसांईजीके दर्शन साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये और श्रीगुसांईजीकुं विनती करी जो मोकुं आप शरण ल्यो तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम सुनायो तब वो नित्य श्रीगुसांईजीके संग चले और नित्य वैष्णवनकी जूठन लेवे और दिन दिन वाको भाव बढतो जाय ऐसे करते करते वाको गाम आयो वा गाममें श्रीगुसांईजीनें डेरा किये और वाकी स्त्रीकुं लायके वैष्णव कराई और जूठन खवाई जूठन लेतमात्रहीं वा स्त्रीके मनको मैल छूटगयो और दिव्यदृष्टी होयगई फिर दर्शन करके अपने घर चली वाकुं घरके रस्तामें विरहताप भयो मूर्छा खायके परी तब वो बलाई उठाय लायो और श्रीगुसांईजीके दर्शन कराये तब वाकुं चेत भयो सो वे स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईजीके संग चले और श्रीगोकुल आये और दूर दूरसुं चले आवे कोई मनुष्यनकुं छीवें नहीं फेर श्रीयमुनाजीके घाटपें श्रीगुसांईजी पधारे

और वे स्त्रीपुरुष उहां बैठरहे नावपर कोई बैठावे तौहु बैठे नहीं जो सब छीजाय जासुं वे पार न उतरे दूसरे दिन विनकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन न भये तब विनकुं ज्वर चढ आयो और मूर्च्छा खायके पररहे या बातकी खबर श्रीगुसांईजीकुं परी तब श्रीगुसांईजीनें मनुष्य पठायके वे दोनों मूर्छा खायके परेरहे विन दोउनकुं उठायके पार उतराये और मूर्च्छा तौ खुली नहीं तब श्रीगुसांईजी पधारके दोउनकुं चरणस्पर्श कराये तब विनकी मूर्च्छा खुली तब विननें श्रीगुसांईजीकुं बीनती करी जो आपके दर्शन विना हमारे प्राण नहीं रहेंगे तब श्रीगुसांईजीनें पादुकाजीकी सेवा विनके माथे पधराय दीनी तब आज्ञा करी तुम इनकी सेवा करो जब तुमारो मनोरथ होवेगो तब मैं इनमेंसुं रूप धरके तुमकुं दर्शन देउंगो फेर आज्ञा करी फल फूल मेवा दूधकी सामग्री इनकुं भोग धरियो और एकांतमें जायके सेवा करो तब वे बलाई एक निर्जनबन हतो जहां पर्वतकी गुफा हती उहां जायके रहे और पादुकाजी पधरायके सेवा करन लगे फेर फल फूल लायके नित्य भोग धरे और सांजसवारे नित्य श्रीगुसांईजी विनकुं दर्शन देते, कोई समय तो पुस्तक वांचते दर्शन देते कोई समय जप करते दर्शन देते

कोई समय संध्या वंदन करते दर्शन देते जैसे विनके मनोरथ होते तैंसे दर्शन देते फेर वा स्त्रीनें कही मेरे मनका बेचके पूणी और चरखा लाय देवो तब वे बलाई ले आयो सो वे लुगाई चरखा कांते और सूत बेचके पूणी लावे ऐसे करत करत रुपैया पांचसात इकट्ठे भये तब एक गाय ले आये और सामग्री करे और गायके कानमें अष्टाक्षरमंत्र कहि दियो सो वे गाय निर्भय होयके वनमें चरे और वे गाय एक गौ बलदा बिना दूसरेनकुं सिंह जैसी दीसे और निर्भय होयके वनमें चरे कोई मनुष्य और पशु वाके पास न आवे और सदा काग धेनु-कीसी न्याई दूध देवे ऐसे वे दोनों स्त्रीपुरुष वा कंद-रामें सेवा करते फेर एक दिन चार ब्राह्मण भूलके वा निर्जन बनमें आये तब विन ब्राह्मणको बडो सत्कार कियो और पूंछी क्युं आयेहो तब विननें कही जो हमारे गामके राजाने सब ब्राह्मण कैद करेहैं और कहेहैं जो तुम लाखन रुपैया दानधर्मके मेरे पिताके पाससूं खाय गयेहो अब मेरे पिताके हाथको पत्र लावो जब मैं साचो मानुंगो नहीं तो सब द्रव्य पाछें लेउंगो या दुःखसुं हम भाग आयेहैं तब वा स्त्रीनें कही तुमारे राजाको पितातो नरकमें पऱ्यो है मैं इहांसुं बैठी बैठी देखुंहुं तुम कहोतो

तुमकुं मिलाय देउं तब ब्राह्मण हाथ जोडके बोले जैसे बने तैसे मिलायद्यो तो बहुत आछो तब वा बलाईकी स्त्रीनें कही तुम आंखें मीच ल्यो तब वे चार ब्राह्मण आंख मीचके बैठे तब वा स्त्रीनें भगवत्कृपाके बलतें विनकुं यमलोकमें पहोंचाय दिये फेर वे चारों ब्राह्मण यमराजासुं कहके वा राजाके पिताकुं मिले और सब समाचार कहकें वासुं पत्र लिखाय लियो, सो वा पत्रमें लिख्यो जो जादिनतें ब्राह्मण कैद पडेहैं वा दिनतें मैं नरकमें पर्योहुं और तेरेको द्रव्य चहिये तो अमका कोठामें अखूट खजानो है वामेसुं तेरे हाथनसुं जितनो काढें इतनो द्रव्य मिलेगो दूसरो मनुष्य काढेगो तो नहीं मिलेगो ऐसो पत्र लिखायके वे चार ब्राह्मण आंखें मीचके बैठे तब वा बलाईकी स्त्रीको ध्यान कियो तो झट आंखे खोले तो वे पर्वतकी गुफामें जाय पहोंचे और बलाईकी स्त्रीसों कही हमकुं जीवत दान तुमनें दियो तब वा बलाईनें कही ये सब प्रताप श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजीको है हमतो जातके बलाईहें हमारी छायासुं तुम छीजावोहो परतु ये सब श्रीविट्ठलनाथजीको प्रताप है प्रकट नंदकुमार श्रीगोकुलमें बिराजे हैं तब वे ब्राह्मण श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये पाछे वा राजाके पास पत्र

लेके गये वे बलाई ऐसो श्रीगुसांईजीको कृपापात्र हतो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १६८॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजाकी वार्ता ॥

सो वा राजानें सब ब्राह्मण बंदीखाने डारे और राजानें कही जो मेरे पिताके पास तुमनें दान पुण्यके नामसों लाखन रुपैया खायेहैं जासों मेरे पिताको पत्र लाव तब चार ब्राह्मण भाग गये सो पत्र ले आये ये बात बलाईकी वार्तामें लिखीहै फेर वा राजाके बेटानें पत्र वांचके अखूट खजाना वा राजाके बेटानें खोल्यो सो राजाके बेटाकुं विश्वास आयो और जितनो द्रव्य चहिये इतनो काढ्यो और सब ब्राह्मणनकुं छोड दिये फेर चार ब्राह्मणनसुं राजानें पूंछी ये पत्र कैंसे लाये तब वे चार ब्राह्मण बोले श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें बिराजे हैं विनकी कृपातें लाये और विनकी कृपातें सब कारज सिद्ध भयो तब वे राजा ब्राह्मणनके संग आयके श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीका सेवक भयो और श्रीनाथजीके दर्शन किये और व्रजयात्रा करी और भगवत्सेवा पधरायके अपने देशमें आयो और भलीभांतिसों सेवा करन लग्यो और वैष्णवनको संग करन लग्यो और वैष्णवनके संगतें और भगवत्सेवाके प्रतापतें और श्रीगुसांई-

जीकी कृपातें वा राजाकी बुद्धि निर्मल भई और दिव्यदृष्टी भई और वाको पिता नरकतें निकसके वैकुंठ गयो और दिव्यदृष्टीसुं देख्यो तब वे राजा भगवत्सेवा छोडके और कछु काममें चित्त न लगावतो दिवस रात भगवल्लीलाको चिंतवन करतो सो वे राजा श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र भयो॥ वै. १६९

श्रीगुसांईजीके सेवक सगुणदास तिनकी वार्ता ॥

सो सगुणदास रूपसनातनके सेवक हते और ब्रजमें फिरते हते और श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजी ठकुरानी घाटपर विराजते हते तब सगुणदासजीनें दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब श्रीगुसांईजी बोले सगुणदास आगें आवो तब सगुणदासनें अपनें मनमें विचाऱ्यो मोकुं कोईदिन आपनें देख्यो नहीं और जान गये हैं जासुं ये साक्षात् नंदकुमार हैं इनकी शरण जाउं तो ठीक तब सगुणदासनें विनती करी महाराज मोकुं शरण लेउ तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी न्हाय आवो तब सगुणदास न्हाय आये तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नाम निवेदन कराये तब सगुणदासजीकुं भगवल्लीलाकी स्फूर्ति भई सो श्रीमहाप्रभुजीके तथा श्रीगुसांईजीके तथा श्रीठाकुरजीके सहस्रावधि नये नये पद करके गाये सो पद इहां

लिखे नहींहैं सो सगुणदासजीकुं श्रीठाकुरजी जैसी लीलाको अनुभव करावते तैंसे पद गावते ॥ वै० १७०

श्रीगुसांईजीके सेवक मन्नालाल और गोवर्धनदास दोउ भाईनकी वार्ता ॥

सो वे दोनों भाई श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीनें कृपा करके विनके माथे सेवा पधराय दीनी तब वे दोनों भाई व्रजमें रहके सेवा करनलगे सो श्रीगुसांईजीके इहां दर्शन करके फेर सेवा करके अपने घर आवते फेर बहुत दिन व्रजमें रहके सब रीति सीखे फेर अपने देशकुं आये सो आयके अपनें घरमें सेवा करन लगे फेर इतनेमें खेलके दिन आये तब राजभोग धरके और राजभोग सरायके फेर श्रीठाकुरजीकुं खेलावन लगे तब श्रीठाकुरजीनें कही जो तुम हमकुं पहले खिलायके पाछें राजभोग धरो तो बहोत आछो है तब विननें कही याको कारण कहा तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी जो जब खेल होवेहैं तब सखा और व्रजभक्त मेरे संग खेलन आवेहैं जब खेल चुकें और राजभोग तुर्त आवे तो व्रजभक्त जो खेलवे आवेहैं सो और सखा आये होवे सो मेरे संग भोजन करे तब मोकुं बहोत आनंद होवे और विनकुं देखके मोकुं भोजन बहोत भावे है तब वे सुनके दोनों भाईननें ऐंसी कही

जो हम श्रीगुसांईजीकुं पूछेंगे वे आज्ञा करेंगे तैंसे हम करेंगे काहेतें जो नवरत्नग्रंथमें श्रीमहाप्रभुननें कह्योहै सो वाक्य--'सेवाकृतिर्गुरोराज्ञा' सेवाकी कृती गुरुकी आज्ञा प्रमाणें करणी तब मन्नालाल श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीसों विनती करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो पुष्टिमार्गमें दोनों क्रम हैं सो श्रीठाकुरजीकुं रुचे ऐंसेही करो तब फेर श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लेके मन्नालाल तुर्त आयके राजभोग धरेसुं पहले खिलावन लगे सो वे मन्नालाल तथा गोवर्धनदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते । जिनकुं श्रीगुसांईजीकी वाणीपर अति विश्वास हतो और श्रीठाकुरजीकुं तो बालक समझते हते ऐंसे विनके निर्मल भाव हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १७१ ॥

श्रीगुसां० सेवक भगवानदास भीतरिया ति० वार्ता ॥

सो वे साचोरा ब्राह्मण हते सो वे भगवानदास गुजराततें आयके श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीनें कृपा करके श्रीनाथजीकी सेवामें राखे तब भगवानदासजी श्रीनाथजीकी सेवा नीकी भांतिसों करन लगे, शुद्ध अंतःकरणसुं राजा जितनो डर राखते और बालक जैंसी वात्सल्यता राखते और सर्वसुं अधिक स्नेह राखते सो श्रीनाथजी विनके ऊपर बहोत प्रसन्न रहते एकदिन भग

वानदासके देखते श्रीगुसांईजीके संग श्रीनाथजी बातें करते हते तब श्रीगुसांईजीने पूंछी जो श्रीनाथजीनें कहा कही तुम समझे ? तब भगवानदास हाथ जोडके बोले जो मैं तुच्छजीव कहा समझुं जासुं आपकी कृपा विना कैंसे समझो जाय, तब ये सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये तब श्रीनाथजी भगवानदासजीसों बोलन लगे और सब बात जतावन लगे सो वे भगवानदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १७२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक शेठ और विरक्त ति० वार्ता ॥

सो वे दोनों श्रीगुसांईजीके संग व्रजयात्रा चले और संगमें वैष्णव बहोत हते सो वे विरक्त वैष्णव चुकटी मांगके निर्वाह करते सो एकदिन विरक्त वैष्णवनें रसोई करी हती सो वा रसोईकी मेंडपर कुत्ता निकस गयो तब वानें श्रीगुसांईजीसों पूंछी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेरी रसोई नहीं छीगई फेर दूसरे दिन वा शेठकी रसोईकी मेंडपरसुं कुत्ता निकस गयो तब वा शेठनें श्रीगुसांईजीसों पूंछी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेरी रसोई छीगई तब शेठनें दूसरो सामग्री मंगायके रसोई कराई फेर दूसरे दिन समय पायके वा शेठनें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी जो हे महारा-

जाधिराज या विरक्त वैष्णवकी रसोई छिवाय न गई और मेरी छिवाय गई याको कारण कहा कुत्ता तो दोनोंनकी मेंडपर सारखो निकस्यो हतो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो याके पास द्रव्य नहीं है पचीस घरसुं मांगलावे जब निर्वाह करे और तुमारे पास द्रव्यहै चाहे जा समय जितनी रसोई कराय सको इतनी रसोई होय इतनो तार-तम्यहै जासुं याकी नहीं छिवाई और तुमारी छिवाई तब वा शेठके मनमें जो द्रव्यको अभिमान हतो सो मिटगयो और ये निश्चय कऱ्यो जो द्रव्य भगवदर्पण न होवे तो वा द्रव्यसुं अनर्थ उत्पन्न होवे और वा विरक्तके मनमें चिंता हती जो मेरे पास द्रव्य नहीं है सो चिंता मिटगई जो बहोत द्रव्य होतो तो मेरी कैसी बुद्धी होती तब मनमें बहोत प्रसन्न भयो और सो विरक्त और शेठ श्रीगुसां-ईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनकुं तत्काल ज्ञान प्राप्त भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १७३ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मा-बेटी, तिनकी वार्ता ॥

सो वे मा बेटी राजनगरमें रहती हती एक समय श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे हते और वे मा बेटी श्रीगुसांईजीकी सेवक भई. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम सेवा करो विननें कही हमारे पास

द्रव्य नहीं है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम घरमें करते होवो ऐसेही करो परंतु मार्गकी रीतीसु भोग धरो तब विननें वीनती करी जो बंटा भरवेके लीयें और उत्थापन भोग धरवेके लीयें हमारे पास द्रव्य नहीं है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी बाजरी भिजायके सब काम चलावनों तब श्रीगुसांईजीनें विनके माथे सेवा पधराय दीनी तब वे भली भांतीसुं सेवा करन लगी. एकदिन श्रीगुसांईजी गाममें पधारे तब रस्तामें घंटानाद भयो तब आपनें पूंछी कोनको घर है तब वैष्णवननें कही मा बेटी इहां रहेहें साठ वरसकी बेटी है और पंचोतर वरसकी माहै सो वे इहां सेवा करेंहें कछु विनको आचार विचार बराबर नहीं है ऐसे वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसुं कही तब श्रीगुसांईजीनें कही पहलेतो विनको घर देखें तब श्रीगुसांईजी कृपा करके विन माबेटीके घर पधारे तब श्रीगुसांईजीकुं पधारे देखके बहुत प्रसन्न भई तब आपनें पूंछी कहा समयहै तब बाईनें कही उत्थापन भोग सरवेकी तैयारीहै ऐसी बीनती वा डोकरीनें करी तब श्रीगुसांईजी भीतर पधारे देखे तो श्रीठाकुरजी बाजरीके दाणा आरोगेंहें तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी जो आप ये प्रसाद लेवो तब श्रीगुसांईजी भोग

सरायके बहार लेआये तब वे डोकरीकुं कहके आप अरोगनलगे तब विनको स्नेहसुं हृदय भर आयो और मनमें समझी श्रीगुसांईजी कैसे दयालुहैं तब दूसरे वैष्णव वा डोकरीसुं व्यवहार नहा करते हते सो सबने बाजरीके दाणा लिये और नित्य बड बडे वैष्णव भगवदीय वा डोकरीके घर प्रसादी बाजरीके दाणा नित्य लेवे आवते जा दिन श्रीगुसांईजी उहां अरोगे वा दिनतें सब वैष्णव वा डोकरीको बहुत मुलाजो राखते सो वे मा-बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १७४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास तिनकी वार्ता ॥

सो वे गोपालदास वडनगरा नागर हते सो वडनगरमें रहते हते जब श्रीगुसांईजी वडनगर पधारे तब सेवक भये और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके सेवा करन लगे फेर गुजरातमेंसुं संग गयो तब गोपालदास वा संगके संग श्रीगोकुल गये और नवनीतप्रियाजीके दर्शन किये वा संगमें पांचसो मनुष्य हते सबनें राजभोगके दर्शन किये जब हो चुके तब दर्शन करके और सबनें श्रीगुसां-ईजीके दर्शन किये और श्रीगुसांईजीनें भोजन करके गोपालदासजीकुं जूठनकी पातर धरी तब गोपालदासनें बाहेर आयके संगवाले पांचसों वैष्ण-

वनकुं कही सब महाप्रसाद लेउ तब वैष्णव लेवे बैठे तब श्रीगुसांईजीकी जूठनमेंसुं गोपालदासजीनें पांचसो वैष्णवनकुं पातर धरी और पांचसोंनें प्रसाद लियो तोहुं जूठन घटी नहीं फेर गोपालदास आप लेवे बैठे जूठन घटे नहीं और गोपालदास उठे नहीं तब श्रीगुसांईजीनें गोपाल-दासजीसु पूंछी जो कैसे है तब गोपालदासनें विनती करी जहांसुधी ये जूठन रहेगी तहांसुधी कैसे उठ्यो जाय तब श्रीगुसांईजी न्हावे पधारे तब तुर्त वह जूठन घट गई तब गोपालदासजी उठे तब श्रीगु-सांईजीनें कही श्रीनाथजी तुमारे मनोरथ पूर्ण करेहैं तब गोपालदासनें कही आखी विश्वकुं पूर्ण तृप्ती आप करेहें सो मेरी कामना आप क्युं पूर्ण नहीं करे आपकी कृपासों मेरे सब काम पूर्ण है सो वे गोपालदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १७९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रणछोडदास वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे रणछोडदास गुजरातमें रहते हते द्रव्यपात्र बहुत हते और श्रीठाकुरजी और वैष्णवकी सेवा भला भांतिसों करते हते और वैष्णवके ऊपर विश्वास बहुत हतो फेर एक ठग वैष्णव बनके विनके घरमें उतर्‍यो आर विनने बडो आदर सत्कार कर्‍यो

फेर वा ठगनें रणछोडदासके बेटाको एकांतमें मार डाऱ्यो और गहनो उतार लियो और गांठडी बांधके चल्यो रस्तामें वाकुं रणछोडदास मिले तब वा वैष्णवसों कही प्रसाद लिये विना जायवे नहीं देऊंगो वाकी गांठडी उठाय लीनी और हाथ पकडके लेचले फेर घरमें आयक वा वैष्णवकुं न्हवायके बैठायो और गांठडी भीतर धरदीनी ये वैष्णव मिले विना न जाय यासुं गांठडी भीतर धरी फेर वाकी स्त्री बोली छोरा सवारकी गयोहै सो आयो नहीहैं वाकुं ढूंढलाव फेर घरके पाछे एक बगीचा हतो सो बगीचा रणछोडदासको हतो सो बगीचामें छोराकुं ढुंढवे गयो सो छोरातो मिल्यो नहीं एक माटीको ढगलो देख्यो मनमें आई ये माटीको ढगलो इहासुं काढडारूं तो ठीक तब माटीके ढगलेमें हाथ डाऱ्यो तो वो छोरो मऱ्यो पऱ्या हतो देखके वाके कानमें अष्टाक्षर मंत्र कह्यो और कही उठ ! उठ !! घरमें वैष्णव आयहैं विनकुं जय श्रीकृष्ण कर तब वह छोरा उठके ठाढो भयो फेर छोराकुं घरमें लायके न्हवायो और श्रीठाकुरजीके दर्शन करवाये तब वे ठग रणछोडदासके पांवन पऱ्यो और कही जो मैनें ये दुष्टकर्म कऱ्यो है सो तुम क्षमा करो और मोकुं वैष्णव करो तब वा रणछोडदासनें खर्ची देके

श्रीगोकुल पठायो और श्रीगुसांईजीके उपर पत्र लिख दियो सो वे रणछोडदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिननें बेटा जीवतो कऱ्यो॥ वै० १७६॥

श्रीगुसां० सेवक दोउ ठग, जिननें नारायणदासकी
स्त्रीकुं फाँसी दीनी तिनकी वार्ता ॥

सो फांसीकी बात सगरी नारायणदासकी वार्तामें लिखी है और जब नारायणदासकी स्त्री जीवती भई तब वे ठग नारायणदासजीके पांवन परे तब कही हमकुं वैष्णव करो तब नारायणदासनें श्रीगुसांईजीके ऊपर पत्र लिख दीनो सो वे पत्र लेके ठग श्रीगोकुल आये तब श्रीगुसांईजीनें विनको मन फिऱ्यो देखके तब शरण लिये और कृपाकरके विनकुं पावन किये और भगवत्सेवा पधराय दीनी तब वे ठग बडे वैष्णव भये और अत्यंत कृपापात्र भये और जन्मपर्यंत नारायणदासजीको सत्संग न छोड्यो ॥ वैष्णव १७७॥

श्रीगुसां०से०एक राजाके बेटा बत्तीस लक्षणो, ति०वार्ता ॥

जब वे राजा वृद्ध भयो तब वाको अंतकाल आयो तब वा राजानें अपनें बेटाकुं बुलायके कही वा गाममें श्यामदास वैष्णव रहै हैं याको सत्संग करियो वाके ऊपर विश्वास राखेगो तो तेरो भलो होवेगो ऐंसे कहके वो राजा भगवच्चरणारविंदकुं

पहोंच्यो तब राजाके बेटाने वा वैष्णवकुं बुलायो और सब बात कही फेर एकदिन वा राजाके बेटाको हाथ कट गयो तब वा श्यामदासने कही प्रभु जो करे सो भली करे और फेर एकदिन वा राजाके बेटाकी स्त्री मरगई सब लोक कहे बुरो भयो तब श्यामदासने कही प्रभु करे सो भली करे ये सुनके वा राजाकुं गुस्सो चढ्यो फेर थोडेदिन पीछे वा राजाको बेटा मरगयो तब सब लोगनने कही बुरो भयो तब श्यामदासने कही प्रभु करे सो भली करे तब वे राजाकुं बडो गुस्सो चढ्यो तब वे राजा मनमें ये समझ्यो ये मेरे बुरेमें खूब राजी है तब वा राजानें विचार कियो याको छानो छानो मार डारनो तब वा राजाके बेटाने नीचनकुं बुलायके कही जो ये श्याम दास सवारे तीनबजे जलभरवे जाय है तुम याको मारडारो परंतु कोई औरकुं खबर न पडे ये सुनके वे नीचलोग रस्तामें बैठरहे सवारे श्यामदास आवेगो तो मारेंगे ये विचार करलीयो तब भगवदिच्छातें श्यामदासके मनमें ऐसी आई जो आज दूसरे कुंवा-पर जलभरन जाऊं तो ठीक तब श्यामदास सवारे उठके जल भरने चल्यो सो रस्तामें ठोकर लगी तब वा श्यामदासको पांव टूट गयो तब वाकुं उठायके घरमें लाये घरमें आयके परे फेर वा राजाकुं खबर

परी जो जलभरवेकुं नहीं गयो और पाँव टूट गयो है एक दोदिन पीछे वे राजा श्यामदासके घर आयो और आयके कही तुमारा पांव टूटचो सो बुरो भयो तब श्यामदासनें कही प्रभु जो करेहैं सो भली करेहैं तब वा राजान जानी याके बोलवेको स्वभाव ऐंसो है आपने बुरेमें ये राजी नहींहै सब बात भली माने है तब नित्य श्यामदासके घर आवे और श्यामदासको सत्संग करे फेर एक और बडो राजा हतो सो सब राजानके पास खंडणी लेतो हतो सो वा बडे राजानें वा राजाकुं बुलायो तब वा राजानें श्यामदाससुं पूंछी तब श्यामदासनें कही जावो प्रभु करे सो भली करें तब वे राजा बडे राजाके पास गयो तब वा राजानें पंडितनकुं एकठे करके याके लक्षण तपासे सो शास्त्रमें बत्तीस लक्षण कहेहैं और तो सब मिले, एक तीन लक्षण न मिले--एक तो याकी स्त्री मरगई हती और बेटा मरगयो हतो और आंगरी कटी हती ये तीन न मिले। तब वा राजानें वाकुं कही तुमारे घर पाछा तुमारे राजपर जावो तब राजाके बेटानें पंडितनसुं पूंछी जो मोकुं बडे राजानें काहेकुं बुलायो हतो तब पंडितननें कही या राजानें पांच करोड रुपैया खरचके एक तलाव खोदायो है सो वा तलावमें जल नहीं निकस्यो तब

पंडितनसुं वा राजानें पूंछी हती जो कैसे निकसे तब पंडितननें कही जो बत्तीस लक्षणो मनुष्य या तलावमें वध करो तो पाणी आवे तब बत्तीस लक्षणो कोई मिल्यो नहीं तब तुमकुं बत्तीस लक्षणो जानके बुलायो है जो ये मिलवेको आवेगो याकुं अजानमें तलाव दिखावे जाएंगे तब याकुं मार डारेंगे तब तलावमें पाणी आवेगो तब तुमारे लक्षण बत्तीसमें तीन घट गये हैं जासुं मरायवेकी नाहीं ठहरी है और तुमकुं घर जावेकी रजा मिली है ये बात सुनके वे राजा प्रसन्न भयो और विचार कियो जो श्याम-दास वैष्णवनें कही हती जो श्रीठाकुरजी करें सो भली करें जो मेरो बेटा और स्त्री और आंगरी खंडित भई न होती तो आज मेरो जीव जातो ऐसे कहेके वे राजा उहांसुं चल्यो और गामके बहार आयके वा खाली तलावकुं देखवे गयो सब मनुष्यनकुं नीचे ठाडे किये और एकलो वा तलावकी पालपर चढ-गयो और अष्टाक्षर कहके वा तलावपर दृष्टी करी तब सब तलाव भरगयो तब सब लोक देखके विस्मय होय गये और पंडितनकी बुद्धीहुं विचारमें परी और कछु समझन नहीं परी कारण जो भगवन्ना-मको प्रताप तथा वैष्णवधर्मको प्रताप वे पंडित जानते नहीं हते तब वा गामको राजा ये बात

सुनके तुर्त उहां आयो और देखके बहुत प्रसन्न भयो तब वा राजाकुं अधिक देश दियो और राजी करके अपने देशमें पठायो फेर वह राजा अपनें गाममें आयो और आयके श्यामदासके पावन पऱ्यो और अपराध क्षमा कराये और फेर वा श्याम दासके सत्संगतें श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो सो वा राजाके बेटापर श्रीगुसांईजीनें ऐसे कृपा करी हती ॥ वैष्णव १७८ ॥

श्रीगु॰ सेवक पुरुषोत्तमदास काशीमें रहेते, तिनकी वार्ता ॥

एक समय श्रीगुसांईजी काशी पधारे हते पुरुषोत्तमदास तथा विनकी स्त्री श्रीगुसांईजीके सेवक भये फेर श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथरायजी पधारे तब पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजीके संग आये फेर पुरुषोत्तमदासनें सखडी महाप्रसाद् अरोगवायो जगन्नाथक्षेत्रमें अबसूधी वल्लभकुलके बालक पुरुषोत्तमक्षेत्रमें सब वैष्णवके हाथको श्रीजगन्नाथरायजीको महाप्रसादसखडीको अरोगेहैं सो पुरुषोत्तमदासकी कृपासुं अब सूधे रीती चलेहैं फेर श्रीगुसांईजी काशी होयके श्रीगोकुल पधारे और सब खटला लेके पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजीके संग आये और श्रीगोकुलमें रहे और श्रीगुसांईजीके मुखसुं कथा सुनते एकदिन पुरुषोत्तमदासनें श्रीगुसांईजीसों पूछो

जो मर्यादामार्गमें और पुष्टिमार्गमें भेद कहा तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी मर्यादा मार्गमें साधन और क्रिया और कर्मबल और कर्मके फलकी इच्छा और साधनकी मुख्यता जाको नाम मर्यादामार्ग है और पुष्टिमार्गमें स्नेहपूर्वक कृष्णसेवा मुख्यहै और भगवदीयको सत्संग और केवल भगवदनुग्रहको बल और केवल निःसाधनपणो और भगवद्धर्म मुख्य तब लौकिक वैदिक लोगनके दिखायवेके लीयें करेहें मुख्यता भगवद्धर्मनको है सो पुष्टिमार्ग कहिये य सुनक पुरुषोत्तमदास बहोत प्रसन्न भये और सिद्धांत रहस्य इत्यादि ग्रंथ अभिप्राय सहित श्रीगुसांईजीके पास सीखे और श्रीठाकुरजी पधरायके भगवत्सेवा करन लग और जो भगवद्रससंबंधी बातें अष्टप्रहर श्रीगुसांईजीसुं सुन्यो करते एकदिवस पुरुषोत्तमदासनें पूंछी जो श्रीठाकुरजी पीतांबर काहेकुं धरतहैं और श्रीस्वामिनीजी नीलवस्त्र काहेकुं धरतहैं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीस्वामिनीजीको गौरवर्णहै कंचन जैसो ता विना श्रीठाकुरजीसों रह्यो नहा जायहै ॥ श्लोक-

रूपं तवैतदतिसुन्दरनीलमेघप्रोद्यत्तडिन्मदहरं व्रजभूषणाङ्गि ।
एतत्समानमितिपीतवरंदुकूलमूराबुरस्यापि बिभर्तिषदासनाथः

यातें पीतम्बर धरेहैं और श्रीठाकुरजीको श्या-

मवर्ण है शृंगाररसरूपहैं जामें अगाध रस भर्‍योहै या स्वरूपविना श्रीस्वामिनीजी रही न सके जासुं यातें श्रीस्वामिनीजी नीलाम्बर धरें हें ये सुनके पुरुषोत्तमदास या रसमें मग्न होयगये ऐंसी कितनी बात पुरुषोत्तमदासकी लिखें कोई दिन श्रीगुसांईजीके चरणारविंद छोडके कहुं जाते नहीं सो वे पुरुषोत्तमदास ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव १७९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक वेणीदास, तिनकी वार्ता ॥

सो वे वेणीदास पूर्वके संगमें श्रीगोकुल आये और श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् कोटि कंदर्पलावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम ऐंसे स्वरूपके दर्शन भये तब वेणीदासनें ऐंसो विचार कियो इनके शरण जइये तो बहोत आछो तब श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये तब भगवत्स्वरूपको ज्ञान भयो तब श्रीनाथजीके दर्शन किये तब वेणीदासकुं देहानुसंधान रह्यो नहीं दो घडी पाछे स्मृति आई तब वेणीदासकुं श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीनाथजीके दर्शन किये तब वेणीदासनें वीनती करी जो आपकी कृपातें श्रीनाथजीनें दर्शन दिये जीवकी कछु सामर्थ्य नहींहै श्रीनाथजी आपके वशमें हैं आपकी इच्छा होवे जिनकुं श्रीनाथजी दर्शन देवें फेर वेणीदासनें बीनती

करके श्रीठाकुरजीकी सेवा पधाराई और भगवत्सेवा करन लगे सो बहोत दिन पर्यंत श्रीगुसांईजीके पास रहे और पुष्टिमार्गकी रीति शीखे फिर वेणीदास आज्ञा मांगके अपनें देशकुं चले सो रस्तामें एकदिन बरसाद बहोत पड्यो और गाममें जग्या ढूंढवेकुं गये सो एक बडी जग्या हती उहां वेणीदासजी उतरे और श्रीठाकुरजीकी सेवा करी और महाप्रसाद लिये फेर रातकुं वेणीदासजी भगवद्वार्ता कर चुके तब देखे तो एक बडो प्रेत ठाढो है। तब वाकुं पूछी तुं कोन है ? तब वानें कही जो मैं प्रेतहुं इहां जो कोई आयके उतरे है सो पाछे जाय नहीं सो मैं बहोत बखतको ठाढो हुं परंतु तेरे ऊपर मेरो दाव चलें नहीं है तब वेणीदासजीकुं दया आई सो वाके ऊपर जल छांट्यो तब वा प्रेतकी प्रेतयोनि छूटी और दिव्य देह होय गई और वेणीदासजीकुं हाथ जोडके प्रेतनें कही जो तुं धन्य है मेरी प्रेतयोनि छुडायके मेरो कल्याण कियो अब मैं तेरी कृपातें वैकुंठकुं जाउंगो और मेरी प्रेतयोनि छुडायवेकुं कोई समर्थ नहीं हतो ऐंसे कहके और वेणीदासजीकुं दंडवत करके वो प्रेत वैकुंठ गयो तब वेणीदास अपने देशमें जायके श्रीठाकुरजीकी सेवा

भलीभांतिसों करन लगे सो वे वेणीदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र भये ॥ वैष्णव १८० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक हंस-हंसनी तिनकी वार्ता ॥

एकदिन श्रीगुसांईजी बद्रिकाश्रम पधारे हते उहां निर्जन बन हतो और मानससरोवर हतो और हंस बहुत हते वाईदिन कोई जीव शरण न आयो हतो यातें श्रीगुसांईजीनें भोजन न किये तब चाचाहरिवंशजी पांचदश हंस पकडलाये और श्रीगुसांईजीनें विनकुं नाम सुनाये और छोडदिये और महाप्रसाद धराये तब तें विन हंसननें महाप्रसाद लिये जब आगले जन्मकी स्मृति भई और भगवल्लीलाकी स्फूर्ति भई फेर श्रीगुसांईजी उहांते पधारे जब वा तलावपर कोई वैष्णव आवतो वाके पास हंस आयके बैठते और दूसरेके पास नहीं आवते और कोई देशमें एक राजा हतो वाकुं कोढ भयो सो बहुत भयो कोई उपायसुं मिटे नहीं तब कोई वैद्यनें कही जो हंसनको रुधिर चोपडे सों मिटेगो तब राजानें पारधी लोगनकुं बुलायके कही जो हंस लावेगो वाकुं लाख रुपैय्या इनाम देउंगो तब पारधी वा देशमें हंस पकडवेके लीयें गये परंतु हंसतो हाथमें आवें नहीं बहोत प्रयत्न किये और बहोत दिन उहां रहे एकदिन एक वैष्णव उहां आयो वाकुं

देखके हंस वाके पास आये सो ये बात पारधीनें
देखी तब दूसरेदिन पारधी वैष्णव बनके उहां गयो
तब वे हंस वैष्णव जानके वाके पास आये तब वानें
पकड लिये तब वा राजाकुं लाय दिये और लख
रुपैय्या इनामके लेगयो तब श्रीठाकुरजीनें विचारी
जो मेरे भक्तको दुःख मैं कैसे सहुं तब श्रीठाकु-
रजा वैद्य बनके बजारमें आये जे कोई रोगको
औषध पूछे तब श्रीठाकुरजी वाकुं औषध देवे तब
तत्काल वाको रोग मिटजाय ऐसें दो चार घडीमें
सैंकडे मनुष्यनके रोग मिटगये तब वा वैद्यको
यश बहोत फैल्यो फेर वा वैद्यकुं राजाके पास ले
गये तब वैद्यनें कही मैं अबी थोडो औषध देउंगो
थोडो कोढ मिटेतो आखो शरीर पर पीछे लगा-
उंगो फेर औषध दिये थोडा शरीरपर लगायो
तब थोडो शरीर निर्मल भयो तब राजा उठके
पांवन पऱ्यो और कही जो सब कोढ मिटाओ
तो जो मांगो सो देउंगो तब श्रीठाकुरजीनें
कही हंसनकुं छोडदेउ तब वा राजानें छोडदिये
तब श्रीठाकुरजीनें औषध लगायके सब कोढ
मिटायो फेर वा राजानें कही तुम मनुष्य नहींहे
देव हो के ईश्वर हो ? सो मैं जानत नहींहुं और कृपा
करके जनावो तो ठीक. तब श्रीठाकुरजीने कही तुम

श्रीगोकुलमें जायके वैष्णव होवो तब मोकुं पहेचानोगे. तब वह राजा श्रीठाकुरजीके वचन सुनके श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीके सेवक भये और वैष्णवको सत्संग करके श्रीगुसांईजीकी कृपाते भगवत्सेवा करन लगे तब धीरे धीरे श्रीठाकुरजीनें अपनो स्वरूप वा राजाकुं जनायो सो वे हंस-हंसनी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते जिनसुं श्रीठाकुरजी वैद्य बनके छुडाये ॥ वैष्णव १८१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक पारधी तिनकी वार्ता ॥

सो वह पारधी राजाके पास लाख रुपैया लेगयो और श्रीठाकुरजीनें वैद्य बनके विन हंसनकुं छुडाये तब वा पारधीनें विचार कियो जो वैष्णवधर्म सबतें श्रेष्ठ है मैंने वैष्णवको वेष पहऱ्यो तो हंस पकडाये और हंसनकुं श्रीठाकुरजीनें छुडाय दिये ये विचार करके वह पारधी वैष्णव होयवेके लिये श्रीगोकुलमें जायके श्रीगुसांईजीके शरण गयो तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी तूं कैसें निर्वाह करेगो तब वानें हाथ जोडके वीनती करी जो महाराज मैंने वैष्णवको जूठो वेष पहऱ्यो हतो तो मोकुं लाख रुपैय्या मिले अब वैष्णवको साचो वेष पहरुंगा तो श्रीठाकुरजी कहा नहीं देवेंगे ये सुनके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये और वा पारधीकुं शरण लियो

आर श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन कराये और वाके माथे भगवत्सेवा पधराई और कृपा करी तब वह पारधी मार्गकी रीतिप्रमाणें सेवा करन लग्यो तब थोडे दिन पाछे श्रीठाकुरजी वा पारधीकुं अनुभव जतावन लगे और तब बहुत दिन वा पारधीनें सेवा करी आर द्रव्य जितनों हतो सब श्रीगुसांईजीकुं भेटकर दियो वे पारधी श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १८२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव जानें भैरवकुं तुच्छ गण्यो तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव आगरेसुं सामग्रीके दोय गाडा भरके गोपालपूर लावतो हतो रस्तामें भैरवको मंदिर आयो वाके पास गाडा ठाडे रहे सो गाडावालाननें कही जो इहां दो नारियल चढावो जब गाडा चलेगो सब लोग चढावेहें तब वा वैष्णवने भैरवके मंदिरमें जायके कही तेनें गाडा क्युं अटकाय हें गाडा चलने दे नहीं तो गाडानके बैलके ठेकाणे तोकुं जोडुंगो तब भैरव उठके हाथ जोडके ठाढो भयो और कही जो मेरी सामर्थ्य तुमारे गाडा अटकायवेकी नहींहे परंतु तुमारे दर्शनकी अभीलाषा मोकुं हती और श्रीनाथजीके प्रसादकी अभीलाषा हे जासुं इहां गाडा ठाडे राखेहे

नहीं तो श्रीनाथजीके गाडा तीनलोकमें अटका-
यवेको समर्थ कोई नहींहै तब वा वैष्णवनें श्रीना-
थजीको प्रसाद गांठडीमेसुं काढके भैरवकूं दियो
तब भैरवनें प्रसाद लियो फेर भैरव गाडाकी धुरीमें
बैठके एक घंटामें गोपालपुर गाडा पहोंचाय दिये
तब वे गाडाके मनुष्यननें ऐसो जाण्यो विनने नारि-
यल दिये होएंगे ये बात श्रीगुसांईजीनें सुनी तब
श्रीगुसांईनें आज्ञा करी जो भैरवकुं नारियल दियो
होयतो ये सब सामग्री छीगई तब वा वैष्णवनें श्रीगु-
सांईजीके आगें आयके यथार्थ वीनती करी जो
महाराज भैरवनें महाप्रसाद मांग्यो और मैनें दियो
नारियल दिये नहीं है और गाडामें जोडके भैरवकुं
लायोहुं सो अबी वह भैरव बाहर ठाढो है श्रीनाथ-
जीके मंगलाके दर्शन करके जायगो ये सुनके
श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भय और सामग्री भंडा-
रमें धरवेकी आज्ञा दीनी सो वे वैष्णव श्रीगुसांई-
जीको एसो कृपापात्र हतो जिननें भैरवकुं तुच्छ
जाण्यो ॥ वैष्णव १८३ ॥

श्रीगुसां० सेवक एक वैष्णव सूरतमें रहतो तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव प्रतिवर्ष व्रजयात्रा करवेकुं आवते
और श्रीनाथजीके दर्शन करके और व्रजयात्रा
करके फेर जाते और व्रजकी हांडी राखते सो

नित्य वेकिवे राखते रसोई करके धोयके और काम-
लमें बांधके वृक्षसुं लटकावते एकदिन श्रीगुसांई-
जीसों वैष्णवननें कही जो ये वैष्णव अनाचार मिला-
वेहै तब वा वैष्णवकुं श्रीगुसांईजीनें पूंछी जो ये सब
कहा कहे है तब वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों वीनती
करी हे महाराज ! ये सगरे बाहेर दृष्टि हैं ब्रजके
स्वरूपको नहीं जानें हैं तो हुं आपकी कृपातें
इनकुं ब्रजको स्वरूप दिखाउंहुं इतनो कहके वा
वैष्णवनें सबनकुं ब्रजको स्वरूप दिखायो तब सब
वैष्णव देखेंतो सब ब्रज सुवर्णमय दीखबे लग्यो तब
सब वैष्णवनकुं श्रीगुसांईजी कहने लगे याने ब्रजकी
रजको स्वरूप जान्यो है जासुं याकुं कछु दोष
नहीं है ये सामर्थवान हैं याकुं कछु बाधा नहीं है
तुम ऐंसे मत करो य सुनके सब वैष्णव वाकुं धन्य
धन्य कहनलगे सो वे वैष्णव श्रीगुसांईजीको ऐंसो
कृपापात्र हतो जिननें ब्रज सुवर्णमय दिखाय दीनी
ब्रजकी रजकी हांडी सुवर्णमय जानके काढते न
हते ऐंसे परम भगवदीय हते ॥ वैष्णव १८४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजा तिनकी वार्ता ॥

सो वे राजा श्रीगुसांईजीके सेवक हते सो वे
राजा श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसुं करते जब
वैष्णव बहोत आवते तब वैष्णवनसुं राजा पूछतो
जो गृहस्थको धर्म आछो के विरक्तको धर्म आछो?

तब वे राजा सबकुं पूछतो परंतु राजाको संदेह नहीं जातो जैसे बने तैस वैष्णव उत्तर देजाते हते परंतु फेर पूछते. एकदिन अद्भुतदासजी भगवदिच्छातें वा राजाके घर आये तब वा राजानें अद्भुतदासजीसुं पूंछी तब अद्भुतदासनें कहा जो दो चार दिन मैं इहां रहुंगो और तुमकुं कहुंगो परंतु तुम घोडा पर बैठके या गामसुं दूर पांच सात कोश पर एक वैष्णवहै विनकुं मिल आवो तब वे राजा घोडापर बैठके वा वैष्णवकुं मिलवे चल्यो रस्तामें जाते पवन चल्यो सो घोडा कहुंको कहुं चल्यो गयो रात परी तब वह राजा उहां एक वृक्षके नचि वनमें रह्यो तब वा वृक्षके ऊपर होला-होली दो पक्षी रहते हते सो बच्चानके लीयें फल लाये हते और वा वृक्षपर फल बहोत हते फेर वा राजाकूं आयो देखके वा होलानें कही जो अपने घर पावनो आयो है सो याकुं ये फल देउंगो और दोनों स्त्री पुरुषननें विचार करके फल द दिये और वृक्षके ऊपर जायके सर्व फल पाडडाऱ्ये तब वा राजानें फल खाये और होला-होली भूखे रहे आर सवारो भयो तब राजा घाडापर बैठके चल्यो सो एक नगर आयो वामें गयो उहां जायके देखे तो सब राजा इकठे भये हैं और वा गामके राजाकी बेटीको स्वयंवर हतो

सो तेलकी कढाई चढाइं हती वामेंसुं मुंदरी जो काढे वाकुं कन्या देनी ऐसे वा राजानें नेम लियो हतो सो ताते तेल ठंडो करके अथवा कोई दूसरे उपायसुं उघाडो हात डारके मुंदरी काढी चहीये नीचे आंच बलती हती सो तेल ठंढो होय नहीं सकतो जासुं सब राजा अटकरहे हते विनमें वो राजाहुं बैठ रह्यो इतनेमें अद्भुतदासजी आये और वा तेलकी कढाईमें हाथ डारके मुंदरी काढ लीनी तब सब लोग देखके चाकित होयगये और वा गामके राजानें कही तुम मेरी कन्या परणो तब वा अद्भु-तदासनें कही जो ये राजा अमके गामको है याकुं तेरी बेटी परणाय देवो फेर अद्भुतदास चलेगये तब वो राजा विवाह करके अपनें घर आयो फेर अद्भुतदास मिल्ये तब अद्भुतदासनें वा राजासुं पूंछी तुम घोडेपर बैठके गये हते सो कहा कहा देखे? तब वा राजानें सब बात कही. तब अद्भुतदा-सजी बोले जो वो होली-होलामें गृहस्थके धर्म हते गृहस्थको ऐंसेही चहिये जो घरमें आवे विनकुं भूखे न राखे आप भूखो रहे और विरक्तके धर्म ऐंसे हैं जानें तेलमेंसु मुंदरी काढी हती ऐंसे चहिये और तुमको राजाकी कन्या परणाय दीनी आप दुःखपायके औरकुं सुखी करे सो ये दोनों धर्म

तुमकुं दिखाय दिये तब वे राजा सुनके बहोत प्रसन्न भयो और भली भांतिसुं श्रीगुसांईजीकी सेवा करन लग्यो और श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लग्यो वे राजा श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जाकुं तत्काल विश्वास आय गयो ॥ वैष्णव १८५॥

श्रीगुसांईजीके सेवक जीवनदास ब्राह्मण तिनकी वार्ता ॥

सो लाहोरमें रहते हते सो वे जीवनदास हरिद्वारमें श्रीगुसांईजीके सेवक भये हते तब श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके लाहोरमें रहते और भगवत्सेवा करते और कहुं बाहर जाते आवते-नहीं सो वाकी निंदा ज्ञातीके लोग वृथा करते ऐसे बहुत वर्ष पीछे वा जीवनदासकी देह छूटी फेर लोगननें वाकुं अग्नि संस्कार कर्‍यो सो एक वृक्षके नीचे कर्‍यो और वा वृक्षके ऊपर दो प्रेत रहते हते सो एक प्रेत तो वाईसमय कहूं गयो हतो और एक प्रेत वा वृक्षपर बैठो हतो सो वा प्रेतकुं जीवनदासकी चिताको धूवां लग्यो तब प्रेतयोनिसुं छूटके और दिव्य देह पायके वो प्रेत स्वर्गमें गयो और दूसरो प्रेत आयो और वानें ये बात जानी तब वो रोवन लग्यो और हाय हाय करके पुकारन लग्यो तब वा रस्ता ऊपर एक पंडित ब्राह्मण जातो हतो तब वा पंडितने वा प्रेतकुं रोवतो

देख्यो तब वा पंडितनें पूछा जो तूं कोन है और क्युं रोवे है ? तब वा प्रेतनें कही जो ब्राह्मण तूं मेरी बात सुन मैं प्रेतहुं और एक प्रेतको उद्धार भयो है सो बात कही और मेरो उद्धार नहीं भयो यातें दुःख पावुंहुं तब वा ब्राह्मणनें कही ये बात साची कैसे मानी जाय ? तब वा प्रेतनें कही जो तुं या चितामें दोचार लकडी डारदे सो वा चितामेसुं धूवां मोकुं लगेगो तो मेरो उद्धार हो जायगो तब वा ब्राह्मणनें वैसेंही कर्‍यो तब वो प्रेत जय जय करतो दिव्यदेह धरके वा जीवनदासकी स्तुति करतो स्वर्गमें गयो तब वा ब्राह्मणनें देख्यो वा ब्राह्मणकुं बडो विस्मय भयो तब गाममें आयके वा ब्राह्मणनें खबर काढी जो आज कोण मर्‍यो हतो जब वाकुं खबर परी जीवनदासकी देह छूटी है तब वा ब्राह्मणनें खबर काढी कोनसे धर्ममें हतो तब वैष्णव हतो ऐसी खबर परी. तब वह ब्राह्मण अपनें कुटुंबसहित श्रीगोकुलमें जायके वैष्णव भयो सो वे जीवनदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते जिनकी चिताके धूवां लागेतें प्रेतनकी दिव्य देह भई॥ वै १८६

श्रीगुसांईजीके सेवक एक लाहौरके पंडित ति॰ वार्ता ॥

सो वे ब्राह्मण जीवनदासके चरित्र देखके श्रीगोकुल आये और कुटुंबसहित श्रीगुसांईजीके सेवक

भये और नवनीतप्रियाजीके दर्शन किये और श्रीनाथजीके दर्शन किये और श्रीगुसांईजीके मुखारविंदतें पुष्टिमार्गके सिद्धांत समझ्यो और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके और व्रजयात्रा करके फेर अपनें देशमें गये और भलीभांतिसुं मार्गकी रीतिप्रमाणें सेवा करन लग्ये एक दिन एक मनुष्य हत्यारो भिक्षा मांगवे आयो सो वह ब्राह्मण हतो तब वानें पुकार्‍यो राधाकृष्ण राधाकृष्ण तब वे वा ब्राह्मणवैष्णवने वाकुं बुलायके भोजन करायो तब वा पंडितको ज्ञातीके लोग और दूसरे पंडित सब एकट्ठे होयके वा वैष्णवपंडितकुं कही तुमनें हत्यारेको स्पर्श क्युं कर्‍यो तब वा पंडितनें कही यानें कृष्णनाम लियो है याकी हत्या रही नहीं तब विन पंडितननें कही जो हम ये बात नहीं मानें तब वैष्णव पंडितनें कही तुम शास्त्र पढे हो परंतु तुमारो हीयेको अंधारो गयो नहीं है सो वाकुं दूर करो तब साच मानोंगे तब पंडितननें कही जो हरिद्वारमें श्रवणनाथ महादेवजी हैं सो वाको नंदीश्वर याके हाथको खावेतो साचो मानेंगे तब वे वैष्णव पंडित और सब दूसरे पंडित मिलके हरिद्वार आये और नंदीश्वरके आगें वा हत्यारेनें प्रसादको थाल धर्‍यो और वैष्णव पंडित बोल्यो जो

याकी हत्त्या कृष्णनाम लियेसुं गई होवे तो याके हाथको भोजन करो तब वह नंदीश्वर महादेवजीको वाहन सो महाप्रसाद खायवे लगगयो तब वह सब पंडित वा वैष्णवपंडितके पावन परे सो वे ब्राह्मण श्रीगुसांईजीको ऐसो कृपापात्र हतो जिनके कहेते नंदीश्वरनें तुर्त भोजन किये और जिनके दर्शनसुं हत्त्यारेकी हत्त्या गई सो वे पंडित वैष्णव ऐसे श्रीगुसांईजीके कृपापात्र भये ॥ वैष्णव १८७ ॥

श्रीगुसांई० सेवक विरक्त वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे विरक्त वैष्णव चुकटी मांगके निर्वाह करतो और नित्य श्रीगिरिराजकी परिक्रमा करतो फेर वाके पास दोय वैष्णव दूसरे आयके रहे सो वे विरक्त वैष्णव चुकटी मांगके रसोई करके और दोनोंनकी पातर करते एकदिन वा विरक्त वैष्णवकुं श्रम बहोत भयो और थाक गयो तब वाको श्रम श्रीनाथजी सहन न कर सके तब विन दोनों वैष्णवनकुं श्रीनाथजीनें आयके कहा जो तुम दोनों रसोई करो और ये विरक्त वैष्णव चुकटी मांग लावेगो तब वे दोनों रसोई करन लागे और तीनोंजने हिल मिलके महाप्रसाद लेते सो विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनको श्रम श्रीनाथजी सही न सके ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १८८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक भीमसेनराजा तिनकी वार्ता ॥

सो वे भीमसेनराजाकुं और भीमसेनकी स्त्रीकुं पूर्व जन्मको ज्ञान हतो और भीमसेनराजाकुं श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें कही जो तुम तीर्थयात्रा जावो और तुमकुं जो पूर्वजन्मकी बात कहे विनके शरण जइयो ये सुनके भीमसेनराजा बडो प्रसन्न भयो तब भीमसेनराजा तीर्थकरनेकुं चल्यो तब जा तीर्थमें जाय उहां कोई पंडित अथवा महापुरुष होवेतो वाकुं तुर्त जायके मिलते परंतु पूर्वजन्मकी बात कोई कहेतो नहीं फेर बहुत तीर्थ करके राजा भीमसेन श्रीगोकुल आये और आयके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब भीमसेननें दंडवत करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो भीमसेनजी तुम प्रसन्न हो और तुमकुं पूर्व जन्मकी बात पूछनीहै सो हम कहेंगे तब भीमसेनराजानें श्रीगुसांईजीकुं हाथ जोडके बीनती करी जो महाराज बात कहेवेकी कछु जरूर नहींहै आप हमकुं शरण लेवें तब श्रीगुसांईजीनें श्रीनवनीतप्रियाजीके सन्निधान दोनों स्त्रीपुरुषकुं नाम निवेदन कराये तब राजा भीमसेन श्रीगुसांईजीकी बेठकमें गये और एकांतमें श्रीगुसांईजीनें भीमसेनके पूर्वजन्मकी बात कही जो आगले जन्ममें तुम कुणबी

हते और खेती करते हते और एक बनियाकी स्त्रीको और तुमारो स्नेह हतो तब वे स्त्री तुमारे पास खेतमें आवती हती सो वा खेतमें खोदतें एक भोंयरो निकस्यो वा भोंयराकु वा स्त्रीनें और तुमनें झाडके सफा कर्‍यो वामेसुं एक ठाकुरजीको स्वरूप निकस्यो और वा स्वरूपकी सेवा तुम दोनों मिलके करन लगे फेर एकदिन अकस्मात् भोंयरो पडगयो जब तुम दोननकी देह छूटी तब तुमकुं यमदूत लेवेकुं आये फेर विष्णुदूतननें आयके तुमकुं छुडाये तब यमदूतननें कही जो यानें व्याभिचार कियो है याकुं यमलोकमें ले जाएंगे तब विष्णुदूतननें कही जो यानें भगवन्मंदिर मार्जन कियो है तब यमदूत तुमकुं छोडगये तब तुमनें राजवंशमें जन्म लियो और या स्त्रीनेंहु राजवंशमें जन्म लियो और फेर स्वकीयत्वभावसुं तुमकुं प्राप्त भई अब तुम भगत्सेवा करो फेर जन्म नहीं लेने पडेंगे ये सुनके राजा भीमसेन बहोत प्रसन्न भयो और आगले जन्मकी सब बात मिलगई तब राजा भीमसेन श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके और श्रीनाथजीके दर्शन करके और पुष्टिमार्गकी रीती शीखकें फेर अपनें देशमें आये और श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभां-

तिसुं करन लगे सो वे भीमसेन श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १८९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक उत्तमदास तिनकी वार्ता ॥

सो उत्तमदास गुजरातमें रहते हते और उत्तमदासके पास द्रव्य नहीं हतो भगवदिच्छातें विनके पास थोडो द्रव्य भयो तब उत्तमदासनें हजार रुपैय्याको परकालो लियो और श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीकुं वीनती करके श्रीनाथजीकुं जरीको परकालो अंगीकार करायो और श्रीनाथजीके दर्शन करके फेर गुजरातमें आये और परकालो लियो जाको करज रह्यो सो चुकायो तब घरमें उत्तमदासकुं श्रीठाकुरजीनें कही जो मोकुं परकालाकी खोट नहीं हती तूं क्युं इतनो श्रम करके लेगयो तब उत्तमदासनें बीनती करी जो महाप्रभु आपकुं सर्व सामर्थ्य है और सर्वत्र सर्व वस्तु तैयार हैं जो कछु आप चाहें सो सब ठेकाने होय सके परंतु दासको धर्म सेवा विना और नहींहे जासुं हमारो अंगीकार कौनसी रीतिसुं होवें तब ये सुनके श्रीठाकुरजी बहोत प्रसन्न भये और परकाला सहित श्रीठाकुरजीनें उत्तमदासकुं घरमें दर्शन दिये सो वे उत्तमदास ऐसें कृपापात्र हते ॥ वैष्णव १९० ॥

श्रीगुसां० से० जनभगवानदास गौर रजपूत ति० वार्ता ॥

सो वे जनभगवान व्रजमें फि-यो करते और श्रीगुसांईजीकी कथा सुनते और अहर्निश भगवल्लीलाको विचार करते और श्रीगुसांईजीके सेवक विना दूसरेसुं भाषण नहीं करते और कोईदिन श्रीजीद्वार कोईदिन श्रीगोकुल फि-यो करते और नये पद बनायके गावते. एक समय जन्माष्टमी ऊपर श्रीनाथजीके दर्शन करवेकूं गये तब एक पद बनायके गायो. सो पद–

राग सारंग–"ग्वाल बधाई माँगन आये ॥
गोपी गोरस सकललीये संग, सबहि आय सिरनाये ॥ १ ॥
अब ये गर्व गिनत नहिं काहु, कारियत मनके भाये ॥
जहां नंद बैठे नांदीमुख, जहां गहनको धाये ॥ २ ॥
बरन बरन पाये पट व्रजजन, उर आनंद न समाये ॥
जन भगवान जशोदारानी, जगकी जीवन जाये ॥ ३ ॥"

सो यह बधाई जनभगवानदासनें गाई सो श्रीगुसांईजी ये पद सुनके बहोत प्रसन्न भये सो ऐसे अनेक पद जनभगवानदासनें गाये सो वे जनभगवानदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हते॥ वै. १९१

श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजा, तिनकी वार्ता ॥

जिनके गाममें साचोराकुं मार डा-यो सो जीवतो भयो सो वे साचोरा दोनों भाईनकुं लेके वह राजा

श्रीगोकुल गयो और जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये वा राजानें हाथ जोडके विनती करी जो कृपा करके मोकुं शरण लीजिये तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम थोडे दिन श्रीगोकुलमें रहो पाछे तुमकुं विचार करके शरण लेवेंगे फेर श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकुं पूछी जो या राजानें साचोरा भक्तकुं मरायो सो याकुं शरण लियो चाहिये के नहीं ? तब श्रीनाथजीनें आज्ञा करी जो भक्तको अपराध भक्त क्षमा करे सो या साचोराको अपराध साचोरानें क्षमा कर्‍यो तब याकुं शरण लेवेमें चिंता नहीं अब याको अपराध रह्यो नहीं. फेर श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे और वा राजाकुं शरण लिये फेर वे राजानें श्रीगुसांईजीकुं वीनती करके और सेवा पधराई और श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो आप कृपा करके मेरे गाममें पधारें और सब गामकुं वैष्णव करें और ये साचोरा दोनों भाई कोई दिन मोकुं त्याग न करें ये कृपा करो. तब श्रीगुसांईजीनें वा राजासुं कही ये दोनों भाई तुमकुं त्याग नहीं करेंगे परंतु तुम इनको त्याग मत करियो ये सुनके वे राजा बहोत प्रसन्न भयो और श्रीठाकुरजी पधरायके और साचोरा दोउ भाईनकुं संग लेके अपने देशमें

आयो और आयके भगवत्सेवा करन लगे जैसे वे दोनों भाई कहे तैंसे राजा करतो तब वा राजासुं श्रीनाथजी सानुभाव जतावन लगे सो वे राजा श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हते॥वा०सं०॥वैष्णव१९२॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रेडाउदंबर ब्राह्मण तिनकी वार्ता ॥

सो वे रेडा कपडबनमें रहेते हते और अवधूतदशामें रहते हते सो श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब रेडानें नाम निवेदन किये फेर श्रीठाकुरजी पधरायके रेडा सेवा करन लग्यो फेर थोडेदिन पीछे रेडा श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीकी खवासी करन लग्यो एक ब्राह्मणी डोकरी रहती हती वाके घर रेडानें श्रीठाकुरजी पधराये और उहां प्रसाद लेते हते एकदिन रमणरेतीमें श्रीठाकुरजीनें रेडाकुं दर्शन दिये तब देखके रेडा देहानुसंधान भूलगयो और श्रीठाकुरजी प्रसादीमाला रेडाकुं पहराय गये सो रेडा तो उहां आखीरात पडेरहे दूसरे दिन खबर परी जो रेडा रमणरेतीमें पर्योहै तब श्रीगुसांईजी रमणरेतीमें पधारे और रेडाकुं चरणस्पर्श कराये तब रेडाकुं देहानुसंधान भयो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी अबी लीलामें प्रवेश करवेकी ढील है तब रेडा पाछें श्रीगोकुल आये एकदिन रेडा श्रीगुसांईजीकुं पंखा करते हते तब श्रीगुसांईजी

जागे और रेडाकुं आज्ञा करी तुम देशमें जायके
विवाह करो तब रेडानें कही मेरे पास द्रव्य नहीं
है कौन कन्या देवेगो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा
करी श्रीठाकुरजीनें सब सिद्ध कर राख्योहै वाई
समय रेडा आज्ञा लेके चल्यो सो देशमें आयो
कपडबनपास एक संजाई गाम है वा गाममें रेडा
मुकाम कियो सो वा संजाईमें एक उदंबर ब्राह्मण
रहतो हतो द्रव्यपात्र हतो वाकी एक बारह वर्षकी
बेटी हती सो वा बेटीकुं सर्पनें काटी हती सो वे
मरवे लगी तब वा ब्राह्मणनें गामके बाहेर खबर
काढी कोई आछी करे जीवाय देवे तो आछो तब
रेडाने वा ब्राह्मणकुं कही मेरे पास एक उपाय है
तब वा ब्राह्मणनें कही सो उपाय करो तब रेडानें
चरणामृत दियो और कही तुम याके मोढामें डारो
तो बचजायगी सो वाके मोढामें तो कछू जाते नहीं
हतो वाके होठनपर चोपड्यो तब वा छोकरीकी
विष उतरगयो तब वा छोकरीकी मानें बाधा लिनी
हती जो ये छोकरी जीवेगी तो कोई निष्कंचनकुं
देउंगी तब वा ब्राह्मणनें छोकरी जीवती देखके
रेडाकुं पूंछी तुम कोण जातहो तब रेडानें आपणी
जात बताई तब वह कन्या रेडाकुं दीनी सो रेडा
परण्यो और श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लग्यो वा

रेडाकुं भगवतसेवा करते देखके सब लोग बहुत राजी होवें तब रेडाका एक पुत्र भयो फेर कोई दिन वा देशमें श्रीगोकुलनाथजी पधारे तब रेडानें आपनी जातकुं और यजमान नीमा बनीयनकुं श्रीगोकुल नाथजीके सेवक कराये सो अब सूधी श्रीगोल-नाथजीके सेवक होवे हें फेर वह रेडाको बेटा बडो भयो तब रेडा श्रीठाकुरजी पधरायके श्रीगोकुल जाय रहे और श्रीगुसांईजीकी सेवा करन लगें फेर वा रेडाकुं रास लीलाके दर्शन होवें कोई दिन बाललीलाके दर्शन होवें ऐंसे अनेक प्रकारके दर्शन श्रीठाकुरजी रमणरेतीमें रेडाकुं देते हते सो रेडा श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव १९३॥

श्रीगुसांईजीके सेवक पर्वतसेन तिनकी वार्ता ॥

सो वे पर्वतसेनदासके मनमें ऐंसो हतो जो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके साक्षात् स्वरूप हैं परंतु ऐंसे दर्शन होवे तो बहुत आछो एक दिन बैठकमें श्रीगुसांईजी विराजते हते और पर्वतसेनकुं आज्ञा करी जो चंदन लगावो तब वा पर्वतसेननें श्रीगुसांईजीकुं चंदन समर्प्यो तब श्रीगुसांईजीके रोमरोममें पर्वतसेनकुं श्रीनाथजीके दर्शन भये तब पर्वतसेननें विचार कर्‍या मोकुं स्वप्न है के कहाहे?तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो पर्वतसेनजी ! तुमकुं कहा

संदेह है ? तब पर्वतसेननें कही जो आपकी कृपातें सब संदेह मिट्यो तब वा पर्वतसेनके मनमें संदेह दूर भयो और लीलाको अनुभव भयो और नवे पद करके गायवे लगे सो ऐंसे करके नवे पद गाये सो वे पर्वतसेन श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव १९४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक सासु बहू तिनकी वार्ता ॥

सासुको नाम जमनाबाई और बहूको नाम रेवाबाई हतो सो बहू भोरी बहुत हती एक समय जमनाबाइके बेटा गाम जायवे लग्यो और मासुं कही जो दोचार दिनमें श्रीगुसांईजी पधारेंगे याकुं नाम निवेदन करवाईयो ऐंसे कहके वाको बेटा परदेश गयो. जब श्रीगुसांईजी पधारे तब वे जमनाबाई बहूकुं लेके श्रीगुसांईजीके दर्शनकुं गई और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी याकुं नाम सुनावो और बहूसुं कही जो श्रीगुसांजी कहें सो कहियो तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, बहू! बैठ. तोकुं नाम सुनावे तब बहू बोली बहु बैठ तोकुं नाम सुनावे ये सुनके श्रीगुसांईजी हंसे और जान्यो जो ये बहुत भोरी है तब श्रीगुसांईजी उठके वाके पास आयके तीन वेर अष्टाक्षरमंत्र कह्यौ और बहूनें अष्टाक्षर मंत्र कह्यौ बहूकुं अत्यंत भोरी जानके

वाईसमय श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी याकुं न्हवाय लावो तब न्हवाय लाये तब श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजीकुं शृंगार करके निवेदन कराये और वाकी सासुकुं कही अब श्रीठाकुरजीकी सेवा याके पास कराइयो तब सासुनें कही ये तो बहुत बावरी है कहा सेवामें समझेगी ? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीठाकुरजी आप सिखाय लेवेंगे फेर दूसरे दिन वा जमनाबाईकुं अटकाव आयो तब बहूकुं कही तुम सेवा करियो और मैं नदीपर जाउंहुं सो बहू सेवामें न्हाई और मंदिरमें गई सो कछु सेवामें समझे नहीं तब श्रीठाकुरजीकुं जगाये तब श्रीठाकुरजी कृपाकरके सब रीत सेवाकी सिखावन लगे सो झारी उठावनी और माझनी रसोई करनी भोगधरनो शृंगार करनो और प्रसादी अणप्रसादी, अणप्रसादीको विचार श्रीठाकुरजीनें वा बहूकुं सब सिखायो तब वा बहुनें श्रीठाकुरजीसुं कही जो कसरपडेगी तो मेरी सासु खीजेगी तब मैं रिसायके पीहर जाउंगी तब श्रीठाकुरजीनें कही जो नहीं खीजेगी ऐंसे चार दिनपर्यंत वा बहुनें सेवा करी फेर पांचमें दिन सासु सेवामें न्हाई तब वा जमनाबाईकुं शृंगार करते नींदको झोको आयो तब श्रीठाकुरजीनें स्वप्नमें कही जो मोकुं शृंगार बहूके हाथको

बहुत आछो लगेहै तब वा जमनाबाईनें बहूकुं बुलायके श्रृंगार करवे बैठाई और आप रसोईको सेवा करनलगी तब वा बहुसों श्रीठाकुरजी हास्यविनोद करते और सब बातें जतावते सो वे सासु बहू श्रीगुसांईजीकी ऐंसी कृपापात्र हती ॥ वैष्णव १९५॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मानकुंवरबाई तिनकी वार्ता ॥

सो वह शेठकी बेटी दशवरषकी विधवा भई तब थोडेदिन पाछे श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब वा शेठकी बेटीकुं ब्रह्मसंबंध करायो और श्रीमदनमोहनजीकी सेवा पधरायदीनी, सो वह शेठकी बेटी मानकुंवरबाई श्रीमदनमोहनजीकी सेवा करन लगी सो वा मानकुंवरने श्रीमदनमोहनजीकी जन्मसूधी सेवा करी और जन्मसूधी श्रीमदनमोहनजी विना कोई स्वरूपके दर्शन किये नहीं और घरसों बाहेर सेवा छोडके गई नहीं और श्रीमदनमोहनजी जैंसे सबके ठाकुरजी होवेंगे ऐंसे मनमें निश्चय कर राख्यो हतो जब वे मानकुंवरबाई साठवर्षकी भई तब वाको पिता भगवच्चरणारविंदमें पहोंच गयो तब मनुष्य राखके सेवा करती फेर एक दिन एक विरक्त वैष्णव वा गाममें आयो शीतकालके दिन हते सो वा मानकुंवरके घरमें उतऱ्यो तब वा मानकुंवरकुं श्रीठाकुरजीकी झांपी देके तला-

वपर न्हावे गयो तब मानकुंवरबाईनें श्रीठाकुरजी जगाये सो श्रीठाकुरजी बालकृष्णजी हते और वानें श्रीमदनमोहनजी विना और श्रीठाकुरजी देखे नहीं हते तब मानकुंवरबाई ऐंसी समझी जो श्रीठाकुरजी ठंढके लीयें ऐंसे सकुचाय गये हैं ठंढ बहुत पडे है वा वैष्णवनें कछू यत्न राख्यो नहीं ऐंसे विचार करके वाके नेत्रनमेंसुं जल आयगयो और बहुत मनमें तापभयो तब अंगीठी लेके और तेलमें अनेक प्रकारके गरम औषध डारके और तेलकुं जरायके तातो करके श्रीठाकुरजीके हाथपांव मीडवे लगी और मनमें समझो जो श्रीठाकुरजीकुं बहोत श्रम भयो है आप कृपाकरके अपराध क्षमा करो ऐंसी वाकी प्रार्थना और शुद्धभाव देखके श्रीठाकुरजी मदनमोहनजीको स्वरूप होयगये तब वा डोकरीनें राजभोग धऱ्यो फेर वा वैष्णवनें आयके दर्शन किये परंतु श्रीठाकुरजीनें गदल ओढे हते कछु वाकुं समजण नहीं परी ऐंसे करते दश पंदरादिन वो रह्यो तब वा मानकुंवर बाईनें कही शीत कालके दिन इहां रहो श्रीठाकुरजीकुं ठंढ बहोत लगेहै फेर थोडे दिन वो रह्यो फेर जब फागण महिना आया तब चलवेकी तैयारी करी श्रीठाकुरजी पधरावेके समय वा मानकुंवरसुं वा विरक्तवै-

ष्णवनें झगडो कियो कही तुमनें मेरे श्रीठाकुरजी पलटाय लीये हैं जो मेरे श्रीठाकुरजी न देवेंगी तो तेरे माथे प्राण छोडुंगो जब बाईनें कही मैं तो तेरे श्रीठाकुरजी पलटाये नहींहै तब बहुत झगडा भयो फेर दोनोजना श्रीगोकुल गये और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें दोनोंनकी बात सुनके तब झांपी श्रीगुसांईजी लेके खोलके श्रीठाकुरजा देखे और श्रीठाकुरजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो मैं डोकरीके भावसुं मदनमोहन भयोहुं यानें कोई दिन और स्वरूपके दर्शन कीये नहींहैं जासुं वाको भाव शुद्ध है तब श्रीगुसांईजीनें झगडो चुकाय दियो वा वैष्णवकुं आज्ञा करी यही श्रीठाकुरजी हैं तब वा डोकरीनें कही जो ऐसे श्रीठाकुरजीकुं ठंढ मारे हैं ऐसेनकुं श्रीठाकुरजी पधराय देने नहीं चहिये ये सुनके श्रीगुसांईजी हंसे और विचार कियो जो डोकरीको कैसो शुद्ध भाव है तब वो विरक्त वैष्णव डोकरीके पावन पऱ्यो और कही जन्मसूधी तुमारे द्वार पऱ्यो रहुंगो और तुमारी टहल करुंगो तब श्रीयमुनाजी पान करके श्रीनाथजीके दर्शन करके फेर अपने देशमें आयके वह डोकरी सेवा करन लगी सो वह मानकुंवरबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती॥ वैष्णव १९६॥

श्रीगुसांईजीके से० माधवदास वडनगरमें रहेते ति० वार्ता ॥

वे माधवदास बडे पंडित हते और अन्यमार्गीय हते और वैष्णवकुं टीलवा कहते एक समय श्रीगुसांईजी वडनगर पधारे तब पंडितनकी सभा करी सब पंडितनमें बडे माधवदास हते सो वे माधवदास सब पंडितनकुं लेके सभामें आये तब साकार निराकारको वाद भयो तब श्रीगुसांईजीनें साकार ब्रह्मको प्रतिपादन कियो और सभामें बहोत विवाद भयो माधवदासके मनमें जो हतो पुष्टिमार्ग वेदनिर्मूलक है सो संदेह निकस गयो तब माधवदासजी वाही समय श्रीगुसांईजीके सेवक भये तब और पंडित कहेनलगे जो सबमें मुख्य तो तुम हते अब काहेकुं वैष्णव भयेहो? तब माधवदासजीनें कहा जो दुराग्रही होवे सो न समझे परंतु सार वेत्ता होवे तो तुर्त समझे यासुं मोकुं सर्वोपर पुष्टिमार्ग वेदमें मालूम पऱ्यो है जासुं मैंनें दुराग्रह छोड दियो है तब पंडित सुनके अपने २ घर गये और वे माधवदासजी श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे और वैष्णवनको संग करन लगे वे माधवदासके ऊपर श्रीठाकुरजी वेग प्रसन्न भये सो माधवदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भये जिननें दुराग्रह छोडके सुंदर मार्ग पकऱ्यो॥ वैष्णव १९७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक कुनबी पटेल तिं०वा० ॥

सो गुजरातमेंसुं एकसाथ श्रीगोकुल जातो हतो वाके संग कुनबी वैष्णव चल्यो मेहनत मंजुरी करके रस्तामें वैष्णवनके इहां प्रसाद लेतो जब गोपाल-पुर आठ कोस रह्यो तब सब वैष्णवननें गांठडी-मेसुं भेट काढराखी तब वा पटेलकुं चिंता भई जो मैं कहा भेंट करूं तब घासमें शंखावलीकी लता हती सो वानें देखी तब फूल लेके माला गूंथी और भीजे वस्त्रमें लपेटी और लेके सबसुं आगे चल्यो मनमें विचार कियो ये माला कुमलाय न जाय तो बहोत आछो शृंगारको समो श्रीनाथजीको भयो तब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं कही एक पटेल माला लेके आवे है सो वाके अंतःकरणमें ताप बहोत है वे माला आवेगी तब मैं राजभोग अरो-गुंगो तब श्रीगुसांईजीनें आपकी अस्वारीको घोडा एक अस्वार बैठायके पठायो सो घोडा एक घंटामें १२ कोस जातो हतो सो वे अस्वार जायके वा पटे-लकुं लायो और माला श्रीनाथजीनें अंगीकार करी और वा पटेलनें राजभोगके दर्शन किये श्रीनाथ-जीकी ये लीला देखके सूरदासजीनें कीर्तन गायो,

सो पद—श्यामनगरीबनहींके गाहक ॥

दीनानाथ हमारे ठाकुर, साची प्रीत निवाहक ॥ १ ॥

कहा विदुरकी जातपात कुल, प्रेमप्रीतके लायक ॥
कहा सुदामाके धन हुतो, साची प्रीतके चाहक ॥ २ ॥
कहा पांडव घरकी ठकुराई, अर्जुन रथके वाहक ॥
सूरदास सठताते हरिभज, आरत दुःखके दाहक ॥ ३ ॥

ये पद सूरदासजीनें गायो ये सुनके श्रीनाथजी और श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये और वा पटेलनें श्रीनाथजीकुं माला पहेरी देखके अपनो हियो सिरायो और मनमें जानी जो श्रीनाथजीनें मेरी करी माला अंगीकार करीहै सो वे पटेल श्रीगुसांईजीको ऐंसो कृपापात्र हतो जिनकी आरति श्रीनाथजी सही न सके ॥ वैष्णव १९८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक लाडबाई तथा धारबाई ति० वार्ता ॥

सो वे लाडबाई और धारबाई दोंनों बहेन हती मानीकपूर चित्रकूट पास दशकोश है सो उहां लाडबाई और धारबाई श्रीगुसांईजीकी सेवक भई तब वे लाडबाई और धारबाई श्रीठाकुरजी पधारायके सेवा करन लगी और तब लाडबाई जो कोई वैष्णव आवे तिनकी टेहल भलीभांति सों करन लगी और ऐंसें करत करत लाडबाई और धारबाई वृद्ध भई सो सब द्रव्य नव लक्ष रुपैया एकट्ठे करके श्रीगोकुल गई और श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो ये द्रव्य अंगीकार करो तब श्रीगुसांईजीनें जान्यो

ये द्रव्य आसुरी है और दुःख दायक है सो अंगीकार न कियो फेर दश पंदर वर्ष पीछे श्रीगोकुलनाथजी भूतलपर विराजत हते फेर लाडबाईनें श्रीगोकुलनाथजीकुं द्रव्य आसुरी जाणके अंगीकार न कियो तब श्रीगोकुलनाथजीके अधिकारीनें श्रीगोकुलनाथजीके पूछे विना एक छातमें बिछायकें ऊपर कांकर डरायके चूनो लगाय दियो सो वा छातमें द्रव्य रह्यो आयो फेर साठ वर्ष पीछे औरंगजेब बादशाहकी जुलमीके समयमें म्लेच्छलोक लूंटवेकुं आये तब श्रीगोकुलमेंसुं सब लोग भागगये और मंदिर सब खाली होय गये कोई मनुष्य गाममें रह्यो नहीं तब विन म्लेच्छननें वे छात खोदी सो नवलक्ष रुपैयानको द्रव्य निकस्यो तब गाममें जितनें मंदिर हते सब मंदिरनकी छात खुदायडारी सो आसुरी द्रव्यके संगतें सब गोकुलको छात खुदाई सो वे लाडबाई धारबाई श्रीगुसांईजीके सेवक ऐसे हते जिनकी बुद्धि आसुरी द्रव्य आसुरी द्रव्यके प्रभावते फिरी नहीं और भगवद्धर्म छोडे नहीं और जितनें द्रव्यमें अनर्थ हैं सो विनकुं बाधा न कर सकें भगवत्सेवा करती रहीं भगवच्चरणारविंदमें जिनके चित्त है विनकुं बाधा नहीं कर सके॥ वैष्णव ११९

श्रीगुसांईजीके सेवक दो वैष्णव जिननें ईंट-
पर अक्षर किये तिनकी वार्ता ॥

सो एक वैष्णव एक गाममें रहतो हतो और दूसरो दूसरे गाममें रहतो हतो एकको नाम वल्लभदास हतो और दूसरेको नाम बलदेवदास हतो सो वे दोनों रस्तामें एक बावडी ऊपर एक दूसरेकुं आपसमें मिले भगवद्वाता करन लगे सो बलदेवदासनें पूछ्यो श्रीठाकुरजी मोरपंखको मुकुट धरे हैं वाको कारण कहा–औरजनावरकी पांख क्युं नहीं धरेहैं? अनेक प्रकारके पक्षीनकी बहुत सुंदर पांख हैं। तब ये सुनके वल्लभदास बोले जो श्रीठाकुरजीको स्वरूप आनंदरूप है विषई जीवनकुं दुर्लभ है और विषय रहित जिनके स्नेह है तिनके वश हैं जैंसे मोर विषय रहितहै दृष्टिद्वारा रसदान करेहै सो श्रीठाकुरजी अपनें दासकुं ऐंसी सूचना करेहें जैंसे मोर विषय रहितहै और दृष्टिद्वारा रसदान करेहें सो कोनसी रतिसों जब मोर नृत्य करेहै तब अपनें शरीरकुं देखेहें सब शरीरकुं देखके बडो प्रसन्न होवे है जब आपनें पांव देखेहै तब कारेकारे दीखते हैं तब मोर श्यामतारूपी अपनो दोष देखके रुदन करेहें मेरेमें इतनो दोष न होतो तो आछो तब मोरके नेत्रनमेंसुं जल पडेहै तब मोरकी स्त्री मुखमें लेहैं

तब वाकुं आनंद होवेहै और कामनिवृत्त होवेहै दृष्टिद्वारा वाके सब मनोरथ पूर्ण होय जायहे और गर्भस्थिति होवेहे ऐंसे जो वे मोर श्रीठाकुरजीकुं बहुत प्रिय हे और जैंसे मोर दृष्टिद्वारा कामनिवृत्त करेहें ऐंसे श्रीठाकुरजी सब जीवनको दृष्टिद्वारा कामनिवृत्त करेहें निर्विषयी जो जीवहे सो हमकुं बहुत प्रियहैं मोर पंख श्रीमस्तकपर धरेहें।तब बलदेवदासनें पूछी काछनी काहेकुं धरेहें ? तब वल्लभदासनें कही जो काछनीको घेर होवे सो घेर बहुत एकठोकरे सो घेर होवे सो एसे अनेक भक्तनकुं एकठे करके एककालावच्छिन्न सबके मनोरथ पूर्ण दृष्टिद्वारा करे जैंसे मोर एकस्त्रीको मनोरथ पूर्ण करे ऐंसेही सब व्रजभक्तनके मनोरथ पूर्ण होवेहें ये सूचना करवेके लीयें श्रीठाकुरजी मुकुट काछनीको शृंगार धरेहें ये सुनके बलदेवदास बहुत प्रसन्न भये तब एक ईंटपर लिखगये 'हम दोय घडी जीवे ' फेर वो ईंट उहां भीतमें लगी हती सो एक राजा फिरतो आयो सो वानें ईंटपर ऐंसे अक्षर देखे तब राजाकुं संदेह भयो तब राजानें विचार कियो जो लिखवेवालो ऐंसे लिखेहें हम दोघडी जीवे सो ये जन्म्यो कब होवेगो और पढ्यो कब होवेगो और इहां बावडीपर आयो कब होवेगो और लिख्यो कब

होवेगो दोघडीमें यानें इतनें काम कैसे करे होयंगे सो राजाकुं बहुत संदेह भयो सो राजा वे ईंट अपनें घर लेगये जो आवे ताकुं ऐंसे पूछे जो ये लिखवे-वालो मनुष्य दोघडी जीवतो रह्यो दोघडीमें यानें इतनें कारज कैसे करे होयंगे. राजाकुं बडो संदेह भयो तब राजा ये बातमें लगरह्यो जो आवे जाकुं पूछे. इतनेमें भगवदिच्छातें एक वैष्णव आयो वाकुं राजानें पूछी तब वा वैष्णवनें कही जो दो वैष्णव रस्तामें मिले होयंगे और आपसमें भगवद्वार्ता करी होयगी तब विन वैष्णवननें चलवेके समय लिख्यो होयगो तब राजाको संदेह मिट्यो सो वे राजाहुं वैष्णवके संगतें वैष्णव भयो सो वे दोनों वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हते तिनके अक्षरनसुं राजा वैष्णव भयो। वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २०० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजा तिनकी वार्ता ॥

सो वे राजाके गाममें दो ब्राह्मण रहते हते एक ब्राह्मण वैष्णव हतो और एक शैव हतो वे दोनों पंडित हते और शैव ब्राह्मण राजाके पास बहुत आवते जावते हते राजानें विनकुं कही हमारे पुत्र होय सो उपाय करो सो वानें बहुत उपाय किये परंतु बीसवर्षसूधी पुत्र नहीं भये. फेर एकदिन वा राजानें वैष्णव ब्राह्मणसुं कही जो मेरे बेटा होवे तो ठीक. तब

वा वैष्णवपंडितनें कही बेटा एकके चार होजायंगे परंतु वैष्णव होवोगे तो तब वा राजानें कही मैंहूं वैष्णव होजाउंगो फेर एक वर्षके भीतर वा राजाकी चार राणीनके चार बेटा भये. तब राजानें वा वैष्णवब्राह्मणसुं कह्यो हमकुं वैष्णव करो तब वा ब्राह्मणनें कही वैष्णवतो श्रीगुसांईजी करेहैं जब श्रीगोकुलमें चलो तब वे राजा और दोनों पंडित श्रीगोकुल गये, जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये तो साक्षात् पूर्णपूरुषोत्तमके भये. तब वह राजा श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और शैव पंडितहुं श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और श्रीगोकुलमें रहके पुष्टिमार्गकी रीति शीख्यो और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लग्यो और जैंसी बेटानमें आसक्ती हती वैसी श्रीठाकुरजीमें आसक्ती भई और सकामबुध्धी हती सो सब मिटके निष्काम बुध्धी होयगई अंतःकरणसुं सब कामना त्याग दीनी और भगवत्सेवा पधरायके अपनें देशमें आयो और घरमें भगवत्सेवा करन लग्यो थोडे दिन पीछे श्रीगुसांईजीकुं अपनें देशमें पधराये और सब कुटुंबकुं वैष्णव किये और गामके लोगनकुं वैष्णव कराये सो वह राजा ब्राह्मणके संगतें ऐंसो वैष्णव भयो। वै० २०१

श्रीगुसां० से० मदनगोपालदास कायस्थ हते ति० वा०॥

सो वे मदनगोपालदास महाबनमें रहते हते और नित्य सवारे आयके श्रीगुसांईजीके दर्शन करते और फेर जायके घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते और श्रीठाकुरजी मदनगोपालदाससों हसते बोलते बातें करते जो चहिये सो मांग लेते और एकदिन मदनगोपालदासके बेटाकुं बहोत ज्वर आयो तब मदनगोपालदासकी स्त्रीनें छानो छानो एक योगीके पाससुं दोरा करायके और बेटाकुं बांध्यो तब मदनगोपालदासके श्रीठाकुरजीनें श्रीगुसांईजीसों कही जो मदनगोपालदासकुं अन्याश्रय भयो है अब मैं यासुं बोलूंगो नहीं तब श्रीगुसांईजीनें श्रीठाकुरजीसुं वीनती करी जो याकुं थोडेदिन दंड देनो परंतु एकाएक त्याग कर्‍यो नहीं चहिये तब श्रीठाकुरजी चुप कररहे फेर मदनगोपालदासनें उत्थापन किये देखेतो श्रीठाकुरजी उदास बिराजेहैं तब मदनगोपालदासनें भोगधरे तब श्रीठाकुरजीनें लातसुं थाल फेंकदियो जब मदनगोपालदास रोवेलगे और प्रणती करवे लगे तोहुं श्रीठाकुरजी माने नहीं तब मदनगोपालदास श्रीगुसांईजीके पास आये और नेत्रनमेंसुं जल चलवे लगगयो और गदगद कंठ होय गये और धूजवे लगे और

श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेरी स्त्रीनें अन्याश्रय कऱ्यो है जासुं श्रीठाकुरजी अप्रसन्नहैं ये बात सुनके मदनगोपालदास घरमें आये और स्त्रीकुं वाई क्षणमें जुदे घरमें राखी और श्रीठाकुरजीकी सब टहल हाथसुं करन लगे तब श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें वचनामृत सुने जो अन्याश्रय बहोत बाधकहै विवेक धैर्य आश्रयग्रंथमें लिख्यो है ॥ श्लोक--

"अन्यस्य भजनं तत्र स्वतोगमनमेव च ॥
प्रार्थना कार्यमात्रेऽपि ततोऽन्यत्र विवर्जयेत् ॥"

याको अर्थ--अन्य देवको भजन अन्यदेवके स्थानपर स्वतः गमन उद्देश करके जानो और कार्य मात्रमें अन्यदेवकी प्रार्थना करनी ये तीनों बातें वर्जित हैं अन्यसंबंधकीहुं गंध नहीं चाहिये। सो वाक्य- "अन्य संबंध गंधोऽपि कंदरामेव बाध्यते" या रीतीसुं ग्रंथनमें अनेक वचन हैं सो ये सुनके मदनगोपालदास दूसरो विवाह कऱ्यो वा स्त्रीकुं त्याग दियो तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके बोलन लगे सो वे मदनगोपालदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ जिननें अन्याश्रयके लीये स्त्रीको त्याग किये ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २०२ ॥

श्रीगुसांई॰सेवक क्षत्रीवैष्णव गुजरातके वासी ति॰वार्ता ॥

सो वे क्षत्री वैष्णव चाचाजीके संग गुजरात जाते हते सो वे क्षत्रीवैष्णव जब भगवद्वार्ता करते तब भगवद्रसमें मग्न होय जाते और विनकी रहस्य वार्ता श्रीगोवर्धननाथजी सुनते. सो वे क्षत्रीवैष्णव रस्ता भूलगये और चाचाजीसुं न्यारे पडगये सो एक गाममें गये सो वा गाममें एक वैष्णव रहतो हतो सो वे क्षत्रीवैष्णवकुं अपने घरमें ले गयो और उहां भगवद्वार्ता करन बैठे सो वे रसावेश होयगये कछु देहानुसंधान रह्यो नहीं और श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाडे ठाडे विनकी वार्ता सुन्यो करते तब चाचा विनकुं ढूंढवे गये सो जायके चाचाजी विनकुं मिले तब भगवद्रसमें छक रहे हते और आखी रात बीतगई हती और श्रीगोवर्द्धननाथजीकुं उजागरा भयो तोहुं वाकुं कछु देहानुसंधान न रह्यो भगवद्वार्ता मुखसुं करे जाते. चाचाजी विनके पास जायके ठाडे रहे तोहु खबर नहीं रही तब चाचाजीनें विनकुं हाथ पकडके उठाये तब देहानुसंधान भयो. तब चाचाजीनें कही तुमको भगवद्रसमें मग्न होय रहेहो और श्रीगोवर्धननाथजी आखी रात ठाडे रहेहैं श्रीप्रभूनको श्रम होवेहै जासुं संभारके करो ये कहके चाचाजी

विनकुं लेगये सो वे क्षत्रीवैष्णव ऐसे कृपापात्र हते जिनके मुखकी वाणी सुनवेकुं श्रीगोवर्धननाथजी आप पधारते जासुं विनके भाग्यकी कहा बडाई करणी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २०३ ॥

श्रीगुसांईं०से०कृष्णदासस्वामी मथुरामें रहते ति०वार्ता ॥

सो वे कृष्णदासस्वामी श्रीगोकुल आये तब श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके भये. तब कृष्णदास स्वामी श्रीगुसांईजीके सेवक भये तब एक महीना श्रीगोकुलमें रहे सब मार्गकी रीती सीखे और श्रीगोकुलचंद्रमाजीको स्वरूप पधरायके मथुराजीमें आयके भगवत्सेवा करन लगे फेर एकदिन श्रीगुसांईजी मथुरा पधारे तब कृष्णदासस्वामीके घरमें उतरे तब कृष्णदासस्वामीनें श्रीगुसांईजीसुं पूछी जो श्रीगोकुलचंद्रमाजीको दक्षिण चरणारविंद टेढो क्युं है? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीठाकुरजीके वामचरणारविंदमें पुष्टिरस है और दक्षिणचरणारविंदमें मर्यादा है तब श्रीठाकुरजी मर्यादाकुं उल्लंघके और पुष्टिकुं आश्रय करे है और बामचरणारविंदसुं पुष्टि रसकुं स्थापन कियो है. तब कृष्णदासस्वामीनें पूंछी जो कटी और ग्रीवा काहेकुं नमे है? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो रस भऱ्यो पात्र खालीपात्रमें रस डारे

तो भऱ्यो पात्र नमे. कृष्णदासस्वामीनें पूंछी जो दक्षिण पराघृत्त दृष्टि क्युं है? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो सन्मुख दृष्टी होवे तो स्थावर जंगम जीवनकुं मोह करे और नीचे दृष्टि होवे तो पातालके जीव-नकुं मोह करे आर वामपराघृत्त दृष्टी होवेतो देवांग-नाकुं मोह करे और ऊंची दृष्टी होवे तो स्वर्गवासी-नकु माह करे और दक्षिण पराघृत्त दृष्टी होवे तो स्त्री पुरुषनकुं मोह करे. ये सुनके कृष्णदासस्वामी बहुत प्रसन्न भये और श्रीगोकुलचंद्रमाजीकी सेवा भलीभांतीसुं करन लगे और जो वैष्णव मथुराजीमें आवे जिनकुं आदर सत्कार बहुत करते और भग-वद्रसमें छके रहते संसारकी कछु अपेक्षा राखते नहा. एकदिन चाचा हरिवंशजी कृष्णस्वामीकुं मिले तब कृष्णस्वामीनें पूछा जो मुरलीके सप्तरंध्रनको स्वरूप कहो. तब चाचाहरिवंशजीनें कही जो छः धर्म ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान और वैराग्य और सातमें धर्मी सात प्रकारको भगवत्स्वरूप पुरुषाकार सुधा वेणुतें प्रकट होवेहैं याहीतें सप्तरंध्रहैं श्रीठाकुर-जीको स्वरूप श्रीमहाप्रभुजी और वेणुस्थानापन्न श्रीगुसांईजी और सप्तरंध्ररूपी सात बालकनको प्राकट्य जाणनों पद्मनाभदासजीनें गायो है॥ सो पद-

मधुर व्रज देश वस मधुर कीनो ॥ मधुर वल्लभ नाम मधुर गोकुलगाम, मधुर विठ्ठल भजन दान दीनो ॥ १ ॥ मधुर गिरिधरनआदि सप्त तनु, वेणुनाद सप्त रंध्रन मधुरूप लीनो ॥ एक मधुरफल फलित अतिलालित, पद्मनाभ प्रभु मधुर गावत सरसरंग भीनो ॥ २ ॥

या रीतीसुं वेणुको स्वरूप चाचाजीनें कह्यो सो सुनके कृष्णस्वामी बहोत प्रसन्न भये और श्रीगोकुलचंद्रमाजीमें बहुत आसक्तिवान भये दिनदिन प्रीति जिनकी बढवे लगी सो कृष्णस्वामी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते। वार्ता संपूर्ण॥वैष्णव२०४

श्रीगुसांईजीके सेवक वैष्णव ईश्वरदास तिनकी वार्ता ॥

सो भगवन्नाम खूब लेते अष्टप्रहर भगवतसेवा करते सो एक दिन रस्तामें जाते अजानमें सर्पके माथे पांव आयो सो सर्प मरगयो तब सर्पकी सर्पिणीने वा वैष्णवके पाछें लगी याके प्राण लेउंगी तब छोडूंगी सो वे वैष्णव अष्टप्रहर भगवन्नाम लेतो तब ज्यांसूधी वे वैष्णवजीव्यो कोई दिन भगवन्नाम छोड्यो नहीं सो वे सर्पिणी जन्मसूधी वाके पीछे फिरा करती परंतु कोईदिन भगवन्नाम विना वाकुं देख्यो नहीं सो वे वैष्णव ऐंसो कृपापात्र हतो जाने जन्मपर्यंत भगवन्नाम छोड्यो नहीं जन्मसूधी सर्पिणीके दावमें आयो नहीं सो वे सर्पिणी मृत्यु पाय

गई परंतु वा वैष्णवकुं स्पर्श न कऱ्यो श्रीगुसांईजीकी कृपातें सो वे वैष्णव ऐसो कृपापात्र हतो॥ वै०२०५॥

श्रीगुसां० से० स्यामदास आजना कुनबी, ति० वार्ता॥

सो वे स्यामदास गुजरातमें रहते तब श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे तब स्यामदास श्रीगुसांईजीके सेवक भये फेर स्यामदास बहुत दिन रहके श्रीगोकुल गये और श्रीनवनीतप्रीयाजीके दर्शन किये फेर स्यामदास श्रीगुसांईजीके संग गोपालपूर गये तब स्यामदासजीको मन उहां बहुत लग्यो तब श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी जो मैं जन्मपर्यंत इहां रहुंगो सो कछु सेवा मोकुं बतावें तब श्रीगुसांईजीनें स्यामदासकुं श्रीनाथजीके फूलघरकी सेवा सोंपी तब स्यामदासनें श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी जो महाराज फूलनको स्वरूप कृपाकरके मोकुं समझावें तो बहुत आछो. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी व्रजभक्त जो गोपीजन तिनके चित्त हैं सो पुष्प होयके श्रीठाकुरजीके श्रीअंगकुं स्पर्श करेहें ये सुनके स्यामदास बहुत प्रसन्न भये और फूलनकुं व्रजभक्तनको चित्त जानके पांव न लगावते और धोये विना हाथ न लगावते और कुमलाय न जाय ऐसे प्रयत्न राखते फेर एकदिन स्यामदासनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो महाराज फूलनको ऐसो

स्वरूप विनकुं सुईमें कैंसे परोएजाय ? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी जो सुई है सो सूचीहै ब्रजभक्तनके चित्तमें भगवत्संबंधकी सूचना करे हैं वा सूचनासुं ब्रजभक्तनके चित्त बहुत प्रसन्न होवेहैं ऐंसें जानेहैं जो अब भगवत्संबंध हमकुं सूचन भयोहैं अब तुर्त अंगीकार करेंगे ये सुनके स्यामदासको सब संदेह गयो। एक दिन स्यामदासजी देखे तो ब्रजभक्तनके यूथनके यूथ फूलघरमें देखे तब स्यामदासनें पूछी जो मैं तुमकुं पहेचाणुं नहींहुं तब ब्रजभक्तननें आज्ञा करी जे पुष्पनकी माला तूं अंगीकार करावेहैं सो हमारो स्वरूपहै हम तेरेपर प्रसन्न होयके तोकुं दर्शन देवेहैं सो तूं कछु मांग. तब स्यामदासनें हाथ जोडके विनती करीजो मेरो चित्त कोईदिन ये सेवा छोडके और कहुं न जाय. तब ब्रजभक्तननें अस्तु कही ऐंसेहि होयगो फेर स्यामदासनें ये बात श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी ये सुनके श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो जिनको छेलो जन्म होवेहें विनसुं श्रीठाकुरजी कछु अंतराय नहीं राखेहैं और ऐंसे जीवनके लियें ये मार्ग प्रगट भयोहै ये सुनके स्यामदास बहुत प्रसन्न भये सो वे स्यामदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वै० २०६

श्रीगुसांईजीके सेवक वेणीदास छीपा, तिनकी वार्ता ॥

सो वे वेणीदासजी गुजरातमें रहते हते जब श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब वेणीदासनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब वेणीदास श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करके श्रीठाकुरजी पधराये तब वेणीदास सेवा करन लगे थोडेदिन पाछें वेणीदासनें एक हजार रुपैयाको परकाला लियो सो वेणीदास वांसकी लकडीमें भरके श्रीगुसांईजीके पास श्रीगोकुलमें लेआये और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये फेर वेणीदास श्रीगुसांईजी संग श्रीजीद्वार आये और परकाला श्रीनाथजीकुं धराये तब वेणीदास छीपानें दर्शन किये और तन्मय होय गये देहानुसंधान भूलगये तब उहां मंदिरमें मूच्छा खायके पडरहे तब श्रीगुसांईजीनें वेणीदासकुं चरणस्पर्श कराये और चरणोदक दिये तब वेणीदास चेत भये तब श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी जो महाराज ऐसे आनंदसुं बहार क्युं काढ लिये? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी अबी तो तुमकुं कारज बहुत करनेहैं फेर वेणीदास ब्रजयात्रा करके श्रीगुसांईजीसों विदा होयके आये और श्रीगुसांईजीकुं वीनती करी मेरे घरमें श्रीठाकुरजी विराजहैं सो श्रीनाथ

जीके स्वरूपसों दर्शन देवें ऐसी कृपाकरो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी श्रीठाकुरजी पुष्टिमार्गीय जो जीव है विनके सब मनोरथ पूर्ण करेहैं सो तुमारे मनोरथ पूर्ण करेंगे तब वेणीदास विदा होयके गुजरातमें आये और घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे तब वेणीदासके श्रीठाकुरजी वेणीदासके मनोरथप्रमाणे दर्शन देवे लगे जैसे मनोरथ करते तैसे दर्शन देते सो वेणीदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव ॥ २०७ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक साचोरा ब्राह्मण, ति०वार्ता ॥

सो वे पुरुषोत्तमदास गुजरातमें रहते फेर एक समय श्री गोकुलगये तब श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीकी कृपातें ग्रंथनको ज्ञान भयो फेर पुरुषोत्तमदास ब्रजयात्रा करवेकुं गये और कदमखंडीमें रसोई करी सो दालबाटी करी तब भोगधरे श्रीनाथजी पधारके अरोगे और पुरुषोत्तमदाससुं आज्ञा करी जो तुमकुं दालबाटी करते बहुत सुंदर आवे है हमारी रसोईमें तुम न्हाओ तब पुरुषोत्तमदासनें वीनती करी जो महाराज ये बात तो श्रीगुसांईजीके हाथ है तब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीकुं आज्ञा करी पुरुषोत्तमदास रसोई बहुत सुंदर कर जाने हैं तब श्रीगुसांईजी पुरुषोत्त-

मदासकुं श्रीनाथजीके भीतरियापनेकी सब सेवा सोंपी जब पुरुषोत्तमदासजी रसोई करते तब श्रीनाथजी पुरुषोत्तमदासकुं शिखावते ऐंसे रोटी ऐंसे बाटी करो सो वे पुरुषोत्तमदास जन्मपर्यंत श्रीनाथजीकी सेवा छोडके कहुं गये नहीं और द्रव्यको संग्रह न कियो वे पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते महाप्रसादकी पातर लायके वैष्णवनकुं प्रसाद लेवावते जिनकी श्रीगुसांईजी श्रीमुखसुं सराहना करते ॥ वैष्णव २०८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक लक्ष्मीदासजोशी, तिनकी वार्ता ॥

सो वे लक्ष्मीदास जोशी गुजरातमें रहते हते उहां श्रीगुसांईजी पधारे तब लक्ष्मीदासनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये लक्ष्मीदासनें वीनती करी मोकुं शरण लेउ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नामनिवेदन करायो फेर एकदिन लक्ष्मीदासनें श्रीगुसांईजीसुं पूछी जो गुरूको सूतक लगेके न लगे?तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो गुरुशिष्यको आपसमें सामान्यसूतक है सो गुरु तो एक और शिष्यतो अनेक जो ऐंसे सूतक पाले तो गुरु जन्मसूधी भगवत्सेवा न कर सके जासुं ऐंसे सूतकको विचार करनो शास्त्रके वचन तो अनेक रीतीके हैं परंतु विचारके मानने चहिये जैंसे

छाछ कोईको नहीं छीजाय है ऐंसे वचन निकसेंगे परंतु क्षत्री तथा वैश्य तथा शूद्र और असच्छूद्र इनके बासनका और इनके जलकी छाछ आपणे कैंसे लई जायगी और शास्त्रमें ऐंसेहुं कह्यो है जितनी वस्तु ताकडीमें तुलाय जाय सो सब शुद्ध है परंतु ये वचन सत्य मानके अग्राह्यपदार्थ इन वचननके बलतें ग्रहण नहीं होवेंहें ऐंसे सूतकके वचनहु अनेक प्रकारके ऋषीनके मतकेहैं सो विचारेविना कैंसे लिये जाय ? ये सुनके लक्ष्मीदास बोले जो महाराज संन्यास ग्रहण करनो के नहीं ? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो श्रीमहाप्रभूजीनें विरहदशामें त्याग कह्यो हैं जहांसूधी भगवद्विरह उत्पन्न न होवे वैंसे संन्यास लेवे तो कलियुगमें पश्चात्ताप होवे जासूं अत्यंत विरह उत्पन्न भये विना गृहस्थपणो त्याग नहीं करनो. तब लक्ष्मीदासनें वीनती करी जो मेरो चित्त कहुं लगे नहीं है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी भगवत्सेवा करो तब लक्ष्मीदास श्रीगुसांईजीके संग श्रीगोकुल गये और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये आर श्रीनाथजीके दर्शन किये तब भगवत्सेवामें मन बहुत लग्यो फर श्रीगुसांईजीसों मार्गकी रीती सीखके और भगवत्सवा पधरायके गुजरातमें आये घर

आयके श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे और वैष्णवनको सतसंग करन लगे सो वा लक्ष्मीदास जोसीनें या रीतीसुं काल व्यतीत कियो ॥ वैष्णव २०९ ॥

श्रीगुसां० सेवक महीधरजी और फूलबाई तिनकी वार्ता ॥

सो वे महीधरजी क्षत्री अलियाणा गाममें रहते और फूलबाई विनकी बेहेन हती और नरहर जोसीके यजमान हते और नरहरजोसीके सतसंगत वैष्णव भये हते. सो एक दिन अलीयाणामें आग लागी हती सो नरहरजोसीनें खेरालु गाममें बैठे बैठे बुझाई हती सो ये बात जगन्नाथ जोसीकी वार्तामें लिखी है फेर महीधर जब सरकारके कामदार भये और श्रीगुसांईजीकुं पधरायलाये और श्रीगुसांईजी विनके घर बहुत दिन बिराजे जब श्रीगुसांईजी भाईलाकोठारीके इहां पधारते तब महीधरजीके उहां पधारते सो महीधरजीको चित्त श्रीगुसांईजी विना कहुं लगतो नहीं अबसूधी श्रीगुसांईजीकी बैठक अलियाणामें प्रसिद्ध है जिनके घरमें अबसूधी श्रीगुसांईजी दर्शन देवेहे और महीधरजीकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन जा दिन न होते वाई दिन विनके पेटमें पीडा होजाती जासुं महीधरजीकुं श्रीगुसांईजी एकांतमें प्रकट होयके नित्य दर्शन देते वे महीधरजी ऐसे कृपापात्र हते ॥ वै० २१० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक भूधरदास तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव बाराडीमें रहते हते श्रीगुसांईजी द्वारका पधारे तब भूधरदास श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीके संग द्वारका गये और श्रीरणछोडजीके दर्शन किये कितनेक दिन रहके श्रीगुसांईजी पीछे पधारे भूधरदासहुं संग चले रस्तामें एक मुकाम भयो उहां भूधरदासके मनमें ऐसी आई श्रीगुसांईजी कछु माहात्म्य दिखावे तो ठीक इतनेमें एक बादल चढ्यो और सब घटाछाय गई रसोई आधी भई हती तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी जो तुम इहां मत वरसियो हमारो डेरो छोडके वरसो तब मेह वरसन लग्यो श्रीगुसांईजीके डेरासुं सो सो हाथ दूरसो ऐंसो वरस्यो सो बारे बारे महिनाके जल तलावनमें भर गये और नदी सब पूर आय गई और श्रीगुसांईजीके डेरामें एक बूंद न परी और चारों आडी सब ठिकाणें जल फैल गये सो माहात्म्य भूधरदासनें देख्यो तब वा दिनसुं ऐंसो नेम लियो जन्मपर्यंत श्रीगुसांईजीकी टहल करुंगो फेर श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे सो भूधरदासकुं श्रीनाथजीकी सेवामें राखे सो थोडे दिन पीछे श्रीनाथजी भूधरदा-

सखुं बोलन लगे सो वे भूधरदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २११ ॥

श्रीगुस०सेवक मगनभाई खंभातमें रहते ति०वार्ता ॥

सो वे मगनभाई बानिया वैष्णव हते एक समय श्रीगुसांईजी खंभात पधारे हते तब माधवदास दलालके घर उतरे और उहां बहुत वैष्णव आवते सो वैष्णवकी भीड देखके मगनभाईनें माधवदाससुं पूछी जो श्रीगुसांईजीके सेवक भये सो कहा अधिकी है?तब माधवदासजीनें कही इनके सेवक भये तें नयो जन्म होतहै और याही देहसुं जन्म पलट जाय है और श्रीठाकुरजीकी कृपा होवे है. और या जीवकुं श्रीठाकुरजी अपनो जानें है. ये बात सुनके वे मगनभाई श्रीगुसांईजीके सेवक भये. मगनभाईके पास द्रव्य बहुत हतो नित्य श्रीगुसांईजीके पास दर्शनको जाते सो वे मगन भाईनें लाख रुपैया श्रीगुसांईजीकुं भेट कर दिये तब थोडे दिन पीछे वा मगनभाईके मनमे ऐंसी आई जो नये जन्म ब्रह्मसंबध करते होवेहै याकी परीक्षा करुं तो ठीक तब मगनभाई विचार करन लग्यो जो अमका ब्राह्मण मेरे पास पांच हजार रुपैया धरके तीरथ करन गयो है मैनें वाके गया पीछे ब्रह्म संबंध कीयो है अबके आवेगो वाके रुपैया न कबूल करुंगो तब

परीक्षा होय जायगी ऐसे मगनभाईनें बिचार कियो तब वे ब्राह्मण आयो जब वानें मगनभाईसुं रुपैया मांगें तब मगनभाईनें कही तुम झूटो बोलो हो मैने या जन्ममें तो तेरे पास लिये नहीं है तब वे ब्राह्मण राजमें पुकाऱ्यो तब राजानें मगन भाईसों कही या ब्राह्मणके रुपैया देउ तब मगनभाईनें कही जो मैनें या जन्ममें रुपैया लिये नहीं है तब राजानें पांचशेरी लोहकी मंगायके अग्नीमें ताती कराई और मगनभाईके हाथमें धराई तब मगनभाईनें श्रीगुसांईजीको ध्यान करके कही जो मैनें या जन्ममें रुपैया लिये होवें तो मेरे हाथ जर जावो तब मगनभाईके हाथ जरे नहीं तब राजानें कही पटक देउ तब ब्राह्मणनें कही ये बराबर ताती नहीं भई सो वा मगनभाईनें पटकी तब ब्राह्मणनें उठाई तब वा ब्राह्मणके दोनों हाथ जरगये तब राजानें हुकम कऱ्यो या ब्राह्मणकुं कैदमें लेजावो याको घर लूटलेउ ये ब्राह्मण बहोत झूठो है तब मगनभाईनें राजासुं कही या ब्राह्मणको कछु दोष नहीं है ये साचो है याको घर मत लूटो मैनें परीक्षा करनेके लिये ये काम कऱ्यो है तब राजानें कही काहेकी परीक्षा करी है तब मगनभाईनें सब बात कही तब सुनके वा राजाकी सभा सब चकित होय-

गई. और श्रीगुसांईजीकुं पधरायके वे राजा और ब्राह्मण और दूसरे सभासद सब श्रीगुसांईजीके सेवक भये और सब भगवत्सेवा करन लगे और वे मगनभाईहु श्रीठाकुरजी पधरायके मार्गकी रीति प्रमाणें सेवा करन लगे सो मगनभाईकुं श्रीगुसांईजीके ऊपर ऐंसो विश्वास हतो ॥ वैष्णव २१२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोवर्द्धनभट्ट जिनने मगनभाईके पास पांचहजार रुपैया धन्ये तिनकी वार्ता ॥

सो वा ब्राह्मणको नाम गोवर्धनभट्ट हतो जब राजाकी कचेरीमें वाके हाथ जरगये और राजानें वा ब्राह्मणके ऊपर दंडको हुकम कीनो और वा मगनभाईनें छुडायो तादिनतें वा गोवर्धनभट्टनें ऐंसी प्रतिज्ञा लीनी जो मैं श्रीगुसांईजीके शरण जाऊंगो जब अन्न लेऊंगो तहांसुधी फलहार करुंगो ऐसो आग्रह वा गोवर्धनभट्टको देखके वा मगनभाईनें और वा गामके राजानें श्रीगुसांईजीके ऊपर पत्र लिखादियो तब वे गोवर्धनभट्ट पत्र लेके श्रीगोकुल आये और श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और मगनभाईकी सब बात श्रीगुसांईजीसों कही येसुनके श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी पुष्टिमार्गमें विश्वास फलीभूत होवेहै पुष्टिमार्गमें भगवान स्थित है जीवकी लौकिक गति नहीं करेहैं जीवकुं विश्वास चहिये

जिनके सब कार्यसिद्ध होवेहैं श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करीहै सो श्लोक--"भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लौकिकींचगतिम्" और विवेक धैर्य आश्रय ग्रंथमें श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करी है सो ॥ श्लोक--

"अविश्वासो न कर्तव्यः सर्वथा बाधकस्तु सः ॥
ब्रह्मास्त्रचातकौ भाव्यौ प्राप्तं सेवेत निर्ममः ॥"

जासुं सर्वथा पुष्टिमार्गमें विश्वास राख्यो चहिये ये सुनके गोवर्धनभट्ट बहुत प्रसन्न भये और श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये और श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये और ब्रजयात्रा किये बहुत दिन ब्रजमें रहे फेर श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब संग आये श्रीगुसांईजीकुं खंभात पधराय लाये और राजाकुं सेवक करायो फेर एकदिन गोवर्धनभट्टने श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो महाराज मेरे पास पंचायतन पूजा है सो आपके पास लायोहुं. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो विष्णुको आयतन नहीं है साक्षात् भूतलपर बिराजे है और चार देवताको आयतन है सो आयतनकी पूजाको काल नहींहे ॥ श्लोक-

"कलौ दशसहस्राणि विष्णुस्तिष्ठति मेदिनी ॥
तदर्धं जाह्नवी तोयं तदर्धं सर्वदेवताः ॥"

याते देवता सब पृथ्वीकुं त्याग कर गये हैं

बिनको नित्य पूजनको काल नहींहै नैमित्य पूजनको कालहै याहीतें आवाहन विसर्जनहै और विष्णु भूतलपर स्थित हैं इनको साक्षात् पूजनको कालहै जासुं भगवत्सेवा करो तब गोवर्धनभट्ट ये सुनके बहुत प्रसन्न भये श्रीगुसांईजीके पासतें श्रीठाकुरजी पधरायके भगवत्सेवा करन लगे और घरके सब मनुष्यनकुं नाम निवेदन करायो और मार्गकी रीतिप्रमाणें भगवत्सेवा करन लगे और थोडे दिन पीछे श्रीठाकुरजी अनुभव जतावन लगे सो वे गोवर्धनभट्ट श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वै० २१३

श्रीगुसां० से० मोरारी आचार्य खंभातमें रहते ति० वार्ता ॥

सो वे मोरारी आचार्य काशी यात्राकुं गामके पटेलके संग गये सो रस्तामें श्रीगोकुल गये सो मोरारी आचार्य छः शास्त्र पढे हते सो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये तब मोरारी आचार्यनें श्रीगुसांईजीसुं पूंछ्यो जो जगत् सत्य है के असत्य है? तब श्रीगुसांईजीनें कही जो जगत् सत्य है और संसार जो अहंता ममता सो असत्य है तब मोरारी आचार्यनें कही जो जगत् सत्य होवे तो एक चले जाय है फेर दूसरे उत्पन्न होवेहैं आगले पदार्थ दीखे नहीं हैं. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो प्रभूमें अनंतशक्तिहै सो आविर्भाव तिरोभाव शक्तीहुं

है जासुं प्रगट होवे सो दीखे और तिरोहित होवे सो न दीखे परंतु जगत् जो असत्य होवें तो ब्राह्मणके जिमायवेको पुण्य क्युं होवे और सत्कर्म करके सद्गति क्युं होवे और पाप करके नरकमें क्युं जाय जगत् झूठो होवे तो कृती झूठी चहिये झूठे पदार्थनको फलहु झूठो चाहिये ऐसे श्रीगुसाइजीके वचन सुनके मोरारी आचार्य श्रीगुसांईजीके सेवक भये और माला तिलक धरके अपने संगमें गये मोरारी आचार्यके संग एक पटेल हतो सो खंभातमें रहतो हतो और द्रव्यपात्र हतो और शव हतो वाकुं देखके गुस्सो आयो और मोरारी आचार्यसुं कही तुमनें ये कहा काम कऱ्यो है तब मोरारी आचार्यनें कही मैनें ठीक काम कऱ्यो है तब मोरारी आचार्य वा पटेलको संग छोडके श्रीगोकुल रह गये और श्रीगुसांईजीके पास पुष्टिमार्गके ग्रंथ देखे सो विद्वन्मंडन और सुबोधिनीजी इत्यादिक ग्रंथ देखके बहुत प्रसन्न भये सो मोरारी आचार्य काशीमें जायके कितनें पंडितनसुं विवाद करके जीते फेर मोरारी आचार्य श्रीनाथजीके दर्शन करके और श्रीगुसांईजीके पास बिदा होयके और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके खंभातमें आये आखोदिन भगवत्सेवा करते और कोईसुं कछु बोलते नहीं फेर वा गामके

पटेलनें मोरारी आचार्यकी आजीविका बंद करदीनी और लोगनकुं पटेल कहेन लगे जो एकवार मोरारी आचार्य मेरे पास आवे तो ये कहे जैसे करूंगो सो एक वनियानें मोरारी आचार्यसुं कही जो तुम एकवार पटेलके घर जावो सो बहुत आग्रह करके पटेलके घर ले गयो तब पटेल ऊपर बैठो हतो सो मोमारी आचार्यके आवेकी खबर पडी तब पटेलनें कही जो मोरारी आचार्य तिलकमुद्रा धोयके आवे तो यासुं बात करुंगो तब मोरारी आचार्यने ये बात सुनी सुनके सो संकल्प कियो या पटेलकी दीनी जितनी वस्तु और जितनी धरती और घर सो सब कछु मेरे प्रभुलायक नहीं है ऐसें कहके मोरारी आचार्य अपने घर आये और श्रीठाकुरजी घरके बहार पधरायके ब्राह्मणनकुं दे दियो और एक झांपी करके गामसुं बहार जाय रहे सो वे मोरारी आचार्य ऐंसे टेकके वैष्णव हते जिननें अन्यमार्गीयकी कछु वस्तु घरमें राखी नहीं गामपर्यंत त्याग कर दीनो सो मोरारी आचार्य श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते। वार्ता सं० ॥ वै० २१४

श्रीगुसां० सेवक माट वनके एक रजपूत ति० वार्ता ॥

सो वे रजपूत माटबनतें श्रीगोवर्धन आयो तब मानसीगंगामें न्हायो तब मानसीगंगातें चंद-

सरोवर गयो चंदसरोवरपर कुंमनदासजीनें एक मालीके पाससुं आंब लिये हते सो आंब पहले पहले आये हते सो दस रुपैयामें ठरायके लिये हते तब कुंडपर धोयके आर उहां श्रीनाथजीकुं भोग धरे और श्रीनाथजी उनकी गोदमें बैठके आंब अरोगे फेर टोकरामें धरके मालीके पाससों आंब उठवाये और कही चलो दस रुपैया देवें विचार कियो घरमें तो दस रुपैया नहीं है परंतु भैंस और पाडी बेंचके देउंगो अबी कोईके पास उधार लेके याकुं देउंगो ऐंसो विचार करके वा मालीकुं संग ले चले तब रस्तामें रजपूत मिल्यो सो वानें पूंछी आंबोंका कहा लेवेगो तब कुंमनदासजीनें कही दस रुपैयामें हमने ठहराये हैं तुमारे चहिये तो लेवो तब वा रजपूतनें दस रुपैया देके लीनें कुंमनदासजीको मनोरथ पूर्ण भयो तब वा रजपूतनें आंब खाये सो आंब खातमात्रही वाके सब दोष निवृत्त भये और शुद्धचित्त होयगयो तब कुंमनदासजीसुं पूंछयो या संसारमें भगवत्प्राप्ति कैंसें होवे तब कुंमनदासजीनें कही जो श्रीगुसांईजीके शरण जावो तो भगवत्प्राप्ति होवेगी तब वे रजपूत गोपालपुरमें जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये तब वा रजपूतके मनमें ऐसी आई जो

श्रीनाथजीकुं छोडके कहुं जानो नहीं तब श्रीगु-
सांईजीसुं वीनती करी जो कृपाकरके मोकुं सेवा
बतावें तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम हथि-
यार बांधके और घोडापें अस्वार होयके श्रीनाथ-
जीकी गायनके संग जावो और गायनमें सिंघ और
लियारी आवेहैं गायनकुं मार डारेहैं विनकी रक्षा
करो और अनसखडी महाप्रसाद संग लेजावो
तब वा रजपूतनें वैसेंही कियो सो नित्य गायनके
संग जाते फेर थोडे दिन पीछे गायनके संग वाकुं
श्रीनाथजी दर्शन देवे लगे कोई समय तो श्रीना-
थजी वासुं बोले और कोई समय श्रीनाथजी वा
रजपूतके घोडापर अस्वार होवे सो ऐसे श्रीनाथजी
विनके संग अनेक प्रकारकी क्रीडा करन लगे
एकदिन वा रजपूतको बेटा बुलावे आयो तब वा
रजपुतनें कही जो तूं ऐसें जान जो मेरो बाप
मरगयो है मैं ऐसे जानुगो मेरो बेटा जन्म्यो नहीं
है ऐसे कहके वा बेटाकुं पाछो पठायो परंतु श्रीना-
थजीके चरणारबिंद छोडके कहुंगये नहीं सो
कुंमनदासजीकी कृपातें वे रजपूत श्रीगुसांईजीको
दृढ सेवक भयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वै० २१५ ॥

श्रीगुसां० से० एक वैष्णव गुजरातमें रहते तिनकी वार्ता ॥

सो एकसमय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे सो

वे वैष्णव सेवक भये हते और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधरायके पुष्टिमार्गीय परिणालिका प्रमाणे सेवा करन लगे और वा वैष्णवके उहां वैष्णव आवते जावते हते और एकसमय शीतकालके दिन हते सो वाके घर वैष्णव बहुत आये सो बिछोना और ओढवेकुं सब दिये और आप आखीरात लंगोट मारके बैठे रहे ठंडके मारे नींद नहीं आई और भगवन्नाम लिया करे तब श्रीठाकुरजी मंदिरसुं बहार पधारके वाकुं कही जो तूं क्युं ठंडमें बैठाहैं तोकुं ठंड लगेहै जासुं हमकुं नींद नहीं आवेहै हमहुं कांपेहैं सो श्रीगुसांईजीनें व्रतचर्यामें कह्यो है सो । श्लोक--

"सखि निर्भरानुरागात्प्राप्तोयं निखिलगोपिकैकात्म्यम् ।
तदयं तच्छीतोक्त्या सकंपपुलकः स्वयं चासीत् ॥"

तब वा वैष्णवनें हाथ जोडके कही जो ये आपके दास मेरे घर पधारेहें इनकुं जो ठंडलगी होती तोहुं आपकुं नींद न आवती जासुं आपके जागवेको और श्रमको अपराध मेरे माथे पड्यो सो मै भुक्तुंगो और वैष्णवकुं ठंड लगती तो आपके जागवेको अपराध या वैष्णवनकुं लगतो जासुं वैष्णवनके बदले मोकुं दुःख होवेगो और अपराध भुक्तुंगो तो चिंता नहीं है ये सुनके श्रीठाकुरजी हंसे और आज्ञा करी तेरे जैसे वैष्णवनके नाम लियेसुं लोगनके

अपराध जायंगे तो तोकुं अपराध कैंसे स्पर्श करेगो जासुं मैं तेरेपर प्रसन्नहुं कछु वर मांग तब वा वैष्णवनें मांग्यो जो मेरो स्नेह वैष्णवनके ऊपर दिनदिन अधिकी रहे जिनके प्रतापसुं आप मेरे-संग बोले हैं तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी ऐंसेही होयगो ये सुनके वे वैष्णव बहुत प्रसन्न भयो तब जलदी न्हायके उत्तम सामग्री करके श्रीठाकुर-जीकुं भोग धरी और वैष्णवनकुं महाप्रसाद लिवायो वा दिनतें नित्य श्रीठाकुरजी वा वैष्णवसों बोलते और जो चहिये सो मांगते सो वे गुजराती वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव२१६॥

श्रीगुसांई०सेवक निष्किंचन वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

सो वे निष्किंचन वैष्णव श्रीगुसांईजीको सेवक गुजरातमें भयो तब वा वैष्णवनें ऐंसो मनोरथ विचार्यो जो मेरे पास द्रव्य होवेतो ब्रजयात्रा जावुं श्रीनाथजीकुं और सात स्वरूपनकुं सामग्री अरो-गावुं और सब कुंडनमें स्नान करुं ऐंसे मनोरथ विचारके लोगनके आगें बात करे तब वा गाममें एक चुन्नीलाल शेठ हतो सो चुन्नीलालशेठके पास द्रव्य बहोत हतो सो ये बात चुन्नीलालशेठनें जानी तब वा निष्किंचन वैष्णवकुं बुलाये और कह्यो जो तुं मनोरथ विचारे है सो मैं तोकुं द्रव्य देउंतुं मनो-

रथ कर परंतु पुण्य सब मेरो, वा निष्किंचन वैष्णवनें हा कही और जितनो द्रव्य चहिये इतनो दियो और द्रव्य लेके व्रजमें जायके सब मनोरथ किये और सब व्रजयात्रा करी और एक वर्षपर्यंत गोपालपुरमें रह्यो और श्रीनाथजीकी सेवा दर्शन कियो फेर वो निष्किंचन वैष्णव अपनें देशमें आयो तब लोगननें कही यानें यात्रा करी तो कहा भयो पुण्यतो सब चुन्नीलाल शेठको है तब एक वैष्णव बोल्यो चुन्नीलाल शेठपासे बैठो हतो सुनतो हतो हमारे पुष्टिमार्गमें तो पुण्य चहिये नहीं कछु फलकी अपेक्षा नहींहै फल सब शेठ भले लेजाय परंतु या वैष्णवनें या देहासुं टेहेल करी और नेत्रनसुं दर्शनको सुख लियो ये सुखतो चुन्नीलाल कैसे ले सोकेगो ये बात सुनके वा चुन्नीलाल शेठके मनमें ऐसी आई जो मैंहुं वैष्णव होउंतो बहोत आछो फेर वा निष्किंचन वैष्णवकुं बुलायके और वा वैष्णवके संग व्रजयात्रा गयो और श्रीगोकुलमें जायके श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब वा चुन्नीलालशेठनें वीनती करी महाराज मोकुं शरण ल्यो तब कृपाकरके श्रीगुसांईजीनें श्रीनवनीतप्रियाजीके संनिधान नामनिवेदन करायो फेर वा

निष्किंचन वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी महाराज ! जो कोई आछोकाम करे और दूसरेको द्रव्य खर्चें याको पुण्य करवेवालेको, कें द्रव्यखर्चवेवालेको? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञाकरी जो पुष्टिमार्गमें सकामकर्म अनित्य धर्मनमें गणेहैं और अनित्य धर्मकरे तो वेदविरुद्ध बाधक होवे जासुं पुष्टिमार्गमें निष्काम कर्म करे चहिये और फलकी आशा मनमें राखनी नहीं जो राखे तो वेदविरुद्ध बाधक होवे ये सुनके वे निष्किंचन वैष्णव प्रसन्न भयो और चुन्नीलालशेठ बोल्यो जो महाराज मेरे रोमरोम कामनासुं भऱ्येहें आप कृपाकरेंगे तो निष्काम अंतःकरण होएंगे वाको उपाय आप कृपाकरके बतावे तो मेरो कारज सिद्ध होवे. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी श्रीठाकुरजीकी सेवा करो तब चुन्नीलालनें कही जो मैं सेवाकी रीतीमें समझुं नहींहुं आप कृपाकरें तो समझण पडे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी या वैष्णवके पास सब मार्गकी विधी सीखो तब वा चुन्नीलालनें वीनती करी जो ये वैष्णव निष्किंचन है याकुं आप आज्ञा करे जो जन्मसूधी मोकुं छोडके कहुं नहीं जाय तो मैं सेवा पधरावुं और मेरे घरमें सब हुकुम याहीको राखुं तब श्रीगुसांईजीनें वा निष्किंचन वैष्णवकुं चुन्नी-

लालके पास राखदियो और श्रीठाकुरजी पधराय दिये और दोनो मिलके सेवा करन लगे तब श्रीगुसांईजीसुं बिदा होवन लगे तब वा निष्किंचन वैष्णवनें कही जो मैं याके पास रहुंगो परंतु वर्षमें एक वार ब्रजमें आवुंगो और श्रीनाथजीकी और श्रीनवनीतप्रियाजीकी झांकी करुंगो य चुन्नीलालकुं आप आज्ञा करें मोकुं यामें प्रतिबंध न करें तब चुन्नीलालनें कही सब द्रव्य और घर तुमारोहै मैं काहेकुं प्रतिबंध करुंगो तब वे दोनों बिदा होयके गुजरातमें आये और हिलमिलके सेवा करन लगे और जन्मपर्यंत चुन्नीलाल शेठ वा निष्किंचन वैष्णवकी आज्ञामें रह्यो सो वे निष्किंचन वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव २१७ ॥

श्रीगुसां० से० रसखान पठान दिल्लीमें रहेते तिनकी वार्ता ॥

सो वा दिल्लीमें एक साहुकार रहेतो हतो सो वा साहुकारको बेटो बहुत सुंदर हतो वा छोरासों रसखानको मन बहुत लग गयो वाहीके पाछें फिर्या करे और वाको झूठो खावे और आठ पहेर वाहीकी नोकरी करे पगार कछु लेवे नहीं दिनरात वाहीमें आसक्त रहे दूसरे बडी जातके रसखानकी निंदा बहुत करते हते परंतु रसखान कोईकुं गणते नहीं हते और अष्टपहेर वा साहुकारके बेटामें चित्त

लग्यो रहतो एकदिन चार वैष्णव मिलके भगव-
द्वार्ता करते हते करते करते ऐंसी बात निकसी जो
प्रभूमें चित्त ऐंसो लगावनो जैंसे रसखानको चित्त
साहुकारके बेटामें लग्योहै इतनेमें रसखान ये रस्ता
निकस्यो विननें ये बात सुनी, तब रसखाननें कही
जो तुम मेरी कहा बात करोहो ? तब वैष्णवनने जो
बात हती सो बात कही तब रसखान बोले प्रभूको
स्वरूप दीखेतो चित्त लगाइंये तब वा वैष्णवनें श्रीना-
थजीको चित्र दिखायो सो देखतही रसखाननें वो
चित्र लेलियो और मनमें ऐंसो संकल्प कर्‍यो जो
ऐंसो स्वरूप देखनो जब अन्न खानो उहांसुं घोडा
पर बैठके एकरात्रमें वृंदावन आयो और आखो-
दिन सब मंदिरनमें वेष बदलायके फिर्‍यो और
सब मंदिरनमें दर्शन किये और वैसे दर्शन नहीं
भये तब गोपालपुरमें गयो और वेष बदलायके
श्रीनाथजीके दर्शन करवेकुं गयो तब सिंघपोरियाने
भगवादिच्छासुं वाके चिह्न बडी जातवालेके पहे-
चाने तब वाकुं धक्का मारके काढ दियो सो जायके
गोविंदकुंडपर पडरह्यो तीनादिन सूधी पड रह्यो
खावे पीवेकी कछु अपेक्षा राखी नहीं तब श्रीनाथ-
जीनें जानी ये जीव दैवी है और शुद्ध है और सा-
त्विक है मेरो भक्त है याकुं दर्शन देउं तो ठीक.

तब श्रीनाथजीनें दर्शन दिये तब वे उठके श्रीनाथजीकुं पकडवे दौऱ्यो सो श्रीनाथजी भाग गये फेर श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं कही ये जीव दैवी है और म्लेच्छ योनिकुं पायो है जासुं याके ऊपर कृपा करो याकुं शरण लेउ जहांसूधी तुमारो संबंध जीवकुं नहीं होवे तहांसूधी मैं वा जीवकुं स्पर्श नहीं करुंहुं वासुं बोलु नहींहुं और वाके हाथको खावुहुं नहीं जासुं आप याको अंगीकार करो तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके वचन सुनके गोविंदकुंडपें पधारे और वाकुं नाम सुनाये और साक्षात् श्रीनाथजीके दर्शन श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें वाकुं भये तब श्रीगुसांईजी विनकुं संग लेके पधारे और उत्थापनके दर्शन कराय महाप्रसाद लिवायो तब रसखानजी श्रीनाथजीके स्वरूपमें आसक्त भये तब वे रसखाननें अनेक कीर्तन और कवित्त और दोहा बहोत प्रकारके बनाये जैंसे जैंसे लीलाके दर्शन विनकुं भये वैंसे ही वर्णन किये सो वे रसखान श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनको चित्रके दर्शन करत मात्रही संसारमेंसुं चित्त खेंचायके और श्रीनाथजीमें लग्यो इनके भाग्यकी कहा बडाई करनी ॥ वैष्णव २१८॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक रजपूतकी वार्ता ॥

एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे मारवा-

उमें एक गाममें डेरा किये उहां एक रजपूत वा देशके राजाकी तरफसुं हांसल उघरावतो हतो सो श्रीगुसांईजीके डेरा देखके उहां आयो सो श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब साष्टांग दंडवत करी तब वे रजपूत श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और वाको गाम उहांसुं दशकोश दूर हतो तब उहां वीनती करके श्रीगुसांईजीकुं पधराये और घरके सब सेवक कराये और वीनती करी जो महाराज ! मेरो मन बहुत दुष्ट है सो आप कृपा करे तो मेरो मन पवित्र होवे और कछु पुष्टिमार्गमें लगे तब श्रीगुसांईजीने वा रजपूतकुं श्रीठाकुरजी पधराय दिये और मार्गकी रीति शिखाई तब वे रजपूत सेवा करन लग्यो सो एकदिन वा रजपूतनें जुवार हरी शेकके श्रीठाकुरजीकुं धरी तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके अरोगे तब श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीकुं आज्ञा करी जो तुमारे सेवक रजपूतने जुवार धरीहै सो बहुत सुंदर है और मैं प्रसन्न होयके अरोग्योहुं ये बात सुनके श्रीगुसांईजी वा रजपूतके ऊपर बहुत प्रसन्न भये तब चाचाहरीवंशजीकुं बुलायके श्रीगुसांईजीनें वा रजपूतके गाम पठाये और आज्ञा करी जो देखी आवो तब चाचाजी

कितनें एक दिनमें पहोंचे सो वा रजपूतनें चाचा-जीकुं श्रीगुसांईजीके निजसेवक जानके बहुत आदर कर्‍यो और गदगद कंठ होयगयो और कहने लग्यो मेरो बडो भाग्यहै के तुम जैसे भगवदीयननें मेरो घर पवित्र कियो ऐंसे कहके चाचाजीकुं उतरवेको ठेकानो दियो तब चाचाजीनें कही जो श्रीठाकुरजीको कहा समयहै तब वा रजपूतनें कही हम जैसे जीवनकुं समय पूछवेकी अपेक्षा होवे हे और आप जैंसे भगवदीयतो श्रीठाकुरजीको स्वरूपहै और हम जैसेनकुं न्यारे न्यारे दीसतहैं जासुं आप भितर पधारो तब चाचाजी भीतर जायके टेरा खोल्यो और वाई समय राजभोग आये हतें तब चाचाजी देखेतो श्रीठाकुरजी अरोगेहैं चौकीसों सिंघासनसुं बहुत दूर धरी हती और श्रीठाकुरजीकुं नमनकुं लेनो पडतो तब चाचाजीनें वा रजपूतकुं कही चौकी सिंघासनके पास धरो तब वा रजपूतनें कपडा पेहेरे हते तब चौकी सरकाई तब श्रीठाकुरजी आछी रीतीसु अरोगनलगे तब चाचाजी टेरा देके बाहेर आये तब चाचाजीनें रसोई करके भोग धरके महाप्रसाद लियो तब कितनेक दिन रहके चाचाजी श्रीगोकुल आये और श्रीगुसांईजीकुं सब समाचार कहे और कहीजो उहां महाप्रसाद मैंने नहीं

लियो तब श्रीगुसांईजीनें पूंछ्यो क्युं नहीं लियो तब चाचाजीनें कही अनाचार बहुत हतो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो स्नेहमें आचारको काम नहीं है जिनके अंतरमें भगवत्स्नेह छाय गयोहै तिनको आचार विचार नहीं रहे ये सुनके चाचाहरिवंशजी बहुत प्रसन्न भये और वीनती करी जो आपकी कृपातें ऐंसे महत्पुरुषके दर्शन भये मैं विनको स्वरूप जान्यो नहीं सो वे रजपूत श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव २१९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक शैवके बेटा तिनकी वार्ता ॥

सो एक क्षत्री श्रीमहाप्रभूजीको सेवक हतो और नवनीतप्रियाजीके जलघरकी सेवा करतो हतो नवनीतप्रियाजी वाकुं अनुभव करावते हते फेर कोईदिन अपराध पड्यो तब वाकी देह छूटी वानें शैव ब्राह्मणके घर आयके जन्म लियो परंतु कछु बोले नहीं रोवे नहीं चुप करके पड्यो रहे जब दूध प्यावें जब पीवे ऐंसे करते बारह महिना बीते जब वाकी वर्षगांठ आई और ज्ञाती भोजन भयो तब ज्ञाती भोजनमें वो बोल्यो श्रीवल्लभाचार्यजी इतने अक्षर फेर दूसरे वर्षमें वर्षगांठको दिन आयो जब दो नाम लिये ज्ञातिसभामें वो बोल्यो श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल ऐंसे तीसरे वर्षमें तीन नाम

लिये चौथे वर्षमें चार नाम लिये पांचमें वर्षमें पांच नाम लिये तब वाके पितानें पूंछी जो तूं नित्य क्युं नहीं बोलेहैं तब वानें कही जो मोकुं श्रीगोकुल लेजावो तब बोलुंगो तब वाको पिता श्रीगोकुल ले गयो तब श्रीगोकुलमें जायके वा छोरानें वाके पितासुं कही जो तुम श्रीगुसांईजीके सेवक होय जाओ मोकुं सेवक करावो तब वाको पिता श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और वा छोराकुं सेवक करायो तब श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करते वाके नेत्र भरआये तब श्रीनवनीतप्रियाजी वा छोराको हाथ पकडके आपकी लीलामें लेगये तब वाको पिता विद्वान् हतो कह्यो जो याको धन्य भाग्य है याके संगते मोकुं श्रीगुसांईजीके दर्शन भये हैं और मैं वैष्णव भयोहुं सो वे शैवको बेटा श्रीगुसांईजीको ऐंसो कृपापात्र हतो जाकुं पूर्वजन्मकी बात याद रही हती और देहसहित भगवल्लीलामें गयो ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २२० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक तीन वैष्णव तिनकी वार्ता ॥

एक साहुकारको बेटा वाको नाम मोहनदास हतो और वजीरकी बेटी वाको नाम गोपीबाई हतो और एक बनिया वाको नाम निहालचंद हतो सो वे तीनोंजनें एक पाठशालामें पढते हते सो एक

समय श्रीगुसांईजी वा गाममें पधारे सो वे तीनोंजनें श्रीगुसांईजीके सेवक भये और मोहनदासको और गोपीबाईको स्नेह विशेष भयो और तीनोंजनें श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करनलगे और वे मोहनदास नित्य गोपीबाईके घर जाय और भगवद्वार्ता बांचते जादिन न जाय वा दिन गोपीबाई प्रसाद न लेती एकदिन वा गामके राजाके मनुष्यननें वाकुं गोपीबाईके घर जातो दिख्यो तब राजाकुं खबर करी तब राजा वेष बदलायके फिरवे निकस्यो और दो चार दिन छिपके मोहनदासकी और गोपीबाईकी चेष्टा देखी राजाकुं इतनो तो निश्चय भयो विनके स्नेहमें विकार नहीं है परंतु लोगनमें बहुत चर्चा होवे हे सो ये चर्चा बंद करी चाहिये तब वा राजानें मोहनदासकुं पकऱ्यो और कही राज्यसें चलो जब मोहनदासकुं राज्यमें लेगये और कही रातकुं कैदमें रहो नहीं तो जामिन देवो तब मोहनदासनें माबापसों कही जामिन पडो तब माबापनें कही हम जामिन नहीं पडेंगे तब कोई जामिन भयो नहीं तब वह निहालचंद जामिन भयो तब वाकुं छोडयो फेर दूसरे दिन राज्यके आदमी वाकुं लेगये तब राजानें हुकुम कऱ्यो याकुं गाम बहार लेजाओ और उहां याकुं मारडारो परंतु मैं आवुंगो हुकुम देउंगो जब

मारो फेर वाकुं गाम बहार लेगये और उहां तमासा देखवेके लीयें बहुत भीड भई तब वा गोपीबाई पुरुषको वेष पहेरके घोडापर बैठके आई जब राजा आयो तब वा गोपीबाईनें तलवार खैंचके राजाके मनुष्यनकुं भगायो मोहनदासकुं घोडापर चढाय लियो तब राजाने पहँचानी तब मनुष्यनकुं हुकुम दियो दूर जावो याकुं कछु मति कहो और प्रधानकुं कही ये तेरी बेटी है याकुं छुडाय लेजाय है मैंनें परीक्षालीनी है यामें कछु विकार नहा है भगवन्नाम लेवे हैं जासुं इनको आपसमें विवाह करे तो ठीक ये बात प्रधाननें कबूल करी घरमें जायके ऐसो ठराव कर्‍यो या मोहनदासकुं विवाह देनी तब वा मोहनदासनें और गोपीनें प्रधानसुं कही जो हमारो बहेनभाईको संबंध है और हम एक दूसरेकुं भाई बहन बोले हैं जासुं हमारो विवाह नहीं होवेगो ये सुनके प्रधान बहुत प्रसन्न भयो और कही जो अब विवाह तुमारो इनसुं नहीं करुंगो और तुम एक दूसरेके घर जावो आवो यामें प्रतिबंध नहीं करुंगो और कोई निंदा करेगो तो मैं जवाब देउंगो वे तीनों जनें ऐसे टेकके वैष्णव हते जिननें शीश देना कबूल कर्‍यो परंतु स्नेह नहीं छोडचो ॥ वैष्णव २२१ ॥

श्रीगुसां० सेवक एक व्रजवासी रावळमें रहते ति०वार्ता ॥

सो वे व्रजवासी गाय चरावतो हतो सो एकदिन श्रीगोकुलमें जायके श्रीगुसांईजीकुं वीनती कीनी जो महाराज मोकुं शरण लेउ तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके नामनिवेदन करवायो तब वह व्रजवासी गाय चरावन गयो सो एकदिन चिंताहरणघाट-सूधी गयो उहां जायके देखे तो अबीर गुलाल चोवा चंदन केशर बूको गोरो मृगमद जखकरदम घन-सार जवाद शाख ऐसे अनेक सुगंधीनकी वर्षा होय रही हती सबमेंसुं थोडो थोडो लेके जूदी जूदी गांठ बांधके श्रीगुसांईजीकुं दिखावे श्रीगोकुल आयो तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके सब देख्यो और वाकुं कही ये कहांसुं लायो जब वानें सब समाचार कहे तब श्रीगुसांईजी पधारे सो वानें जायके जगा देखाई तब श्रीगुसांईजीने निश्चय कियो जो श्रीठा-कुरजी होरी खेलते इहांसु आगें पधारे है तब श्री-गुसांईजी आगें जायके देखें तो श्रीठाकुरजी होरी खेलेहें और अनेक यूथ व्रजभक्तनके हैं तब श्रीगु-सांईजी दूर ठाडे रहे तब श्रीठाकुरजी हाथ पक-डके भीतर लेगये और अपने संग खिलाये व्रज-वासी दूरसुं देखत रह्यो फेर श्रीगुसांईजी खेलके पधारे तब वा व्रजवासीनें पूंछी जो महाराज ये

कोन हते और ये हजारों लुगाई कहांसुं आई हती मोकुं कछु समझ न पडी तब श्रीगुसांईजीनें कृपा करके वा ब्रजवासीकुं दिव्य नेत्र दिये तब श्रीठाकुरजीके दर्शन सब लीला सहित होवे लगे. ऐंसे दोघडी पर्यंत वा ब्रजवासीकुं दर्शन भये फेर वा ब्रजवासीकुं संगलेके श्रीगुसांईजी गोकुल पधारे सो वे ब्रजवासी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं याही देहतें लीलाको अनुभव भयो ॥ वै० २२२ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव जहेरचंद गुजरातमें रहते तिनकी वार्ता ॥

सो जहेरचंद श्रीगोकुल गये और श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये और सातस्वरूपनके मनोरथ किये और श्रीनाथजीके बागावस्त्रनको सामग्रीको मनोरथ कियो और बालक तथा बहू बेटीनको मनोरथ कियो फेर श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी जो मेरे हजार वैष्णवनकुं भोजन करावनकी इच्छा है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी एक मरियादीकुं कराय द्यो तो हजार आय गये तब जहेरचंदनें वीनती कीनी जो हजार मरियादीकुं भोजन कराउंगो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी एक स्नेही जाकुं भगवद् और भगवदीयमें स्नेह होवे ऐंसें एककुं करायदे तो हजार मरियादी होजायंगे तब वानें

कही हजार प्रेमींकुं लेवाऊं तो कैसे तब आपनें कही एक आसक्तिवानकुं करावे तो हजार प्रेमी आय जायंगे तब वानें कही हजार आसक्तिवानकुं लीवाउं तो कैसे तब आपनें आज्ञा करी एक व्यसनवानकुं करावे तो सब आजायंगे तब वानें कही जो हजार व्यसनवानकुं भोजन करावुं तो कैसे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो व्यसनवान हजार कहासुं मिलेंगे व्यसन अवस्थातो गजनधावनकुं सिद्ध भईहै और आसक्ती कुंमनदासजीकुं सिद्ध भईहै और कहांसुं लावेंगो तब वा जहेरचंदने पूछी जो व्यसन अवस्थाको स्वरूप कहा है और आसक्तिवानको स्वरूप कहा? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी स्नेहीके देखे विना ज्वर चढ आवे व्याकुल मन होजाय ग्लानी होवे उद्वेग होवे उन्माद होवे शोच होवे हर्ष होवे रुदन करे ऐंसे अनेक प्रकार क्षणक्षणमें होयाकरें जिनकुं बुद्धिमान् व्यभिचारीभाव कहेहैं सो विप्रयोगमें होवेहैं याको नाम व्यसन अवस्था है और आसक्तिवानकुं गृहके कार्यमात्रमें अरुचि होवेहै अष्टपहर देखवेमें मन रहेहै व्यसन अवस्थासुं ये उतरती अवस्था है जासुं पीछे व्यसन सिद्ध होवेहै श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करीहै भक्तिवर्धिनी ग्रंथमें, सो श्लोक–

"स्नेहाद्रागविनाशः स्यादासक्त्या स्याद्गृहारुचिः ॥
गृहस्थानां बाधकत्वमनात्मत्वं च भासते ॥
यदा स्याद्व्यसनं कृष्णे कृतार्थः स्यात्तदैव हि ॥"

यारीतिसुं श्रीमहाप्रभुजीनें आज्ञा करीहै जासुं ऐंसी अवस्थावालेतो नहीं मिलेंगे परंतु हजारको नेम छोडदे त्यागीनकुं लीवा वो तो तेरो कल्यान होवेगो और श्रीठाकुरजी प्रसन्न होवेंगे ये सुनके जहेरचंदनें वैसेही कियो सो वे जहेरचंद श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव २२३ ॥

श्रीगुसां०से० दामोदरदास-विनकी दोय स्त्री, ति०वार्ता ॥

सो वे दामोदरदास जे कोई वैष्णव घरमें आवते तिनकुं बडे आदरसुं प्रसाद लेवावते और चाहे जैंसो वैष्णव आवतो विनके ऊपर अभाव नहीं लावते ये बात एक ईश्वरदासवैष्णव हतो वानें सुनी तब वे दामोदरदासकी परीक्षा करवेके लिये वा गाममें आये और आयके बावडीपर सोय रहे तब दामोदरदास नित्य बावडीपर आये गये वैष्णवकी खबर काढवेकुं जाते हते सो देखें तो वैष्णव सूतो है वाके गलामें कंठी देखके वाकुं जगाये तब वो ईश्वरदास गारी देन लग्यो तब वाको हाथ पकरके घरमें लाये और न्हवाये और महाप्रसाद लेवेकी वीनती कीनी तब ईश्वरदासनें कही हम महाप्रसाद

नहीं लेवेंगे तब दामोदरदासनें हाथ जोडके कही तुम क्युं नहीं ल्यो ? तब ईश्वरदासनें कही तुमारो घर और द्रव्य और स्त्री सब हमकुं देवें तो लेवेंगे तब दामोदरदासनें कही तुमकुं दियो तोहुं लेवे न बैठो तब ईश्वरदासनें कही तुम घरमेंसुं निकस जावो तब दामोदरदासजी श्रीठाकुरजी पधरायके निकसवेको विचार कियो जब न्हायके श्रीठाकुरजीकी झांपी करन लगे तब श्रीठाकुरजी बोले जो वे वैष्णव प्रसाद नहीं लेवे तो इनकी मर्जी परंतु तूं मोकुं काहेकुं पधरावेंहें ? तब दामोदरदास बोले--हे प्रभु ! हे दीनबंधु!!इतने दिन आप कोईदिन बोले नहीं हो जब वैष्णव कुपित भयोहे तब आप बोलेहो जिनके कोपको फल इतनो भयो तो विनकी प्रसन्नताको फल तो अनिर्वचनीय होवेगो जासुं मैंतो इहांसु जाउंगो और ये प्रसन्न होयके प्रसाद लेवेंगे तब मेरो चित्त प्रसन्न होवेगो. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके बोले जो ये वैष्णव तेरेपर प्रसन्न हे और हमहुं प्रसन्नहें जासुं तुम कछु मांगो तब दामोदरदासनें मांग्यो जो मेरे ऊपर कोईदिन वैष्णव अप्रसन्न न होवें और मोकुं अभाव न आवे ये मांगूहुं. तब श्रीठाकुरजीनें आज्ञा करी जो ऐसीही होयगो. तब दोनों वैष्णवननें मिलके महाप्रसाद लियो तब

ईश्वरदासनें कही मैं तुमारी परीक्षा लेवेके लीयें आयोहुं सो मेरे अपराध क्षमा करो सो वे दामोदरदास ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं कोईदिन वैष्णवके ऊपर अभाव नहीं आवतो विनसों श्रीठाकुरजी बोलते चालते बातें करते विनकी कहा बडाई करें वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २२४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक कबूतर कबूतरी, तिनकी वार्ता ॥

एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते तब महीनदी पूर आई हती उहां श्रीगुसांईजीके डेरा भये जंगल हतो उहां सामग्री भई तब भोजनको समय भयो तब श्रीगुसांईजीनें भोजन न करे तब चाचाहरिवंशजीनें वीनती करी जो भोजन क्युं नहीं करे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी आज कोई जीव शरण नहीं आयो है कमतीसो कमती दो जीव नित्य शरण आये चहीये हमकुं श्रीठाकुरजीकी आज्ञाहै याते भोजन नहीं करेंगे. तब चाचाजी जायके एक वृक्षपेसुं कबूतर कबूतरीकी जोड लायो तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके विनकुं नाम सुनायो तब वे उहां बैठ रहे और श्रीगुसांईजीनें भोजन किये और विनकुं जूठन धरी विन कबूतर कबूतरकी ज्ञान भयो फेर वे कबूतर कबूतरनी उहांसुं उडके

जहां वैष्णव रहते हते वा गाममें एक वृक्षके ऊपर घोसला बांधके दोनों रहे जहां भगवद्वार्ता होवे तहां सुनवे जाय वैष्णवनकी गोदमें बैठतें वैष्णवके पास फिर्‍यो करे और भगवद्वार्ता होयचुके तब उडके ठेकाणे जातें वा गामको एक राजा हतो सो वाकुं कोढ भयो तब उपाय बहुत कर्‍ये कोढ मिटे नहीं सो वा राजाकुं एक समय वरदान दियो हतो जो पशु पक्षी आपसमें बात करेंगे सो तूं समझेगो सो राजा समझतो हतो. तब एक वैद्यने कही जो कबूतरनकी रुधिर लावे तो मै औषध देऊंगो तो मिट जायगो तब राजानें हुकुम कर्‍यो कबूतर पकडले आवो. तब एक मनुष्य भगवन्मंडलीमें कबूतर आवेहें ऐंसे जाणतो हतो सो कंठी तिलक करके वा कबूतर कबूतरीकुं पकड लायो और राजाकुं दिये तब राजानें पींजरामें रखाये और आपनें पास पींजरो रखायो. तब कबूतरी बोली कबूतरसुं हमकुं क्युं पकड राखेहे ? तब कबूतरनें कही जो राजाकुं कोढ भयोहै सो आपणेकुं मारके आपणी लोही लगावेगो तब कोढ मिटेगो ऐंसे वैद्यनें राजासुं कहीहै. तब कबूतरनी बोली जो वैद्य वडो मूर्खहे हमारी वीठ लगावे तो कोढ तुर्त मिट-जाय आर लोही लगावें तो महिना दो महिनामें

मिटेगो सो ये बात राजानें सुनी राजाकुं बोली समझवेको वरदान हतो जासुं झट समझ गयो तब राजानें अपनें हाथनसुं विनकी वीठ लगाई तब तुर्त कोढ मिट गयो तब राजानें वाही घडी विनकुं छोड दियो तब वे कबूतर कबूतरनी जायके भगवद्वार्ता सुने सो वे कबूतर कबूतरनी ऐंसे कृपापात्र हते जिनके लीयें श्रीठाकुरजीनें राजाकुं पेहेली वरदान दिवायो हतो जिनके भाग्यको पार नहीं ॥ वैष्णव २२९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक विट्ठलदासकी वार्ता ॥

सो वे विट्ठलदास आगरेमें रहेते हते और जरीको वेपार करते हते सो जरीके बहुत वस्त्र एकट्ठे कर्ये बालक और बहू बेटीनके लायक सो गांठ बांधके श्रीगोकुलमें लेगये और श्रीगुसांइजीकुं वीनती कीनी ये अंगीकार करें तब श्रीगुसांईजीनें वे सब वस्त्र यमुनाजीमें पधराय दिये तब वे विट्ठलदास बहुत उदास भयो तब श्रीगुसांईजीनें विट्ठलदासके मनकी जानी सो विट्ठलदासकुं आप संग लेके रमणरेती पधारे उहां दिव्य नेत्र दिये तब रासके दर्शन भये रासमें श्रीठाकुरजी और ब्रजभक्त और श्रीस्वामिनीजी वही जरीके वस्त्र पहरे हते सो विट्ठलदास दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और मनमें जान्यो जो मेरो बडो भाग्य है और श्रीगुसां-

ईजीकी कृपा बिना ऐंसे दर्शन कोन करावे दर्शन करके अपनो जन्म सुफल मान्यो फेर श्रीगोकुल आयके श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन करे उहां जरीके वस्त्रनके दर्शन भये फेर श्रीनाथजीके दर्शन करे उहांहु वाही जरीके दर्शन भये तब विठ्ठलदासनें मनमें विचार कियो जो जरी तो थोडी हती सब ठेकाणे वाही जरीके वस्त्रनके दर्शन होवे हें जासुं श्रीगुसांईजी और यमुनाजी और श्रीठाकुरजी तीनों स्वरूप एक हें सो ऐंसो अनुभव विठ्ठलदासजीकुं भयो सो श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते। वै० २२६

श्रीगुसांईजीके सेवक रत्नावती राणी तिनकी वार्ता ॥

सो रत्नावती आमेरमें रहती हती मानसिंघराजाके भाई माधोसिंघकी राणी हती सो वा रत्नावतीके पास खवासनी रहती सो खवासनी श्रीगुसांईजीकी सेवक हती अनन्य वैष्णव हती जब वा खवासनीकुं जंभाई आवती छींक आवती जो कछु विस्मय जैंसो होतो तब वे खवासनी श्रीकृष्णसंबंधी भगवानके नाम लेती कबहुं नंदकिशोर कबहुं नंदकुमार कबहुं वृंदावनचंद कबहुं गोकुलचंद कबहुं यशोदानंद ऐंसे नाम लेके खवासनीके नेत्रमें जल भरी आवतो ऐंसे क्षणक्षणमें होयाकरे तब खवासनीकुं रत्नावतीराणीनें देखी, तब रत्नावती राणी

बोली जो तुम घडीघडी कहा नाम लेउ हो और क्युं तुमारे नेत्र भर आवेहैं और शरीरकी सुधि भूल जाओहो. तब वा खवासनीनें कही ये मार्ग तो ताप क्लेशको है. तुम सुखीलोक यामें काहेकुं पडोहो ? तब वा राणीनें बहुत आग्रह कियो तब वा खवासनीनें कही जो परमभगवदीय जो स्नेहीहै विनकी कृपा होवे तब विरह उत्पन्न होवेहै तब ये शरीर ये दुःख सहिशके विरह दुःख तब सह्यो जाय. तब राणीनें कह्यो जो तुम मोकुं समझावो तो तुम कहो तैंसे करूंगी तब वा खवासनीनें पुष्टिमार्गकी रीति बताई तब वा राणीनें वा खवासनीसुं टहल छुडायके भगवन्नाम सुनायवे करो ऐंसो ठराव कर-दियो तब वो खवासनी आखो दिवस वा राणीकुं पुष्टिमार्गीय भगवत्स्वरूप और गुरुको स्वरूप और वैष्णवको स्वरूप समझायो करे फेर कोईदिन श्रीगु-सांईजी उहां पधारे तब रत्नावती राणी सेवक भई तब रत्नावतीको बेटा प्रेमसिंघ हतो वाकुं सेवक करायो तब इंद्रनीलमणीको श्यामस्वरूप सिद्ध करायके पुष्टिकरायके सेवा करन लगी तब धीरे धीरे भाव बढवे लग्यो अनेक प्रकारकी सामग्री और पकवान भोग धरे और श्रीठाकुरजीकुं लाडलडावे और शृंगार करते भगवत्स्वरूपमें निमग्न होयजाय

अंग अंगमें माधुर्यता भरायगई तब वा खवासनीसुं पूंछो जो प्रगट स्वरूप कैंसे मिले? तब वा खवासनीनें कही जो ये मेहेलके पास एक दूसरो मेहेल बनाओ और वामें वैष्णव आयके उतरे तब वैष्णवनकुं आप प्रसाद लेवावे तब श्रीठाकुरजी प्रगट होयके दर्शन देवें तब भगवत्कृपा संपूर्ण होवे. तब दूसरो मेहेल करायो और गाम बहार चौकी बैठाई और जो वैष्णव ब्रजयात्रा जाय विनकुं लायके मेहेलमें उतारे और महाप्रसाद सब अनसखडीको वैष्णवनके लीयें पठाय देवे और वैष्णव लेवे तब राणी चिक डारके पडदामें बैठके वैष्णवनके दर्शन करती. एकदिन वैष्णवकी मंडलीमें श्रीठाकुरजीके दर्शन वाकुं भये तब खवासनीसुं कहेके राणी पडदा छोडके बहार निकसके मंडलीमें जाय बैठी और हाथ जोडके वैष्णवनकुं भगवत्स्मरण करे और विनती करी जो मेरे मनमें बहुत दिनसुं अभिलाषा लागरहीहै जो तुम प्रसन्न होयके आज्ञा द्यो तो मैं हाथनसुं वैष्णवनकुं प्रसाद धरुं तब वैष्णवननें हां कही तब सोनाको थार लेके सब वैष्णनकुं परोसके और महाप्रसाद लिवायो और चंदन लगायो और बीडी खवाई तब भगवद्वार्ता करन लगी सो बहुत आनंद भयो तब गाममें खबर परी

राणी पडदा छोडके बहार आईहै तब आखो गाम देखवे आयो और गाममें खूब धामधूम मची तब राजा कहुं दूसरे गाम गयो हतो तब राजाके दिवाननें पत्र लिखके मनुष्य पठायो तब वा मनुष्यनें राजाकुं जायके पत्र दियो सो पत्र वांचके राजाकुं क्रोध भयो वाई समय वा राणीको बेटा प्रेमसिंघ काका मानसिंघराजाकुं तिलक माला करके सलाम करवे आये तब राजा बोल्यो आवो मोडीके ये सुनके प्रेमसिंघ ठाडो रह्यो और राजा क्रोध करके उठके भीतर गयो तब प्रेमसिंघनें लोगनसुं पूंछो जो काकानें मोंकु कहा कही है तब सब लोगननें वाकी माके सब समाचार कहे तब अपनें डेरामें आयके विचार कियो सभामें काकानें मोडीको कह्यो जासुं ये बातको स्वांग पूरो करनो चहीये तब माजीकुं पत्र लिख्यो जो सभाके बीच मोकुं काकानें मोडीको कह्यो है जासुं अब तुम ये स्वांग पूरोकर दिखावो अब मैं मोडीको रहुं तो ठीक प्राण तो एकवार जायंगे सो पत्र मनुष्यनें प्रेमसिंघकी माता रत्नावती राणीकुं जायके दियो जो पडदासुं बाहर निकस हती वाहीकुं दियो तब राणी पत्र बांचके बहुत प्रसन्न भई और श्रीठाकुरजीकी और वैष्णवनकी आज्ञा लेके माथो मुंडाय डार्‍यो घणी

जीवतो हतो तो पण भगवद्धर्मनकुं मुख्य मानके संसारमें असक्ति छोडवेके लीयें माथो मुंडाय डाऱ्यो तब श्रीठाकुरजी वैष्णव उतरते हते वाही मेहेलमें पधराय लाई और कीर्तन करे नाचे और गावे आनंद करन लगी और श्रीठाकुरजीकुं लाडलडावन लगी फेर पुत्रकुं पत्र लिख्यो तब मनुष्यननें जायके वाको पुत्र प्रेमसिंघ हतो वाकुं पत्र दियो तब प्रेमसिंघको ऐंसो नेम हतो जहांसूधी मोडीको न होउं तहांसूधी अन्न नहीं खाउंगो फलाहार करुंगो जब वाकुं पत्र पहोंच्यो तब माथेपर चढाय लियो और नोबत वैठाई और बधाई बांटवे लग्यो बडी खुशी करी तब राजा मानसिंघजीकुं खबर भई तब मानसिंघजीकुं लोगननें कही जो तुमनें सभामें कही हती सो स्वांग प्रेमसिंघजीनें कर दिखायो है मोडीको बन गयो है ये सुनके राजा मानसिंघ बहुत उदास भयो और ऐंसो विचार कियो जो भाईकी बहूको मराय डारनो परंतु लोगनमें निंदा न होवे और पृथ्वीपतीकुं ऐंसी खबर न परे जो मानसिंघ राजानें स्त्री मराई है ऐंसो नाम बदनाम न होवे ऐंसी रीतीसुं मराई डारनी ये विचार करके राजानें तैयारी करी ये खबर प्रेमसिंघजीकुं भई तब प्रेमसिंघ बोल्यो जो राजालोग धरतीके

लिये माथो कटावे है तो भक्तीपर माथो कटावे यामें कहा चिंता है तब राजा घर गयो और गामके बडे बडे आदमी मिलवेकुं आये तब राजानें विनसुं कही जैसे अपनी निंदा न होवें और कारज सिद्ध होवें वैसो उपाय करो जैसें बने तैंसे वा रत्नावतीकुं मराय डारो परंतु अपनो नाम न होवे. तब एक मनुष्यनें ऐंसो विचार बतायो जो ऐसी बंदोबस्ती करो पींजरामें सिंघ है सो छोड देवो सब मनुष्यनकुं बहार काढ देवें और कमाड लगाय देवें भीतर जायके रत्नावतीकुं सिंघ मार डारेगो और फेर सिंघ पकड लेवेंगे तब बात दब जायगी ऐंसो विचार सबको आछो लग्यो वैसे सिंघ छोड दियो रत्नावतीके पास सिंघ गयो तब वो खवासनी बैठी हती और राणी श्रीठाकुरजीकुं शृंगार करती हती तब वा खवासनीनें सिंघकुं देखके जयजय करके ठाडी भई श्रीनृसिंहजी पधारे हैं मेरे भाग्यहै ऐंसे कहेनलगी और जायके सिंघपर हाथ फेरन लगी और तिलक कर्‍यो और फूलनकी माला पहराई और हाथ जोडके ठाडी रही तब वाकी भावनाकी सचाई देखके श्रीठाकुरजी वा सिंघमें प्रवेश करके वा खवासनीकुं चाटन लगे जैसे नृसिंहजीनें प्रल्हादजीकुं चाट्यो हतो सो श्रीमहाप्रभुजीनें पुरुषो-

तम सहस्त्रनाममें लिख्योहै॥ सो नाम–"भक्ताङ्गले-
हनो धौतक्रोधपुंजः प्रशान्तधीः" फेर सिंघ पीछे
फिरके महलनसुं बहार कूद पड्यो और बाहिर्मुख
लोग ठाढे हते बाजाकी फौज सैंकडनकुं मारडारे
गाममें हाहाकार पडगयो और बहोत त्रास पड-
गयो बडो हाहाकार भयो तब राजा मानसिंघ
बहोत डरप्यो और तुर्त दौडके भाईकी बहूके
पावन पऱ्यो और साष्टांग दंडवत करके पडरह्यो
कछु उठवेको भान रह्यो नहीं. तब रत्नावती बोली
उठो उठो श्रीठाकुरजीके दर्शन करो अब श्रीठा-
कुरजीनें सिंघरूप मिटायके दूसरे रूपसुं दर्शन
देवेहैं अब तो उठो. तब राजानें उठके दर्शन किये
फेर राणीसुं कही जो तुम हमारी रक्षा करो हम
तुमारी शरण आये हैं, ये सब राज्य और धन
तुमारोहै तुमनें संसारको लोभ छोडके माथो मुंडा-
योहै जैंसे तुमारी इच्छा होवे तैंसे तुम वरतो. तब
मानसिंघ राजा घरगयो और खजानचीकुं हुकुम
कियो महिनेके महिने दशहजार रुपैया वा राणीकुं
पहोंचायद्यो और अधिक रुपैया जितनें मांगे
इतनें मोकुं पूंछके देने एकदिनकी ढील करनी
नहीं तब वो खजानची महिनेके महिने दश हजार
रुपैया पहोंचावतो सो सब रुपैया सामग्रीमें खर्च

डारती सो वे रत्नावतीराणी श्रीगुसांईजीकी टेककी कृपापात्र हती और मानसिंघराजा वा रत्नावतीके श्रीठाकुरजीके दर्शन करे विना जल नहीं लेती वे राणी और खवासनी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपा पात्र हती ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २२७ ॥

श्रीगुसां० सेवक दक्षिणके राजा तिनकी वार्ता ॥

सो वा राजाके एकसों आठ राणी हती परंतु कोई राणीकुं संतान न भई जासुं वा राजाको मन बहुत उदास रहतो हतो तब वा दुःखसुं राजा यात्रा करवे गयो और श्रीजगन्नाथरायजीके दर्शनकुं गयो उहां श्रीगुसांईजीके दर्शन भये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये. तब वो राजा श्रीगुसांईजीको सेवक भयो तब श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी जा महाराज मेरे संतान नहीं है जासुं मेरो चित्त लौकिकमें बहुत लग्यो है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम भगवत्सेवा करो तब वह राजा श्रीठाकुरजी पधरायके भगवत्सेवा करन लग्यो अपनें देशमें आयो फेर राजानें एक और राणी करी सो तेलीकी बेटी हती सो वा राणीनें राजासुं कही जो मोकुं भगवत्सेवा करन द्यो तब राजानें कही तुम श्रीगोकुल जायके श्रीगुसांईजीके सेवक होय आवो मनुष्यनकुं संग लेके श्रीगोकुल गई और जायके

श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और श्रीनवनीतप्रिया-
जीके दर्शन किये और श्रीनाथजीके दर्शनकिये
फेर अपनें देशमें आई और राजासुं सब समाचार
कहे तब वह राणी सेवामें न्हायवे लगी सो अनेक
प्रकारकी सामग्री करे और अनेक प्रकारके वागा
वस्त्र करे और श्रीठाकुरजीकुं प्रसन्न करे ऐसो भाव
देखके राजा वा राणीके ऊपर बहुत प्रसन्न भयो
और नित्य वा राणीके पास राजा आवे भगवद्वार्ता
कहे सेवाकी रीति समझावे और समझे, तब वा
राजाके एक बेटा भयो सो बहुत गुणवान भयो तब
राजानें श्रीगोकुलमें वीनती पत्र लिखके श्रीगुसां-
ईजीकुं पधरायके वीनती करी जो महाराज या
बेटाकुं सेवक करो. तब श्रीगुसांईजीनें वाकुं नाम
निवेदन करायो तब वा राजानें श्रीगुसांईजीसुं वीनती
कीनी जो निवेदनतो तादृशी भगवदीयके संग मिल-
क विचाऱ्यो चहियें सो कोइ इहां मिले नहीं हैं जब
मैं कोनको सत्संग करूं तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा
करी जो इहां अद्भुतदास आवेंगें विनको सत्संग
करो तब वे राजा अद्भुतदासको सत्संग करनलगे
तब श्रीठाकुरजीने वा राजाकुं अनुभव जतायो
राजाकी बुद्धि निष्काम भई सो वह राजा श्रीगु-
सांईजीको ऐसो कृपापात्र भयो ॥ वैष्णव २२८ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक खुशालदास, तिनकी वार्ता ॥

वैष्णव खुशालदासनें बहुत द्रव्य कमायो और सब द्रव्य श्रीगुसांईजीके पास लेगयो वाई समय श्रीगुसांईजीकुं खबर कराई. वाई समय श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीको शृंगार करत हते तब सुनके चुप कर रहे और आप सेवासुं पहोंचके राजभोग पीछे बहार पधारे तब वा खुशालदासनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और तीनलाख रुपैयाको द्रव्य सामग्री सामान लायो हतो सो सब श्रीगुसांईजीके आगे धर्‍यो तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये द्रव्य कामको नहीं है तुम पीछे ले जावो इच्छा आवे सो करो. तब वा खुशालदासनें पूछो जो मेरो कहा अपराध है?तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तेरो अपराध नहीं है ये द्रव्य ऐसोही है हम शृंगार करत हते वाई समय या द्रव्यकी खबर भई तब दो चित्त हमारे होयगये या द्रव्यनें आवतमात्रही सेवामेंसुं चित्त काढ डार्‍यो सो द्रव्य भंडारमें रहेगो तो कहा नहीं करेगो यासुं ये द्रव्य हमारे नहीं चहिये. तब वा खुशालदासनें मनमें ऐसो विचार कियो ये द्रव्य मेरे उपयोग आवेगो तो मेरी बुद्धीको भ्रष्ट करेगो तब खुशालदासनें वह द्रव्य उठायके सब लुटाय दियो सो वा खुशालदासकुं श्रीगुसांईजीके वचनपर ऐसी दृढता

हती और संपूर्ण विश्वास हतो एक पैसाहुं राख्यो नहीं सो वे खुशालदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते । वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २२९ ॥

श्रीगुसां०से०गोकुलदास हतो जानें गुप्तभेट करी ति०वार्ता ॥

सो गोकुलदासके पास द्रव्य बहुत हतो एकलाख रुपैयाकी हुंडी लिखायके श्रीगोकुल गयो और वैष्णव संग बहुत हते सो सबनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सब वैष्णवननें भेट करी और गोकुलदासनें कछु भेट नहीं करी और सब लोग निंदा-करन लगे गोकुलदास पैसावालो होयके कछु भेट नहीं करी खाली दंडवत करी तब गोकुलदासनें छाने छाने गादीके नीचे कागद धर दियो सो धरत खवासनें देख्यो सब वैष्णव गये तब खवासनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी जो एक वैष्णव छानो-छानो कागद धरगयोहै तब श्रीगुसांईजीनें वे कागद भंडारमें पठायदियो सो बहुत दिन सूधी वे संग श्रीगोकुल और श्रीजीद्वारमें रह्यो सो कोईदिन ये बात गोकुलदासनें प्रगट करी नहीं आपकी निंदा करायो कर्यो सो वे गोकुलदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते । वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २३० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक नरसिंहदास तिनकी वार्ता ॥

सो वह नरसिंहदास रस्तामें जातो हतो और

रस्तामें भील मिल्यो सो वा भीलको ऐंसो नियम हतो मनुष्यनकुं मारडारके गांठडी लेतो तब वा नरसिंहदासकुं भील मारवेकुं दौडचो तब नरसिंहदासको स्वरूप सिंह जैसो दीखवे लग्यो तब वो भील डरप्यो तब नरसिंहदास बोले क्युं डरपे है आव मेरे पास. तब वो भील बोल्यो तुम मनुष्य हो के सिंहहो ? मोकुं खबर नहीं पडे है. तब वानें कही तेरे जैसेनकुं शिक्षा करनेके लिये मैं सिंघहुं अब तोकुं नहीं छोडुंगो. ऐंसे कहके वा भीलकुं थप्पड मारके हथीयार खोस लिये. तब भील बोल्यो मेरे हथीयार देउ अब तुमकुं नहीं मारुंगो तब वो नरसिंहदासनें कही जो तेरे घरमें पूछ जो मैंने जितनी हत्त्या करी हैं सो पाप कोनके ऊपर है. तब वो भील घरमें पूछवे गयो तब घरके मनुष्यननें कही हमारे माथे हत्त्या नहीं है हमनें ऐंसी कही नहीं. जो मनुष्य मारके खवाव तब वा भीलनें आयके नरसिंहदाससुं कही. जो मेरे घरके आदमी तो हत्त्यामेंसुं पाती नहीं राखे है. तब नरसिंहदासनें कही तूं क्युं पापमें पडे है ? चल मेरे संग, तेरो कल्याण श्रीप्रभुजी करेंगे. तब वो भील वा नरसिंहदासके संग चल्यो सो जायके श्रीगुसांईजीको सेवक भयो और कृपापात्र भयो सो

वे श्रीगुसांईजीके सेवक नरसिंहदास ऐंसे कृपापात्र हते जिनके संगसुं भील वैष्णव भयो ॥ वै० २३१ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक रूपमंजरी तिनकी वार्ता ॥

सो वे रूपमंजरी पृथ्वीपतीकी दासी हती हिंदुराजकी बेटी हती पृथ्वीपतीकुं परणी हती पादशाहको स्पर्श नहीं करती हती वो कहेती हती जो मेरो स्पर्श करोगे तो मेरे प्राण छोड देऊंगी, विनको रूप बहुत सुंदर हतो सो पृथ्वीपति वाको रूप देखके राजी रहेतो हतो सो वे बाई रातकुं आकाशमें उडके नित्य नंददासके पास आवती हती वाके पास एक गुटिका हतो सो वा गुटिकामें इतनी सामर्थ हती जे कोई मनुष्य मोढामें राखे सो जहां कहे उहां पहोंचायदेवे सो वा रूपमंजरीके पास गुटिका हतो सो नित्य गुटिकाके बलतें उडके नंददासजीके पास आवती हती ऐंसे करते बहुत वर्ष बीते एक दिन पृथ्वीपतीके आगें कोई मनुष्यनें पद गायो सो पद--“देखो देखो नागरनट निरतत कालिंदीके तट” या पदकी छेली तुकमें “आवेहै नंददास गावे तह निपटनिकट” सो ये पद पृथ्वीपतीनें सुन्यो और कही जो ऐंसे हते परमेश्वरके पास बैठके गाते तब वाई समय कोइनें कही जो जिननें यह पद बनायो है वे तो अबहीं हाजर हैं गोपालपुरमें रहेहैं

श्रीगुसांईजीके सेवक हैं तब पृथ्वीपतीनें विचार कियो जो आपणें ब्रजमें जानो और नंददासजीकुं मिलनो. तब पृथ्वीपति सहकुटुंब ब्रजमें आये गोवर्धनमें डेरा किये और नंददासजीके पास बीरबलकुं पठाये और कही जो नंददासजीकुं पूंछ आवो अब हम तुमकुं मिलवे आवें के तुम हमकुं मिलवे आवोगे ? तब नंददासजीनें कही हम परसूंके दिन मानसीगंगा स्नान करवेकुं आवेंगे सो उहां पादशाहकुं मिलेंगे. तब नंददासजी दूसरे दिन बिलछुकुंडपें न्हायवे गये उहां रूपमंजरीको डेरा हतो और रूपमंजरीनें राजभोग धऱ्यो हतो और श्रीगोवर्धननाथजी साक्षात् अरोगते हते तब नंददासजीनें देख्यो तब वृक्षकी ओटके पास ठाडे रहे तब श्रीनाथजीनें रूपमंजरीसुं कही जो नंददासजी वृक्षकी ओटमें ठाडे है विनकुं बुलावो तब नंददासजीकुं बुलाये तब नंददासजीनें गोवर्धननाथजीके दर्शन किये तब श्रीगोवर्धननाथजीनें आज्ञा दीनी जो तुम ये महाप्रसाद लेउ तब नंददासजीनें महाप्रसाद लियो और रूपमंजरी बिदा होयके नंददासजी गोपालपुर गये फेर दूसरे दिन मानसीगंगा न्हायवेकुं गये उहां पृथ्वीपतीकुं मिले तब नंददासजीकुं एकांतमें लेजायके पूंछी जो तुमनें ये पद गायो सो कैसे?ये बात

सुनके नंददासजीनें विचार कियो जो अन्यमार्गी-यसुं कैसे बात करी जाय? सो नंददासजीनें ऊंचो देखके देह छोड दीनी पादशाहतो विस्मय होय-गयो बहुत उदास भयो सो पृथ्वीपतीकी रीत हती जब उदास होय तब रूपमंजरीको मुख देखवेकुं आवे सो भीतर जायके रूपमंजरीके सन्मुख ठाडो रह्यो और रूपमंजरीसुं बात करी जो परम भग-वदीय नंददासजीसुं मैंनें ऐसे पूंछ्यो तब नंददास-जीनें कछु कही नहीं और विनकी देह छूट गई यातें मेरो चित्त बहुत उदास है ऐसे पृथ्वीपतीकी वाणी रूपमंजरीनें सुनी तब रूपमंजरीकुं विप्रयोग उत्पन्न भयो ऐसे विरहतें रूपमंजरीनें देह छोड दीनी सो देखके पृथ्वीपती बहुत उदास होय गयो सो वे रूपमंजरी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती जिनसों विप्रयोग घडीएक सह्यो न गयो॥ वै० २३२

श्रीगुसां० सेवक कल्याणभट्ट तिनकी वार्ता ॥

एक समय श्रीगुसांईजी द्वारकातें खंभालियामें पधारे तब कल्याणभट्टजी श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीगुसांईजीके पास ग्रंथ पढे और ग्रंथ सब हृदयारूढ भये और संसारमेंसुं आसक्ति निक-स गई तब कल्याणभट्टजीके चित्तमें ऐसी आई जो श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करूं तो ठीक सो

कल्याणभट्ट श्रीगुसांईजीके संग गये और श्रीगोकुलमें श्रीनवनीतप्रियाजीके दर्शन किये फेर श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन किये तब विचार कियो जन्म पर्यंत इहां रहनो तब आन्योरमें रहेवेको घर कियो सो वे कल्याणभट्टजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

सो एक समय श्रीगोवर्धननाथजीके दूध घरीयानें दोय कसेडी दूध कमती लियो जब रातकुं श्रीगोवर्धननाथजी उठ और सोनाको कटोरा लेके आन्योरमें गये सो दश पंदर वर्षको छोराको रूप धरके गये सो कल्याणभट्टजीकी बेटी देवका हती सो घरमें दूध बहुत होतो हतो सो बेच देती हती तब श्रीगोवर्धननाथजीनें पूंछी तेरेपास दूध है तब वा देवकानें कही है साढेचार पैसा शेरके लेऊंगी तब श्रीनाथजीनें साढेचार पैसा कबूल करे और कटोरामें वे देवकासों दूध लियो आर शेरभरके कटोरामें डाऱ्यो तब श्रीनाथजी दूध पीवे लगे तब फीको लग्यो तब श्रीनाथजीनें पूंछी तेरे घर खांड हे वानें हां कही. तब वासुं चार आनाकी खांड लीनी और चारशेर दूध लियो और खांड डारके पान कियो तब वा देवकानें पैसा मांगे तब श्रीनाथजीनें कही मेरो कटोरो घरमें धरराख कालह कटोरा

लेजाऊंगो और पैसा देजाऊंगो. तब श्रीगोवर्धननाथजी पोढे फेर सवारे श्रीगुसांईजी शृंगार करत हते जब देखे तो कटोरा नहीं है तब सब भीतरीया ढूंढवे लगे तब श्रीगोवर्धननाथजीनें श्रीगुसांईजीसुं कही जो दूधघरीयानें दूध ओछो राख्यो हतो तब मैं देवकाके पास दूध और खांड बेचाती लेके पी आयोहुं और कटोरा गहने राख आयो हुं तब ये बात श्रीगुसांईजीनें कल्याणभट्टसुं कही तब कल्याणभट्ट सुनके बहुत प्रसन्न भये तब घर जायके देवकासुं पूंछी जो काल्ह तेरे पास कोई कटोरा धरके दूध लेगयो है ? तब देवकानें कही एक छोरा लेगयो है, और कटोरा धर गयो है. तब कल्याणभट्टजीनें कही ये तो श्रीनाथजी हते, तब कटोरा देखे तो सोनाको है तब कल्याणभट्टजी लेके श्रीगुसांईजीकुं दियो तब श्रीगुसांईजी देवकाकी सराहना करन लगे और कही जो याके भाग्यकी कहा बडाई करनी और दूध घरीयाकुं बुलायके उराहनो दियो और आज्ञा करी जो कोई दिन दूध कमती राखेगो तो तेरी सेवा छुडाय देउंगो और जब श्रीनाथजीकी इच्छा होवे तब देवकाके पास दूध दही लेके अरोगते सो कल्याणभट्टजी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥प्र०२॥

एकदिन कल्याणभट्टजीनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो आपके निकटवर्ती सेवक सेवा करेहै कोई जल लावेहै कोई जल धरे है कोई बुहारी करेहै कोई तेल लगावेहै कोई भंडार करेहै कोई रसोई करेहै सब ऐसे कहेहैं हमारो इतनो अंगीकार करेंगे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी ये सबकी भूल है हमारो सब अंगीकार कियो है हमारो कछु नहीं है ऐसे समझो चहिये सो नहीं समझे है और अंगीकार करेंगे ऐसो समझेहै इनकुं विश्वास संपूर्ण नहींहै विश्वास होवे तो काहेकुं ऐसे कहे वस्तु साक्षात् प्रभूनें अंगीकार करी है यामें संदेह काहेकुं चहिये ये सुनके कल्याणभट्टजी बहुत प्रसन्न भये॥ प्र० ३॥

और एक समय कल्याणभट्टनें श्रीगुसांईजीसों वीनती कीनी जो महाराजाधिराज श्रीप्रभुजीके श्रीपुराणपुरुषोत्तमके उत्तम भगवदीय कृपापात्र होय सो तिनके लक्षण कैसे हैं? सो आप कृपाकरके कहिये. तब श्रीगुसांईजीनें कल्याणभट्टसों कही जो उत्तम भगवदीय तिनके लक्षण तो यह है जो सबके ऊपर सदा कृपा राखे जो कोई भगवदीय वैष्णवके ऊपर क्रोध नहीं करनो और तिनको अपराध सहनो दुर्वचन बोले तो अपनो कहालेवे ऐसे समझके विनको अपराध नहीं माननो परंतु तिनके

वचन सुनके मन डुलावे नहीं जो करे सो क्षमाही करे तिनको दोऊ हाथ जोडिके मधुरे वचनसुं बोले क्षमा राखे जो भगवदीय वैष्णवसों साचो बोले और श्रीप्रभुजीमें चित्तदेके निर्मल बुद्धि राखे और सदा सर्वदा उपकारही करे और श्रीप्रभुजीके ऊपर तथा भगवदीय वैष्णवनके ऊपरतें मन बिगाडे नहीं और इंद्रिय जीत रहे और अपने मनको विचार कोईके जानवेमें नहीं आवे श्रीप्रभुनकी सामग्री करे वामें चित्त चलायमान न करे आप महाप्रसाद लेवे और अपने अर्थ उद्यम नहीं करनो और महाप्रसाद न्यून लेनो और बहुत महाप्रसाद लेवे तो निद्रा आवे भगवद्भजन न होवे तातें न्यून महाप्रसाद लेनो और रोगादिक होय तब श्रीठाकुरजीकी सेवामें अंतराय होय और मनकुं जीतके वश करे तब श्रीप्रभुजीके भजनमें स्थिर होय रहे है मन वश होय सदासर्वदा प्रभुके कार्यमें रहे और इंद्रियनको जीते विषयमें लगावे नहीं और कहे जो हम तो श्रीप्रभुजीके दास हैं शरण हैं सो ऐसे समझतो रहे और जहां बहिर्मुख लोग चर्चा करे तो मौन गहि रहे और श्रीप्रभुजीकी सेवामें सदा सावधान रहे और असावधान नहीं होनो जो श्रीप्रभुनकी

भगवदीय वैष्णवबिना रहस्य वार्ता प्रगट नहीं करनी और धीरज कबहुं नहीं छोडनो भूखतें प्यासतें निद्रातें शीततें उद्यमतें क्रोधतें लोभतें इतनें दोषरूप हैं सो इनतें डरपते रहें इनके वश नहीं होय इनको जीतके रहनो और अभिमान नहीं करे और सब भगवदीय वैष्णवनको आदर करत रहें जो श्रीप्रभुजीको स्वरूप है और श्रीप्रभुजीकी लीलाहैं सो भगवदीय वैष्णवके हृदयमें रहे भगवत्स्वरूप है ऐंसो वैष्णवको रूप है अनेक नामरूपतें श्रीप्रभुजी लीला करत हैं ऐंसे विचार करत रहनो जो मैं पहले कोन हतो और श्रीमहाप्रभुजीकी कृपातें कहा मोकों मिल्योहै अपने स्वरूपको विचार करत रहे जिनके ऐंसे लक्षण होय तिनको उत्तम भगवदीय जानना. ऐंसे श्रीगुसांईजीके वचन सुनके कल्याणभट्ट बहुत प्रसन्न भये तब कहे जो वैष्णवको स्वरूप तो ऐंसोही है सो वे कल्याणभट्ट श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताको पार नहीं तातें इनकी कहा कहिये ॥ वैष्णव २३३ ॥

श्रीगुसां० से० एक कायस्थ सूरतमें रहते तिनकी वार्ता ॥

सो वह कायस्थको नाम मोतीराम हतो और सूरतके सूबाके पास नौकर हतो और राजनगरमें कोई कामके लीये आयो हतो उहां श्रीगुसांईजीको

सेवक भयो हतो फेर कोईदिन सूरतके सुबाके संग आगरे गयो हतो सो पृथ्वीपतीकुं मिल्यो फेर वा सूबाने आवती वखत गोवर्धनमें मुकाम कऱ्यो तब वह मोतीराम गोपालपुरमें श्रीनाथजीके दर्शनकुं गयो वाई समय श्रीनाथजीके राजभोग होयचुके हते तब वा कायस्थनें श्रीगुसांईजीके दर्शन किये और मनमें विचार कियो जो सूबाको तो जलदी कूच है और श्रीनाथजीके दर्शन नहीं होवेंगे. तब भंडारीकुं मिल्यो और मिलके कही जो मैं साठ-हजार रुपैया सेवा करुंगो जो दोयघडी उत्थापन वेग होवे तो. ये बात भंडारीने श्रीगुसांईजीसों विनती करी तब श्रीगुसांईजीनें दोघडी अवार उत्थापन कराये सो मोतीराम दर्शन विना सूबाके संग कूंच करगयो तब जायके कुबेरमें डेरा किये फेर दूसरे दिन वा मोतीरामको मोढो उतर गयो सो वा सूबाने देख्यो तब वा सूबानें पूंछी जो मोतीराम उदास क्युंहे ? जब मोतीरामनें सब समाचार कहे. तब सूबाने कही जो तूं दर्शनके लीये साठहजार रुपैया खर्चतो हतो सो मैं तेरेंपर प्रसन्न हूं सो तुम जायके श्रीनाथजीके दर्शन कर आवो. तब वे मोती-रामनें सवारे राजभोगके दर्शन आयके कऱ्ये श्रीनाथजीके दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये

और महाप्रसाद लियो अत्यंत भाग्य माने और लाखरुपैयाको हीरा लेके श्रीनाथजीकुं चिबुक आभरण करायो सो वे मोतीराम वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनकी आरति श्रीनाथजी सहि न सके और धनसुं कारज सिद्ध नहीं होवे ये बात दिखाई, केवल भगवत्कृपासुं सब कारज सिद्ध होवेहै ये बात दिखाई सो मोतीराम श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २३४ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक जीवा पारेख तथा सहजपाल डोशी तथा दलाल माधवदास तिनकी वार्ता ॥

सो वे तीनों जने आपसमें मित्र हते और चाचा हरिवंशजीके पास नाम पाये हते और जब श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे तब वे तीनों जने जायके खंभातमें पधराय लाये और कुटुंबसहित श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे फेर एकदिन माधवदास दलालनें और सहजपाल डोशीनें वीनती करी जो महाराज! हम वेपारमें झूठ बोले हैं जो दोष लगेहें के नहीं ? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी "नानृतात्पातकं परं" इति॥झूठ समान पाप नहीं.तब माधवदासनें बीनती करी जो मैं दलाली करूंहुं आज पीछे झूठ नहीं बोलुंगो मेरे गाहकनकुं आछी रीतीसुं माल देवा-

ऊंगो तब सहजपाल डोशीनें कही मैं एक आना नफा खाऊं अधिक नहीं खाऊंगो ऐंसी इच्छा होवे तो ल्यो सो वे तीनोंजने सत्यवादी हते और कोई दिन झूठ नहीं बोलते तब विनको सत्यपणो देखके श्रीठाकुरजी बहुत प्रसन्न भये और भगवद्गुण गान करते विनके गदगद कंठ होय जाते और कीर्तनके अनेक प्रकारके अर्थ करते एकादिन माधवदास दलालनें जीवापारेखसुं पूंछी जो अन्याश्रय कहा होवे हैं ? तब जीवापारेखनें कही जो श्रीकृष्ण विना अंशावतारके भजनपर्यंत अन्याश्रय होवे है और सर्वत्र व्यापक मानके जो दूसरे देवकी पूजा करे तोहुं बाधकहै कारण जो अनेक देवरूपी भगवान भये हें एक एक देवकी पूजा विधि प्रमाणें करे तोहुं पार नहीं आवे. तेतीस कोटी देवता हैं सो इतने तो आवरदा मनुष्यकी नहीं है जो सब देवतानकी पूजा करिसके जासुं सर्व देवके मूल जो पुरुषोत्तम विनकी सेवा करे तें सब देवकी सेवा होजाय और कोई वाकुं प्रतिबंध नहीं करसके. जैसे-- एक वृक्षके अनेक पत्रहैं आर फूलहैं और डारहैं विनकुं पोषण मूलसींचनतें होतहै ऐंसे सब देवको पूजन श्रीपूर्णपुरुषोत्तमकी सेवातें होवे है ये सुनके माधवदास दलाल बहुत प्रसन्न भये. फेर एकादिन

चाचाहरिवंशजी खंभात आये तब वे सहजपाल डोशीनें पूंछी--जो श्रीठाकुरजीनें सात दिनपर्यंत गिरिराजजीकुं क्युं धारण कियो ? वाको कारण कहो तब चाचाहरिवंशजी बोले--जो नंदरायजीकुं सात प्रकारको अन्याश्रय हतो सो गिरिराज पूजनतें सात प्रकारको अन्याश्रय मिट्यो; सो एक तो मनुष्यमात्रपर देव ऋण होवे है और दूसरो ऋषिऋण होवेहैं और तीसरो पितृऋण होवे है और चौथो देहके बलको अभिमान होवेहै और पांचमो सगानके बलको अभिमान होवेहै और छठो या लोगमें जो ये काम नहीं करूंगो तो मेरी निंदा होवेगी ये अहंकार होवेहै और सातमो ये तीनों ऋण मेरे ऊपर रहेंगे तो मेरो परलोक बिगडेगो ऐसी रीतीसुं जीवमें सात प्रकारके अन्याश्रय रहेहें, ये छुडायवेके लीयें और मनमें निःसाधन होयके भगवदाश्रय दृढ करनो ये बात नंदरायजीकुं जतावेके लीयें श्रीठाकुरजीनें सात दिवससूधी श्रीगिरिराज धर्‍योहै. ये बात पुष्टिप्रवाह मर्यादा ग्रंथकी टीकामें लिखी है ये सुनके सहजपाल डोशी बहुत प्रसन्न भये और फेर जो चाचाहरिवंशजीके संग दर्शन करवेकुं गये वे तीनों जने श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २३५ ॥

श्रीगुसांईजीके से० चांपाभाई अधिकारी तिनकी वार्ता ॥

सो वे चांपाभाई गुजरातमें सेवक भये हते तब श्रीगुसांईजीनें चांपाभाईकुं आपके पास राखे फेर नित्य कथा श्रवण करावते. जब चांपाभाईकुं श्रीगुसांईजी विषे संपूर्ण भाव उत्पन्न भयो और चांपाभाईकी ऐंसी वृत्ति भई जो श्रीगुसांईजीके ऊपर दोषबुद्धि न आवे तब श्रीगुसांईजीनें चांपाभाईकी ऐंसी दशा देखके अधिकार सोंप्यो तब चांपाभाई अधिकार करन लगे फेर श्रीगुसांईजीनें विचार कियो जो हमारे घरको जो अधिकार करे तो वाकी बुद्धि फिरेविना रहे नहीं, परंतु चांपाभाईकी बुद्धी जो फिरेगी तो याकी बुद्धीकुं आपण फेर ठेकाने लावेंगे ये विचारके आपने अधिकार सोंप्यो. सो एकसमय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे रस्तामें बीरबल मिले तब बीरबलनें चांपाभाईसुं पूंछी जो श्रीगुसांईजी शीतकालमें क्युं परदेश पधारेहें? तब चांपाभाईनें कही जो करज बहुत है. तब बीरबलनें कही जितनो द्रव्य चहिये इतनो तैयार है. श्रीगुसांईजीकुं पाछे श्रीगोकुल पधराय लेजावो तब चांपाभाईनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी तब श्रीगुसांईजीनें ऐंसो विचाऱ्यो जो चांपाभाईकी बुद्धि फिरगई है हम द्रव्यकेलीयें परदेश पधारें हें ऐंसो समझ्यो

है और हमारे पधारवेको कारण तो दैवी जीवके उद्धार करवेको है तब श्रीगुसांईजीनें अर्धरात्रीकुं कूच कर्‍यो बीरबलकुं खबर न करी. फेर दूसरे दिन चांपाभंडारीकुं आपनें आज्ञा करी जो तुमारी बुद्धि फिरगई है अब तुम चरणोदक लेउ और श्रीसर्वोत्तमजीको पाठ करो तब चांपाभंडारीनें वीनती करी जो मन तो आपकी सेवाके लीयें बीरबलकुं बात कीनी हती तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो इतनें प्रकारके द्रव्य श्रीठाकुरजी अंगीकार नहीं करें है एक तो राज्यको द्रव्य एक वेश्याको द्रव्य एक कृपणको द्रव्य और एक हिंसाको द्रव्य एक ठगाईको द्रव्य एक चोरीको द्रव्य एक विश्वासघातको द्रव्य एक कन्याविक्रयको द्रव्य इतनें प्रकारको द्रव्य श्रीठाकुरजी अंगिकार नहीं करेंहै. जासुं तुम कोईकुं द्रव्य संबंधी सेवाकी बात करोमती, जिनको अंगीकार प्रभु कर्‍यो चाहेंगे विनको स्वतःसिद्ध होवेगो महात्यागी होवे और भगवत्पदवीकुं प्राप्त भयो होवे तोहुं दुष्ट अन्न खाय तें वाकी बुद्धि फिरे ये बात श्रीमहाप्रभुजीनें भक्तिवार्धनीग्रंथमें आज्ञा करी है। सो श्लोक--

"लभते सुदृढां भक्तिं सर्वतोप्यधिकां पराम् ॥
त्यागे बाधकभूयस्त्वं दुःसंसर्गात्तथान्नतः ॥"

सो अन्न जो कह्यो है सो अन्न तो कछु दुष्ट होवेही नहीं परंतु वह अन्न जैसे द्रव्यसुं खरीद भयो होवे वैसे अन्नमें दुष्ट पदवी आय जायगी जासुं दुष्ट अन्नको और दुःसंगको बहुत बचाव राखनो. ये बात सुनके चांपाभाई बहुत प्रसन्न भये और ऐसो नेम राख्यो जो कोईको द्रव्यसंबंधी सेवाकी बात करणी नहीं सो वे चांपाभाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २३६ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक तानसेन तिनकी वार्ता ॥

सो तानसेन बडी जातवाले हते और गानविद्याको अभ्यास बहुत सुंदर हतो सो दिल्लीमें पृथ्वीपतीके पास रहते हते और सब गवय्यानमें तानसेनजी मुख्य हते और पृथ्वीपर जे कोई राजा और बडे आदमी हते बिनके पास तानसेनजी गावे जाते हते सो लाखन रुपैया इनाम लावते पृथ्वीपतीके कलावत जानके सब डरपते एकदिन तानसेन श्रीगुसांईजीके पास गायवेकुं आये सो गाये तब तानसेनकुं श्रीगुसांईजीनें दशहजार रुपैया इनामके दिये और एक कौडीदीनी. तब तानसेननें पूंछ्यो जो दशहजार रुपैया तो ठीक परंतु कौडी कैंसी है तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो तुम पादशाहके कलावत हो जाके दशहजार रुपैया है और

तुमारे गावेकी कीमत हमारे गवैयनके आगें कौडी है तब तानसेननें कही जो ये बात मैं कैंसे मानुं? तब श्रीगुसांईजीनें गोविंदस्वामीकुं आपके पास बुलाये और आज्ञा करी एक पद गावो. तब गोविंदस्वामीनें एक सारंग रागमें गायो सो पद--"श्रीवल्लभनंदनरूप अनूपस्वरूप कह्यो नहिं जाई॥" सो ये पद सुनके तानसेन चकित होयगये और गोविंदस्वामीको गान सुनके विचार कर्‍यो जो मेरो गान इनके आगें ऐंसेहै जैंसे मखमलके आगें टाटहै ऐंसे है सो ये कौडीकी इनाम खरी. तब गोविंदस्वामीसुं तानसेनने कही जो बावासाहेब! मोकुं गान सिखावो तब गोविंदस्वामीनें कही हमतो अन्यमार्गीयसुं भाषणहुं नहीं करें तब तानसेन श्रीगुसांईजीके सेवक भये और पचीसहजार रुपैया भेट करे और गोविंदस्वामीके पास गायनविद्या सीखे और श्रीनाथजीके पास कीर्तन गायवे लगे जब तानसेन महीनामें एकवार पादशाहके पास जाते और बहुधा करके महावनमें रहते फेर राजा आसकरणकुं मिले सो बात आसकरणजीकी वार्तामें लिखीहै फेर एकदिन तानसेनजी श्रीनाथजीके पास कीर्तन करत हते तब श्रीनाथजी सुनके मुसकाये तब वा दिनतें तानसेननें पादशाहके इहांसुं जायवो आयवो छोड

दियो और श्रीगुसांईजीके पास रहे आये जिनसुं श्रीनाथजी बोलते हंसते. श्रीगुसांईजीकी कानतें तानसेनकुं श्रीनाथजी सब अनुभव करावते सो वे तानसेनजी ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव २३७ ॥

श्रीगुसांई०से०एक ब्राह्मण और वाकी स्त्री ति०वार्ता ॥

सो वे ब्राह्मण पूर्वमें रहतो हतो सो श्रीगुसांईजी पूर्वदेशमें पधारे तब वे सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके दोनों जने सेवा करन लगे तब वे दोनोंको भगवत्सेवामें मन बहुत लग्यो दिवसकुं भगवत्सेवा करते और रात्रिकुं भगवद्वार्ता करते सो सेवाके प्रतापतें विन दोनोंनकुं विषयनकी वृत्ति भूलगई दिवसरात्र भगवत्स्वरूपको विचार कऱ्यो करते, ऐंसे करते बहुत दिन बीते. फेर ऐंसो विचार कियो जो अब मैं श्रीनाथजीके दर्शन जाऊं तो ठीक, सो उहांतें चले सो थोडे दिननमें श्रीजीद्वार आय पहोंचे. सो श्रीनाथजीको संध्या आरतीको समय हतो तब भीड बहुत हती और वे स्त्री दुर्बल बहुत हती सो भीडमें वाकुं दर्शन न भये तब वाकुं बहुत विरह भयो और नेत्रनमेंसुं जल आवे लग्यो वाकी य दशा देखके श्रीनाथजी वाकुं हाथ पकडके निजमंदिरमें लेगये तब देहसहित लीलामें प्रवेश भई तब वो ब्राह्मण अपनी स्त्रीकुं ढूंढवे लग्यो

बहुत ढूंढी पण कहुं मिली नहीं. तब वा ब्राह्मणनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती कीनी जो मेरी स्त्री दीखत नहींहे मैं बहुत ढूंढी है. तब श्रीगुसांईजीनें सुनके आज्ञा कीनी जो तेरी स्त्री भगवल्लीलामें गईहै. तब वानें वीनती कीनी जो भगवल्लीलामें तो लोग देह छोडके जायहैं ऐंसे ग्रंथनमें लिखेहै. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी प्रेममें कछु नेम नहींहे श्रीठाकुरजी प्रेमके वशहैं और प्रेम कछु निर्बल वस्तु नहींहे जहां लाज कान अभिमान सब छूट जायहै. ये बात सुनके वा ब्राह्मणनें वीनती कीनी जो मैं एकवार वाकुं देखूं तब अन्न जल लेउं तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मणकुं संग लेके परासोली पधारे उहां रासको चोतरा हतो सो उहां श्रीगोवर्द्धननाथजी रास करत हते सो वा ब्राह्मणकुं श्रीगुसांईजीनें कृपा करके दिव्यदृष्टि दीनी तब रासके दर्शन भये और रासमें वाकी स्त्री दिखाई तब वह देखके मनमें बहुत प्रसन्न भयो और विचार कियो याके भाग्य ऐंसे उदय भये और मेरे न भये ऐंसे करके मनमें बहुत पश्चात्ताप करन लग्यो फेर देखे तो कछु नहीं हतो फेर श्रीगुसांईजीके पास आयके दंडवत करी और महाप्रसाद लियो. तब वा ब्राह्मणकुं अत्यंत विरह भयो और मुखमें तें ज्वाला निकसी तब

वा ब्राह्मणकी देह छूट गई सो तत्काल भगवल्ली-लामें प्राप्त भयो सो वे ब्राह्मण स्त्रीपुरुष श्रीगुसांईं-जीके ऐसे कृपापात्र हते जिनकुं भगवल्लीलामें जातें विलंब न लगी ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २३८ ॥

श्रीगुसांईजीके से० ध्यानदास तथा जगन्नाथदास ति० वार्ता ॥

सो वे ध्यानदास श्रीगुसांईजीके पास रहते हते और जगन्नाथदास श्रीगुसांईजीके पास आयके रहे सो वे जगन्नाथदासक हाथमें पद्मको चिह्न हतो सो जा वस्तुमेंसु एक काढते और एक बढजाती और दोय काढते सों दोय बढजाती परंतु घटती नहीं हती जगन्नाथदास भोरे बहुत हते विनकुं या बातकी खबर नहीं पडती. एकदीन श्रीगुसांईजीकी भेटके पैसा जगन्नाथदासके पास हते तब बहुत भिखारी मांगवेकुं आये तब जगन्नाथदास काढ काढके सबकुं एक पैसा दो पैसा देत गये तब ध्यानदासनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करी जो जगन्ना-थदास सबकुं देवेहै सो कहासुं काढे है ? तब ध्यान दासकुं श्रीगुसांईजीनें उत्तर दियो, जो जे कोई सत्कर्म करवेकुं मन करेहै ताकी सहायता प्रभु आप करे हें और विनके लिये सब पहलेसुं बनाय राखेहैं विनकुं कछु कार्य करवे नहीं परेहै विनके कारज श्रीठाकुरजी स्वतःसिद्ध पहिलेसुं बनाय राखे

हैं जासुं तुमकुं कोईको अभाव नहीं लायो चहिये वैष्णवतो निर्दोष है और निर्दोष वस्तूमें जो दोषारोपण करेहैं सो आप दूषित होवेहैं जासुं तुम तो वैष्णव हो और दोषरहित हो काहेकुं कोईके ऊपर दोषारोपण करोहो ये सुनके ध्यानदास बहुत प्रसन्न भये और ऐंसो नेम लियो आज पीछें भगवद्ध्यान छोडके कोइके दोष नहीं देखूंगो जन्मपर्यंत विननें कोईके दोष देखे नहीं भगवद्ध्यानहीं करत रहे सो वे ध्यानदास तथा जगन्नाथदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनकुं तुर्त निर्दोष ज्ञान होयगयो सो वे ऐसे वैष्णव हते ॥ वैष्णव २३९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास तिनकी वार्ता ॥

सो वे गोपालदासकु नामनिवेदन भयो तब गोपालदासनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी जो महाराज अब मेरेकूं कहा करणो? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम गोपीनाथको सत्संग करो तब गोपालदास गोपीनाथके पास जायके रहे और विश्वास ऐंसो राख्यो जो गोपीनाथ विना विचार्‍यो कछु काम करे नहीं है और गोपीनाथ कैसे हते साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम श्रीनाथजी जिनके पाछें फिर्‍योही करते सो कोईदिन गोपीनाथ कछु कार्यार्थ ब्रजमेसुं दिल्ली गये तब गोपालदासहुं संग गये रस्तामें जंगलमें

रातपडी जहां कोई मनुष्य नहीं हतो सो एक वृक्षके नीचे डेरा कर्‍यो सो गोपालदासतो थाके हते सो सोयगये और गोपीनाथ तो श्रीसर्वोत्तमजीको जप करवेको बैठगये जब रात सवापहर गई तब एक सर्प आयो सो गोपालदासके गलामें काटवे लग्यो तब गोपीनाथनें लकडीसों उठायके सर्पकुं दूर कर्‍यो फेर सर्प आयो फेर गोपीनाथनें फेंक्यो ऐंसे करके १०० सौ वार फेंक्यो और १०० वार आयो तब वो सर्प बोल्यो जो तु मोकुं कहां सूधी फेंकेगो याको और मेरो ऋणानुबंध ऐंसोही लिख्यो है एक जन्ममें ये मेरे गलाको लोहू पीवेहै और एक जन्ममें याके गलाको लोहू मैं पीवुंहुं सो यामें तुम क्यु आडे आवोहो गोपीनाथ बोल्यो अब तो गोपालदासको छेलो जन्म है मैं याकुं काटवे नहीं देऊंगो तब सर्प बोल्यो याको लोहू पिये बिना नहीं रहुंगो तब गोपीनाथनें कही तूं बैठ याके गलेको लोहू तोकुं प्याय देऊंगो तब सर्प बैठ रह्यो तब गोपीनाथनें छुरी और कटोरी काढी नीचे कटोरी धरके और वाके गलामेंतें लोहू काढवे बैठयो तब गोपालदासकी नींद खुली तब बोले कौन है तब गोपीनाथ बोले मैंहूं तब गोपालदासकुं सर्पकी खबर नहीं हती तो हु मनमें ऐंसी आई जो गोपीनाथ करते होयंगे सो ठीकही करते होयंगे ऐंसे

समझके चुप कररहे ऐंसी मनमें न आइ जो जंगलमें लायके मोकुं मारेहें और कछु जानतेही न हते और कछु पूछीहुं नहीं तब गोपीनाथनें वा सर्पकुं लोहू प्यायके बिदा कऱ्यो और गोपालदासकुं मलमपट्टी लगायके फिर गोपीनाथ सोयगये सवारे उठके दोनों चले फिर गोपीनाथनें सब बात गोपालदाससुं कही तब दोनोंजने श्रीगोकुल आये तब गोपीनाथनें श्रीगुसांईजीसों विनती करी जो गोपालदासको मैंनें गला काटचो तोहुं कछु नाहिं बोले तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो गोपालदासनें विश्वास राख्यो तो याको सब कार्य भयो और मृत्युसों बचे और वैष्णवके संगतें जन्म जन्मके संकटसों छूटे ऐंसो विश्वास चहिये सो वे गोपालदास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते जिनके विश्वासकी सराहना श्रीगुसांईजी घडि घडि करते॥ वै०२४०॥

श्रीगुसांईजीके सेवक पृथ्वीसिंघजी बीकानेरके राजा कल्याणसिंहजीके बेटा तिनकी वार्ता ॥

सो वे पृथ्वीसिंघजी कविता बहुत करते और कवित्त सवैया छंद दोहा चौपाई ऐंसे अनेक प्रकारकी कविता रचि हती और रुक्मिणीवेल और स्यामलता इत्यादिक भाषाके बहुत ग्रंथ जिननें बनाये और दिवसरात्र श्रीठाकुरजीकी सेवा करते

जिनको चित्त श्रीठाकुरजीके चरणारबिंद छोडके और ठिकानें लागतो नहीं हतो और विनको संसारके विषयमें चित्त लागतो नहीं हतो और वे ऐंसे हते जब आपनी राणीकुं देखते तब पहँचानते न हते जो ये कौन है ऐंसो चित्त विनको श्रीठाकुरजीमें हतो और पृथ्वीसिंघजी परदेश गये तब मानसी सेवा करते. एकदिन बीकानेर ऊपर शत्रु चढ आये तब तीन दिन सूधी लडाई भई और दूसरे शत्रु दूसरी आडी आये तब श्रीठाकुरजीनें तीन दिन सूधी लडाई करी और राजको काम चलायो और मंदिरमें दर्शन कोईको दिये नहीं और मंदिरके कमाड भीतरसुं बंद होय गये कोईसों खुले नहीं. चौथे दिन कमाड खुले जब पृथ्वीसिंघजी परदेशमें मानसी सेवा करते जब उहां खबर पडी जो तीन दिन सूधी श्रीठाकुरजीनें दर्शन नहीं दिये सो पृथ्वीसिंघजीके मनमें ऐंसे दर्शन भये तब ये बात बीकानेरमे लिख पठाई सो साची निकसी सो पृथ्वीसिंघजी ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

फेर पृथ्वीसिंघजीनें ऐंसो नेम लियो जो ब्रजमें वास करनो, ब्रजमें देह छोडनी या बातकी खबर पृथ्वीसिंघजीके शत्रुनकुं पडी सो विननें दिल्लीपतीकुं सिखायो याकुं कहुं दूर पठावें तो ठीक. तब दिल्ली-

पतीनें पृथ्वीसिंघजीकुं काबलकी मुहिमपर पठाये सो उहां बहुत मुलक जीते. तब उहां पृथ्वीसिंघजीको काल आयो तब पृथ्वीसिंघजीनें कालतें कही मैं ब्रजमें देह छोडूंगो, तब काल हट गयो. तब पृथ्वीसिंघजी सांडनीपें बैठकर उहांसों चले सो दो दिनमें मथुरा आये और बीचमें नदी और पर्वत बहुत हते परंतु कोई ठिकाने पृथ्वीसिंघकुं प्रतिबंध न भयो और काबुल ६०० कोस मथुराजीसो है सो दोय दिनमें आय गये ब्रजमें आयके श्रीनाथजीके दर्शन करके यमुना पान करके देह छोड दीनी. सो वे पृथ्वीसिंघजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते. जिनकुं कालनें प्रतिबंध न कऱ्यो॥ वै. २४१।

श्रीगुसांईजीके सेवक दुर्गावती राणी तिनकी वार्ता ॥

एक समय श्रीगुसांईजी दक्षिण पधारे हते दक्षिणतें तैलंग ब्राह्मणज्ञातिके या देशमें रहवेके लिये लाये सो रस्तामें घडागाममें नर्मदा किनारे मुकाम कियो और उहां एक आदमी आंच लेवे गयो सो दक्षिणी हतो सब ठिकाने इस्तु इस्तु पूछे सो वा देशमें कोई इस्तु समझतो नहीं हतो सो बहुत ठिकाने फिरके पाछें आयो तब श्रीगुसांईजीसों कही जो इहां आंच नहीं मिले तब श्रीठाकुरजीकुं बहुत अवार होयगई हती जासुं श्रीगुसांईजीनें

खीजके कही या गाममें सब आंच बुझ जाउ, तब श्रीठाकुरजीनें श्रीगुसांईजीकी वाणी सत्य करवेके लिये वा गाममें सब ठिकाने आंच बुझाय दीनी. तब गाममें बहुत पुकार भई तब गामके लोगननें दुर्गावती राणीको राज हतो सो वाकुं खबर दिनी तब आखा गाम रसोई विना भूखन मरेहैं गाममें हाहाकार होय रह्यो है दक्षिणके ब्राह्मण आयेहैं विनने सब ठिकाने आंच बुझाय दीनी है. ये सुनके दुर्गावती राणी श्रीगुसांईजीके डेरापर गई और जायके श्रीगुसांईजीसो वीनती करी ओर महीना पहले एक सूरज ग्रहण गयो हतो तब दुर्गावती राणीनें एकसो आठ गामको संकल्प कर्‍यो हतो सो वे गाम श्रीगुसांईजीकी भेट करे तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी हमतो कोईको दान नहीं लेवे हैं तब दुर्गावती राणीनें कही अब मैं दान कर्‍या पीछें कैसे लेऊं आपकी इच्छा आवे सो करो. तब श्रीगुसांईजीनें दुर्गावतीके हाथनसुं विन तैलंग ब्राह्मणनकुं गाम बटवाय दिये सो अब सूधि वे गाम खावेहै फेर श्रीगुसांईजीकी ऐसी सामर्थ्य देखके दुर्गावती राणी श्रीगुसांईजीकी सेवक भई और श्रीगुसांईजीसो वीनती करी जो सदैव आप मोकों दर्शन देवो तब तलावके पास पर्वत ऊपर श्रीगुसां-

ईजीके डेरा हते सो उहां बैठक कराई और उहां श्रीगुसांईजीने सप्ताहपारायण करी और उहां दुर्गावती राणीकुं नित्य दर्शन होते फेर श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे और दुर्गावतीराणी उहां नित्य श्रीगुसांईजीके दर्शन करती साक्षात् श्रीमद्भागवतको पाठ करते ऐसे दर्शन होते सो वे दुर्गावती राणी श्रीगुसांईजीकी ऐसे कृपापात्र हती।वै०२४२॥

श्रीगुसांईजीके सेवक भगवानदास तिनकी वार्ता ॥

सो वे भगवानदासजी सारस्वत रामरायजी श्रीमहाप्रभुजीके सेवक हते सो विनके यजमान हते विनके सत्संगतें भगवानदासजीकी बुद्धि निर्मल भई हती एक दिन भगवानदासजी वृंदावनमेंसु चले सो रामरायके संग गोपालपुरमें जन्माष्टमीके दर्शन करने गये श्रीगुसांईजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये. तब भगवानदासजीनें रामरायजीसुं कहा मोकुं श्रीगुसांईजीके सेवक करावो. तब रामरायजीनें कही तुम गोविंददेवजीके सेवक भये हो. तब भगवानदासजीनें कही इनमें और गोविंददेवजीमें कछु भेद नहींहै गोविंददेवजीकी कृपातें तुम मिलेहो और तुमारी कृपातें श्रीगुसांईजीके दर्शन भयेहैं जासुं मोकुं अबीके अबी वीनती करके सेवक करावो

तब रामरायजीनें श्रीगुसांईजीसुं वीनती करके भगवानदासजीकुं नामनिवेदन करायो, तब भगवानदासजी श्रीगोवर्धननाथजीके दर्शन करे सो भगवानदासके हृदयमें भगवल्लीलाकी स्फूर्ती भई सो जन्माष्टमीके दिन सांझको समय हतो वाईदिन भूखे हते जासूं सांझकुं नाम निवेदन भयो फेर वाईसमय श्रीनाथजीके सन्निधान एक नयो पद करके गायो ॥ सो पद–

"श्रवण सुनु सजनीवाजे मंदिलरा आज निसलागतपरमसुहाई
अति आवेश होत तन मनमें श्रीगोकुल बजत बधाई ॥१॥
दे दे कान सुनत अरु फूलत रावलके नरनारी ॥
नंदरानी ढोटा जायो है होत कुलाहल भारी ॥ २ ॥
अति ऊंचें चढि टेर सुनावत पसरि उठे जे ग्वाल ॥
गैयां बगदावोरे भैयां भयो नंदके लाल ॥ ३ ॥
आनंद भरि अकुलाय चली सब सहज सुंदरी गोपी॥
प्रादुर्भाव जसोदा सुतको तामें तनमन ओपी ॥ ४ ॥
चंचल साज शृंगार चंदमुखि चंचल कुंडल हारा ॥
हाथन कंचन थार बिराजत पदनूपुर झनकारा ॥ ५ ॥
वरखतचकुसुमन शोभित गलिदरस चोंप जियभाई ॥
गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मंदिर आई ॥६॥
धन्यदिवस धन्यरात्र आजकी धन्यधन्य यह सबगोरी ॥
स्यामसुंदर चंदेलिरखत मानो अलियां त्रिषितचकोरी॥७॥
शोभायुत आई कीरति अपने गृह मानि बधाये ॥
जाचक जन धनघन जों वरखत आन गोप तहां आये॥८॥

आय जुरे सब गोप ओपसों भयो जो मनको भयो ॥
पंचामृत सीसनतें ढारत नाचत नंद नचायो ॥ ९ ॥
नाचत ग्वालबाल रसभीने हरद दहीं भर राजे ॥
इत निसान उत भेरि दुंदुभी हरखि परस्पर बाजे ॥१०॥
खग मृग द्रुम दिश दिश भवननमें देखियतहें सरसानें ॥
प्राननके आयें इंद्री जो यों व्रजजन हुलसानें ॥ ११ ॥
ध्वजा वंदनमालालंकृत नंदभवनमें सोहें ॥
व्योम विमानन भीर भई लख अमरनको मन मोहें॥१२॥
महाराज व्रजराजनंदपै जो मांग्यो सो पायो ॥
जाके ऐंसो पूत भयो ताको न्याय जगत जस छायो॥१३॥
जिनको सुखस्मरत ब्रह्मादिक यों हुलसे व्रजगेही ॥
कहि भगवान हित रामरायप्रभु प्रकटे प्राणसनेही ॥ १४ ॥

ये पद भगवानदासजीनें गायो, वामें छाप धरी 'कहि भगवान हित रामराय प्रभु प्रकटे प्राणसनेही' ये पद सुनके श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये और रामरायजीहु प्रसन्न भये और भगवानदासजीनें रामरायजीकी कृपा मुख्य मानी जिननें हजारन पद बनाये परंतु सबमें रामरायजीको नाम बतावते गये वे भगवानदासजी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

फेर भगवानदासजी वृंदावनमें रहते हते सो गोपालपुरतें वृंदावन गये तब गोविंददेवजीके अधिकारीनें सुनी जो भगवानदास श्रीगुसांईजीके सेवक

भये हैं तब गोविंददेवजीके दर्शनकुं न आने दिये दर्शन बंद किये. तब गोविंददेवजीके शयनभोगमें दूधभात धर्यो तब गोविंददेवजीने आज्ञा करी जो भगवानदास श्रीगुसांईजीके सेवक होयके आये हैं वे दूधभात धरेंगे तब अरोगूंगो. ये सुनके हरिदास अधिकारी भगवानदासके घर आयके पावन पडके बुलाय लेगयो, तब श्रीगोविंददेवजीने दूधभात मांग लियो वे भगवानदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

और वृंदावनमें कोई वैष्णव और व्रजवासि आवतो विनकुं भगवानदासजी बहुत आदर करके महाप्रसाद लिवावते और द्रव्य देते जैसे बनें तैंसे वैष्णवनकुं प्रसन्न करते. फिर एकदिन भगवानदासजीनें सुनी जो श्रीगुसांईजी इहां पधारेंहें. तब स्त्रीसों पूंछि जो श्रीगुसांईजी पधारे हें आपने कहा भेंट करेंगे? तब स्त्रीनें कही जो एक धोती तुम पहरो और एक धोती मैं पहरूंगी और सब भेंट करेंगे अपने दोनों घरसुं बहार चले जाएंगे ये बात सुनके भगवानदासजी बहुत प्रसन्न भये और स्त्रीकी सराहना करन लगे यामें मोसों अधिक धर्म है ये धन्य है ये कहेंगी जैंसे करूंगो ऐसे कहके व्रजवासीके संग यमुनापार श्रीगुसांईजीके डेरा हते तहां गये.

दंडवत करके वृंदावनमें पधरायवेकी वीनती करी तब श्रीगुसांईजीकुं खबर पडी जो ये सर्वस्व भेंट करेंगे तब श्रीगुसांईजी वृंदावन न पधारे पीछें श्रीगोकुल पधारे फेर भगवानदासजी उदास होयके पाछें वृंदावन गये फेर भगवानदासजीके घरमें चोरी भई तब द्रव्य गयो सो भगवानदासजीकुं द्रव्य गयो वाकी उदासी तो न भई और श्रीगुसांईजी न पधारे वाकी उदासी रहिआई फेर भगवानदासजी आगरे जायके रहे ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

फेर आगरामें भगवानदास रहते नये नये पद बनावते कबहुं महिना पंदरहदिन श्रीगोकुल आयके रहते कबहुं गोपालपुरमें जायके रहते और कबहुं अपनें घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते ऐसे करके भगवानदासजीने हजारन पद बनाये और सब पदनमें कहते"कही भगवानहित रामरायप्रभु"या रीतिके कीर्तन विननें बहुत बनाये और सूजाकी दिवानगिरी करते हते और श्रीगुसांईजीके चरणारविंदमें जिनको चित्त दिवस रात रहेतो सो भगवानदासको अंतसमय आयो तब अचेत होयगये तब विनके मनुष्यननें पालकीमें बैठायके विनकुं व्रजमें लेचले जब आधे रस्तामें गये तब विनकुं चेत आयो तब विननें कही हमकुं पाछें लेजावो ये शरीर व्रजके

लायक नहीं है कारण जो व्रजमें वृक्षवृक्षमें वेणुधारी है और पत्रपत्रमें चतुर्भुज हैं ऐंसे ठिकाने ये देह जरेगी तो श्रीठाकुरजीकुं त्रास आवेगी तब उहां पाछें लेगये सो आगरामें भगवानदासजीकी देह छूटी तब वाहीक्षणमें भगवल्लीलामें प्रवेश भये सो वे भगवानदासजी श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वै० २४३

श्रीगुसांईजीके सेवक एक चूहडो हतो तिनकी वार्ता ॥

सो गोवर्धनमें रहतो हतो सो विलछूकुंडपर नित्य घास खोदवे जातो हतो और विलछूकुंडके सामें श्रीनाथजीका मंदिर हतो श्रीनाथजी नित्य विलछूकुंड देखते. पीछे एकदिन अधिकारीजीनें भीत कराई तब श्रीनाथजीकुं विलछू देखवेमें आडी भीत आई तब श्रीनाथजीकुं विलछू देखवे विना सुहाय नहीं तब श्रीनाथजीनें वा चूहडाको स्वप्नमें आज्ञा करी श्रीगोकुलमें जायके श्रीवल्लभजीसों कहो जो ये भीत पडाय डारे तो मैं विलछूकुंडकी सैलकरूं तब वा चूहडानें कही वे कैंसे मानेंगे श्रीनाथजीनें कही जो तुमारो नाम श्रीगोकुलनाथजीहै ऐंसे श्रीनाथजीनें कह्यो है तब वानें सवारे विचार कर्‍यो जो जाऊं के नहीं जाऊं?तब तीन दिनसूधी नित्य वाकुं स्वप्नमें आज्ञा करी.वे तीसरे दिन गयो तब जायके पौरीयासों कही श्रीवल्लभजीसों वीनती करो जो

चूहडो वीनती करवे आयोहै-तब वा पौरीयानें कही हम ऐंसी वीनती नहीं करें. तब वा बहारवालानें कही जरूर कामहै तब पौरिया वाकुं हेला करवे लग्यो. लोग इकट्ठे होयके दूरदूर करवे लगे. तब ये बातकी श्रीवल्लभजीकुं खबर पडी तब आपनें वाकुं बुलायो और सब बात पूंछी. तब वानें कही एकांतमें कहुंगो तब श्रीवल्लभजीनें एकांत करी तब वानें कही स्वप्नमें श्रीनाथजीनें मोसों ऐसे कहीहै तब श्रीवल्लभजीनें तीनवार पूंछी श्रीनाथजीनें मेरो कहा नाम लियो. तब वानें तीनवार श्रीगोकुलनाथजी ऐंसो नाम बतायो तब आपके नामकी पहँचान मिली तब आपनें उठके वा भंगीकुं गलेसुं लगायो और मोटो उत्सव मान्यो और फेर गोपालपुर आयके वे भीत पडाय डारी श्रीनाथजीकुं सामे बिलछु कुंड दीखवे लग्यो सो वह चूहडो श्रीगुसाईंजीको ऐंसो कृपापात्र हतो. जाके कहेतें श्रीवल्लभजीको नाम श्रीगोकुलनाथजी प्रसिद्ध भयो॥ वै. २४४

श्रीगुसांईजीके सेवक मधुकरसाहराजा तिनकी वार्ता ॥

सो वह मधुकरसाह ओडछानगरको राजा हतो सो श्रीगुसांईजी कोई एक समय ओडछा पधारें हते सो वह राजा सेवक भयो और श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लगे और जे कोई वैष्णव आवतो वाको बहुत

सत्कार करते और जो कोई कंठी बंधवावतो वाके चरणस्पर्श करते और पाव धोवते ये बात देखके वाके भाईबंधु मस्करी करते. फेर एकदिन वा राजाके काकानें एक गधा मंगायके वाकुं दस बीस कंठी पहरायके और तिलक करके वा राजाके पास पठायो तब वा राजानें वा गर्दभके चरणस्पर्श करे और पगधोयके चरणामृत लियो वा राजाको शुद्ध-भाव देखके वाईसमय श्रीठाकुरजी प्रगट होयके और राजाकुं दर्शन दिये और आज्ञा करी जो कछु मांगो. तब मधुकरसाहनें मांग्यो जो मेरो भाव वैष्णवनमें ऐंसोही रहे जिनकी कृपातें आपनें मोकुं दर्शन दियेहें. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयके कही ऐंसोही तेरो भाव रहेगो. सो वे मधुकरसाह श्रीगु-सांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव २४५ ॥

श्रीगुसां०से० तुलसीदासजी सारस्वत ब्राह्मण ति०वार्ता ॥

सो वे तुलसीदासके पिता श्रीगुसांईजीके जल-घरिया हते और तुलसीदास छोटे हते तब श्रीगि-रिधरजी आदि छे बालक हते तिनके संग खेलवे जाते और श्रीगुसांईजी जब लालजीनकुं बुलावते तब छः लालजी उठके दौडके श्रीगुसांईजीके पास जाते तब तुलसीदासहुं संग जाते. तब श्रीगुसांईजी विनकुं बालक जानके लालजी कहते और विनके

माता पिता छोटी अवस्थामें भगवच्छरण भये हते तब वे तुलसीदासको पालनपोषण श्रीगुसांईजी करते और तुलसीदास अपनें मनमें यूं जानते जो मैं इनको बालकहुं जब तुलसीदास बडे भये और श्रीगुसांईजीके बालकहुं बडे भये, तब श्रीगुसांई-जीनें सब बालकनके माथे सेवा पधराय दीनी तब तुलसीदासजीके मनमें ऐसी आई जो मोकुं श्रीगु-सांईजीनें कछु सेवा दीनी नहीं. तब श्रीठाकुरजीनें श्रीगुसांईजीसुं आज्ञा करी जो वे तुलसीदासकुं सेवा पधराय देवें इन द्वारा कितनेक जीवनको उद्धार होवेगो ये बालकपनामें अपनें मनमें मैं श्रीगुसां-ईजीको लालजीहुं ऐसे जानते हते. तब श्रीगुसां-ईजी विनकुं बुलायके और श्रीगोपिनाथजी ठाकु-रजी पधराय दिये और आज्ञा करी जो तुम सिंधदेशमें जायके जीवनकुं भक्तिमार्गको उपदेश करो और सबकुं अष्टाक्षरमंत्र सुनावो तब वे लालजी नाम धरायके और श्रीठाकुरजी पधरायके उहांसु चले. फेर रस्तामें आयके विननें रसोई करी और भोग धऱ्यो फेर श्रीठाकुरजीसुं वीनती करी जो तुम ये रूखीरोटी अरोगो और जो नहीं आरोगोगे तो मैं श्रीगुसांईजीसुं कहि देउंगो. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये और अरोगे और वासुं कही--जो तूं

कोई दिन हमारी कोई बात श्रीगुसांईंजीसुं माति कहियो हम श्रीगुसांईंजीसुं बहुत डरपें हें. तब वे श्रीठाकुरजी पधरायके सिंधदेशमें आये और ऐंसे भोले हते जो मनमें यूं जाणते जो श्रीगुसांईंजीसुं श्रीठाकुरजी बहुत डरपें हें जासुं जन्म सूधी श्रीठाकुरजीकुं श्रीगुसांईंजीको डर बतायो करते और श्रीठाकुरजी इनसुं सदैव ऐंसे वर्तते जो मैं श्रीगुसांईंजीसुं बहुत डरपुंहुं सो वे तुलसीदास श्रीगुसांईंजीके ऐंसे कृपापात्र हते और श्रीठाकुरजीहु विनकुं लालजी कहते और विनके मनमें लालजीपनेकी बुद्धि सदैव रहेती, जासुं विनकुं कितनेक लालमति कहते और श्रीगिरिराजजी और श्रीयमुनाजी और श्रीगोकुल और ब्रजभूमी विनमें विनकी दृढ बुद्धि हती दुर्लभ मनुष्यदेहको लाभ विननें भगवत्सेवा करके लियो. अबसूधी सिंधुदेशमें विनके वंशकेहें सो लालजीवाले कहे जायहें सो वे श्रीगुसांईंजीके ऐंसें कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २४६ ॥

श्रीगुसांईंजीके सेवक एक सौदागर तिनकी वार्ता ॥

वह सौदागर आगरामें रहते हते और गोपालपुरमें श्रीनाथजीके दर्शन करवेकुं आये तब श्रीनाथजीके दर्शन करके श्रीगुसांईंजीके दर्शन किये सो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमके दर्शन भये तब वह सौ-

दागर कुटुंबसहित श्रीगुसांईजीके सेवक भये तब श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे. ऐसें सेवा करते एकदिन जन्माष्टमीको उत्सव आयो तब वा सौदागरके परोसमें एक बनिया रहते हतो सो वा बनियाको बेटा परदेशमें जहाज लेके वेपार करवे गयो हतो सो जहाज बूड गयो ऐसी खबर वा बनियाकुं आई हती तब वे रोवन लग्यो. तब वा सौदागरनें वा बनियाकुं कही जो आज जन्माष्टमीको दिन है रोवो मति. तब वानें कही जो बेटा जैंसी वस्तु गई, कैंसे न रोउं?तब वा सौदागरनें कही तेरो बेटो नहीं मरेगो. तब बनियानें कही जो तीन दिनसूधी नहीं रोऊंगो तुम वैष्णव साचे होवोगे तो मेरो बेटा आवेगो.तब श्रीठाकुरजीनें वा सौदागरकी बात सत्य करवेके लीयें जहाज बुडती वखत एक पाटियापर जीवतो राख्यो हतो सो दो दिनमें पाटिया किनारे लग्यो तब वानें देशमें कागद लिख्यो तब जन्माष्टमीके दूसरे दिन वाको कागद आयो. तब वो बनिया जायके सौदागरके पावन पर्‍यो और कही जो तुमारी बात सत्य भईहै तब वा बनियाकुं सौदागरनें कही ये सब श्रीगुसांईजीको प्रताप है. तब वो बनिया बेटाकुं संग लेके और वा सौदागरकुं संग लेके गोपालपुरमें आयो तब वो बनिया

सौदागरके संगसुं सेवक भयो और फेर वा सौदागरनें श्रीगुसांईजीसुं पूंछी जो श्रीनाथजीके चरणाबिंद खेलके दिननमें काहेकुं ढांकेहे? तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी जो ब्रजभक्त खेलवेकुं आवेहें तब चरणारबिंदके दर्शन करेंहें तब चरणारबिंदमें दास्यभक्ति है सो ब्रजभक्तनकुं स्फुरित होवेहें, तब दासत्व ह्रदयमें लायके श्रीठाकुरजीके सन्मुख हाथ जोडके ठाढे रहेहें और श्रीठाकुरजी खेले हें और श्रीठाकुरजीके सन्मुख ब्रजभक्त हाथ जोडके नीची दृष्टी करके ठाढे रहेहें तब श्रीठाकुरजीकु खेलवेको सुख नहीं परेहें तब श्रीठाकुरजी चरणारबिंद ढांकके दास्यभक्तिकुं छिपायके सख्यभक्तिकुं प्रगट करेंहें तब ब्रजभक्तनकुं सख्यभक्ति उत्पन्न होवेहें तब श्रीठाकुरजीके सन्मुख खेलेंहें, तब श्रीठाकुरजीकुं खेलको आनंद होवेहें याही तें खेलके समय श्रीनाथजीके चरणारबिंद वस्त्रसुं ढांकेहें. ये सुनके वे सौदागर और वैष्णव बहुत प्रसन्न भये. तबतें वा सौदागरनें श्रीठाकुरजीके चरणारबिंद निशदिन ह्रदयमें राखे इनको ध्यान चूकूंगो तो दासपणो सिद्ध नहीं होवेगो याहीतें चरणारबिंदको ध्यान दृढ राख्यो वे सौदागर श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वै. २४७

श्रीगुसांईजीके सेवक हृषीकेश क्षत्रीकी वार्ता ॥

सो वे हृषीकेश आगरेमें रहेते हते जब श्रीगुसांईजी आगरे पधारे तब हृषीकेशजी श्रीगुसांईजीके सेवक भये सो वे हृषीकेशजी घोडानकी दलाली करते हते एक सौदागर बहुत घोडा लायो. हृषीकेशनें विनके घोडा बेचाय दिये, सो वा सौदागरके पास एक सरस घोडा हतो वाके चिह्न हृषीकेशजी पहँचानते हते और कोई पहँचानतो नहीं हतो. तब वे हृषीकेशनें सौदागरके पास घोडा मांग्यो तब वा सौदागरनें दलालीमें वह घोडा दियो. तब हृषीकेशनें घोडो श्रीगुसांईजीकुं भेट कर्यो सो वह घोडा देखके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये फेर हृषीकेशनें श्रीगुसांईजीसों वीनती करी--जो श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप कृपा करके मोकुं समझावें. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी सो ॥ श्लोक--

"सौंदर्यं निजहृद्गतं प्रकटितं स्त्रीगूढभावात्मकं
पुंरूपं च पुनस्तदंतरगतं प्राविविशत्स्वप्रिये ॥
संश्लिष्टावुभयोर्बभौ रसमयः कृष्णो हि तत्साक्षिकं
रूपं तत्रितयात्मकं परमभिध्येयं सदावल्लभम् ॥"

ये ग्रंथ श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी. तब कृष्णभट्टजी उहां बैठे हते फेर श्रीगुसांईजी सेवामें पधारे तब हृषीकेशनें कृष्णभट्टजीसुं कही जो ये ग्रंथ मोकुं

आछी रीतिसुं समझावो तब कृष्णभट्टजीनें कही--जो श्रीठाकुरजीके हृदयमें श्रीस्वामिनीजी बिराजे हैं और श्रीस्वामिनीजीके हृदयमें श्रीठाकुरजी बिराजे हैं जब विप्रयोग उत्पन्न भयो तब दोनोंके हृदयतें वे स्वरूप प्रगट भये, तब श्रीठाकुरजीनें ऐंसे मान्यो मैं स्वामिनीजीहुं और श्रीस्वामिनीजीनें ऐंसे मान्यो हम श्रीठाकुरजीहैं, ऐंसो अत्यंत विरह दोनोंनकुं उत्पन्न भयो तब दोनोंनके मुखतें विरहाग्निकी ज्वाला बाहर प्रगट भई, तब श्रीठाकुरजीनें दोनों अग्नि संयोगरसमें प्रवेश कराई, तब तृतीय स्वरूप प्रगट भयो सो स्वरूप दोनोंनके विरहकी अग्नी और दोननको संयोगरस ऐंसो तृतीयात्मक भयो. ऐंसो स्वरूप श्रीठाकुरजीकुं सदा वल्लभ परमोत्कृष्ट वा स्वरूपको सदा ध्यान करने योग्य है, ऐंसो स्वरूप श्रीमहाप्रभुजीको है विनकी कृपा विना संयोगरस और विप्रयोगरसको अनुभव न होवे। ये बात सुनके हृषीकेशजी ये स्वरूप हृदयमें राख्यो और भगवत्स्वरूपको दर्शन लीलासहित हृदयमें होवे लग्यो जेंसी लीलासहित दर्शन करते तैंसे पद करके गावते. सो एक दिन चाचाहरिवंशजी हृषीकेशके घर आये तब श्रीगुसांईजीके पास श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपको ग्रंथ शीखे हते सो चाचाजीसुं कह्यो, तब चाचा-

जीनें श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप नामात्मक श्रीसर्वोत्तमजीमें है और रूपात्मक वल्लभाष्टकमें है और गुणात्मक स्फुरितकृष्णप्रेमामृतमें है इन ग्रंथनमें वर्णन है सो तीनों ग्रंथनको समावेश वा एक श्लोकमें कर दिखायो. तब हृषीकेशके हृदयमें श्रीमहाप्रभुजीको स्वरूप स्थिरभयो क्षणक्षणमें विचारकरन लगे कोई समय तो "श्रीकृष्णास्यं कृपानिधी" ऐंसे स्वरूपको विचार करें और कोई समय वैश्वानर ऐंसे स्वरूपको विचार करें और कोई समय "तत्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रहः" ऐंसे स्वरूपको विचार करें और कोई समय "वस्तुतः कृष्ण एव" ऐंसे स्वरूपको विचार करे और कोई समय "श्रीभागवतप्रतिपदमणिवरभावांशुभूषिता मूर्तिः" ऐंसे स्वरूपको विचार करे सो हृषीकेशकुं श्रीमहाप्रभुजीके स्वरूपको ऐंसे अनुभव होवे लग्यो. तब हृषीकेशकुं श्रीप्रभुजीको ऐंसो स्वरूप दृढभयो सो वे हृषीकेश श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते॥ वार्ता सं० ॥ वै०२४८॥

श्रीगुसां०से०कान्हदास राजनगरमें रहते तिनकी वार्ता ॥

एक समय श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे हते तब कान्हदास श्रीगुसांईजीके सेवक भये और श्रीठाकुरजी पधरायके सेवा करन लगे तब कान्हदासकी स्त्री और बेटा सब सेवामें न्हाते हते और कान्ह-

दासके बेटाकी बहू हती सो भोली बहुत हती और कछु आचार विचारमें नहीं समझती हती तब वाकुं सेवामें नहीं न्हावे देते हते. तब वो बहू जो वैष्णव आवते वाकी जूठन उठावती और पोतना करती और वैष्णवके पांव दाबती और पंखा करती और नहावती और घरमें बुहारीकरती ऐंसे कामके वा बहूकुं लगाय राखी हती परंतु वाकुं भोली जानके श्रीठाकुरजी वासुं आयके बातें करते और सब प्रकारकी लीला जतावते. एकदिन कान्हदास श्रीठाकुरजीका शृंगार करते हते और मनमें ऐंसी आई जो आज जोडा लावनो है और मोचीके घर जानो है ऐंसो मनमें विचार करन लगे तब कोईएक मनुष्य कान्हदासकुं बुलायवे आयो तब वाने बेटाकी बहूसुं पूंछी तुमारो सुसरो कहांहै तब बहूनें कही मोचीके घर जोडा लेवे गये हैं सो ये बात सुनके कान्हदास बहार आयके बहूंके पांवन परे और कहने लगे वैष्णवनकी सेवाके प्रतापतें तेरे हृदयमें भगवत्स्वरूप उदय भयो है जासुं तुं मेरे मनकी सब बात जानगई है और श्रीठाकुरजी तेरे ऊपर प्रसन्न हैं और मैं बहुत मूरख हूं सो तेरो स्वरूप मैंने जाण्यो नहीं अब नित्य सेवा तुम करो और शृंगार तेरी इच्छा आवे सो ठाकुरजीकुं धरावो और

सामग्री तेरी इच्छा आवे सो धरावो. तब वा दिनते बहू सेवामें न्हावे लगी और घरके मनुष्य सब बहूकुं पूछके सेवा करन लगे सो वे कान्हदास और कान्हदासके बेटाकी बहू ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ॥ वैष्णव २४९ ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक मथुरादास तिनकी वार्ता ॥

सो वे वैष्णव गोपालपुरमें रहते हते एकदिन मथुरादासनें श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो, जो आपकी सृष्टीमें और श्रीमहाप्रभुकी सृष्टीमें कितनों तारतम्य है.तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी-हमने तेरो त्याग कियो है उहां दशपंदरह वैष्णव बैठेहते विननें त्याग करवेकी बात साची मानके मथुरादाससों भगवत्स्मरण करनो छोडदियो और सब गाममें बात फेलायदीनी कोई वासुं भगवत्स्मरण न करे और कोई वाके पासहूं न बैठे. तब मथुरादासनें ऐसो विचाऱ्यो जो जंगलमें जायके कोईकुं खबर न पडे ऐसे ठेकाने देह छोडदेनी और अन्नजल त्याग दियो ऐसे तीन दिन बीतगये, चौथे दिन वे मथुरादास वहांसुं जंगलमें देह छोडवेके लिये चल्यो तब रस्तामें दो कोसपर एक गाम हतो उहां श्रीमहाप्रभुजीकी सेवक एक डोकरी रहती हती जमनाबाई वाको नाम हतो तब मथुरादासनें विचाऱ्यो

जो जमनाबाईकुं मेरे त्याग करवेकी खबर न होयगी यासुं याकुं भगवत्स्मरण करतो जाऊं तब मथुरादास जमनाबाईके घर गये और जायके भगवत्स्मरण किये तब जमुनाबाईने कही—तुम इहां प्रसाद लेके जावो. तब मथुरादासनें कही मोकुं श्रीगुसांईजीनें त्याग कर्‍यो है और वैष्णवननेंहु त्याग कियो है मैं देह छोडवे जाऊंहुं. तब जमनाबाईनें कही तुम बावरी बात करोहो श्रीगुसांईजी कोईकुं त्याग करे नहीं है और श्रीठाकुरजीनें श्रीमहाप्रभुजीकुं ऐसो वचन दियो है जिनकुं तुम ब्रह्मसंबंध करावोगे हम विनकुं त्याग नहीं करेंगे और विनके दोष रहेंगे नहीं। सिद्धांत रहस्यग्रंथमें कह्योहैं। सो श्लोक--

"ब्रह्मसम्बन्धकरणात् सर्वेषां देहजीवयोः ॥
सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचविधाः स्मृताः॥"

और अंतःकरणप्रबोध ग्रंथमें कह्यो है सो वाक्य।

"सत्यसंकलपतो विष्णुर्नान्यथा तु करिष्यति ॥"

अन्यच्च--"लौकिकप्रभुवत्कृष्णो न द्रष्टव्यः कदाचन ॥"

और श्रीमहाप्रभुजीनेंहु निबंधमें कह्यो है जो हमारे मार्गमें आवेंगे और अधर्म करेंगे और वेदनिंदा करेंगे तोहुं नरकमें न जाएंगे और हीन योनीमें जन्म लेवेंगे श्लोक--

"अत्रापि वेदनिन्दायामधर्मकरणात्तथा ॥
नरके न भवेत्पातः किंतु हीनेषु जायते" ॥

और श्रीठाकुरजीनें श्रीगीताजीमें कह्यो है सो श्लोक--"सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ॥

अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥"

ऐंसे अनेक ठेकाने कह्यो है सो. श्रीगुसांईजी कैंसे त्याग करेंगे? तेरी बात मैं सांची नही मानूंहुं. तुम इहां बैठो दर्शन करो. महाप्रसाद ले मैंहूं प्रसाद लेके तुमारे संग श्रीगुसांईजीके पास चलूंगी. तब मथुरादासनें न्हायके महाप्रसाद लियो फेर वे जमनाबाई मथुरादासकुं संगलेके श्रीगुसांईजीके पास आई. तब वा मथुरादासकुं देखके श्रीगुसांईजीनें कह्यो वैष्णव तूं चार दिनसुं कहां गयो हतो? तब जमनाबाईकी बात सत्य करवेके लिये और मार्गकी स्थिरता राखवेके लिये और सृष्टिको तारतम्य जनायवेके लिये श्रीगुसांईजीनें मथरादासकुं ऐंसी लीला दिखाई।सो वे मथुरादास श्रीगुसांईजीके ऐंसे कृपापात्र हते ॥ वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव २५० ॥

श्रीगुसांईजीके सेवक माधवेंद्रपुरी तिनकी वार्ता ॥

सो वे माधवेंद्रपुरी मध्वसंप्रदायके संन्यासी हते और अडेलमें रहते हते विनके पास श्रीगुसांईजी पढवे जाते हते और नित्य पुस्तक श्रीगुसांईजी विनकेपास धरी आवते और घरमें आयके भगवत्सेवा करते. फिर एकदिन माधवेंद्रपुरीनें

श्रीगुसांईजीसुं कही जो तुम पुस्तक इहां धर जावो हो और कछु गोखो नहींहो. तब श्रीगुसांईजीनें आज्ञा करी तुम कहो सो बताऊं. तब माधवेंद्रपुरीनें जो स्थल पूंछयो सो सब श्रीगुसांईजीनें स्पष्ट करके बतायो सो ऐंसो बतायो जैंसे माधवेंद्रपुरीकुं आवतो जासुं दशगुणो विशष बतायो तब माधवेंद्रपुरीकुं बडा विचार भयो जो ये कहा कारण होयगो ? इतनो कहांसों शीखे होयंगे । तब अनेक प्रकारको विचार करन लगे सो बहुत मनमें विस्मय जैंसे होय गयो तब विचार करते रातकुं सूते तब श्रीठाकुरजीनें माधवेंद्रपुरीकुं स्वप्नमें कह्यो जो मैं श्रीगिरिराजजीमें प्रकट भयोहुं और मेरी सेवा मेरे विना कोई जाने नहीं है जासुं मेरी सवा शिखायवेके लिये मैं दूसरो रूप धरके श्रीविठ्ठलनाथजी प्रकट भयोहुं सो तेरे मोकुं प्राप्त होवेकी 'इच्छा होवेतो इनकी शरण जाओ तब माधवेंद्रपुरीकी नींद उडगई, फेर आखीरात विचार कऱ्यो, कब दिन होवेगा आर कब श्रीगुसांईजी पढवे आवेंगे ? फेर दूसरे दिन श्रीगुसांईजी पढवे पधारे तब माधवेंद्रपुरीनें श्रीगुसांईजीसुं कही जो आप पूर्णपुरुषोत्तम होयके हम जैंसेनकुं मोह करवेके लिये पढोहो अब

मोकुं गुरुदक्षिणा द्यो आपके माथे श्रीनाथजी बिराजे हैं जासुं मोकुं थोडे दिन सेवा करवेकी आज्ञा देउ और आप मोकुं सेवक करो. तब श्रीगुसांईजीनें माधवेंद्रपुरीकुं कही हम तुमारे पास विद्या पढे हैं हम तुमकुं सेवक नहीं करेंगे. तुमकुं हम उपदेश कैसे ? देवें तब माधवेंद्रपुरी बहुत उदास भये. फेर श्रीगुसांईजीकुं उत्थापनके समय श्रीनवनीतप्रियाजीनें आज्ञा कीनी जो माधवेंद्रपुरीकुं आप सेवक करो. तब श्रीगुसांईजीनें माधवेंद्रपुरीकुं नाम निवेदन करायो और व्रजमें संग ले पधारे और श्रीनाथजीकी सेवामें राखे और बंगाली लोगको माधवेंद्रपुरीके पास राख दिये. तब माधवेंद्रपुरी श्रीनाथजीकी सेवा करन लगे परंतु माधवेंद्रपुरी संन्यासी हते जो कछु श्रीनाथजीकी भेट आवती सो सब बंगालीब्राह्मणनकुं दे देते. कछु राखते नहीं और श्रीगुसांईजी उनकुं कछु कहते नहीं तब बहुत दिन ऐंसे बीतगये फेर श्रीनाथजीकी इच्छा वैभव बढायवेकी भई तब श्रीनाथजीनें माधवेंद्रपुरीसुं कही तुम दक्षिणमें जायके मलयागरपर्वतमेंसुं चंदन लावो. तब माधवेंद्रपुरी चंदन लेवेकुं गये तब पाछेसुं कृष्णदासजीनें बंगालीनकुं काढे. ये बात श्रीनाथ-

जीके प्राकट्यमें लिखीहै जासुं इहां नहीं लिखी फेर माधवेंद्रपुरी मलयागर चंदन लेवेकुं गये. तब हिमगोपालजीके दर्शनकऱ्यो तब हिमगोपालजीनें आज्ञा करी जो तुम हमकुं इहां चंदन लगावो ब्रजमें मत जावो. तब माधवेंद्रपुरीनें उहां चंदन समर्प्यो और उहां भगवल्लीलाकुं प्राप्त भये. सो वे माधवेंद्रपुरी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव२९१॥

श्रीगुसांईजीके सेवक जाडा कृष्णदासकी वार्ता ॥

सो विनकुं सब ब्रजवासी चाचा जाडा कहते और बडे चतुर हते और सब संतमहंतनकी परीक्षा लेते फिरते हते. एकदिन श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीकी परीक्षा लेवेकुं आये. वाई समय श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियाजीकुं पालना झुलावत हते. तब जाडा श्रीकृष्णदासनें दर्शन करे कोई समय तो श्रीगुसांईजी झुलावे और श्रीनवनीतप्रियाजी झूलें और कोई समय श्रीगुसांईजी झूलें और श्रीनवनीतप्रियाजी झुलावें. तब जाडाकृष्णदास देखके चकित भये और मनमें संदेह भयो, जो ये श्रीठाकुरजी होयंगे के ये श्रीठाकुरजी होयंगे? अत्यंत संदेह भयो. तब श्रीगुसांईजी राजभोग धरके बहार पधारे. तब जाडाकृष्णदासकुं श्रीगुसांईजीके रोमरोममें श्रीन-

वनीतप्रियाजीके दर्शन भये तब श्रीगुसांईजीकुं दंडवत करके और वीनती करी. जो मैं बहुत दुष्टहूं आपकी परीक्षा लेवेकुं आयोहुं परंतु आपनें मेरी परीक्षा लीनी और कृपाकरके आपनें मेरो संदेह मिटायो. जासुं आप मोकुं शरण लेवे.तब श्रीगुसांईजीनें कृपाकरके विनकुं नामनिवेदन करायो॥ प्रसंग १ ॥

फेर थोडे दिवस उहां रहके वृंदावनमें आये और रूपसनातनजीकुं मिले तब रूपसनातनजीसुंकहीजो श्रीठाकुरजी कहा करेहें? तब रूपसनातनजीनें कही जो श्रीठाकुरजी भोजन करेहें.तब जाडाकृष्णदासजीनें कही जो श्रीठाकुरजीकी तो सब लीला नित्य है एककालावच्छिन्न सब लीला करेहैं और तुमनें भोजन करेहें ऐसी कही सो कारण कहा?जब रूप सनातनजीने कही ऐसे दर्शन तो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके इहां होवे हैं और श्रीगुसांईजी जिनकुं करावें विनकुं होवेहैं ये बात सुनके जाडा कृष्णदास बहुत प्रसन्न भये पाछे जाडाकृष्णदास सब व्रजमें फिर्‌यो करते सो भगवद्गुणानुवाद गायो करते. सो इंद्रकोपको चरित्र वनायो और रासपंचाध्याई बनाई और माधवरुक्मिणीकेली गाई और सुंदर रीतिसुं भोजनके पद नये बनायके गाये और जिन जिनसों

विनको प्रसंग पड्यो तिनके अंतःकरणकी जडता मिट गई ॥ प्रसंग ॥ २ ॥

एकदिन जाडाकृष्णदास द्वारका यात्रा करवेकुं गये सो रस्तामें एक गाम आयो सो उहां देवीको देवल हतो सो देवीके देवलमें जायके सूते, सवारके समय एक मनुष्य बकरा लेके देवीपर चढायवे आयो, तब जाडाकृष्णदासनें कही--सब लोग बकरा चढावे हैं कोई सिंघ नहीं चढावे हैं? तब वो मनुष्य बोल्यो जो सिंघ कैंसे पकडे जाये? तब जाडाकृष्णदासनें कही मैं तोकुं सिंघ पकड देउंहुं तब तुम बकरी छोड्यो. तब वानें छोड दीनी फेर जाडाकृष्णदास जंगलमें जायके सिंघ पकडलाये वा सिंघकुं देखके सब मनुष्य भागगये और जाडाकृष्णदासके पांवन पडने लगे. तब जाडाकृष्णदासनें विनकुं ऐंसे कह्यो तुमारे आज पीछें जीवहिंसा नहीं करनी. सो वे ऐंसे पराक्रमी हते जिनकी कीर्ति आखा जगतमें फैली हती सो वे जाडाकृष्णदास ऐंसें पराक्रमी हते ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥

फेर एकदिन जाडाकृष्णदासजी चाचाहरिवंशजीकुं मिले तब जाडाकृष्णदासनें पूंछी जो या पुष्टिमार्गमें कौनसे शास्त्रके वचन प्रमाण है?तब चाचाह-

रिवंशजीनें कही जो वेद और श्रीकृष्णके वाक्य और व्याससूत्र और श्रीमद्भागवतमें तीन भाषा हैं एक लौकिक भाषा और दूसरी स्मृति भाषा और तीसरी समाधी भाषा. सो वेद और श्रीकृष्णके वाक्य और व्याससूत्र और समाधीभाषा और धर्मशास्त्र ये प्रमाण हैं. इनसुं मिलतें पुराणके वाक्य और स्मृतिके वाक्यहुं प्रमाण है इनसुं विरुद्ध है सो प्रमाण नहीं है. सो श्रीमहाप्रभुजीनें निबंधमें कह्यो है। सो श्लोक--

" वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्याससूत्राणि चैव हि ॥
समाधिभाषाव्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम् ॥
उत्तरं पूर्वसंदेहवारकं परिकीर्तितम् ॥
अविरुद्धं तु यत्त्वस्य प्रमाणं तच्च नान्यथा ॥
एतद्विरुद्धं यत्सर्वं न तन्मानं कथंचन ॥ "

फेर जाडाकृष्णदासनें पूंछीं जो अनेकप्रकारके देवपूजन और अनेकप्रकारके व्रत और अनेकप्रकारके शास्त्र बहुत दिनसुं प्रमाण चले आवे हैं सो विनके विचार कहा करनो? तब चाचाहरिवंशजीनें कही, ये निर्णयतो श्रीमहाप्रभुजीनें निबंधशास्त्रार्थमें लिख्यो है। सो श्लोक--

"बुद्धावतारे त्वधुना हरौ तद्वशगाः सुराः ॥
नानामतानि विप्रेषु भूत्वा कुर्वन्ति मोहनम् ॥

अयमेव महामोहो हीदमेव प्रतारणम् ॥
यत्कृष्णं न भजेत्प्राज्ञः शास्त्राभ्यासपरः कृती ॥
तेषां कर्मवशानां हि भव एव फलिष्यति ॥ "

याको अर्थ--जब श्रीठाकुरजीने जीवनकुं मोह करवेके लियें और आपके भजन छुडायवेकेलीयें विचार कर्‍यो तब बुद्धावतार लियो तब श्रीठाकुरजीकी ऐंसी विपरीत इच्छा जानके सब देवता श्रीठाकुरजीके वश रहेहें सो ब्राह्मणनके घर आयके जन्म लिये और अनेक मत चलायवेके लीयें अनेक शास्त्र वर्णन करे और ये बातको कछु विचार न कर्‍यो जो ये श्रीठाकुरजी मोह करेहें और ठगाई करे हें ऐंसो बुद्धिमानननें विचार न कर्‍यो ऐंसे वचन सुनके लोगननें श्रीठाकुरजीकी सेवा छोड दीनी, पंडित हते तोहुं कर्मवश होय गये, ऐंसे कर्मवशनकुं संसारही फल होवें हें और फल नहीं होवें हें। ये सुनके जाडाकृष्णदास बहुत प्रसन्न भये और कहेन लगे जो तुमारे विना कोई मेरो संदेह भगायवेकुं समर्थ नहीं हे और सब लोग मनमें ऐंसे जाने हें जो श्रद्धा अनेक प्रकारकी लोगनमें होवे हें परंतु खरी श्रद्धा कहा होवे हें ? तब चाचाजीनें निबंधको श्लोक कह्यो सो--

"ज्ञाननिष्ठा तदा ज्ञेया सर्वज्ञोहि यदा भवेत् ॥
कर्मनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा चित्तं प्रसीदति ॥

भक्तिनिष्ठा तदा ज्ञेया यदा कृष्णः प्रसीदति ॥
निष्ठाभावे फलं तस्मान्नास्त्येवेति विनिश्चयः ॥ ”

याको अर्थ-ज्ञाननिष्ठा साची कब जाननी? जब जीव सर्वज्ञ होवे. कर्मनिष्ठा साची कब जाननी? जब अनेकप्रकारको कष्ट पडे दुःख होवे तोहूं चित्त प्रसन्न रहे. चित्तप्रसन्न न होवे तो सब करे कर्म व्यर्थ जाएं. और भक्तिनिष्ठा साची कब जाननी? जब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होवें और निष्ठाविना कछु फल नहीं होवेहैं. ये सुनके जाडाकृष्णदासजी बहुत प्रसन्न भये और गोपालपुरमें गये जन्मपर्यंत श्रीनाथजीकी सेवा करतरहे ये जाडाकृष्णदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र हते ॥ वैष्णव २५२ ॥

इति श्रीगुसांईजीके सेवक दोसौबावन वैष्णवकी वार्ता संपूर्ण ॥



श्रीकृष्णाय नमः ॥

अथ श्रीपुष्टिदृढावोलिख्यते ॥



जाकों पुष्टिअंगीकार होयगो सो जानेंगो--जीवकों उद्यम करनों, उत्तमभगवदीयकी संगती मिलनों अरु वाके करेको विश्वास राखनों, जब विश्वास उपजे तब जानियें जो श्रीजीनें कृपाकरी अपनो कियो उत्तम भगवदीयकी संगतीतें श्रीजी प्रसन्न होयके अंगीकार कियो, अपनो आनंद देवेके लीयें जब स्वरूपनिष्ठा उपजे तब जानीये जो श्रीप्रभुजीनें अपनों आनंद दियो. वैष्णव तासों कहिये जाको स्वरूप ऊपर अनन्यता उपजे तब तासों वैष्णव कहिये. जीवको विवेक विचार करनों, जीवको चौरासीलाख योनी मिले तामें मनुष्यदेह उत्तम है सब गुण जानें है सत्कर्म तथा बुरेकर्म करवेकों जीवको सामर्थ्य है जीवके और सामर्थ्य कोऊ नहीं है तातें जीभसों भगवद्गुण गावै और हाथनसो सेवा करे, काननसों भगवद्गुण सुनें, नेत्रनसों दर्शन करे, ग्यारह इंद्रिय भगवदर्थ लगावे जो सत्संग होय तो ऐंसे करे. कदाचित् लौकिककी संगती होय तो तातें तैंसोही होवै संगतिके वश मन हैं मनके वश देह है ज्यों

चलावे त्योंही चले ज्यों बुलावे त्योंहि बोले. हाथ पांव सब मनके दास हैं, ज्यों कहैं त्योंहीं करें हें. परि वचन फेरें नहीं. देहको राजा सो मन है राजासों ऊंच संगति होवे तो राज बढे अरु नीच संगति होवे तो राज्य जाय. तातें मनकों ऊंचसंगति मिलावनों, वैष्णवकों पहिले तो पढनों, पढिके श्रीमत् भागवत सुननों, ता मार्ग चलनो श्रीवल्लभाचार्यजीनें टीका करीहै टीका करिके भाव लिख्यो है सो सुनिये तो श्रीठाकुरजी हृदयमेंतें दूर न होवे। और श्रीआचार्यजीनें वेद तथा शास्त्रमथिकें दोहन करके ताको नवरत्नग्रंथ कियो है जो आपके अंगीकृत है तिनकुं मार्ग दिखायवेको कीनो हैं, पहिले श्रीप्रभुजीके सदासर्वदा अंगीकृत हैं तिनको जनम जनम छोडत नहींहैं आप श्रीवल्लभराय अब अवतार लेके अपनें दासनकुं जुदे किये संसाररूपी समुद्रमें सब बूडत हते, सो भगवत्स्वरूपरूपी नावमें बैठायके पार उतारे हें ताको नामरूपीनावमें बैठे हैं परि जाकों पूर्व जैसी दशा हती तैंसीही पावेंगे, सो श्रीठाकुरजी कलियुगमें प्रकट प्रमाण हंसते खेलते बोलते चालते सो श्रीवल्लभाचार्यजीके घर दर्शन देते हैं परि पूर्व जो अंगीकृत जीवहें सो जानत हैं औरहें सो आसुरी हैं देखेंगे परि विश्वास न आवेगो. जैसे-

आंधरो सूर्य ऊगे परि देखे नहीं, परि वे वैष्णव हृद-
यकी आंखिनसों देखें तो देखे अब विन आंखनको
बल क्यो कर होइ? अब सो उपाय कहतहें--जो
तादृशी वैष्णवनकी संगति करे तो आंखिनको
पडदो खुल जाय, तब श्रीब्रजमंगल ब्रजाधिपति
ब्रजके ईश्वर दृष्टि परें. तब वा स्वरूपकी अन-
न्यता राखे, जैसें हनूमानजीनें श्रीरामचंद्रजीको
स्वरूप हृदयमें राख्यो शरीरमें भगवदावेशतें
समुद्र उलंघ्यो सो सीताजीकी सुध लाये. बाग
उखारि डार्‍यो अरु लंका जराय राख करी अरु
पर्वत उठाय लाये सो सब भगवदावेशतें करे। और
असमर्पित न खाय तो सुबुद्धि होवे प्रथम नामग्रहण
करिये उपरांत तादृशी वैष्णवसों मिलिये तो स्मरण
उपजे तब स्मरण किये उपरांत श्रीजुगुलकिशो-
रकों लाडलडाइये. उत्तम सामग्री करके समर्पिये.
सो महाप्रसाद वैष्णवनकों लिवाइये जब वैष्णव
लेंही तब यों जानिये जो श्रीजी प्रेमसुं अरोगेहें.
श्रीजी प्रसन्न भए पाछें अपनों कर बुलावे जब
कहें ये जीव हमारो है तब जीवको कहा चहिये
सब मनोरथ सिद्ध भये, परंतु यह जीव अन्याश्रय-
छोडे तब अपनो करे. अन्याश्रय होनदे नहीं. जैसे
स्त्री अन्यपुरुषको संग करे वाके पतीको मृत्युप्राय

दुःख होवे, तब सामर्थ्य होवे तो पत्नीकी त्याग करे ता पुरुषको वा स्त्रीको मुख देख्यो भावे नहीं तैसे वैष्णवको अन्याश्रय होनों नहीं और अन्याश्रय करे तो विमुख जानियें तातें अन्याश्रय सर्वथा न करनों और असमर्पित न लेनों असमर्पित और अन्यसमर्पित लेवे तो दुर्बुद्धि आवे, श्रीजी हृदयमें न पधारे तातें प्रथम अपनो हृदय शुद्धकरिये तब हृदयकी आंखिनसों देखिये जो मेरेमें कितनो दोष है. खरी दृष्टिसों देखिये तो दीखे एकतो जीवमें अभिमान है सो तो चांडाल है, यूं जानत है जो मैं करतहूं भलीही करतहूं और सब मूर्ख हैं, मोमें कछु विषय नहीं और सब विषयी हैं, तातें श्रीठाकुरजी उनको अंगिकार कबहूं न करे एक मनमें अभिमान आवतहें तातें सबनकी निंदा करत हें ताको चांडाल जाननों श्रीजीकी लीला अति बडी अरु महा आनंदरूप है तैंसों आनंदरूप हृदयमें राखनो तो महालीलाको सुख देखिये सो देखिके दोष उपजे तो महापतित होई. और जो स्नेह उपजे तो श्रीठाकुरजी अपने रसात्मक स्वरूपको दर्शन देवे, अरु दास करी राखे तातें सखीभाव राखनो जैसें पुरुषकी पतिव्रता टेक राखे तासों कहा कहिये?

पुरुषतो एक पुरुषोत्तम हैं. अरु तिनके ऊपर जे रसिकहे तिनको स्त्रीही जाननें ॥ प्रसंग ॥ १ ॥

अथ द्वितीय प्रसंग--जो भगवदीय हैं सो श्रीजीको स्वरूप है. भगवदीयके वचन सो श्रीजीके वचन जानने भगवदीयकें हृदयमें आयके प्रभुजी बोलत हैं भगवदीयकुं ऐंसो जाननो सो तो भाव ऊंडो है. विचार देखिये तब जानिये ऐंसे वैष्णव क्योंकर पहँचानिये, ताऊपर कहत हैं--एक तो चिंता न करे, दूसरे असमार्पित न खाय, तीसरे विषयमें लीन न होई, चौथे जो कछु होय सो भगवदिच्छाकर मानें, पांचवें अभिमान न करे, छठे वैष्णवनके दासनकों दास ह्वै रहे, सातवें तो भगवद्गुण गान करे, आठवें मनमें प्रसन्न रहे, नवमें भगवदीय वैष्णव देखके मन प्रफुल्लित होवे, दशमें लौकीक संग छोडि वैष्णवनको संग करे ऐंसो भगवदीय होई। तापर भरभाव घणो राखिये भगवदीयके मनकी बात जाननी, वाकी देखादेखी न करनी, भगवदीयके मनकी बात तो श्रीजी जाने परंतु वैष्णवके वचनको विश्वास राखनो, ऐंसे भगवदीयको मन प्रसन्न करिये तो श्रीजी प्रसन्न होवें, यह तो भाव ऊंडोहै तादृशी होयगो सो जानेंगो तातें तादृशीको संग करनो. जो कदाचित् स्वार्थ करे तो महा पतित होय. ताके लीयें

विवेक धैर्याश्रयग्रंथ श्रीआचार्यजीनें कियो है सो विचारनों और जीवकुं अंगीकार अद्दष्ट है दीखवेमें नहीं आवेहै. दुःखरूपहै परंतु श्रीआचार्यजीके मार्ग-में चले तो सुखरूप होय. जीव जानत है जो मैं करत हुं सो कोई जानत नहीं है परंतु श्रीजी मनकी वार्ता जानतहैं तिनतें कछू छिपी नहीं है जो जीव ऐंसे जाने हे सो देखेहें और जीव हैं सो विषईहें उनको मन रातादिन विषयमें रहत हैं ताको वह गुण करि मानेंहें वाको कोउ बुरो कहे तापर क्रोध करेहें ऐंसी प्यारी वस्तुहे तातें ऐंसो प्यार जो वैष्णवपर होई तो कृतार्थ होय परंतु जीवको विषयरूपी जो चोर तापेंडेंमे मिलतहैं सो पापी आगें होतहें वा चोर ऊपर बहार करिये तो चोर भाग जाय अरु सुखसों ठिकाणें पोहोंचिये ताऊपर फेर कोऊ कहेगो जो बहार क्युंकर करिये ताऊपर कहतहें ज्ञान करके मन राखिये तो मन रहे कारण सबको मनहै. कोऊ एक कहेगो, जो नामग्रहण कियो होई फेर अनन्य-ताको संबंध बराबरहै के अधकी ओछो है?ताऊपर कहतहें--श्रीकृष्णावतारमें जो गोपिकानको सुख भयो सो तो औरनको न देहि ताऊपर कहतहें जो औरको नाम ग्रहण करावेंहें सो पूर्व अपनें न होएंगे ताऊपर कहतहें पूर्व जोंको जैंसो संबंध हैं तैंसोई

ताको सुख पावतहैं. जो श्रीकृष्णचंद्रनें रासलीला करी तहां वृक्षन ऊपर पक्षी बैठे हते तिननें देख्यो परंतु मनमें सुख न पायो सवारो भयो तब उडगये तैंसे श्रीकृष्णचंद्रजीके दर्शनको सुख देख्यो या दृष्टांततें ये निश्चय भयो जाकों स्वरूपमें निष्ठा उपजे ताकों श्रीजीनें आनंदको सुख दीनो. ताको दृष्टांत-- जब श्रीप्रभुजी हृदयमें आवे तब आनंद उपजे अरु भगवदावेश आवे. फिर कोऊ कहेगो जो श्रीकृष्णावतारमें एक स्वरूपसों दर्शन देत हते अब अनेक स्वरूपनसों दर्शन देतहैं सो कोनसे स्वरूपकों भजिये ? ताऊपर कहतहैं श्रीवल्लभकुल सब पुरुषोत्तम स्वरूपहैं परंतु जा स्वरूपको स्मरण कियो होय ता स्वरूपकों भजिये. अरु वाकी अनन्यता राखनी जैंसे हनुमानजीनें मुक्ताफलको हार फोरडाऱ्यो जो श्रीरामचंद्रजीको वामें नाम नहीं हतो तातें हार डार दीनो तैंसे अपने श्रीप्रभुजीके गुणानुवाद गान न होत होवें तहांतें उठि जैये. जैंसो पतिव्रताको धर्म है तैंसे वैष्णवनकों पतिव्रताकी न्याईं टेक राखनी. जैंसे मीराबाईके घर कीर्त्तन होत हते तहां श्रीआचार्यजीके पद गावत हते. तब मीराबाई बोली जो अब श्रीठाकुरजीके पद गावो. तब रामदास वैष्णवनें कही जो दारीरांड! ये कोनके पद गावतहैं

जा तेरो मुख न देखुंगो. तब सब अपनो कुटुंब लेके और गाम गयो फिर मीराबाईको मुख न देख्यो. वैष्णवकुं ऐसी टेक राखनी परंतु वैष्णवकुं फेर हंसको गुण लेनो मुक्ताफल बिना चोंच भरे नहीं. तातें वैष्णवकुं अपनें प्रभुविना मन धरनो नहीं. जैंसे नरसिंह मेहेतानें अपनी टेक न छोडी मरण आद-यो जब राजा मंडलीक तरवार लेके सन्मुख ठाडो रह्यो कहि जो श्रीकृष्ण हार देंगे नहीं तो मैं ताकुं मारुंगो तोहूं नरसिंघमेहतानें अपनी टेक न छोडी. मरण आद-यो तब श्रीठाकुरजीनें हार दियो, नरसिंघमेहेतापर कृपा करी राजा मंडलीक म्लेच्छ भयो।वैष्णवनें अपनी टेक पतिव्रताकीसी राखनी. अपनें श्रीप्रभुजीकुं हृदयमें राखें ताकुं वैष्णव कहिये । दृष्टांत-- ज्या स्त्रीको अपनो धनी होवे सो होवे और लौकिक स्वार्थमेंहुं अपनें खसमकुं छोडिके औरको भजन नहीं करे जो कोउ कछु कहे ताकों गारी देन लगे. जासों एक जन्मको संबंध है और इहांतो अनेक जन्मके धनी हैं तो इन ऊपर घणो स्नेह क्यों न राखिये यह ऐंसी बात है.अरु वैष्णव सो कोन?अरु स्मार्त सो कोन ? ता ऊपर कहत हैं-जाको स्वरूपनिष्ठा आई नहीं सो स्मार्त जाननो, जब स्वरूपनिष्ठा आवे तब वैष्णव होय तब वैष्णवको कहा

करनो सो कहतहैं--के तो जुगलकिशोर श्रीप्रभुजीको भाजिये, के अपने श्रीप्रभुजी दर्शन देतहैं वे सो स्वरूप अपनें मनमें धरकें सेवा करनी. जो निवेदनी वैष्णव समर्पें सो सर्वथा श्रीजी अरोगें. फिर कोई कहेगो जो श्रीगुसांईजी द्विजरूप प्रगट भएहैं सो शूद्रके हाथको कैसे अरोगत होएंगे ? ताऊपर कहतहैं-जो समर्पण देके द्विजरूप करतहैं ब्राह्मणको जनेऊको अधिकार है जनेऊ सूतकी त्रिसरी करेंहैं ऐंसे वैष्णवके गलेमें त्रिसेरी माला लेके घालतहैं. ऐंसे करके ब्राह्मण करतहैं तब वाके हाथको आप अरोगतहैं पाछें सो प्रसाद लीजिये तो आत्मा शुद्ध होई अरु वैष्णवता आवे पाछें वैष्णवकों पत्थरकी टेक राखनी अरु संसाररूपी समुद्रमें पाषाण प्रगट होतहें संसाररूपी जल भऱ्यो है तामें ये पत्थर होके रहें तो भीतर जल स्पर्श न करे तो भीतरकी अग्निको बचाव होवे परंतु पूर्व वैष्णव है तातें जल भेदत नहीं हें. हृदयमें श्रीआचार्यजी वसतहैं श्रीआचार्यजी अग्निरूपहैं सो वैष्णव हृदयमें राखतहैं ताकों श्रीआचार्यजीको खरो भरोसो है. ऐंसे उत्तम वैष्णवको संग कीजे तो सुगम पडे. सो श्रीआचार्यजी अग्निरूप हैं सो अग्नि ऊंचो है तापर धरिये तो परिपक्व करे अरु नवनीत जैसो स्वभाव

कोमलहै श्रीआचार्यजी अग्निरूपहैं तातें उनको आसरो होई तो माखन मिटके घी होई. अपनो रूप फिरे तैंसे लौकिक मिटके वैष्णव होई. जैंसे एक बिगरी वस्तु सबको स्वाद बिगारे तैंसे लौकिक है, तामें स्वाद कछू नहीं. फिर वैष्णवको तक्रको गुण लेनो--जैंसे मथिये तैंसे नवनीत देई अरु आपमें जल मिले ताको मिटायके तक्र करे. अरु आप जल न होई तैंसे लौकिक छोडे ताको वैष्णव करें तैंसे तादृशीको मिले तो दोऊनके मन एक होवें और प्रवाहि मिले तो एक मन न होवें काहू कारण एक होवें तो मन एक करे नहीं।ताको दृष्टांत-- जसें कुंदनमें कुंदन मिल जाय और वाको बहुत रींण देई तो मिल जाय और ताप आकरो दीजिये तो जुदो होय जाय सो फिर मिले नहीं तैंसे मनको अग्निको स्वभाव है तातें मनको भगवत्स्वरूपके विषें लगावे. भगवत्स्वरूप कैंसोहै महा आनंदरूपहै।द्वापरयुगमें श्रीवसुदेवदेवकीजीके उदरमेंतें प्रकट भये हैं तब व्रजभक्तनकुं प्राकटच प्रमाण लीला दिखाई बहुत चारित्र दिखाए।पाछें कलियुगमें श्रीवल्लभाचार्यजीके घर प्रकट होयके अक्काजीके उदरतें बहुत स्वरूपन करिके दर्शन देत हैं जैंसे कृष्णावतारमें व्रज भक्तनकु सुख दीनो तातें अधिक सुख देतहैं।दोनों

अवतारनको सुखदेत हें पहिलें श्रीकृष्णावतारमें मन होवे तो श्रीनाथजीकुं देखिये. ये स्वरूप सो साक्षात् श्रीकृष्णजी है और श्रीविठ्ठलेश तो प्रकट प्रमाण है. बोलत चालत हंसत खेलत दर्शन देतहें. और पूर्व विमुख असुर हैं तिनकुं विश्वास नहा आवत हें वैष्णवकी काहूकुं चटक लागे तो वैष्णव होवे, जैंसे कीटकों भ्रमरीके काटेको ध्यान रहतहें सो कीट-पणो मिटके भ्रमरी होवें. तैंसे तादृशी वैष्णव भग-वद्वार्ता करे ते एकचित्तसुं वाको ध्यान करे तो वैष्णव होय फिरि वैष्णवको वैष्णवपनेकी टेक राख-नी. पपैयाकी तरह जैंसे घनबूंद तो लेई, पारि भूमिको पऱ्यो न लेई और सींप समुद्रमें रहतहे पारि स्वाती-बूंद लेई, पारि समुद्रके जलको पान न कर ऐसी टेक राखी चहिये, जीवकी आस श्रीजी पूरे है तैंसेही जग-दीश ऊपर टेक राखें तो जगदीश कहा न पूरे. परंतु मनुष्यके विषें दोष अन्याश्रयको हें जो करेहें सो प्रतिष्ठाके लिये करतेहें. वैष्णवनको धन लेके लौकिक राखेहें प्रतिष्ठाके काजे करत हे परंतु मन स्थिर नहीं राखे हें वैष्णवनको धनहे सो श्रीजीकोहे सो श्रीजी-कोही जाननो. मन स्थिर देखेतों श्रीजी याको मनो-रथ पूरणकरें। मन तो स्थिर रहे जो तादृशी वैष्णवको संग करे जो वह अपनें ऊपर रीसकरें तो शिक्षा करके

मानें जो मेरे भलेकुं कहतहें ताकी वैष्णवता दृढ होई। ताको दृष्टांत जानियें-जैंसे दूध है सो तो वैष्णव है, अरु जमावन है सो तादृशी वैष्णव है. सो दोऊ इकठोरें होवें तो भीतरतें नवनीत उपजे, नहीं तो दूध बिगडे अरु रीसरूपी रईकें घमरके उलटे सुलटे सहे तो नवनीत जुदो होई तब नवनीत अग्निसों तावे तो घी होई बिगरे नहीं. संगति बिना दूध बिगरे तैंसे भगवद्वार्त्ता बिना वैष्णवता बढे नहीं, परंतु पूर्व जा को जैंसो संबंध होवे तैंसोही होवे तैंसीही संगति मिलें हें एक तो यों कहतहें जो नरसिंह मेहेतानें बिहार गायो अरु परमानंदजीनें बाललीला गाई ताको कारण कहा? ता ऊपर कहतहें जो श्रीकृष्णजीनें बिहारलीला खेल कियो श्रीवृंदावनमें ब्रजभक्तनसों मिलके जब उनकों बहुत बिरह भयो तब श्रीकृष्णजीने कही-- उद्धवजी! तुम श्रीगोकुल जाहु. पाछें उद्धवजी श्रीगोकुल आये नंदजूके घर जायके उतरे. तब गोपीजननें नंदजूके घर रथ देख्यो तब वे देखवेकों आई. तब उद्धवजीकुं एकांत बुलायके पूछयो जो हमकुं श्रीकृष्णजी कबहूं संभारतहें? तब उद्धवजीनें कह्यो जो मोकों तो तुमारे पास पठायो है. पाछें गोपीजननें श्रीठाकुरजीके संग जे जे खेल किये हते ते ते उद्धवजीकुं सब कहे कछु गुप्त न राख्यो. तब उद्ध-

वजीनें सब विहारको प्रकार जान्यो सो हृदयमें राख्यो सो उद्धवजीनें विदुरके आगें सब बात कही. सो विदुर नरसिंहमेहेता होयकें अवतार लियो. नरसिंहमेहेतानें महादेवकी उपासना करी. पाछें महादेवजी प्रसन्न भए तब कहे जो मांगो, तब नरसिंहमेहेतानें कही तुमकों जो प्यारी वस्तु होई सो मोकुं देहु । तब महादेवजी नरसिंहमेहेताकों श्रीवृंदावन लेगए सब रमणलीला दिखाई सो नरसिंहमेहेतानें जैसी लीला देखी तैसी गाई और श्रीदामा ग्वालको अवतार परमानंद स्वामी भए. तिननें बाललीलागाई.तातें जैसेकुं मिलिये तैसेही दिखावे जैसे देखिये तैसीही बुद्धि आवे, तातें यत्न करनों. तब यत्न करतमें कोई दुर्बुद्धि उपजे तो चरणामृत लेइतो दुर्बुद्धि न आवे.चरणामृतकी महिमा काहूसों लिखि न जाय. श्रीशुकदेवजीनें राजा परीक्षितसों कहीहे, जा पात्रमें चरणामृत धर्‍यो होई सो पात्र सातबेर जलसों धोवे सातही वेरको जल गंगोदक समानहै. ताके लिये चरणामृतकी महिमाको पार नहीं. फेर कोऊ कहे ज्यो क्यों करि राखिये. ता ऊपर कहतहें ब्रजभूमिकी मृत्तिका अरु श्रीयमुनाजीका जल अरु अपनें श्रीठाकुरजी श्रीप्रभूजीको चरणामृत ये तीनो एकत्र करि राखिये देश परदे-

शनमें लीजिये तातें अधिक माहिमा जानियें. एकतो श्रीयमुनाजीको जल, दूसरें चरणामृत, तीसरो श्रीव्रजभूमिको दर्शन कीजिये. तातें सर्वथा चरणामृत लिये विना जल न लीजिये. जैसे श्रीआचार्यजीके सेवक त्रिपुरदास कायस्थनें चरणामृत प्रसाद बिना जल न लीनो. पाछें श्रीठाकुरजीनें जानी याकी देह गिरेगी परंतु यह जल न लेगो. तब श्रीठाकुरजी दश बरसके बालकको रूप धरकें थेली दोय एक तो चरणामृतकी, एक महाप्रसादकी देगये रसोइयासों कही जो ये थेली त्रिपुरदासनें दीनी है पाछें रसोइयानें रसोई करी भोग सरायके त्रिपुरदासकों बुलायवे पठायो तब त्रिपुरदासनें कही जो मैं चरणामृत बिना प्रसाद न लेऊंगो. तब रसोइयानें कही जो थेली दोय दश बरसको लरिका देगयो.है वे कहने लग्यो जो ये थेली त्रिपुरदासनें पठाई है. पाछें त्रिपुरदासनें चरणामृत प्रसाद लियो परंतु अपनें मनमें बहुत खेद पाए मैं बहुत बुरि करी जो मैंनें हठ कियो. जो श्रीठाकुरजीकों बहुत श्रम भयो तातें अब चरणामृत घटे तो बढा लीजिये. तातें चरणामृत प्रसादको माहात्म्य त्रिपुरदासनें जान्यो और वैष्णव तो वैष्णवको भाव लीजिये. ताको दृष्टांत--जैसे गंगाजीमें

और जल मिले तो गंगोदक समान होवे तैसे वैष्णवको मिलापतें वैष्णव होय जुदो रहे तो वैष्णव नहीं तामें वैष्णव कारणरूपहे. सो श्रीकृष्णजीको चरणामृत माथें चढावत हैं जानियो अक्षरको भेद है श्रीकृष्णजीसों पुष्टिनाम है जो श्रीकृष्ण हैं सो दोय अक्षरको नामहे. श्रीकृष्ण नाम तहां माथे चढावत हैं इतनें वैष्णव भये पाछें श्रीवल्लभाचार्यजीनें अपने मनको एक अक्षर आगे कीनों तब वैष्णव भयो. तातें वैष्णव ऐंसो नाम है सो भगवन्नाम है खरी दृष्टिसों जो देखेगो सो समझेगो वैष्णवनें वैष्णवको द्रोह न करनों. वैष्णवहे सो भगवत्स्वरूपहे. जो श्रीठाकुरजीको अपराध कियो होई तो कदाचित् छुटिये, परि वैष्णवके अपराधतें क्योंहूं न छुटिये. वैष्णवसो लोहको गोलाहै जैसे अग्नीके बलतें गोला तप्त होय सो अग्नीहूतें तातों होई कदाचित अग्नि हाथमें लियोजाय परि वह गोला हाथमें न लियो जाय, तैंसे वैष्णवको अपराध न छूटे. फेर जो प्यारी वस्तु होई ताकी हानी होइ और श्रीठाकुरजी हृदयमें न आवे, जो स्त्री प्यारी होई तो स्त्रीकी हानी होई, जो लक्ष्मी प्यारी होई तो लक्ष्मीकी हानि होई, जो पुत्र प्यारो होय तो पुत्रकी हानि होय. ताको दृष्टांत--जैसे दुर्योधननें पांडवपर

द्रोह कीनो तातें कौरवकुल नाश भयो, धन गयो राज्य गयो तातें वैष्णवको द्रोह न करनो. वैष्णवको द्रोह करे ताको सर्वस्व नाश होय जाय, तातें वैष्णवको वैष्णवसों स्नेह राखनो. यों जानिये जो हमसों जुदे मति होवे.ताको दृष्टांत--जैसे मोहनदास और हरिदास वे श्रीआचार्यजीके सेवक हते, तातें उनमें जैसी प्रीति हती तैसीही राखनी। एकसमय हरिदासके घर मोहनदास पाहुने आये सो दिन एक तथा दोय रहे पाछें मोहनदास कहन लगे, जो सवारें मैं चलुंगो तब हरिदासनें मोहनदाससों कही जो प्यारेजी! अबहीतो रहो, ऐंसे करिके फेर दिन तीन तांई राखे. तब हरिदासनें अपनी स्त्रीसों कह्यो जो मोहनदास तो सवारे जाएंगे; तब वा स्त्रीनें कही जो दिन एक तथा दोय औरहुं राखिये तो भलोंहै. तब हरिदासनें अपनी स्त्रीसों कही जो कछु उपाय करिये तो रहे तो रहे. तब हरिदासनें कही जो अपनें बरस सातको यह बेटा है ताकों विष दीजिये, अरु यह मरे तब हमारो शोक देखिकें दिन एक रहें तो रहें.तब स्त्रीनें कही जो भलें ऐंसेही दिन एक रहेतो राखिये तब हरिदासनें वा बालककों विष दीनो तब वह बालक मरगयो, तब मोहनदासनें जानी जो रातिको तो नीको हतो अरु अबही मरगयो सो कहा जानिये?

न जानिये, जो कहूं सांपनें खायो होयगो. तब दीपक लेके देह देखी पारे सांपकी डाढतो कहुं देखी नहीं. तब मोहनदासनें जानी जो मेरे राखिवेके लीयें इननें बालककुं बिष दीनोंहै तब मोहनदासनें तो वा बालकके मुखमें श्रीजीको चरणामृत दीनो. जब वह उठि बैठो, तब हरिदास बहुत रोवन लाग्यो मेरे घरतें वैष्णव जायगो. तब मोहनदास कहन लागे जो मैं तुम्हारे पास निरंतर रहूंगो पाछें अपनो गांव छोडिके हरिदास पास आय रहे. तातें वैष्णवपर ऐंसो प्यार राखनो. फर वैष्णवको भेष लेके एक ठग आयो. तब वह ठग दोऊ हाथ जोडके जय श्रीकृष्ण कह्यो.तब वा वैष्णवनें बहुतही वाकी आगतस्वागत करी. तब वैष्णवनें कही जो तुमनें हम ऊपर बहुतही कृपाकरी जो दर्शन दीनें. अब तुम कोईकदिन इहां रहो तो गोष्टी वार्ता करिये. तब उन ठगनें कही जो भले, तुम्हारी इच्छा होयगी तो महीना दो चार रहेंगे पाछें वा वैष्णवके घर ठग रह्यो सो कितनेक दिन रहतें रहतें भये. तब एक दिन वा वैष्णवके लरिकानें गहनो बहुत पेहेऱ्यो हतो तब वा ठग वा वैष्णवकी स्त्री जब बहू रसोई करत हती तब वासों कही जो मै तुम्हारे लरिकाको

बागमें खिलाय लाऊं. तब वा स्त्रीनें कही जो भलें. तब ठगनें लरिकाको बागमें लेजायके फांसी दिनी और गहनों लेके भाग्यो. जब इन वैष्णवनें जान्यो, तब इननें कही जो ये हमको मिले तो धन बहुत देवे. मति याको हमारो डर लाग्यो होई। यह हमारे घरते भूखो क्यों गयो?तामें हमको बुरो लागतहै.तब वह वैष्णव वा ठगको खोजन चल्यो सो थोरीसी दूर जायके पहुंचो. तब ठगसों कही जो तुम हमारे घरतें भूखे गए सो क्यों, हमारो अपराध कहा है? हमारे अपराधकी ओर देखो मति,तातें आवो प्रसाद लीजिये. तब ठग मनमें डर्प्यो, जो अपनें घर लेजायके मोकों मारेगो. तब वाको वैष्णव अपने घर लेगया तातो पानी करिके वाकुं न्हवायो. तब स्त्रीने वैष्णवसों कही जो वा लरिकाकुं बुलाय लावो. तब वा वैष्णवनें कही जो लरिकाकों तो निद्रा आई है. तब वा वैष्णवकुं प्रसाद लिवायो, तब वा वैष्ण-वनें ठगसों कही जो तुम लरिकाको पुकारो.तब वा ठगनें लरिकाकों पुकार्‍यो तब वह लरिका आलस्य मोरके उठि ठाढो भयो. तब वह लरिका कहन लाग्यो जो मोको तो निद्रा आई हती. तब ठग उठके वा वैष्णवके पांवन पर्‍यो और कहन लाग्यो

जो मैनें तो तुम्हारे बालकको फांसी दीनी हती. मारिके गहनो उतार लीनी हतो. परंतु तुमने बडो धीरज राख्यो तो श्रीठाकुरजीनें तुम्हारो लरिका जिवाय दीनो तातें अब मोको वैष्णव करो. तब उन वैष्णवनें वाको भलो वैष्णव कियो तातें उत्तम भगवदीयको वचन माननों।ताको दृष्टांत कहत हैं-- एक राजा हतो सो वह मरन लाग्यो. तब अपनें बेटाकुं वा राजानें राज दियो अरु बेटासों कही जो अपने घर एक वैष्णव आवहै, सो वाको तुम बचन मानियो. तब बेटानें कही जो भले मानूंगो ? तब राजा तो मर गयो, बेटा राज करन लग्यो. तब एकदिन राजा सांटो छीलत हतो सो छुरिसो वाकी अंगुरिया कट गई ? तब वा राजानें वा वैष्णवसो कही जो मेरी अंगुरिया कट गई. तब वा वैष्णवनें कही जो भली भई. तब कित नेक दिन पीछे वाकी राणी मरि गई. तब वा वैष्णवसों कही जो मेरी राणी मरि गई, तबहूं वानें कही जो भली भई. तब वा राजाके मनमें बहुत क्रोध भयो जो ये तो मेरो बुरो वांछित हें. तब राजा कहन लाग्यो जो याकों ठौर मारो ? तब चांडाल बुलाए तब कहे जो वह वैष्णव पाछली राति पानी

भरनको जातहे सो तूं याको मारि डारियो. तब दूतरे दिन चांडाल तरवार लेके वाटबांधि कारि बैठे. तब वैष्णव जलभरन निकस्यो इतनेंहिमें मनमें आई जो आज दूसरे कूवातें जल लाऊं तो श्रीठाकुरजी प्रेमसों अरोगे. तब वह दूसरी वाट चल्यो तब वाके पांव ऊपर एक डेल टूटपड्यो तातें वाको पांव टूट्यो सो खाटमें डारिके घर लेआए. तब राजानें समाचार वैष्णवकुं पूंछे जो वैष्णव तुम्हारो पांव टूट्यो सो बुरी भयी तब वैष्णवनें कही जो बहुत भली भई श्रीठाकुरजी बुरी करेंहुं नहीं. तब राजा अपनें मनमें सोच्यो तब कहन लाग्यो जो मैं तुम्हारे मारनके लिये चांडाल राखे हते और तुम और कूवापें गये तातें तुम्हारे पांव टूट्यो. पांवतो फेरहूं नीको होयगो पारि मारिजाते तो फेर न जीवते. पाछें राजा वा वैष्णवके पांवन परके अपने घर गयो. यह राजा बत्तीस लक्षणों हतो. एक राजा उनतें बडो हतो तातें एक तलाव खुदायो हतो पारि वा भीतर जल रहे नहीं. तब पंडित बुलायके पूंछे जो या तलावमें पानी क्यों नहीं रहत है ? तब उन पंडितननें कही जो या भीतर बत्तीस लक्षणी राजाको वध करे तो पानी रहे, तलाव

तब भरे. इतनेमेंही एक ब्राह्मण बोल्यो. जो वह राजा बत्तीस लक्षणों है. तब वा राजानें कही जो वाकुं बुलावो सो कटक वा बत्तीस लक्षणेके गांव पर चढि गयो तब वा बत्तीस लक्षणेनें वा वैष्णवसों पूंछी जो अब कहा करनो? तब वा वैष्णवनें कही जो जैंसे बैठेहो तैंसेही उठ जावो. तब वह तैंसे उठी गयो. सो बडे राजाके पास जायके वाकी सभामें ठाढो भयो तब वा बडे राजानें पंडितनसों कही जो तुम कहत हते सो आयोहै. तब पंडितननें वाको शरीर देख्यो. तब पंडितननें कही जो याकी तो अंगुरिया खंडित है तब वा बत्तीस लक्षणेसों पूंछी जो तेरे बैहर लरिका कहां है? तब इननें कही जो बैहर लडका हते सो सब मरगये. तब पंडितननें वा बडे राजासों कही जो यह तो अपुत्रिक है और याके स्त्री नहीं. याकी अंगुरिया खंडितहै तातें याको वध कियेते तलाव भरेगो नहीं; तब बडे राजानें वाकों बिदा दीनी. तब वह बत्तीस लक्षणो बोल्यो जो मोहूंको वह तलाव दिखाओ सो जब इनने तलावकी ओर देख्यो तबही तलाव भरगयो. तब वा बडे राजानें वाको अपनी बेटी देके ब्याह कर दियो, वाकुं जँवाई कियो तब वाको बहुत

धन देके बिदा कियो. तब वह बत्तीस लक्षणो गाजत बजावत अपनें घर आयो सो आयके प्रथम वा वैष्णवके पांवन पर्‍यो. तब वा वैष्णवसों कही जो श्रीठाकुरजी करत होयंगे सो भलोई करत होएंगे, अंगुरिया कटी सो भलो भयो और बैहर मरी सो भलो भयो नहीं तो मेरो तलावमें वध करते तातें अब वा राजानें अपनी बेटी व्याहीहै सो बहुतेरे पुत्र होयंगे तातें वैष्णवके वचन श्रीठाकुरजीके वचनकरि जाननें उत्तम वैष्णव होई तो मानिये. तहां कहतहैं जो उत्तम और कपटी कैसे जानिये जाको वैष्णव प्यारो न होई तासों न मिलिये. उत्तम भगवदीयमें स्नेह होय तासों मिलिये. तातें बडो कोई नहीं. ताको दृष्टांत कहतहें–सबनते बडी धरती, जामें सब समायो है, तातें बडो समुद्र जो सगरी धरतीसों लपटानोहै, तातें बडे अगस्त्यमुनी जिननें समुद्र एक अंजुलीमें पियो है. तातें बडो ब्रह्मांड जामें अगस्त्यको तारो उदेहू दीसे नहींहै ता ब्रह्मांडतें श्रीप्रभुजी बडे, जिन सगरो ब्रह्मांड एक पांव कियो. तिनतें बडे वैष्णव जिननें ऐसें जगदीश अपने हृदयमें राखे, तातें वैष्णवतें बडो कोई नहीं. तातें वैष्णवनके दासनको दास होय रहिये. परि वैष्णवकी

बराबरी न करिये, जो बराबरी करे तो नीच होवें. श्रीमद्भागवतमें षष्ठ स्कंधमें लिख्यो है. तामें चित्रकेत राजा चक्रवर्ती हतो, तिननें विचाऱ्यो जो महादेवजी वैष्णवहै तिनके दर्शनकुं कैलास जाऊं. सो तब कैलास गयो सो तहां श्रीमहादेवजीके उत्संगमें पार्वतीजी बैठी हती और महादेवजी तो ध्यानमें मग्न हते. सो देखिके राजा चित्रकेतकों रीस चढी. तब पार्वतीनें शाप दीनो, जा तूं राजा राक्षस होहु. तब श्रीमहादेवजी सावधान भये पायलागे. तब पार्वतीसों कहके खीजे कहे जो पाहिलें तो मेरोही अपराध हतो तें शाप क्यों दीनों? तब फेर जायके चित्रकेत वृत्रासुरको अवतार भयो सो मरतींबेर श्रीभगवान प्रसन्न भए तब कहे जो मांग. सो श्लोक कहके मांगे--

"वासुदेवस्य ये भक्ताः शान्तास्तद्गतमानसाः ॥
तेषां दासस्य दासोऽहं भवे जन्मनिजन्मनि" ॥

जो भगवदीयके घर दास होई. ताके दासनको दास होई ताके घर जन्मजन्मदासपनो पाऊं भगवदीयपनो हतो तो महादेवजीकी बरोबरी करी. दासपनो विचाऱ्यो नहीं तो राक्षस भयो. तातें

दासपनों मांगतहूं दासकों रीस न घटे पहिलें जीव श्रीपुरुषोत्तमकुं भजे तब जीव सर्वथा मुक्त होई। श्रीपुरुषोत्तमकी आज्ञा श्रीमहादेवजीनें शंकराचार्यजीको अवतार धऱ्यो तिननें जीवको आसुरभाव भांतिभांतिके मार्ग दिखाये. नवीन मत करिके जीवकों हरितें विमुख कीनें, वाममार्गीय असुर सारिखे जीवकों कलियुगकी संगती करी, भ्रष्ट करे, वे पतित भये, अरु पतितपावन श्रीपुरुषोत्तमहें, तातें अपनें जीवनके उद्धार निमित्त प्रगट भएहें श्रीवल्लभाचार्यजीनें आपने जीवकों करुणादृष्टि देखके सब जीवनकों अपने करे, श्रीविट्ठलनाथजी रूप श्रीगुसांईजी प्रगटे महारसात्मक जो मार्ग जाको नाम पुष्टिमार्ग, श्रीप्रभुजीनें महा वाक्य कह्यो है जीवकों वरण करेहें ते वाणी निश्चय कियो. जीवके कानमें कहतहें महावाक्य जाके लीयें जीवको पुरुष भागहे तहां कृपाकरके श्रीपुरुषोत्तम अंगीकार करतहें और निवेदनमें तुलसी हाथमें लेके अपनें जीवके हाथपर मेलतहे, देके फिरि पाछीलेतहें. जो नवरत्नके तथा एकादशके श्लोक श्रीठाकुरजी अपने मुखसों कहत हें तैंसोई नवरत्नमें कह्योहै। श्लोक–

"चिंता कापि न कार्या निवेदितात्माभिः कदापीति ॥
भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लौकिकीं च गतिम् ॥"

ऐंसे कहिके जाने निवेदन लीनो ताकुं चिंता न करनी. चिंता सो सकल दोषकी माताहे जहां जाकी माता होई तहां सकल दोष होई और तुलसी देके फिर पाछें लेतहें तुलसीसों वरण करतहै सो वृंदाको स्वरूपहै, वृंदा सो महापतिव्रताहे सो कैंसीहै जो पुरुषभावरूप होई ताको मुख न देखे. या वृंदाको अंगीकार श्रीपुरुषोत्तमनें सब अंगनसुं कीनो है. ऐंसे भावसों तुम रहियो. अरु अन्य पुरुषको संग मत करियो. पति जो धनी ताको व्रत आचरण करे सो पतिव्रतासों कहा सो पुरुषोत्तमसंबंधी सकल सुख पावेंगे तुलसीदलको यह भावहै. जब जीव नाम पावे तब वैष्णव होई. वैष्णवसो कहा जो विष्णुकी सेवा योग्य भयो होई सो वैष्णवसो कहावे. ऐंसे वैष्णव सुख देहें श्रीनारायणसा श्रीपुरुषोत्तमके नीचे रहतहें ताके भजन योग्य भयो ताको नाम वैष्णव, फेर वा वैष्णवको भाव हृदयमें भक्ति आवे श्रवण कीर्तन नाभिकमलमें प्यारो लागे तब जानियें जो वैष्णवता आई फेर उत्तम वैष्णवको मिलाप

रहे. दीनतापूर्वक दास ह्वैरहे तब जानिये जो वैष्णवता आई। नारायण भजन योग्य भयो ताको नाम दास। अब नारायणकौनसे? जलनारायण १ सत्यनारायण २ धर्मनारायण ३ नरनारायण ४ लक्ष्मी नारायण ५ आदिनारायण ६ ये श्रीपुरुषोत्तमके पायतरें रहेंहें ताके भजन योग्य भयो ताको नाम दास. दाससो कहा (दाससो कहा) दूर ठाढो रहे घणो सुखपावे तब दास सो सर्वदा श्रीठाकुरजीको कामकरे कीर्तन करे सदा प्रसन्न रहे और कछू सुहात नहीं तब दासत्व आवे तब सेवक भयो सेवकसो कहा जो धनीके पास रहे अंगसुं सेवा करे "सेवा चोर न होई" जो करे सो श्रीठाकुरजीसों पूछके करे ताको नाम सेवक। अब सो सेवक श्रीठाकुरजीके गुणानुवाद विचारिके गावें हरख पावें रोमांचित होई अरु नयनतें आँसूं आवें साधु होई। साधु सो,सूधो जाकें कपटको नाम नहीं मनमें तनकहूं कपट नहीं तासों साधु कहियें ऐसो होई तब सेवक भाव आवे तब मैं भगवदीय होई भगवदीय सो कहा भगवदीयसो श्रीजीको कृपापात्र होवे भगवदीय सो भगवत्स्वरूप है. अब फेर

पात्रको गुण लेनो। तहां दृष्टांत--जैसे सोनेको पात्र है अरु विष भऱ्यो सो उत्तम पात्र जानिके लीजिये तो विनाश होई अरु माटीको पात्र होई अरु उत्तम सामग्री होई सो लीजिये तो परम सुख होय तातें भीतरको गुण देखके संग करणो॥

इति श्रीपुष्टिदृढाव ग्रंथ संपूर्ण ॥



हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई